॥ श्री ॥

हिंदुस्तानी संगीत पद्धति

अभिनवगीतमंजरी

द्वितीय भाग

(द्वितीय संस्करण)

लेखक

पद्मभूषण

आचार्य श्रीकृष्ण नारायण रातंजनकर

बी.ए. संगीताचार्य

(सुजान)

प्रकाशक

आचार्य एस. एन. रातंजनकर फाऊण्डेशन

दादर, बम्बई-४०० ०१४.

समर्पण

'आफताब -ए- मौसीक़ी'
उस्ताद फैयाज़ हुसैन खाँ साहेब

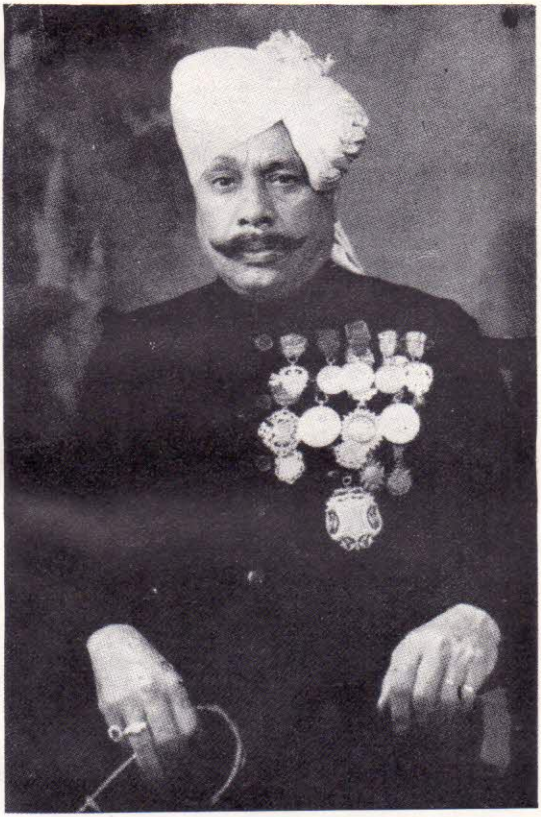

सुदर्शनः सुशारीरो रागसंगीतमर्म विद् ।
रागगीत्यालापतान क्रियाकुशल पुंगवः ॥
फैयाज़खानविख्यातोयादृशोऽन्यो न गायकः ।
गुरूर्मे यत्पदेगीतमंजरीयं समर्पिता ॥

पद्मभूषण

आचार्य श्रीकृष्ण नारायण रातंजनकर

बी. ए., संगीताचार्य

(सुजान)

जन्म : ३१ दिसम्बर १९००

निधन : १४ फरवरी १९७४

लेखक

अभिनव गीत मंजरी

(भाग दूसरा उत्तरार्ध)

भारतीया रागताल स्वरानन्द प्रदायिनी ।
नादविद्या यत्स्वभावो भारतीं प्रणमामि ताम् ॥

प्रस्तावना - प्रथम संस्करण

अभिनव गीत मंजरी के दूसरे भाग का पूर्वार्ध गत वर्ष ही प्रसिद्ध किया गया है । उसमें हिंदुस्तानी संगीत पद्धति के दस ठाठों में से पहले पाँच अर्थात् कल्याण, बिलावल, खमाज, भैरव एवम् पूर्वी ठाठों से सम्बन्धित प्रसिध्द रागों में लगभग १२० रचनाएँ प्रसिद्ध की जा चुकी हैं । इसी दूसरे भाग का उत्तरार्ध अब संगीत प्रेमी जनता की सेवा में सादर करते हुऐ मुझे हर्ष होता है ।

इस उत्तरार्ध में शेष पाँच ठाठों (मारवा, काफी, आसावरी, भैरवी एवम् तोडी) में से उत्पन्न होनेवाले प्रसिध्द एवम् अप्रसिद्ध रागों के अतिरिक्त कुछ नये रागों में लगभग १६० रचनाएँ दी गई हैं । इन रचनाओं में हिंदुस्तानी संगीत के विभिन्न रागदारी गीत - प्रबन्धों का, जैसे कि, सरगम, लक्षणगीत, विलम्बित तथा द्रुत ख्याल, तराना, साध्रा, भजन, होली, धमार, ध्रुवपद, स्तुतिगीत आदि का, समावेश किया गया है ।

इस पुस्तक के अन्त में कुछ परिशिष्ट जोड़े गये हैं, जिनमें 'परिशिष्ट-२' के अंतर्गत उन रागों का समावेश किया है जो की इस भाग के पूर्वार्ध में आ चुके हैं । इन गीतों की रचना पूर्वार्ध प्रसिद्ध होने के पश्चात् हुई है, अतएव उनका समावेश परिशिष्ट के रूप में इसी भाग में किया गया है । उसी प्रकार 'परिशिष्ट - ३ ' के अंतर्गत 'ताल-लक्षणगीत-संग्रह' दिया गया है । जिस प्रकार राग-लक्षणगीतों द्वारा रागों की जानकरी संक्षेप में दी जाती है, उसी प्रकार इन ताल- लक्षणगीतों में उन्ही तालों का समावेश किया गया है जिनके लक्षणगीत प्रायः उपलब्ध नहीं है ।

आशा रखता हूँ कि इस मालिका के प्रथम भाग तथा द्वितीय भाग के पूर्वार्ध की भाँति यह उत्तरार्ध भी संगीत-प्रेमिओं की सेवा के योग्य सिद्ध हो! इती ।

बम्बई,
गणेश चतुर्थी, शके १८८४
दि. ३ सितम्बर १९६२

श्री. ना. रातंजनकर

प्रस्तावना-द्वितीय संस्करण

अभिनव गीत मंजरी मालिका का यह दूसरा भाग, पुनर्गठित रूप में, संगीत-प्रेमिओं की सेवा में सादर करते हुए हमें अत्यंत प्रसन्नता एवम् समाधान हो रहा है। प्रथम भाग का प्रकाशन गत दो वर्ष पूर्व अर्थात् ईसवी सन १९९० में किया था, जिसमें कल्याण, बिलावल, खमाज एवम् भैरव इन चार थाटों में से उत्पन्न होने वाले लगभग ७४ रागों में २३१ बंदिशों का संकलन किया गया है। इस दूसरे भाग में अगले तीन थाट, अर्थात् पूर्वी, मारवा तथा काफी ठाठों से सम्बन्धित लगभग ५८ प्रचलित एवम् अप्रचलित रागों में १६८ विभिन्न बंदिश प्रकारों को प्रकाशित किया जा रहा है। हमें पूर्ण विश्वास है कि संगीत प्रेमी इन बंदिशों से पूर्णतया लाभान्वित होंगे।

इस पुस्तक मालिका के मुखपृष्ठ की निर्मिति हितैषी श्री. शरद साठे ने आत्मीयता से की है, जिसके लिये हमारी ओर से उन्हें हार्दिक शुभकामनाओं सहित धन्यवाद। उसी प्रकार, इस पुस्तक के प्रकाशन में यथायोग्य आर्थिक सहायता प्रदान करनेवाले श्री. करसनदास विसनजी धर्मादाय ट्रस्ट के सभी विश्वस्तों को जितने भी धन्यवाद दिये जाय, कम होंगे। इस अमूल्य आर्थिक सहायता के कारण ही इस पुस्तक को अत्यंत अल्प मूल्य में प्रकाशित करने में हम सफल हो सके, जिससे सर्व साधारण संगीत प्रेमी इस पुस्तक को अपने संग्रह में रखकर उससे लाभान्वित हो सके। उसी प्रकार इस पुस्तक के मुद्रण कार्य में हमें सुदर्शन आर्ट प्रिंटिंग प्रेस के संचालक श्री. लव बागवे तथा श्री. अशोक बागवे का सक्रीय सहयोग प्राप्त हुवा है। अतएव हम उन्हें भी अपनी शुभकामनाओं सहित हार्दिक धन्यवाद देते हैं।

हमें पूर्ण विश्वास है कि इस पुस्तक मालिका को पुनः प्रकाशित कर अपने पूज्य गुरुवर्य की अभिलाषा की अंशतः पूर्ति करने में हम सफल हो सके। आशा है कि समस्त संगीत प्रेमी पूर्ववत् इस पुस्तक मालिका को अपनाने में अपना सक्रिय सहयोग प्रदान करेंगे। यही पूज्य गुरुवर्य के चरणों में हमारी विनम्र प्रार्थना है।

विश्वस्त मण्डल

आचार्य एस. एन. रातंजनकर फाऊण्डेशन

बम्बई, प्रजासत्ताक दिन
दि. २६ जनवरी, १९९२

दादर, बम्बई-४०० ०१४.

अनुक्रमणिका

क्रमांक	राग	गीत के शब्द	पृष्ठ
१.	आभोगी	दसन मोतीयन की लडी	१३३
२.	"	दैया री न माने जिया	१३५
३.	"	तौर्यत्रिक संगोपन (संस्कृत)	१३६
४.	काफी	सारेगरे गमपम प	७२
५.	"	सुन सुलच्छनी काफी रागनी को	७३
६.	"	कैसी सजी है फूली फुलवारी	७५
७.	"	कृष्ण कन्हैया तोरी बाँसुरी	७६
८.	"	जनम वृथा बिन पर उपकार	७७
९.	"	भज भज हरि चरण (संस्कृत)	७९
१०.	"	नमो नमो गुणि गंधर्व चरण	८१
११.	"	तन ना दिर दिर तन	८३
१२.	"	न मारो पिचकारी	८५
१३.	"	वारी जाऊँ इन नैनन पे सखि	८७
१४.	"	आद नाद जासों उपजत द्वाविंशति श्रुति	८८
१५.	"	खेलन आये होरी	९१
१६.	"	*वन्दे मातरम्*	९४
१७.	"	ईष्टो को लीलाम् (वर्णम् - संस्कृत)	९७
१८.	"	करके मोंसे पीत (वर्णम् - हिंदी)	
१९.	काफी - कान्हडा	राग वर्णन व स्वर विस्तार	२१३
२०.	"	साँवरो चितचोर	२१४
२१.	"	बालम तोरे छलबल सों	२१५
२२.	केदार- बहार	राग वर्णन व स्वर विस्तार	२०५
२३.	"	मदमाते आये अत अलसाये	२०६
२४.	"	जानी जानी पीत की रीत	२०७
२५.	कौंसी-कान्हडा (बागेश्री अंग)	सुर श्रुति सुर संगत	२२१
२६.	" "	सोही गावे बजावे	२२२
२७.	" "	दिर दिर तन दीम् तन	२२४
२८.	" "	ऊधो तुम जाय कहो हरि सों	२२५
२९.	गौड़-बहार	बैरन रैन अँधियारी	२०४

३०.	गौरी (पूर्वी थाट)	दूर करो मुष्किलात मोरी	१८
३१.	चन्द्रकौंस	बिघन हर गणेश	१३९
३२.	"	रहस रस बतियाँ पिया की	१४०
३३.	"	मदमाते आये हो	१४१
३४.	" (आधुनिक प्रकार)	रागवर्णन व स्वरविस्तार	१४२
३५.	" "	चमके चन्दा बिकसे कुमुदिनी	१४४
३६.	" "	पीर निजामुद्दीन	१४५
३७.	जयजयवंती-कान्हडा	राग वर्णन व स्वर विस्तार	२२७
३८.	"	काछे पीताम्बर, माथे मुकुट सोहे	२२८
३९.	"	सुन री आज सखी मन की बतियाँ	२२९
४०.	"	नेक न जाने तू नारी अनारी	२३१
४१.	ज़िला-काफी	जमुना के तीर कन्हैया	१००
४२.	"	आयी दिवाली दिवाली	१०३
४३.	जैताश्री	असंख्य नरवीर (स्तोत्र-संस्कृत)	९७
४४.	त्रिवेणी	तूवै अवतार लिये जग तारन	१६
४५.	दीपक (पूर्वी थाट)	देख कैसी सजी रंग रंगीली	१९
४६.	देवसाख	ननंदिया मोरी जागे	२१२
४७.	धनाश्री	मन की उमंग मन में रही	१२२
४८.	धानी	सजी सजी सिंगार किये बैठी नार	१२४
४९.	"	भज भज गोपाल	१२५
५०.	"	हा पीर मोरे औलिया निजामुद्दीन	१२६
५१.	नायकी-कान्हडा	कैसी फूली फुलवारी आली	१३८
५२.	"	कापि ब्रिजवनिता याता (संस्कृत)	१३९
५३.	"	ओदानि दानि तदीम्	१४०
५४.	परज	बीत गई रैन सखी	१५
५५.	पटदीप	राग वर्णन व स्वर विस्तार	१५३
५६.	"	मन समझ आज काज कछु कीजो	१५४
५७.	"	अज्ञानांधकारावृतः (संस्कृत)	१५६
५८.	"	एरी दैया दुख की बतिया	१५७
५९.	पटमंजरी	घर की ये लुगैया	१३२
६०.	पीलु	गगसानि सापमप ग	१४७
६१.	"	धुन सुन री नीकी	१४७

६२.	पीलु	टेक रखो प्रभुजी अब मोरी	१४९
६३.	"	अब मैं तो चेरी भई हरि की	१५१
६४.	पूरिया	मन ही मन मुरझाई ये नारी	४१
६५.	"	करत हो नित रार पनघट पर	४३
६६.	"	श्रणु मधुप रे (संस्कृत)	४४
६७.	"	सुमिरन करूँ मैं पीर को अपने	४५
६८.	पूरिया धनाश्री	भनक सुनि कान पियु के आवन की	१४
६९.	पूर्वकल्याण	धन धन भाग जागे आज मेरे	४६
७०.	"	ना दिर दिर तोम् तना	४८
७१.	"	होवन लागी साँझ	४९
७२.	पूर्वी	मगरेसा ऩिऽसारेग	१
७३.	"	पूरवी मेल जनित अत सुंदर	१
७४.	"	जग जननी देवि भवानी	३
७५.	"	अतुल शोभा साँझकी	४
७६.	"	वातात्मजोयम् (वर्णम्-संस्कृत)	२६
७७.	पंचम	आवो गावो, गावो रिझावो	६१
७८.	"	चन्द्र जाके भाल बिराजे	६३
७९.	बरवा	नहीं मानत नारी गुमान भरी	१२७
८०.	"	तदारे दानी द्रियानारे तोम् तन	१२८
८१.	"	तुम परदेस बसैया	१२९
८२.	"	आली रीन माने जिया मोरा	१३०
८३.	बरारी	लगन लगी मनमोहन सों	५०
८४.	"	कहे सखी कौन उपाव कीजे	५२
८५.	बहार	करत केली कुंजन में कन्हैया	१८६
८६.	"	देखो री माई जसोदा	१८७
८७.	"	शुभ दिन शुभ मुहूरत	१८९
८८.	"	जय हिंद जय हिंद	१९१
८९.	बसंत - बहार	फुली नई नई बेलरी	१९४
९०.	"	आयो आयो आयो बसंत रुतु	१९५
९१.	बागेश्री	मगरेसा ऩिसा धऩिसाम	११२
९२.	"	निग मृदु रिमध शुचि	११३
९३.	"	हरि सुमिरन बिन जनम गँवायो	११४

९४.	बागेश्री	दे दरस मोहे श्याम मुरारी	११६
९५.	"	एरी कौन यह बारो साँवरो	११७
९६.	"	रास रच्यो है जमुना नीर तीर	११८
९७.	"	गोप गोपीयन संग खेले कन्हाई	१२०
९८.	बागेश्री - बहार	मेरो मन अटक्यो श्याम सुंदर सों	२०१
९९.	"	जिया हुलसै, बेकल होत सखी	२०३
१००.	बिंद्राबनी-सारंग	रेमरेसा निपनिसा	१५९
१०१.	"	हर प्रिय मेल जनित बिंदराबन	१५९
१०२.	"	कारी करूँ मैं अकेली नार सखि	१६१
१०३.	"	नैना निरखि छबि	१६२
१०४.	"	अली कलियन रस मदमातो	१६३
१०५.	"	ऐ मुसाफिर आ	१६५
१०६.	"	द्रियानारे तदियानारे तोम्	१६८
१०७.	"	बिंदराबन मों भई दुपहरिया	१७०
१०८.	भटियार	तनिक सुन री सत बचन अब	६४
१०९.	"	कहियो ब्रिजराज	६६
११०	भंखार	गूँध गूँध लावो री फूल हरवा	६७
१११.	"	करीम करतार परवर दिगार	६९
११२.	"	ऐसो पूत धुरंधर पायो	७०
११३.	"	अब इक मोरी मान तू	७१
११४.	भीमपलासी	मगरेसा मगपम	१०७
११५.	"	सजत भीमपलासी माधुरी	१०७
११६.	"	तीजे पहर दिन मन मोहत नित	१०९
११७.	"	मूरत मन भावनी अत	११०
११८.	"	ब्रह्मा वरुण इन्द्र रूद्र	१११
११९.	मधमाद - सारंग	लैहों बलैया	१८३
१२०.	मारवा	धमगरेसा ऩिरेगम निध	२८
१२१.	"	मृदु रिखब गमधनि तीवर	२८
१२२.	"	मृदु रिखब तीवर मध्यम	३०
१२३.	"	जदुपत केष्ण जसोदा नन्दन	३१
१२४.	"	नभ मंडल प्रकाशत	३२
१२५.	"	कैलासोत्तुंग शृंगे (वर्णम् - संस्कृत)	३५

१२६.	मालवी	नमो नमो नमो नारायण	२२
१२७.	"	औलिया नियामुद्दीन	२३
१२८.	"	चकित भये सुर नर मुनि	२४
१२९.	मालीगौरा	हर हर हर महादेवा गौरीपत	५३
१३०.	मीयाँ मल्हार	सुनो सुजनवा रागनी को	२३२
१३१.	"	नाद वेद अप्रम्पार	२३५
१३२.	मीयाँ - सारंग	जमुना जल भरन जो गई	१८०
१३३.	"	जय जय राम जप नाम	१८२
१३४.	मेघमल्हार	घन गरज बादर आये	२३७
१३५.	"	आयो री बरखा रित आयो	२३९
१३६.	"	नाचत नंद किशोर	२४०
१३७.	रामदासी मल्हार	माधो मुकुंद गिरिधर गोपाल	२५३
१३८.	"	ब्याहन आयो है बनरा	२५४
१३९.	रेवा	साँझ समे सुखकर	२०
१४०.	"	माई लोगवा चर्चा करे	२१
१४१.	ललित	प्रातः प्रहर की धुन	४०
१४२.	विभास (मारवा थाट)	बँधा समा सुर लय राग ताल सों	५८
१४३.	" "	रहे नाम तेरो	६०
१४४.	शहाना	नैया परी मझधार मोरी	२१७
१४५.	श्री	गुनी गुन निहारे	६
१४६.	"	हर हर त्रिलोचन	७
१४७.	"	रमा रमण राम नाम सुमिर	९
१४८.	"	सुनि सुनि चकीत भये	१०
१४९.	"	दिर दिर तनद्रे तोम्	१२
१५०.	शिवरंजनी	राग वर्णन व स्वर विस्तार	२५५
१५१.	"	निरखि निरखि चितचोर	२५७
१५२.	"	मन भरम छाँडि देहो	२५८
१५३.	"	एरी काहे कूकत बैरन	२६०
१५४.	शुद्ध सारंग	शरम रख लीजे आज	१७२
१५५.	"	गगन चढ़ि आयो भानु दुपहारे	१७४
१५६.	"	दिर दिर तनद्रे तनद्रे	१७५
१५७.	"	आन परी मझधार	१७६

१५८.	शुद्ध सारंग	डारो ना न डारो ना डारो	१७७
१५९.	साज़गिरी	गूँध गूँध गूँध लावो री	५४
१६०.	"	दिर तन दिर तन दिर तनोम्	५६
१६१.	"	अरज सुनो मेरी	५७
१६२.	सामंत - सारंग	खेलत कान्ह जमुना नीर तीर	१७९
१६३.	सुघराई	आज सुदिन आयो है	२१८
१६४.	"	को जाने सखि कहाँ की ये रीत	२१९
१६५.	सूरमल्हार	सखि राधिके (संस्कृत)	२४२
१६६.	"	ऐसे समे आये बादर	२४४
१६७.	"	कैसे के आऊँ तोहरे ढिंगवा	२४६
१६८.	"	घोर घोर घन गम्भीर	२४७
१६९.	"	उडत है गुलाल चहूँ ओर	२५०
१७०.	"	छूटत पिचकारी	२५१
१७१.	सोहनी	लगन एक रहे राम नाम की	३७
१७२.	"	नैना निरखि छबि सुंदर	३९
१७३.	हिंडोल - बहार	देखो सखि कान्ह केली करत है	१९८
१७४.	"	झूलत हिंडोल बहार आयी	२००

इस पुस्तक में आये हुए कुछ अप्रसिद्ध तालों के ठेके :-

ताल दाक्षिणात्य रूपक – मात्रा ६

१	२		३	४	५	६
धा	धिन्	|	धा	धा	धिन्	ना
×		|	२			

ताल सार्ध रूपक – मात्रा १०½

१	२	३	४	४½		५½	६½	७½
तिंऽ	ऽतिं	ऽऽ	नाऽ	ऽ,०	|	धिन्	धा	तिरकिट
⊗					|	२		

८½	९½	१०½
धिन्	ऽधा	तिरकिट
३		

अथवा

१	२	३	४	५	६	७	८	९		१०	११	१२	१३	१४	१५
तिं	ऽ	ऽ	तिं	ऽ	ऽ	ना	ऽ	ऽ	|	धिं	ऽ	धा	ऽ	तिर	किट
⊗									|	२					

१६	१७	१८	१९	२०	२१
धिं	ऽ	ऽ	धा	तिर	किट
३					

ताल गजमुख – मात्रा १६

१	२	३	४	५		६	७		८	९	१०		११	१२
धिं	ऽ	त्रक	धी	ना	|	तू	ना	|	क	ऽ	त्ता	|	त्रक	धिन्
×					|	२		|	३			|	०	

१३	१४	१५	१६
ना	धी	धी	ना
४			

ताल ध्रुवताल (खण्डजाती) – मात्रा १७

(पखावज पर बजनेवाला)

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
धा	S	दिं	दिं	ता	क	त्ता	धा	दिं	ता	किट	धा
×					२		३				

१३	१४	१५	१६	१७
कत्	तिट	कत	गदि	गन
४				

ताल पंचानन – मात्रा १९

(तबले पर बजनेवाला ठेका)

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
धिन्	S	धा	गे	ना	तिन्	S	त्रक्	धी	धी	ना	धी	धी	ना
×		२			०			३		४			

१५	१६	१७	१८	१९
कत्	S	तिन्	ना	त्रक्
५			०	

(पखावज पर बजनेवाला ठेका)

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
धा	S	धि	त्ता	S	क	S	त्ता	धि	ट	धा	S	ति	ट
×		२			०			३		४			

१५	१६	१७	१८	१९
धा	तिट	कत	गदि	गन
५			०	

॥ श्री ॥

अभिनव-गीत-मंजरी

भाग २ रा

राग पूर्वी – सरगम – त्रिताल (मध्यलय)

स्थायी

म॑ ग रे॒ सा	नि़ – सा रे॒	ग – म ग	रे॒ ग म॑ प
०	३	×	२
ध॒ प ध॒ म॑	प म॑ ग म	ग – म॑ ध॒	म॑ ग रे॒ सा
०	३	×	२
नि़ रे॒ ग रे॒	ग म॑ प –	म॑ ध॒ नि ध॒	रें॒ नि ध॒ प
०	३	×	२

अंतरा

म॑ ग म॑ ध॒	प सां – सां	नि रें॒ गं मं॑	गं रें॒ सां –
०	३	×	२
ध॒ नि रें॒ गं	रें॒ सां नि –	रें॒ नि ध॒ प	म॑ ग म ग
०	३	×	२
नि ध॒ म॑ ग	रे॒ सा, नि़ रे॒	ग म॑ ध॒ नि	रें॒ नि ध॒ प
०	३	×	२

राग पूर्वी – लक्षणगीत – त्रिताल (मध्यलय)

स्थायी : पूरवि मेल जनित अति सुंदर, पूरवि राग मधुर सम्पूरन,
मृदु रिध तीवरमध्यम सुध गनि, कबहुँ बिलुम मृदुमध्यम सोहत।

अंतरा : सायं संधिसमे नित गावत, गनि वादी संवादी गहत गुनि,
परज वसंत गौरी सिरि आश्रय, सुन रे 'सुजान'
चतुर गुनि संमत॥

स्थायी

(प)म ध म ग	री सा सा सा	(ऩि)ऩि (सा)री ग री	(म)ग म ग ग
पू ऽ र वि	मे ऽ ल ज	नि त अ ति	सु ऽ न्द र
0	3	×	2
(सा)ऩि री ग म	प - प प	(म)प ध (प)म पम	(म)ग म ग ग
पू ऽ र वि	रा ऽ ग म	धु र स ऽऽ	म्पू ऽ र न
0	3	×	2
(प)म ग (ध)म ध	(सां)नि रीं नि ध	(म)प ध (प)म पम	(म)ग म ग ग
मृ दु रि ध	ती ऽ व र	म ऽ ध्य मऽ	सु ध ग नि
0	3	×	2
(ध)म ध म ग	(सा)ऩि री सा सा	(सा)ऩि री ग म	प - प प
क ब हुँ वि	लु म मृ दु	म ऽ ध्य म	सो ऽ ह त
0	3	×	2

अंतरा

(प)म ग (ध)म ध	सां - सां सां	(नि)सां - (सां)सां नि	रीं - सां सां
सा ऽ य म	सं ऽ धि स	मे ऽ नि त	गा ऽ व त
0	3	×	2
(सां)नि (गं)नि रीं गं	रीं - (नि)सां -	नि ध नि (मं)रीं	नि ध प प
ग नि वा ऽ	दी ऽ सं ऽ	वा ऽ दी ग	ह त गु नि
0	3	×	2
(प)म म ग ग	(ध)म - ध (रीं)नि	रीं नि ध प	(म)ग म ग ग
प र ज व	स ऽ न्त गो	ऽ रि सि रि	आ ऽ श्र य
0	3	×	2
(सा)ऩि री ग म	प - प प	(म)प ध (प)म पम	(म)ग म ग ग
सु न रे सु	जा ऽ न च	तु र गु निऽ	सं ऽ म त
0	3	×	2

राग पूर्वी – त्रिताल (मध्यलय)

स्थायी: जग जननि देवि भवानी शिवानी,
शरन जाऊँ तोरे चरन-कमल पर,
सर नवाऊँ वरदान दीजो।

अंतरा: अष्ट भुजा महिषासुर मर्दिनी,
पाप हरनि दुःख दंद निस्तारनी,
ध्यावे रूप गावे नाम पावे 'सुजन'
चित-शान्ति-भुक्ति-मुक्ति जो॥

स्थायी

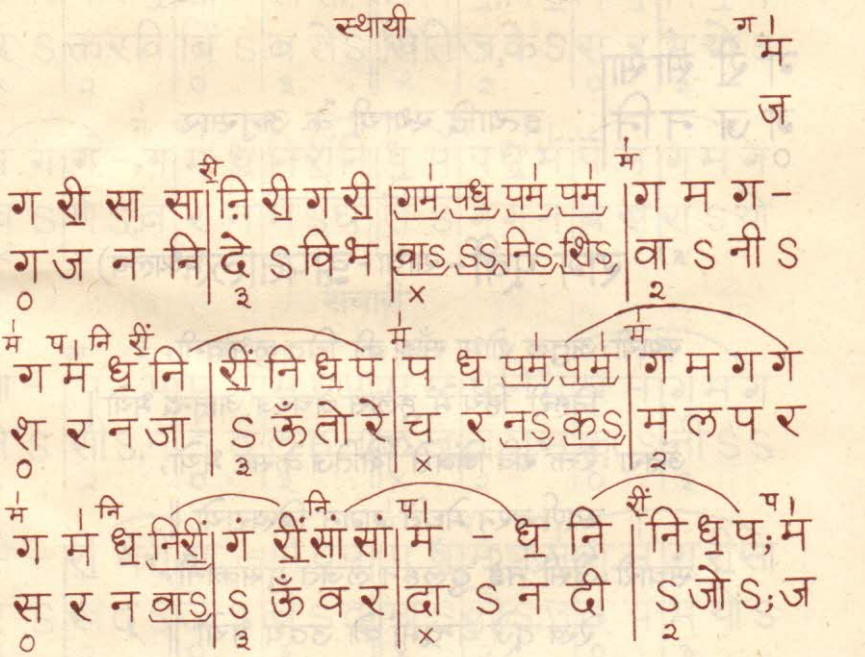

अंतरा

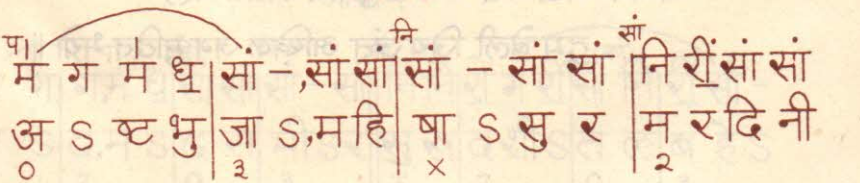

(सां)नि रीं गं मं	गं रीं सां सां	नि ध(सां) नि रीं	नि ध प प
पा ऽ प ह	र नि दु ख	दं द नि ऽ	स्ता ऽ र नि
०	३	×	२
(प)म – ग,(प)म	– ध,नि (रीं)रीं	नि,ध प प,	(म)प ध (प)म,प्रम
ध्या ऽ वे,रु	ऽ प,गा ऽ	वे,ना ऽ म,	पा ऽ वे,सुऽ
०	३	×	२
(म)ग म,ग ग	(सा)नि – री,ग	– ग,(प)म ध	नि ध प; (प)म
ज न,चि त	शां ऽति,भु	ऽ क्ति,मु ऽ	क्ति जो ऽ;ज
०	३	×	२

ग री सा सा	
ग ज न नि	.... इत्यादि स्थायी के अनुसार
०	

राग पूर्वी - साधा - झपताल (मध्यलय)

स्थायी : अतुल शोभा साँझ की चित लुभावनी,
निहरी हिय में हुलास अचरज आनन्द भयो ।

अंतरा : रक्त रवि बिंबतें क्षितिज केसर भयो,
स्वर्ण बरन मेघतें गगन बिखरायो ॥

संचारी : जैसी नई दुलहन लजत मुसकानी,
रेख दूजे चन्द्रमा को उदय भयो ॥

आभोग : मंद मंद समीर सुखद शीतल बहे,
द्रुम बेली जिय जंत अखिल जग मुदित भयो ॥

स्थायी

म॑ ग	री॒ सा –	ऩि री॒	ग – री॒	ग म॑ प	प ध॒ म॑	प म॑ग	म॑ ग –
अ तु	ल शो S	भा S	साँ S झ	की S S	चि त लु	भा SS	व नी S
×	2	0	3	×	2	0	3

म॑ ग	ग,म॑ ध॒	नि रीं॒	नि ध॒ प	प ध॒	म॑ प म॑	ग म॑	ग री॒ सा
नि ह	रि,हिय	में हु	ला S स	अ च	र ज आ	नं S	द भ यो
×	2	0	3	×	2	0	3

अंतरा

म॑ ग	ग म॑ ध॒	सां –	सां सां –	नि नि	ध॒,नि रीं॒	नि ध॒	नि ध॒ प
र S	क्त र वि	बिं S	ब तें S	खि ति	ज,के S	स र	भ यो S
×	2	0	3	×	2	0	3

म॑ ग	ग –,ग	म॑ ध॒	नि रीं॒ नि	ध॒ प	प ध॒ म॑	प म॑	ग म॑ ग
स्व S	र्ण S,ब	र न	मि S घ	तें S	ग ग न	बि ख	रा S यो
×	2	0	3	×	2	0	3

संचारी

सा –	प –,प	प प	म॑ ध॒ प	म॑ म॑	ध॒ नि ध॒	प म॑	ग म॑ ग
जै S	सी S,न	ई दु	ल ह न	ल ज	त मु स	का S	नी S S
×	2	0	3	×	2	0	3

नि –	रीं॒ गं रीं॒	सां –	नि ध॒ प	प ध॒	म॑ प,म॑	ग म॑	ग री॒ सा
रे S	ख द S	जे S	चं S द्र	मा S	को S,उ	द य	भ यो S
×	2	0	3	×	2	0	3

आभोग

म॑ ग	ग,म॑ ध॒	सां सां	सां – सां	नि नि	रीं॒ गं रीं॒	सां नि	रीं॒ सां –
मं S	द,मं S	द स	मी S र	सु ख	द शी S	त ल	ब हे S
×	2	0	3	×	2	0	3

सां नि रीं	गं – गं	मं गं	रीं – सां	नि ध	प मं ग	प मधमं	गरीसा
द्रु म	बि ऽ लि	जि य	जं ऽ त	अ खि	ल ज ग	मुऽ दि	त भ यो
×	२	०	३	×	२	०	३

राग श्री – त्रिताल (मध्यलय)

स्थायी : गुनी गुन निहारे गुन को सार
बेगुनी कोऊ न पायो पार।
अंतरा : बिन किये साधन गुन नहीं आवे,
'सुजन' सुन साच याही बिचार॥

स्थायी

मं ध
गु

मं ग री नि॒सा	री – री, प	मं प प मं प ध	मं ग री, मंनि
नी गु न नि	हा ऽ रे, गु	न को ऽ ऽ	सा ऽ र, गु
३	×	२	०
नि ध मं ग ग री	ग री – सा, म	प मंप निसां रीं	नि ध प, परी
नी गु न नि	हा ऽ रे, गु	न कोऽ ऽऽ ऽ	सा ऽ र, बे
३	×	२	०
ग री सा –	ग री – मं प प	प मं प निसां रीं	रींनि धप मंप; मंध
ऽ गु नी ऽ	को ऽ ऊ न	पा ऽ योऽ ऽ	पाऽ ऽऽ रऽ; गु
३	×	२	०
मं ग री नि॒सा	री – री,		
नी गु न नि	हा ऽ रे, ... इत्यादि		
३	×		

अंतरा

				म
				बि
म प नि –	सां – सां सां	नि नि सां रीं	रीं – सां,म	
न कि ये ऽ	सा ऽ ध न	गु न न हीं	आ ऽ वे,बि	
३	×	२	०	

म प रीं –	सां – सां सां	नि नि रीं गं	गं रीं सां,रीं
न कि ये ऽ	सा ऽ ध न	गु न न हीं	आ ऽ वे,सु
३	×	२	०

नि ध प प	री – री,म	प नि सां रीं	रींनि धप मप,ध
ज न सु न	सा ऽ च,या	ऽ ही ऽ बि	चाऽ ऽऽ रऽ,गु
३	×	२	०

म ग री सा	री – री,
नि गु न नि	हा ऽ रे,
३	×

इत्यादि स्थायी के अनुसार

राग श्री – त्रिताल (मध्यलय)

स्थायी : हर हर त्रिलोचन सिरि गंगाधर,
त्रिशूल डमरू धर पन्नग भूखन।

अंतरा : त्रिपुरान्तक शिव शंभु महेश्वर,
लसत चन्द्रमा भाल सुलच्छन,
दीन 'सुजन' आयो शरन निहर॥

स्थायी

			प म॑
			ह

प नि सां, सां	रीं – सां सां,	म॑ म॑ प ध	मग री सा, म॑
र ह र, त्रि	लो ऽ च न,	सि रि गं ऽ	गाऽ ध र, ह
३	×	२	०
प नि सां, सां	रीं – सां सां	म॑ म॑ प नि	म॑ ग री सा
र ह र, त्रि	लो ऽ च न	सि रि गं ऽ	गा ऽ ध र
३	×	२	०
री री री, प	प म॑ ध प	म॑ प नि रीं	नि ध प; म॑
त्रि शू ल, ड	म रु ध र	प ऽ न्न ग	भू ख न; ह
३	×	२	०

अंतरा

री री म॑ प	नि नि सां सां	नि – रीं गं	रीं – सां सां
त्रि पु रा ऽ	न्त क शि व	शं ऽ भू म	हे ऽ श्व र
३	×	२	०
रीं रीं पं रीं	गं रीं सां –	नि – सां, रीं	नि ध प प
ल स त च	ऽ न्द्र मा ऽ	भा ऽ ल, सु	ल ऽ च्छ न
३	×	२	०
री – री, प	प प, नि सां	सां, रीं रीं सां,	री ग री; म॑
दी ऽ न, सु	ज न, आ ऽ	यो, श र न,	नि ह र; ह
३	×	२	०

राग श्री - त्रिताल (मध्यलय)

स्थायी : रमा रमण राम नाम सुमिर मन
पाप ताप निवारण होत सकल
दुःख दंद मिटत रे 'सुजन' ।

अंतरा : परम पुरुख पुरुषोत्तम राघव
भक्तन के प्रतिपाल दयाघन
नमो नमो बार बार तुम्हरे चरण ॥

स्थायी

री री	ग री सा सा	प - प,म॑	ध म॑ ग,री
र मा	ऽ र म ण	रा ऽ म,ना	ऽ म ऽ,सु
	३	×	२
सा सा,री री	ग री सा सा	प - प,नि	रीं नि ध,प
मि र, र मा	ऽ र म ण	रा ऽ म,ना	ऽ म ऽ,सु
०	३	×	२
ग री सा सा	-, ऩि - ऩि	री ग री,सा	ऩि सा म॑ प
मि र म न	ऽ, पा ऽ प	ता ऽ प,नि	वा ऽ र ण
०	३	×	२
नि सां सां, रीं	गं रीं सां सां	म॑ प नि,रीं	नि ध म॑ ग
हो ऽ त,स	क ल दु ख	दं ऽ द,मि	ट त रे सु
०	३	×	२
री सा; री री	ग री सा सा		
ज न; र मा	ऽ र म ण	..... इत्यादि	
०	३		

अंतरा

(प)म म प (सां)नि	नि नि सां सां	(गं)रीं – (गं)रीं रीं	(गं)रीं – सां सां
प र म पु	रु ख पु रु	षो ऽ त्त म	रा ऽ घ व
०	३	×	२
(गं)रीं – (गं)रीं (गं)रीं	सां – (नि)सां सां	(सां)नि – (नि)सां,रीं	नि ध प प
भ ऽ क्त न	के ऽ प्र ति	पा ऽ ल,द	या ऽ घ न
०	३	×	२
(प)म प सां, (नि)सां	नि ध, (प)म –	गरी, ग री सा,	(नि)(रीं)रीं (नि)नि ध (ध)म
न मो ऽ, न	मो ऽ, बा ऽ	रऽ, बा ऽ र,	तु म्ह रे च
०	३	×	२
(मं)ग (ग)री; (ग)री (ग)री	ग री सा सा	-----	
र ण; र मा	ऽ र म ण		
०	३		

इत्यादि स्थायी के अनुसार

राग श्री – त्रिताल (मध्यलय)

स्थायीः सुनि सुनि चकित भये गुन-ग्यानी
गायक सकल गुनीजन, राग ताल
रस माधुरी चहूँ ओर बरस रही
कहालों कीजे बखान |

अंतराः ऐसे महा गुनी गंधर्व फ़ैयाज़ हुसैन
या पृथ्वी में जनम लिये, आये गाये
रिझाये रसिक जन-गण-मन भाये
शरण आयो सिर नवायो 'सुजान' ||

स्थायी

नि रीं नि ध	म ग री नि़	प	सां
रीं नि ध म	ग री सा सा	री - - , म	प नि सां सां
सु नि सु नि	च कित भ	ये ऽ ऽ , गु	न ब्या ऽ नि
०	३	×	२
गं	सां	नि	प प
रीं - सां सां,	नि नि सां रीं	नि ध प प,	म ध प, री
गा ऽ य क,	स क ल गु	नी ऽ ज न,	रा ऽ ग, ता
०	३	×	२
नि़	नि़ प	सां गं	प
ग री सा सा	री - म प,	नि सां गं रीं	- सां, म प
ऽ ल र स	मा ऽ धु री,	च हूँ ऽओ	ऽ र, ब र
०	३	×	२
नि	नि	प	प
नि सां रीं -,	रीं नि ध प	री ग री सा	म प नि सां
स र ही ऽ,	क हा लों ऽ	की ऽ जे ऽ	ब खा ऽ न
०	३	×	२

अंतरा

प	नि नि	नि	
म प सां -	सां सां - ,सां	सां - - ,रीं	- सां - सां
ऐ ऽ से ऽ	म हा ऽ, गु	नी ऽ ऽ, गं	ऽ ध ऽ र्व
०	३	×	२
प प	नि	नि	नि गं
म प रीं -	सां सां - ,सां	सां - ,सां -	सां - सां, रीं
ऐ ऽ से ऽ	म हा ऽ, गु	नी ऽ, गं ऽ	ध ऽ र्व, फ़े
०	३	×	२
गं	रीं	सां	
गं रीं - सां	पं गं रीं सां,	नि - सां गं	रीं - सां -
ऽ या ऽ ज़	हु सै ऽ न,	या ऽ पृ थ	वी ऽ में ऽ
०	३	×	२

म प नि सां	रीं नि ध प,	मप नि ध प,	म ध म, गरी
ज न म लि	ये ऽ ऽ ऽ,	आऽ ऽ ये ऽ,	गा ऽ ये, रिऽ
०	३	×	२
ग री सा, म़	प़ नि़ सा सा	म प नि सां	रीं – सां –,
झा ऽ ये, र	सिक ज न	ग ण म न	भा ऽ ये ऽ,
०	३	×	२
म प नि, ध	प प, री ग	री सा – सा,	म प नि सां;
श र ण, आ	ऽ यो, सि र	न वा ऽ यो,	सु जा ऽ न;
०	३	×	२

टीपः लेखक ने इस गीत की रचना अपने गुरु 'आफ़ताब-ए-मौसीक़ी' उस्ताद फ़ैयाज़ हुसैन खाँ की पुण्य स्मृति में की है।

राग श्री–तराना–त्रिताल (मध्यलय)

स्थायी : दिर दिर तनद्रे तोम् तनद्रे दीम् दीम्
तारेदानी तोम्तन दीम् दीम् दीम्।

अंतरा : ना दिर दिर दीम् तोम्तन द्रियानारे
तोम् तनन ध्रिकिट धान धित्तान धा धा॥

स्थायी

म ध
दिर

म ग री सा	री –, री म	प, नि सां रीं	नि ध प, नि
दिर त न द्रे	तो म्, त न	द्रे, दी ऽ म्	दी ऽ म्, दिर
३	×	२	०

ध म ग री | री – ,सा म | प ,नि सां गं | रीं – सां,मप
दिर त न द्रे | तो म् ,त न | द्रे ,दी ऽ म् | दी ऽ म्,ताऽ
३ | × | २ | ०

निरीं नि म गरी | ग – री सा, | म प निसां रीं | रीं – सां; ध
ऽऽ रे दा नीऽ | तो ऽम्त न, | दी म् दीऽ म् | दी ऽ म्; दिर
३ | × | २ | ०

म ग री सा
दिर त न द्रे | ..... इत्यादि
३

अंतरा

म
ना

म प नि – | सां – सां सां | नि नि रीं गं | रीं –,सां मं
दिर दिर दी म् | तो ऽ म्त न | द्रि या ना रे | तो ऽ,म्त न
३ | × | २ | ०

गं,रीं नि ध | म ग री,री | म प नि सां | रीं – सां; ध
न,धि कि ट | धा ऽ न,धि | ऽ त्ता ऽ न | धा ऽ धा; दिर
३ | × | २ | ०

म ग री सा
दिर त न द्रे | ----- इत्यादि स्थायी के अनुसार
३

राग पूरियाधनाश्री–त्रिताल (मध्यलय)

स्थायी : भनक सुनि कान पिउ के आवन की।

अंतरा : पल पल छिन दिन रैन तकत रही

राह, आयी शुभ घरी मिलन की ॥

स्थायी

			मं ध भ
मं ग रे सा	सा प – प, प मं	सां ध नि रें निध	नि ध प –
न क सु नि	का ऽ न, उ	न के ऽ आऽ	व न की ऽ
३	×	२	०

अंतरा

प मं ग ध मं ध	नि सां सांनि रें सां,	सां नि रें गं रें	नि सां रें सां सां
प ल प ल	छि नऽ दि न,	रै ऽ न त	क त र ही
३	×	२	०
ध मं – ध, सां नि	रें नि नि, ध नि	ध ध प –, नि	नि ध ध मं मं ग; मं ध
रा ऽ ह, आ	ऽ यी, शु भ	घ री ऽ, मि	ल न की; भ
३	×	२	०
मं ग रे सा	..... इत्यादि स्थायी के अनुसार		
न क सु नि			
३			

राग परज – झूमरा (विलंबित)

स्थायी : बीत गई रैन सखी सगरी बिन चैन
मोरी पलक न लागी एक पलहु री।

अंतरा : कहाँ कल होवाये जिनके पिया परदेस
तरपत बीतत दिन रतिया री॥

स्थायी

,म, गरी(सा)- | नि – सांरीं | (सां) धप मंधनिसां -,धप | (ग) म ग |
,बी त गई ऽ | रै ऽ नस | खी सग रीऽऽऽ ऽ,बिन | चै ऽ न |
| × | २ | ० |

गमपप मगमगरी सा | गग -म पध | नि -धम -ध म,ध | नि ,सांरीं(सां)
मोऽऽऽ ऽऽ,ऽऽ री ऽ | पल ऽऽ कन | ला ऽऽ,गी ऽऽ ऽ,प | क,पल हु
३ | × | २ | ०

-नि,धपमं,ग,मंपधनिसां- -,मं,गरी(सा)- |
ऽऽ,रीऽऽ,ऽ,ऽऽऽऽऽऽ ऽ,बी तगई ऽ | ....इत्यादि
३

अंतरा

मग ,मध | नि सांरीं सां | निरीं गं रीं गंमंपंपं | मंगंमंगं रींसां नि,सांरीं
कहाँ कल | हो ऽवा ये | जिन के,पि याऽऽऽ | ऽऽऽऽ ऽऽ ऽ,पर
| × | २ | ०

(सां) – नि,धप -ध,पमं | गम ग – | निसा गम पध निध | म धनि सांरीं
दे ऽ ऽ,ऽऽ ऽऽ,ऽऽ | ऽऽस ऽ | तर पत बीऽ तत | ऽ दिन रति
३ | × | २ | ०

(सां),-नि, धपमं,गमंपधनि सां;मं,गरी(सा)- |
या,ऽऽ रीऽऽ,ऽऽऽऽऽ ऽ;बी तगई ऽ | इत्यादि स्थायी के अनुसार
३

राग त्रिवेणी-त्रिताल(मध्यलय)

स्थायीः तूवे अवतार लिये जग-तारन
राम कृष्ण घन नील सुन्दर दोऊ
कृपासिन्धु दुखियन हित कारन।

अंतराः उधऱ्यो पाथर चरण स्परश ते
ग्वाल बाल गोपी जन उधरे
कष्ट किये अत पतित उद्धारन॥

स्थायी

३	×	२	०
ग री सा –	री – सा, सा	सा प प ध	पगप गरी सा
तू वै औ ऽ	ता ऽ र, लि	ये ऽ ज ग	ताऽऽ रऽ न
नि रीं नि ध	प ध प प	री – री, ग	री री सा सा
रा ऽ म कृ	ऽ ष्ण घ न	नी ऽ ल, सु	न्द र दो ऊ
सा सा सां नि	ध प, री री	ग प ध प	ग री सा सा;
कृ पा ऽ सि	ऽ न्धु, दु खि	य न हि त	का ऽ र न;

अंतरा

३	×	२	०
री री सा –	सां – सां सां	सां सां सां सां	रीं नि ध प
उ ध ऱ्यो ऽ	पा ऽ थ र	च र ण प	र स ते ऽ
सां – रीं गं	पं गं रीं सां	सां – नि ध	रीं नि ध प
ग्वा ऽ ल बा	ऽ ल गो ऽ	पी ऽ ज न	उ ध रे ऽ

ग   म   नि   ग

री - ग प | प ध़ रीं नि | ध़ प ग,प | ग री सा सा;

क ऽ ष्ट कि | ये ऽ अ त | पू ति त,उ | द्धा ऽ र न;

३ | × | २ | ०

राग जैतश्री-स्तोत्र

(पूज्य बापूजी के निधन पर रचित)

असंख्यनरवीरशोणितसुधामृतस्नापितम् ।

त्वदंघ्रिकमलं शिरः कुसुमराशिभिः पूजितम् ॥

तदपिहि न तृप्यसे कथमपि प्रियां तेऽथवै ।

ददामि सहसान्तिमां भरत भूः स्वदेहाहुतिम् ॥

प   ऩि   सा ऩि

मंप ⌒ ध़ प मंग मं ग ग सागमंप ⌒ मंग मं ग रीसा ⌒ ऩि सा सागमंप ⌒

असं ⌒ ख्यन रऽ वी ऽ र शोऽऽऽ ⌒ ऽऽ णित सु धा ⌒ मृ त स्नाऽऽऽ ⌒

म   म   म

प ध़ ⌒ प | प नि - रीं नि ध़ प - मंग ⌒ मंगरी सा - ऩि सा - गमं प -

पि तं ⌒ ऽ | त्व दं ऽ घ्रि क म लं ऽ शिरः ⌒ कुसुम रा ऽ शि भिः ऽ पूऽ ऽऽ

म   प   नि

प ध़ - प - ‖ ध़ प - मं ग मं ध़ - प सां - , सां सां रीं सां - ध़ प - मं

जि तं ऽ ऽऽ ‖ त दा ऽ पि हि न तृ ऽ प्य से ऽ, क थ म पि ऽ प्रियां ऽऽ

सा   प

गमंपसां - सां गं रीं सां - | ऩि सा - ग मंप ध़ - प रीं नि ध़ प - ⌒

तेऽऽऽ ऽथ वै ऽ ऽ ऽ | द दा ऽ मि स ह सा ऽऽ न्ति मां ऽ ऽ ऽ ⌒

म

ग मं प सां - , नि ध़ - - - प - - मंग मं - गरी ⌒ सा ‖

भ र त भूः ऽ, स्व दे ऽ ऽ हा ऽ ऽ ऽऽ ऽ ऽ हु तिं ⌒ ऽ ‖

राग गौरी (पूर्वी थाट) – त्रिताल (मध्यलय)

स्थायीः दूर करो मुष्किलात मोरी
दोऊ जगकी आज मोरे पीर।

अंतराः आयो तोरे दरबार आज हूँ
'सुजन' कर जोर जोर ठौर ठौर
मदद करो अब बार बार मोरे पीर ॥

स्थायी

रीग
दूऽ

मंग(सा) – ध़	नि़ – सा सा	प पमं ध मं	ग री सा, री
ऽऽ र ऽ क	रो ऽ मु ष्	कि लाऽ ऽ त	मो ऽ री, दो
३	×	२	०
मं ध नि सां	रीं सां – सां	रीं नि ध पप	ग री सा; रीग
ऊ ज ग की	आ ऽ ऽ ज	मो ऽ ऽ रेऽ	पी ऽ र; दूऽ
३	×	२	०

अंतरा

धमं गरी सा, री	मं ध नि नि	सां – सां सां	– रीं सां –
आऽयोऽ ऽ, तो	रे ऽ द र	बा ऽ र आ	ऽज हूँ ऽ
०	३	×	२
धमं गरी सा, री	मं ध नि नि	सां – सां, रीं	– सां –, रीं
आऽ योऽ ऽ, तो	रे ऽ द र	बा ऽ र, आ	ऽ ज ऽ, सु
०	३	×	२
गं रीं सां सां	रीं नि ध, प	– प, ध मं	ग, री सा सा
जु न क र	जो ऽ र, जो	ऽ र, ठौ ऽ	र, ठौ ऽ र
०	३	×	२

ध़ नि़ सा प	प - ध प	मध नि ध, नि	प ग, ध प
म द द क	रो ऽ अ ब	बाऽ ऽ र, बा	ऽ र, मो रे
०	३	×	२

ग री सा; रीग	मग (सा) - ध़	नि़	
पी ऽ र; दऽ	ऽऽ र ऽ क	रो.....	इत्यादि स्थायी के अनुसार
०	३	×	

राग दीपक (पूर्वी थाट) - झपताल (मध्यलय)

स्थायी : देख कैसी सजी रंग रंगीली ज्योत
दीपन की अतही नैन सुखदायी।
अंतरा : लाल हारित पीत नील अरुन बरन
भाँत भाँत सोहात 'सुजन' मन भायी॥

स्थायी

री -	री सा -	नि़ सा	री सा -	नि़ री	सा, ग प	ग री	सा - सा
दे ऽ	ख कै ऽ	सी ऽ	स जी ऽ	रं ऽ	ग, रं ऽ	गी ली	ज्यो ऽ त
×	२	०	३	×	२	०	३
नि़ री	सा ग प	ध प	सां रीं सां	सां -	प ग प	ग प	ग री सा;
दी ऽ	प न ऽ	की ऽ	अ त ही	नै ऽ	न सु ख	दा ऽ	यी ऽ ऽ;
×	२	०	३	×	२	०	३

अंतरा

म ध	प, म ध	नि सां	रीं - सां	नि सां	गं पं, गं	पं गं	रीं सां सां
ला ऽ	ल, हा ऽ	रि त	पी ऽ त	नी ऽ	ल ऽ, अ	रु न	ब र न
×	२	०	३	×	२	०	३
नि रीं	सां प ग	ग प	ग री सा	नि़ री	सा, ग प	सां -	पप गरी सा
भाँ ऽ	त भाँ ऽ	त सो	हा ऽ त	सु ज	न, म न	भा ऽ	यीऽ ऽऽ ऽ
×	२	०	३	×	२	०	३

राग रेवा - लक्षणगीत - सूलताल (मध्यलय)

स्थायीः साँझ समे सुखकर रेवा रूप मधुर
पूरवि मेलहुं सों औडव बिन मनि सुर।

अंतराः अंरी गहे गंधार गप संग साधन कर
प्रति मूरत विभास चतुर 'सुजन' मनहर॥

स्थायी

सा			ऩि		ऩि		ग		
ग -	री सा	सा -	सा री	सा सा	सा री	ग -	प ग	प ग	री सा
साँ ऽ	झ स	मे ऽ	सु ख	क र	रे ऽ	वा ऽ	रू ऽ	प म	धु र
×	०	२	३	०	×	०	२	३	०
ऩि					ग		प		
सा -	ग ग	प -	प ध	प -	प -	ध प	ग प	ग री	सा सा
पू ऽ	र वि	मे ऽ	ल हुं	सों ऽ	औ ऽ	ड व	बि न	म नि	सु र
×	०	२	३	०	×	०	२	३	०

अंतरा

ग			प		नि		पं		
प -	प ध	प -	सां सां	- सां	सां सां	रीं सां	गं पं	गं रीं	सां सां
अं ऽ	श ग	हे ऽ	गं धा	ऽ र	ग प	सं ग	सा ऽ	ध न	क र
×	०	२	३	०	×	०	२	३	०
ऩि	प	प	प						
सा सा	ग -	प री	ग प	ध सां	रीं सां	ध प	ग प	ग री	सा सा
प्र ति	मू ऽ	र त	वि भा	ऽ स	च तु	र सु	ज न	म न	ह र
×	०	२	३	०	×	०	२	३	०

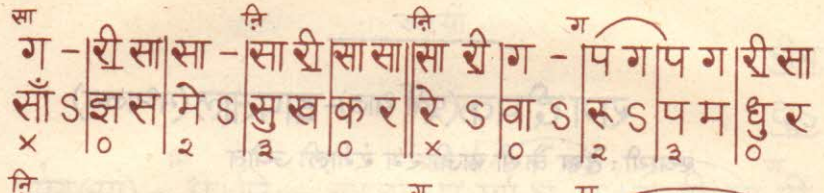

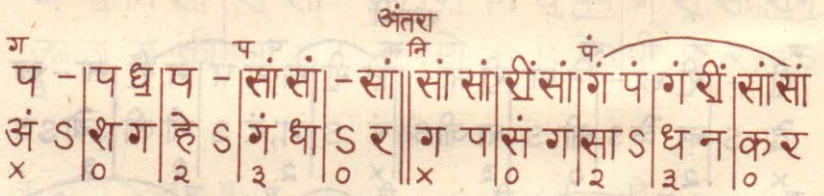

राग रेवा– त्रिताल (मध्यलय)

स्थायी : माई! लोगवा चर्चा करे
ऐसो निपट निठोर कान्ह
अब कौन जतन शरम राखूँ में।
अंतरा : कठिन भयो सखि पनघट को मग
जमुना तट पर ढीट लंगरवा
मग रोकत नित कासे कहूँ ॥

स्थायी

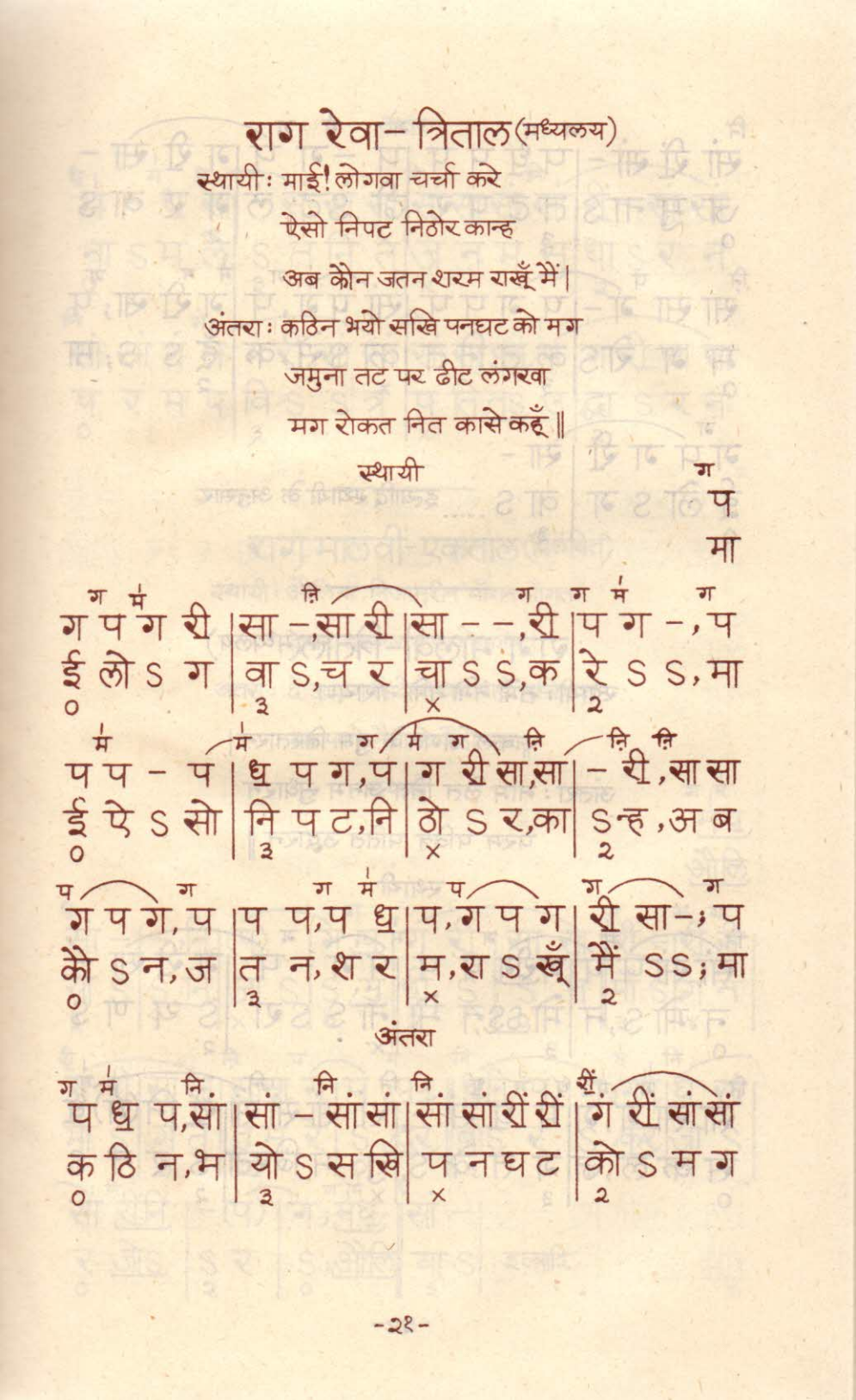

अंतरा

नि	ग मं	ग मं ग	
सां रीं सां -	प ध प प	प - ग प	ग री सा -
ज मु ना ऽ	त ट प र	ढी ऽ ट ले	ग र वा ऽ
0	3	×	2

नि प		प ग	मं ग ग
सा सा ग -	प ग प प	सां प ग, प	ग री सा; प
म ग रो ऽ	क त नि त	का ऽ से, क	हूँ ऽ ऽ; मा
0	3	×	2

ग	
ग प ग री	सा -
ई लो ऽ ग	वा ऽ ..... इत्यादि स्थायी के अनुसार
0	3

राग मालवी-त्रिताल (मध्यलय)

स्थायी : नमो नमो नमो नारायण

सकल जगत के तुम बिस्तारन।

अंतरा : नाम लेत नित जनम सुधारन

परम पवित्र पतित उद्धारन॥

स्थायी

नि मं	ग	मं ग	
सां सां प प	गरीग प प	प ग - प	ग री सा -
न मो ऽ, न	मोऽऽ,न मो	ना ऽ ऽ रा	ऽ य ण ऽ
0	3	×	2

नि	मं मं ध मं ध	नि नि नि	मं
सा सा ग, ग	मं ध सां -,	सां सां सां सां	रीं नि (मं) ध
स क ल, ज	ग त के ऽ,	तु म बिस्ता	ऽ र न ऽ
0	3	×	2

अंतरा

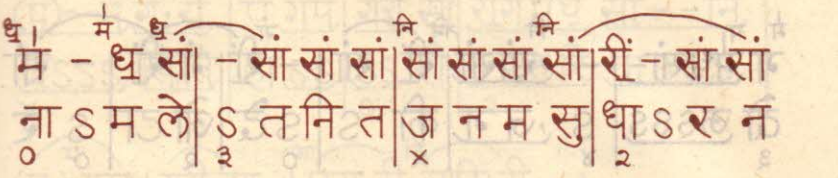

राग मालवी-एकताल (विलंबित)

स्थायी : औलिया निजामुद्दीन माँगन माँगत

तुमरे दरबार कर जोर जोर।

अंतरा : दोऊ जगकी देओ टार मोरी मुश्किलात

गह पकरे नैया ले जैहो पार॥

स्थायी

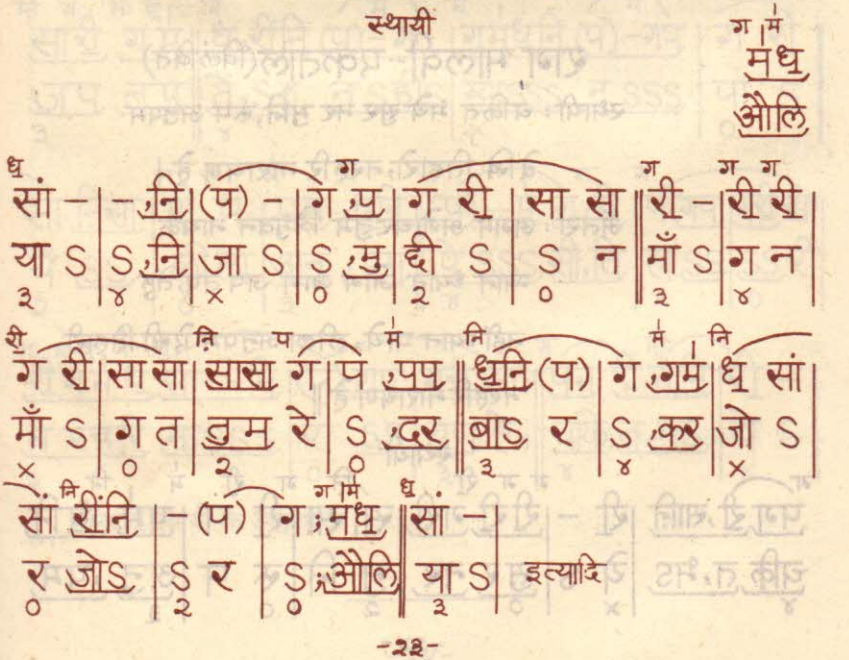

इत्यादि

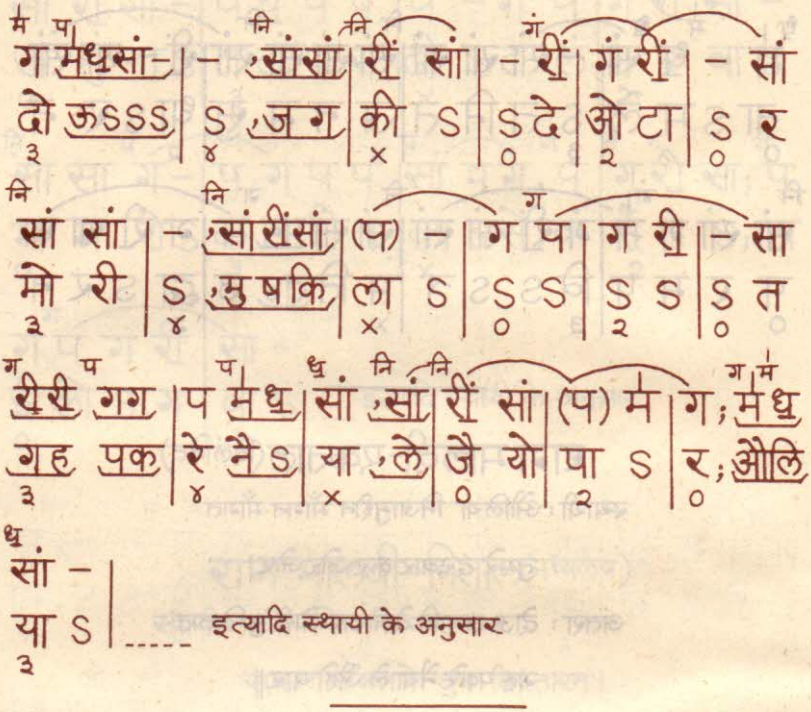

राग मालवी-एकताल (विलंबित)

स्थायी : चकित भये सुर नर मुनि, रूप अनुपम
देखि तिहारो, नरहरि नारायण हे।

अंतरा : अगम अगोचर तुम त्रिभुवन नायक
ग्यान ध्यान जोग जाग जप तप, तेंहु
नहीं ग्यान पाये, लीला अनुपम ऐसी तिहारी
नरहरि नारायण हे॥

स्थायी

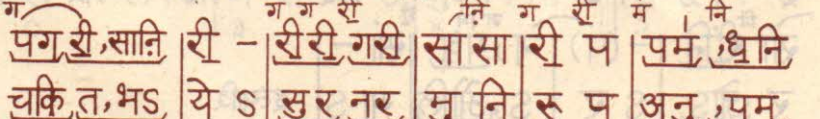

(प)--म ग,री | प गप | गरी सा | रीगमध सां--नि |
देSSS खि,ति | हा SS | SS री | नरहरि नाSSS |
४ | × | ० | २

(प) गप | गरी सा; || पग री,सानि | री - |
रा SS | यण हे; || चकित,भS | ये S | इत्यादि
० | ३ || ४ | ×

अंतरा

नि(प)-म ग,मध | सां - | सां सां | रीं सां | रींरीं रींरीं |
अगSS S,मअ | गो S | च र | तुम | त्रिभु वन |
४ | × | ० | २ | ०

गं--रीं || सां निसां | सां -नि | (प)--म गग | प गप | गरी सा |
नाSSय || क SS | ख्याSन | ध्याSSS Sन | जो Sग | जाS ग |
३ || ४ | × | ० | २ | ०

सारी गम || ध,रींनि (प)-ग- | गमधनि (प)-गप | ग री |
जप तप || तें,Sहु नSहींS | ख्याSSS नSSS | पा S |
३ || ४ | × | ०

सा निसा | री प | पम ,धनि || (प)--म ग,री | प गप | गरी सा |
ये SS | ली ला | अनु ,पम || पे SSS सी,ति | हा SS | SS री |
२ | ० | ३ || ४ | × | ०

रीगमध सां--नि | (प) गप | गरी सा; || पग री,सानि | री - |
नरहरि नाSSS | रा SS | यण हे; || चकित,भS | ये S |
२ | ० | ३ || ४ | ×

इत्यादि स्थायी के अनुसार

राग पूर्वी-वर्णम्-आदिताल

पल्लवी : वातात्मजोऽयं यात्याकाशे द्रुतातिद्रुतं।
रामदूतो लंकाधीश गर्वापहारी॥

अनुपल्लवी: दृष्ट्वाति भीषण विचित्राकृतिं।
दैत्यवीराः सर्वेऽपि भग्नाः विगलित धैर्याः॥

चरणम्: हा लंकेशाशुव्रज रामं शरणम्॥

पल्लवी

निरींनि,धृ	पर्म,पधृ	पर्म,गम	गरी,गर्म	प,धृप,र्म	धनि,धनि	ग,र्मधनि	धृपर्मधृ
वाऽऽ,ता	ऽत्म,जोऽ	ऽऽ,यंऽ	याऽ,त्याऽ	ऽ,काऽ,शे	ऽऽ,द्रुता	ऽ,तिऽऽ	द्रुतंऽऽ
×				२		३	
निरींगंर्मं	गं,रींसां,नि	धृपर्मग,	र्मधृर्म,धृ	निधृ,निरीं	नि,रींगंरीं	सां--,ग	र्मधृनिधृ
राऽऽऽ	म,दूऽ,तो	ऽऽऽऽ,	लंऽऽ,का	ऽऽ,धीऽ	ऽ,शगऽ	र्वाऽऽ,प	हाऽरीऽ
×				२		३	

अनुपल्लवी

निरींगं,रीं	सांनिधृर्म	धृनि--,	निरींगंर्मं	गंरीं,गंर्मं	पंर्मं,गंमं	गंरींगं,नि	रींनिधृप
दृऽऽ,ष्ट्वा	ऽऽऽऽ	तिभीऽऽ,	षणविचि	ऽत्रा,ऽऽ	ऽऽ,ऽऽ	ऽऽऽ,कृ	तिंऽऽऽ
×				२		३	
निधृपर्म	ग,धृपर्म,	गमगरी,	गर्मधृनि	रीं,रीगर्म	प--,ग	मगरी,ग	र्मधृनिरीं
दैऽऽऽ	ऽ,त्यवीऽ	राःऽऽऽ,	सऽऽर्वे	ऽ,पिभऽ	ग्नाऽऽ,वि	गलित,धै	ऽर्याःऽऽ
×				२		३	

मुक्तायंपू

ग---,	---,रे	गर्मपधृ	पर्म,धनि	रेंगंरें,नि	नि,धृधृ,प	प,र्मर्म,ग	ग,गमग,
×				२		३	
गमग,ग	मग,रेग	र्मपधृर्म,	धनिप,नि	रेंधृ,रेंगं	नि,गंर्मंरें	गं,निरेंधृ	नि,र्मधृग
×							
म,रेगनि	-,गर्मरे	-,र्मधृग	-,धृनिर्म	-,र्मंगंरें	सांनिधृप	र्मगरे,नि	रेगर्मधृ
×				२		३	

चरणम्

गं- - - --,मंपं मं,गंमंगं रींगंरींगं, | निरींगंमं गंरींसां- | -,मंधनि रींगंरींसां ||
हाऽऽऽ ऽऽ,लंऽ ऽ,केऽशा ऽऽऽऽ, | शुऽव्रज राऽमंऽ | ऽ,शरणं ऽऽऽऽ ||
× | 2 | 3

चिट्टस्वरम्

१. प--,म --,ग- -,रे-- -,गमध | नि--,रें गंमंगरें | सां--,ग मधनिरें ||
× | 2 | 3

२. रेंनि-,ध प-,मग -,रेसा-, निसारे,ग | मग-,म पध-,म | धनि-,ध निरेंगंमं ||
× | 2 | 3

३. निरेगम प-,रे- गमधनि रें-,ग- | मधनिरें गं--,म | गमगरे ग--,ध ||
× | 2 | 3
पधपम ध--,रें निरेंनि,ध निगं,मध | रें,गमनि, रें--,ग | --,म- -,धनिरें ||
× | 2 | 3

४. रेंनि-,ध पमगरे, धप-,म गरेसानि, | धनि-,रे गमधनि, | रेंगंमंगं, रेगमग, ||
× | 2 | 3
धनिरेंगं, गमधनि -,रेसानि, मगरे,ध | पम, निध प,रेंनिध, | गंरेंनि,मं गंरें-,नि ||
× | 2 | 3
-,ध-,प -,म-,ग -,म-,ध -,नि-, नि | रेगमप, रेगमप | ध,गमध नि,रेंगंरें ||
× | 2 | 3

राग मारवा-सरगम-त्रिताल(मध्यलय)

स्थायी

			ध म
ग रे सा,ऩि	रे ग म नि	ध -,म ध	म ग रे -,
0	3	×	2
रे ग म ग	रे सा,ऩि रे	ऩि ध़ म़ ध़	सा -,म ध
0	3	×	2
सां -, नि रें	- नि ध -,	रें -,रे ग	म नि; ध म
0	3	×	2

अंतरा

म ग रे सा,	ग म ध म	सां - -,सां	नि रें -, ध
0	3	×	2
नि रें गं मं	गं रें सां -,	गं रें नि ध	म,नि ध म
0	3	×	2
ग रे सा -,	ऩि रे -,रे	ग -,ग म	-,म ध -,
0	3	×	2
ध़ ऩि रे ग	म ध नि रें	नि ध म ग	रे सा; ध म
0	3	×	2

राग मारवा-लक्षणगीत-त्रिताल(मध्यलय)

स्थायीः मृदु रिखब गमधनि तीवर मेल मिलाये

मारवा राग बिन पंचम धरि समवादी वादी

नित मधुर।

अंतरा : तीजे पहर दिन गाये गुनीवर

धीरोद्धत गंभीर सुर उचार

आश्रय ललित भखार भटियार॥

स्थायी

री
मृ

सा ध मं ध,	ग मं ध नि	रीं – नि निध	मं ध मं ग
दु रि ख ब,	ग म ध नि	ती ऽ व रऽ	मे ऽ ल मि
०	३	×	२
री – सा, ऩि	री ऩि मं ध़	सा – सा, ऩि	री ग मं ग,
ला ऽ ये, मा	ऽ र वा ऽ	रा ऽ ग, बि	न पं च म,
०	३	×	२
री सा ऩि री	ग – ग मं	– मं, ध मं	ध मं ग; री
ध रि स म	वा ऽ दि वा	ऽ दि, नि त	म धु र; मृ
०	३	×	२

अंतरा

रीं – सां सां	सां सां सां सां	मं ध मं सां	सां – सां सां
ती ऽ जे प	ह र दि न	गा ऽ ये गु	नी ऽ व र
०	३	×	२
नि रीं गं मं	गं रीं सां –	नि रीं नि ध	मं ग री सा
धी ऽ रे ऽ	द्ध त गं ऽ	भी ऽ र सु	र उ चा र
०	३	×	२
री – ग ग	मं मं ध, ध	मं – ग, मं	ग री –री; सा
आ ऽ श्र य	ल लि त, भ	खा ऽ र, भ	टि या ऽर; मृ
०	३	×	२

राग मारवा - लक्षणगीत - त्रिताल (मध्यलय)

स्थायी : मृदु रिखब तीवर मध्यम निधग शुचि
सुरनसों मारुव मेल, तासों उपजत
मारवा राग सुखकर।

अंतरा : बिन पंचम षाडव जाति लसत
रिध संवाद चरम पहर दिन
गाये बजाये रिझाये गुनीवर॥

स्थायी

मं ध मं ग	री,नि री ग	मं – ध मं,	नि ध ग,मं
मृ दु रि ख	ब,ती व र	म Sध्य म,	नि ध ग,शु
०	३	×	२
ग री नि री	सा –,मं ध	सा सानि री –	सा, नि – री
चि सु र न	सों S,मा S	रु वS मेS	ल,ता S सों
०	३	×	२
ग ग मं ध	नि रीं नि मं	ध मं – ग,	मं ग री सा;
उ प ज त	मा S र वा	S रा S ग,	सु ख क र;
०	३	×	२

अंतरा

ग ग मं –	ध मं सां –	सां सां नि रीं	नि रीं नि ध
बि न पं S	च म षा S	ड व जा S	ति ल स त
०	३	×	२
ध नि रीं गं	मं गं रीं सां	नि नि रीं,रीं	नि रीं नि ध
रि ध सं S	वा S S द	च र म,प	ह र दि न
०	३	×	२

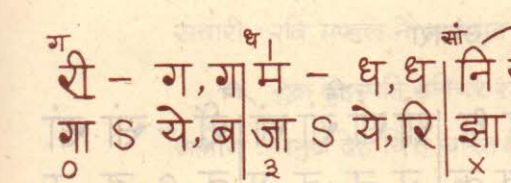

(ग)री - ग,ग	मं - (ध)ध,ध	नि (सां)रीं नि,ध	मं ग रीसा;
गा ऽ ये,ब	जा ऽ ये,रि	झा ऽ ये,गु	नी ऽ व र;
०	३	×	२

राग मारवा–त्रिताल(मध्यलय)

स्थायी : जदुपत कृष्ण जसोदा नंदन

श्यामसुंदर मनमोहन माधो

मुकुंद मुरारी मधुसूदन ।

अंतरा : दुखहरन सुखकरन जगवन्दन

सुमिरत नाम हरत भवबंधन

परब्रह्म परम पुरुख परमेश्वर

जोगी जाको ध्यान करत सुन रे 'सुजन' ॥

स्थायी

(सा)नि़ री ग मं	ध मं ध,मं	ग री (मं)ग मं	ग री सा सा
ज दु प त	कृ ऽ ष्ण,ज	सो ऽ दा ऽ	न ऽ न्द न
३	×	२	०
(सा)नि़ री नि़ (ध़)मं	मं (नि़)ध़ सासा	(सा)नि़ री ग मं	ग री सा,(नि़)सा
श्या ऽ म सु	न्द र म न	मो ऽ ह न	मा ऽ धो,मु
३	×	२	०
(सा)ध मं ध,ध	मंध निरीं निध मंग	रीसा निरी,ग (मं)मं	ग री सा सा;
कु ऽ न्द,मु	राऽ ऽऽ रीऽ ऽऽ	ऽऽ ऽऽ,म धु	सू ऽ द न;
३	×	२	०

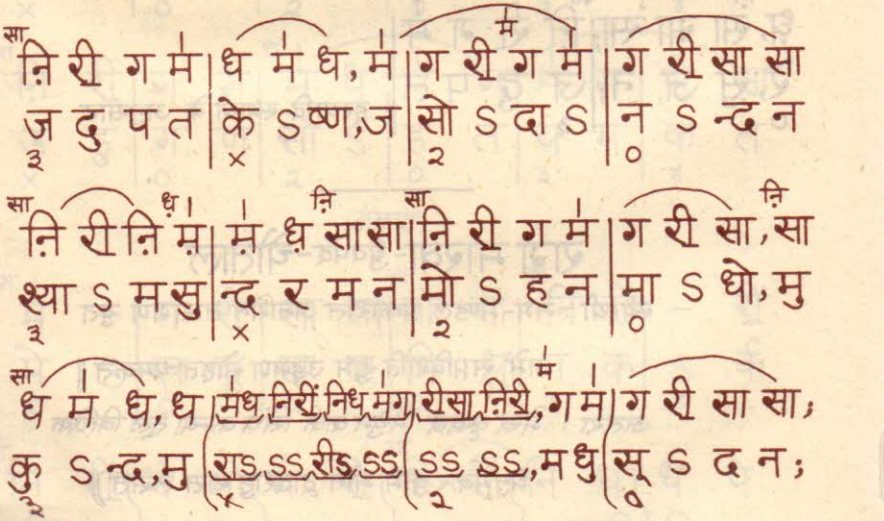

अंतरा

री री ग ग	मं, मं ध ध	सां सां सां सां	रीं - सां सां
दु ख ह र	न, सु ख क	र न, ज ग	व ऽ-द न
०	३	×	२
नि रीं गं मं	गं रीं सां, सां	नि रीं नि ध	मं ग ग ग
सु मि र त	ना ऽ म, ह	र त भ व	ब ऽ-ध न
०	३	×	२
मं री - ग	- ग, मं ग	री, ऩि री सा,	री री ग -
प र ऽ ब्र	ऽ ह्म, प र	म, पु रुख,	प र मे ऽ
०	३	×	२
मं ध, नि रीं	नि, ध मं ध,	मं ग मं, ग	री सा, म़ं म़ं
श्व र, जो ऽ	गि, जा ऽ को,	ध्या ऽ न, क	र त, सु न
०	३	×	२
ध़, सा सा सा;	ऩि री ग मं		
रे, सु ज न;	ज दु प त	इत्यादि स्थायी के अनुसार	
०	३		

राग मारवा-ध्रुवपद-चौताल

स्थायी : नभ-मण्डल प्रकाशत अनगिन तारागण युत
तामें सप्तविंशति शुभ उडुगण सोहत चमकत ॥

अंतरा : मेख वृखब मिथुन कर्क सिंघ कन्या तूल विच्छिक
धनुर्मकर कुंभ मीन द्वादशहु रास लसत ॥

संचारी : रवि मण्डल नौ ग्रह युत बुध मंगल पृथ्वी शशि
शुक्र बृहस्पति शनिचर राहू केतु उग्र चरित ॥

आभोग : मनुज देह चित्त चरित बरनत नौ ग्रह सब मिल
ज्योतिष फल शुभहु अशुभ ग्रह गति आधीन रहत ॥

स्थायी

(ध)रीं	रीं	रीं	–	सां	सां	(सां)नि	(नि)रीं	नि	ध	ध	ध
न	भ	म	ऽ	ण्ड	ल	प	र	का	ऽ	श	त
×		०		२		०		३		४	
(ध)म॑	ध	(सां)नि	(नि)रीं	नि	ध	(ध)म॑	ध	म॑	ग	री	सा
अ	न	गि	न	ता	ऽ	रा	ऽ	ग	ण	यु	त
×		०		२		०		३		४	
(सा)नि़	री	नि़	(ध़)म़॑	–	ध़	सा	–	(नि़)री	री	सा	सा
ता	ऽ	में	स	ऽ	प्त	विं	ऽ	श	ति	शु	भ
×		०		२		०		३		४	
(सा)नि़	री	ग	ग	(ध)म॑	ध	म॑	ग	म॑	ग	री	सा
उ	डु	ग	ण	सो	ऽ	ह	त	च	म	क	त
×		०		२		०		३		४	

अंतरा

(ग)म॑	–	ग	री	सा	सा	(सा)सां	सां	(सां)नि	रीं	–	रीं
मे	ऽ	ख	वृ	ख	ब	मि	शु	न	क	ऽ	र्क
×		०		२		०		३		४	
(सां)नि	रीं	गं	मं॑	गं	रीं	(सां)नि	रीं	नि	ध	ध	ध
सिं	घ	क	ऽ	न्या	ऽ	तू	ऽ	ल	वि	छि	क
×		०		२		०		३		४	

(नि)ध नि	- (गं)रीं	गं गं	मं गं	मं गं	रीं सां
ध नु	ऽ र्म	क र	कुं ऽ	भ मी	ऽ न
×	०	२	०	३	४
(ग)री -	ग ग	(ध)मं नि	ध मं	ग री	सा सा
द्रा ऽ	द श	हु ऽ	रा ऽ	स ल	स त
×	०	२	०	३	४

संचारी

(नि़)सा सा	(सा)ध -	ध ध	ध -	(ध)मं मं	ध ध
र वि	म ऽ	ष्ड ल	नो ऽ	ग्र ह	यु त
×	०	२	०	३	४
(ध)मं ध	(सां)नि रीं	नि ध	(ध)मं ध	(ध)मं -	ग ग
बु ध	मं ऽ	ग ल	पृ थि	वी ऽ	श शि
×	०	२	०	३	४
(ग)री -	ग, ग	(ध)मं ध	मं ग	मं ग	री सा
शु ऽ	क्र, बृ	ह ऽ	स्प ति	श नि	च र
×	०	२	०	३	४
(नि़)री -	री, (री)ग	- ग	(ध)मं -	मं (मं)ध	ध ध
रा ऽ	हु, के	ऽ तु	उ ऽ	ग्र च	रि त
×	०	२	०	३	४

आभोग

(ध)मं मं	ध सां	- सां	(नि)सां -	सां (नि)सां	सां सां
म नु	ज दे	ऽ ह	चि ऽ	त्त च	रि त
×	०	२	०	३	४

सां							सां	नि			
नि	नि	रीं	गं	रीं	-	सां	सां	नि	रीं	नि	ध
ब	र	न	त	नौ	S	ग्र	ह	स	ब	मि	ल
×		०		२		०		३		४	

सां						नि		ध			
मं	-	गं	मं	गं	रीं	सां	सां	मं	ध	सां	सां
ज्यो	S	ति	ष	फ	ल	शु	भ	हु	अ	शु	भ
×		०		२		०		३		४	

सां	नि			ध							
नि	रीं	नि	ध	मं	ध	मं	ग	मं	ग	री	सा
ग्र	ह	ग	ति	आ	S	धी	S	न	र	ह	त
×		०		२		०		३		४	

राग मारवा- वर्णम् - आदिताल

पल्लवी : कैलासोत्तुंगशृंगे ताण्डवम् भयावहमाचरत्येष रुद्रः ।

अनुपल्लवीः स्फुरद्धराधरणीतलम् क्षुब्धा जलधयः

प्रचण्डप्रलयाक्रान्तम् त्रिभुवनम् ॥

चरणम् : त्राहि देव महादेव प्रसीदेति प्रार्थयन्ति देवाः ॥

पल्लवी

ध--,मं	धमंगरी	सा-,रीं-	-गंरींसां	-,मंधनि	रींनि,मंध	मंनिध,ग	मंगरीसा
कैSS,ला	SSSसो	SS,त्तुंS	Sगशृंs	S,गेSS	SS,ताS	SSS,S	Sण्डवम्
×				२		३	
रीगमंध	मं,गमंध	निध,मंध	निरींगंरीं	सां,मंधमं	सां---,	रीगमंध	निधगमं
भयाSS	S,वहमा	SS, SS	चरSS	S,त्येSS	SSSS,	षरुSS	Sद्रःSS
×				२		३	

अनुपल्लवी

रीरी–,रीं रींनिरींनि रींनिध,म धसां–,रीं | निध–,री गमध– | –,गमध निरींगं–, ||
स्फुरऽ,द्र राऽऽऽ ऽऽऽ,ध रणीऽ,त | लंऽऽ,क्षु ऽऽब्धाऽ | ऽ,ऽऽज लधयःऽ, ||
× | 2 | 3

मंगंरींसां, रींनिध,म धमगरी, निरीगम | धनिरींगं –,रींसां,री | गमधनि रींनिधम ||
प्रचऽऽ ण्डऽऽ,प्र लयाऽऽ, क्राऽऽऽ | ऽऽऽन्तं ऽ,त्रिभु,व | नंऽऽऽ ऽऽऽऽ ||
× | 2 | 3

मुक्तायंपू

धमध,रे निरे,धम ध,रेनिग रे,मधनि | ध,निरेंगं रेंसां,सासां | रें,रेरेंगं,रेंनिधनि, ||
× | 2 | 3

मंगंरेंनि धमगरे निध,निरे –,गम–, | धनि–,रें गं–,रेंग | –,मध–, निरें–,सां ||
× | 2 | 3

मसां,मसां म,धमध मधम,नि धमगरे, | धमगरे सा,मगरे | निध,मध मसा–,म ||
× | 2 | 3

धमसां– –,रे––,ग––,म ––,ध– | –,नि––, रें––,नि | ध–,मग –,रेगम ||
× | 2 | 3

चरणम्

रीं-रीं,गं रींसां,मध सां,निरींनि ध,मगरी, | गमधनि रीं,रीगम | धनिधम ग,रीगम ||
त्राऽहि,दे ऽव,महा ऽ,देऽव ऽ,प्रसीऽ | देऽऽति ऽ,प्राऽर्थ | यऽन्तिदे ऽ,वाःऽऽ ||
× | 2 | 3

चिट्टस्वरम्

१. ध–म– ग– रे– ग–म– नि–ध– | –,रें –,सां––,नि | रे–,रेग –,मधम ||
× | 2 | 3

2. निरे–,ग मगरेग म––,ग मधनिरें | नि––,रें नि,निध,ध | म,मग,नि ध,धम,म ||
× | 2 | 3

ग,गरे,म ग,गरे,रे सा––,म,––ध– | –,सा––, निरेग,रे | गम,गम ध,मधनि ||
× | 2 | 3

३. मगरेसा -,मंगंरें सां--म धमसां-, | गंरेंगंरें नि,रेंनिरें | निध,निध निधमग ||
× | २ | ३

रे-,धम ग-,निध म-,रेंनि ध-,गंरें | नि-,मंगं रेंसां,निरें | निधमग रेसा,ऩिऩि ||
× | २ | ३

रेग-रे, गगमध -म,धध निरें-नि, | रें,धनि,म ध,गम,रे | गमधनि -रें--; ||
× | २ | ३

४. गमधरें -,मंधमं सां--,रे गरेध-, | धऩि- रे-ग- | म-ध- नि--,मं ||
× | २ | ३

गंरेंसां,रें निधमं,ध मंगरे,मं -मं,ध- | ध,रे-रे, ग-ग,म | -म,ध- ध,रेंनिरें ||
× | २ | ३

निरेंनि,ध मधम,ध मसां-,मं गनि-,ग | रेध-,रे ऩिम-,रे | ग,गम,म ध,धनि,नि ||
× | २ | ३

रें,रेंगं,गं मंगंरेंनि धमगरे, ऩि--,रे | --,ग- -,म--, | ध--,म धमसां-; ||
× | २ | ३

राग सोहनी-तिलवाडा (विलंबित)

स्थायी : लगन एक रहे राम नाम की प्यारे
और नाहीं लगन कछु काम की।

अंतरा : घरि पल बीतत लाख करोर की
जतन करो अब राम नाम सुख धाम की॥

स्थायी

म ध
निम
लग

ऩि, नि, नि, ध (कण स्वर)

ग,री -सा -,सा गमधनिसां- | रीं सां सां ,सां | (सां) ,निध नि ध |
न,प ऽक ऽ,र हेऽऽऽऽऽ | रा ऽ म ,ना | ऽ ,मऽ की ऽ |
३ | × | २

म – ग ,गम || नि ध मग ,म | ग री सा ,गग |
प्या ऽ रे ,और || ना ऽ हीं ऽ ,ल | ग ऽ न ,कछु |
० ३ ×

म धम धनि,ध निसां,रीं | (सां) ,निध नि,–ध; निध || म,ग, –री
का ऽऽ ऽऽ,ऽ ऽऽ,म | की ,ऽऽ ऽ,ऽऽ; लग || न,प, ऽक
२ ० ३

सा,सा गमधनिसां– |
ऽ,र हेऽऽऽऽऽ | इत्यादि

अंतरा

मध निसां | सां – निसां सांसां | सां रीं सां ,रीं | (सां) – ,निध निध
घरि पल | बी ऽ ऽऽ तत | ला ऽ ख ,क | रो ऽ ,रऽ कीऽ
× २ ०

धनि रींमं गंरीं सांसां | म ध – –म | ध नि –ध ,निसां | रीं(सां) निध
जत नक रोऽ अ– | रा ऽ ऽ ऽम | ना ऽ ऽम ,सुख | धाऽ मऽ
३ × २ ०

नि,–ध ; निम || ग,री –सा सा,सा गमधनिसां– | इत्यादि स्थायी के अनुसार
की,ऽऽ; लग || न,प ऽक ऽ,र हेऽऽऽऽऽ |
३

राग सोहनी - तिलवाडा (विलंबित)

स्थायीः नैना निरखी छवी सुन्दर सलोनी प्यारी वाकी
मन मेरो लुभाई गयो आली री।

अंतराः कछु नहीं सूझ बूझ काहू की अब
उड़ गई नींद, रैन दिन ना चैन,
लगन लगी ऐसी आली री ॥

स्थायी

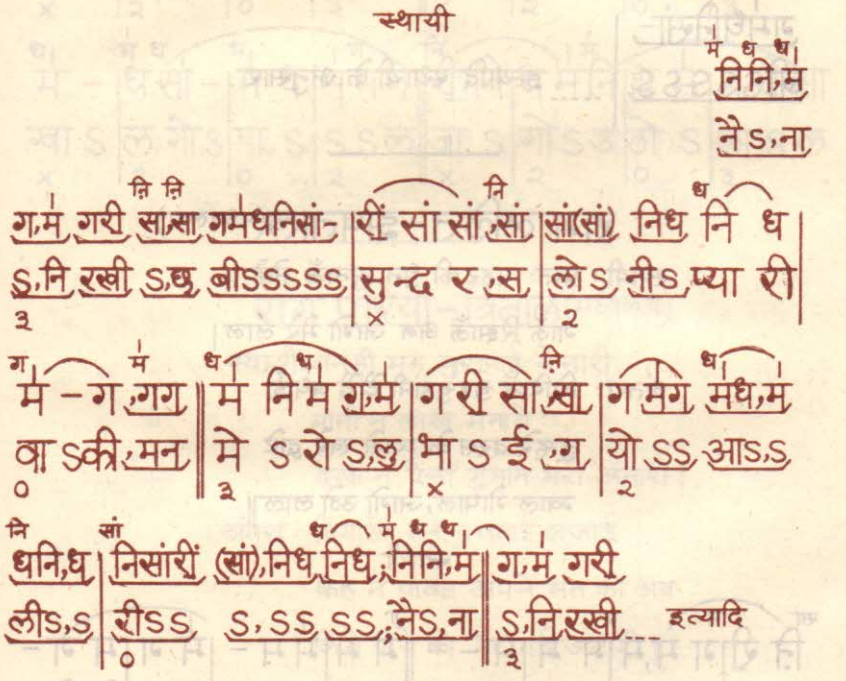

अंतरा

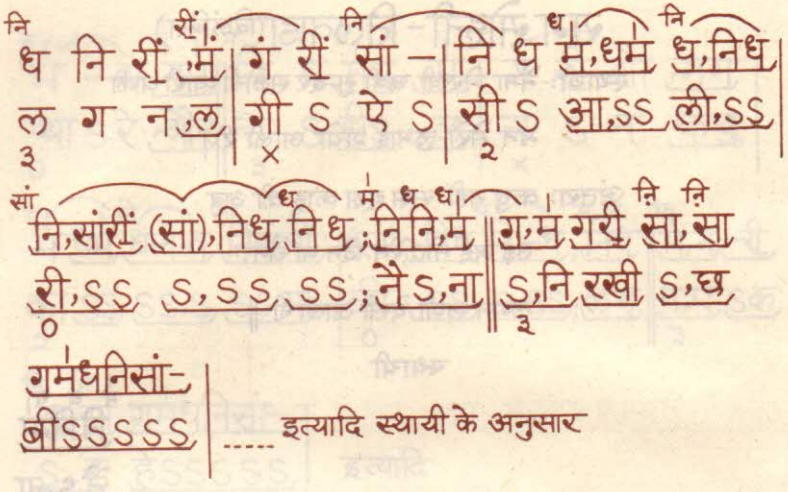

ध नि रीं मं	गं रीं सां –	नि ध म,धमं ध,निध	
ल ग न,ल	गी ऽ ऐ ऽ	सी ऽ आ,ऽऽ ली,ऽऽ	
३	×	२	

नि,सांरीं (सां),निध निध ; निनि,मं	ग,मं गरी सा,सा
री,ऽऽ ऽ,ऽऽ ऽऽ ; नैऽ,ना	ऽ,नि रखी ऽ,घ
०	३

गमंधनिसां–	
बीऽऽऽऽऽ	----- इत्यादि स्थायी के अनुसार

राग ललित–झपताल(मध्यलय)

स्थायी : प्रातः प्रहर की धुन सुनाऊँ तोहे

गाऊँ रिझाऊँ अब जागो मेरे लाल।

अंतरा : चिरियाँ चुहचुहानी दै दै बधाई

तुम्हरे दरस के प्यासे खरे द्वारे

ग्वाल गोपाल, जागो उठो लाल॥

स्थायी

ऩि री	ग म,म	म म	म – –	म म	मं म –	मं ग	म ग –
प्रा ऽ	त ऽ,प	ह र	की ऽऽ	धु न	सु ना ऽ	ऊँ ऽ	तो हे ऽ
×	२	०	३	×	२	०	३
ग –	मं ध मं	धनिसां सां	सां रीं सां	नि रीं	नि ध नि	मं ध	मं गमं ग
गा ऽ	ऊँ ऽ रि	झाऽ ऽ	ऊँ अ ब	जा ऽ	गो ऽ मे	रे ऽ	ला ऽऽ ल
×	२	०	३	×	२	०	३

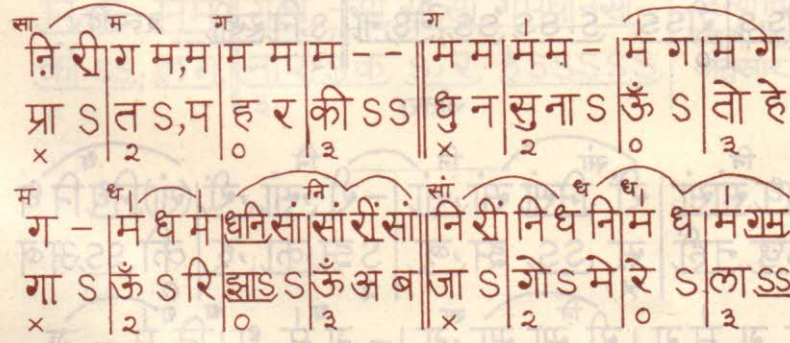

अंतरा

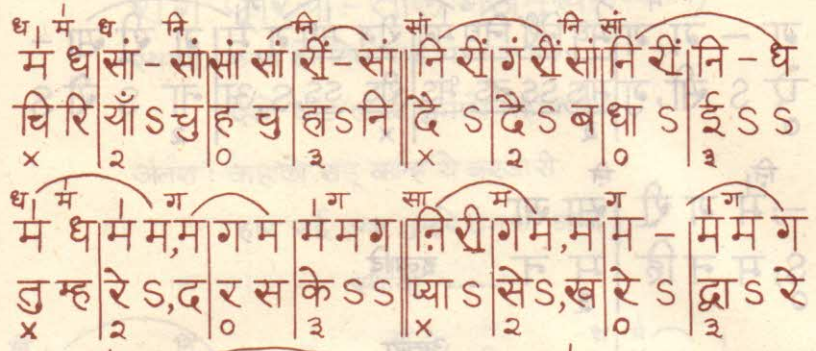

मं ध	सां - सां	सां सां	रीं - सां	नि रीं	गं रीं सां	नि रीं	नि - ध
चि रि	याँ ऽ चु	ह चु	हा ऽ नि	दै ऽ	दै ऽ ब	धा ऽ	ई ऽ ऽ
×	२	०	३	×	२	०	३
म ध	म म,म	ग म	म म ग	ऩि री	ग म,म	म -	म म ग
तु म्ह	रे ऽ,द	र स	के ऽ ऽ	प्या ऽ	से ऽ,ख	रे ऽ	द्वा ऽ रे
×	२	०	३	×	२	०	३
म -	ध सां -	म ध	म म ग	रीं नि	ध म नि	ध म	ग री सा
खा ऽ	ल गो ऽ	पा ऽ	ऽ ऽ ल	जा ऽ	गो ऽ उ	ठो ऽ	ला ऽ ल
×	२	०	३	×	२	०	३

राग पूरिया – त्रिताल (मध्यलय)

स्थायी: मन ही मन मुरझाई ये नारी
मानी न लाख मनाये
देखी न ऐसी गुमान भरी अनारी।

अंतरा : पियासों लर पछताई लजाई
कह न पावत अपने मन की अब
लिये दिये को भरपाई अनारी॥

स्थायी

,म ग री	सा सा ऩि ध़	ऩि - ऩि,री	ग - म ध
,म न हि	म न मु र	झा ऽ ई, ये	ना ऽ री ऽ
	३	×	२
ग,नि ध नि	म - ग,म	ग री सा -	-,ऩि ऩि री
ऽ,मा नी न	ला ऽ ख,म	ना ऽ ये ऽ	ऽ,दे खी न
०	३	×	२

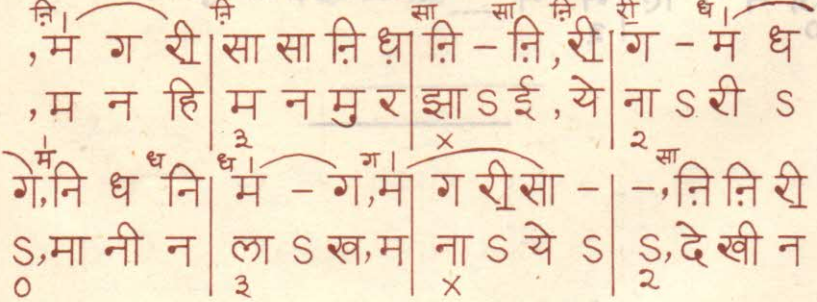

ग – ग,ग | मध निरें निध मग | रीग मध ग,म | ग री सा –
ऐ ऽ सी,ग | माऽ ऽऽ नऽ भऽ | रीऽ ऽऽ ऽ,अ | ना ऽ री ऽ
0 | 3 | × | 2

–; म ग री | सा सा
ऽ; म न हि | म न ----- इत्यादि
0 | 3

अंतरा

, म म ग | म म ध ध | सां – सां,सां | सां रीं सां –
, पि या सों | ल र प छ | ता ऽ ई,ल | जा ऽ ई ऽ
 | 3 | × | 2

–,सां सां सां | नि रीं निध नि | म मध ग म | – म ग ग
ऽ,क [illegible] न | पा ऽ वऽ त | अ पऽ ने मन | ऽ की अ ब
0 | 3 | × | 2

–,ऩि ऩि रीग | गम मध धरीं नि | म ध ग,म | ग री सा –
ऽ,लि ये दिऽ | येऽ कोऽ भऽ र | पा ऽ ई,अ | ना ऽ री ऽ
0 | 3 | × | 2

–; म ग री | सा सा
ऽ; म न हि | म न ----- इत्यादि स्थायी के अनुसार
0 | 3

राग पूरिया - ताल गजमुख(मध्यलय)

स्थायी : करत हो नित रार पनघट पर
ऐसो धीट लंगर तुमको नहीं लाज।

अंतरा : कहालों सह् कान्ह ये बरजोरी
हार गई अब तुम्हरे ढंग सों आज ॥

स्थायी

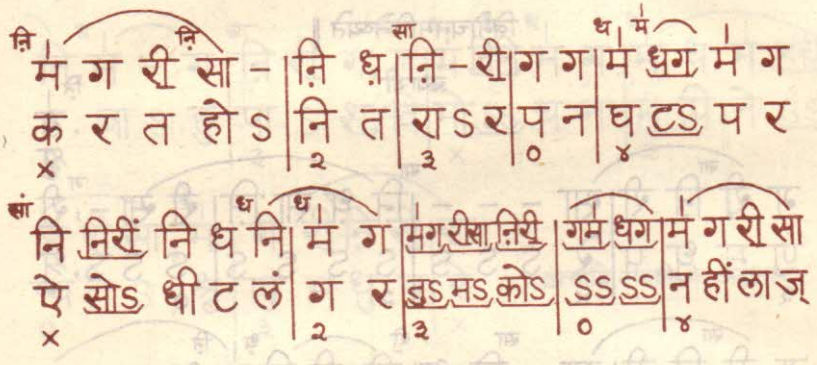

अंतरा

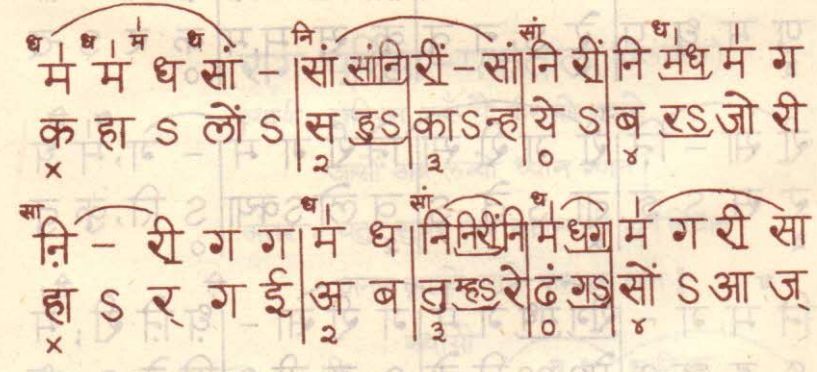

राग पूरिया–त्रिताल (मध्यलय)

(संस्कृत में रचित)

स्थायी : श्रृणु मधुप रे! नवकुसुममकरन्द
रसज्ञतातेवलोक्यातिकुतुहलप्रेरितोब्रवीमिते।

अंतरा : कुतआसादितेदृशीरसिकता यदसिमधुपानमग्नो
न किंचिदपिविचारयसिदयिता बाहुपाश
विमोचनमपिनेष्यते॥

स्थायी

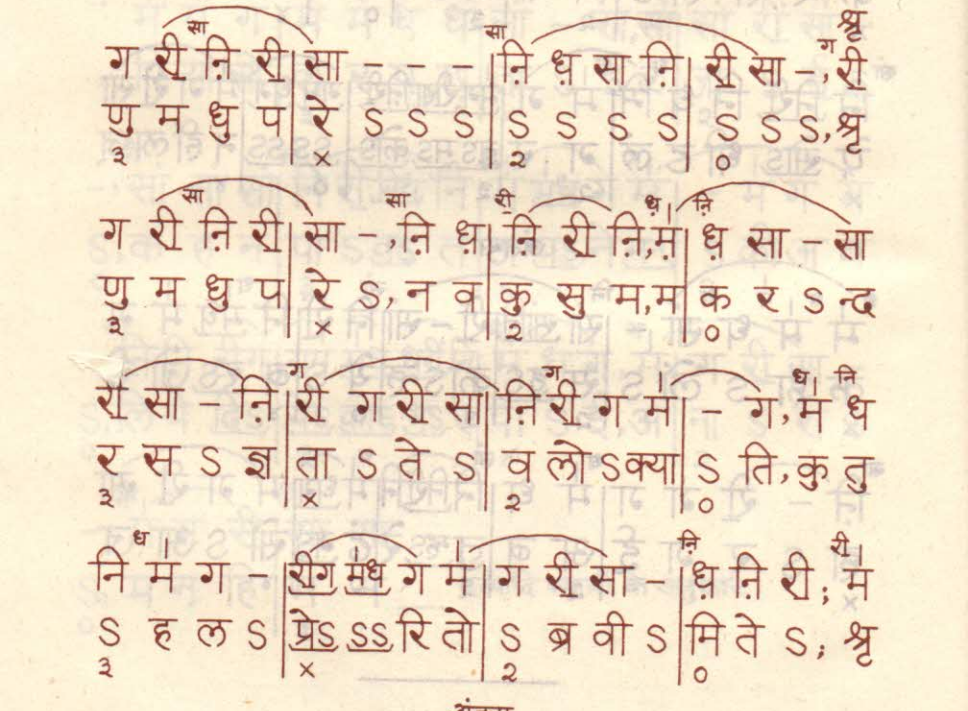

अंतरा

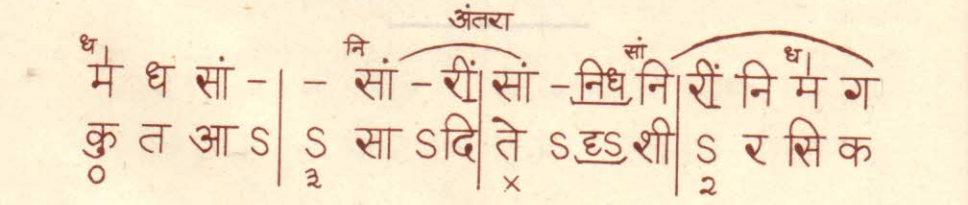

इत्यादि स्थायी के अनुसार

राग पूरिया-एकताल (विलंबित)

स्थायीः सुमिरन करूँ मैं पीर को अपने
जासों अब लग्यो ध्यान ग्यान |

अंतराः चतुर सुघर ऐसो महाग्यानी गुन निधान
अनत कृपातें साधे राग रस तान ||

स्थायी

अंतरा

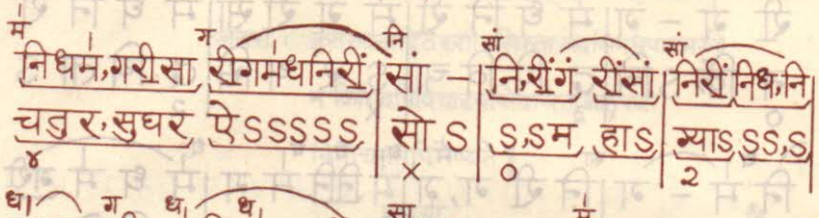

इत्यादि स्थायी के अनुसार

राग पूर्वकल्याण– त्रिताल(मध्यलय)

स्थायीः धन धन भाग जागे आज मेरे
आगम भयो पी को आली री।

अंतराः गूँध लावोरी मालनियाँ सरस सुगंधित
हरवा डारूँ गरवा पीत जताऊँ
पी सों आली री ॥

स्थायी

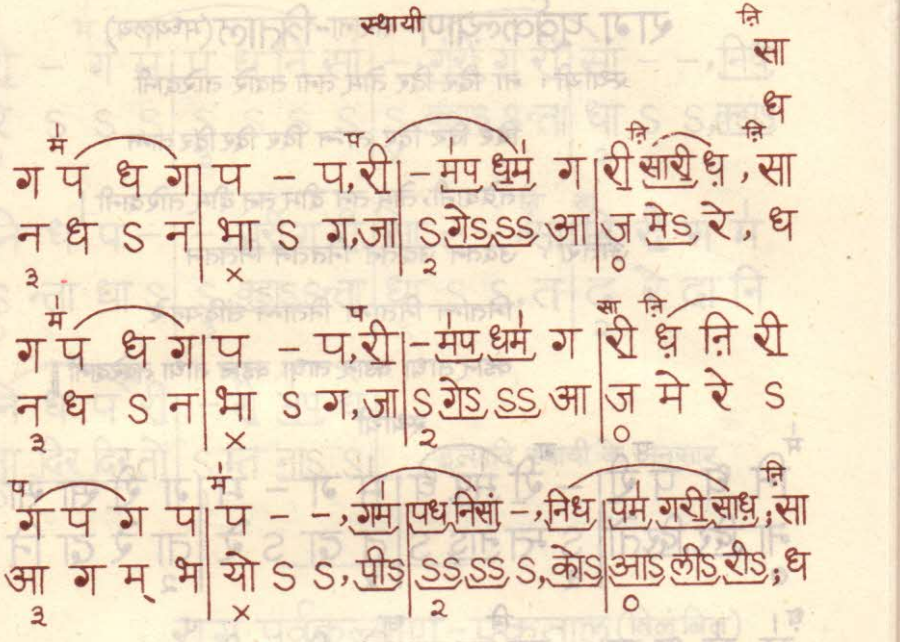

ग प ध ग | प - प,री | -मंप धमं ग | री सारी धृ, सा
न ध ऽ न | भा ऽ ग,जा | ऽ गेऽ ऽऽ आ | ज मेऽ रे, ध
३ | × | २ | ०

ग प ध ग | प - प,री | -मंप धमं ग | री धृ नि़ री
न ध ऽ न | भा ऽ ग,जा | ऽ गेऽ ऽऽ आ | ज मे रे ऽ
३ | × | २ | ०

ग प ग प | प - -,गमं | पध निसां -,निध | पमं गरी साधृ ;सा
आ ग म् भ | यो ऽ ऽ,पीऽ | ऽऽ ऽऽ ऽ,कोऽ | आऽ लीऽ रीऽ ; ध
३ | × | २ | ०

अंतरा

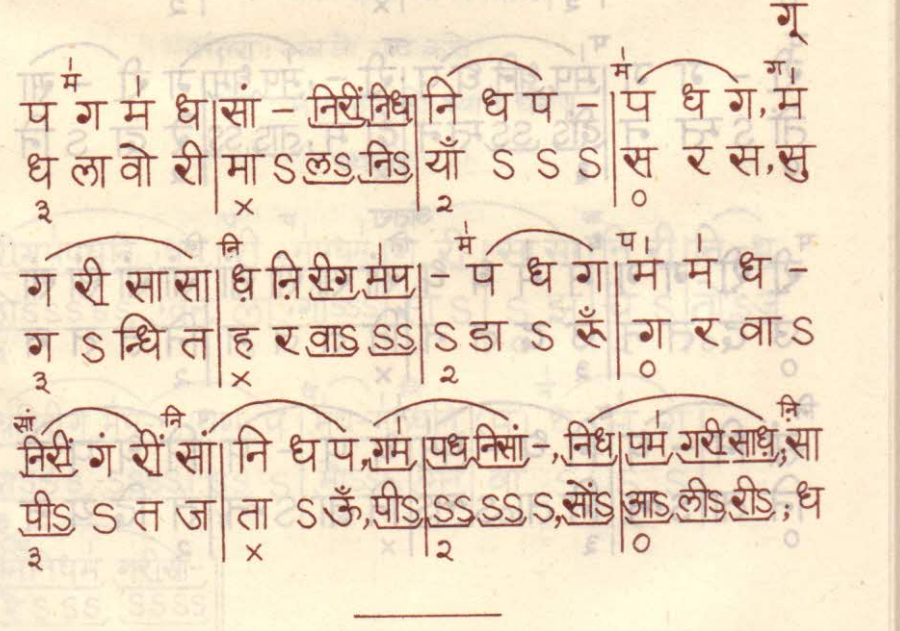

ध गूँ

प ग मं ध | सां - निरीं निध | नि ध प - | प ध ग,मं
ध ला वो री | मा ऽ लऽ निऽ | याँ ऽ ऽ ऽ | स र स,सु
३ | × | २ | ०

ग री सा सा | धृ नि़ रीग मंप | - प ध ग | मं मं ध -
ग ऽ न्धि त | ह र वाऽ ऽऽ | ऽ डा ऽ रूँ | ग र वा ऽ
३ | × | २ | ०

निरीं गं रीं सां | नि ध प,गमं | पध निसां -,निध | पमं गरी साधृ;सा
पीऽ ऽ त ज | ता ऽ ऊँ,पीऽ | ऽऽ ऽऽ ऽ,सोंऽ | आऽ लीऽ रीऽ ; ध
३ | × | २ | ०

राग पूर्वकल्याण- तराना-त्रिताल (मध्यलय)

स्थायी : ना दिर दिर तोम् तना तदारे तारेदानी

दिर दिर दिर तान्न दिर दिर दिर तान्न

तद्रेदानी, तोम् तन दीम् तन दीम् तारेदानी |

अंतरा : उदतन उदतन निततन निततन

नितान्न नितान्न नितान्न तदियनरे

वडान् ताधा वडान् ताधा वडान ताधा तदेरदानी ||

स्थायी

(म)नि ध (प)प री	- (ग)री मप ध	म ग - म	ग री सा सा
ना दिर दिर तों	ऽ न्त नाऽ ऽ	त दा ऽ रे	ता रे दा नि
0	3	x	2
(ध)म़ म़ ध़ सा	- सा, सा (सा)सा	(रि)नि़ री - री,	(प)ग ग प प
दिर दिर दिर ता	ऽ न्न, दिर दिर	दिर ता ऽ न्न,	त द्रे दा नि
0	3	x	2
(प)री - ग ग	(प)मप धनि ध प	(प)री -, मप धम	ग री - सा
तों ऽ म्त न	दींऽ ऽऽ म्त न	दी म्, ताऽ ऽऽ	रे दा ऽ नि
0	3	x	2

अंतरा

(प)री री ग ग	(ध)म म ध ध	(नि)सां सां सां सां	(नि)सां सां सां सां
उ द त न	उ द त न	नि त त न	नि त त न
0	3	x	2
(नि)सां नि - ध	(ध)नि ध - धम	(म)ध प - प	(प)नि ध प प
नि ता ऽ न्न	नि ता ऽ न्नऽ	नि ता ऽ न्न	त दि य न
0	3	x	2

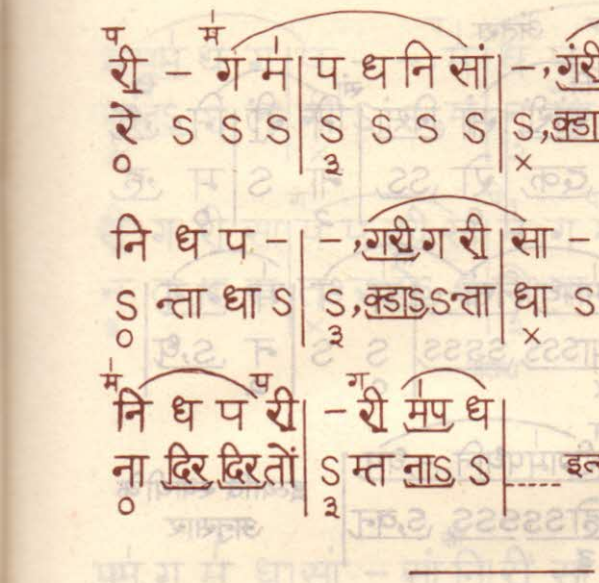

राग पूर्वकल्याण–एकताल (विलंबित)

स्थायी : होवन लागी साँझ

चेतो ज़रा मो मनवा रे |

अंतरा : अब तो याद करो

नाम हरी को ध्यान धरे ||

स्थायी

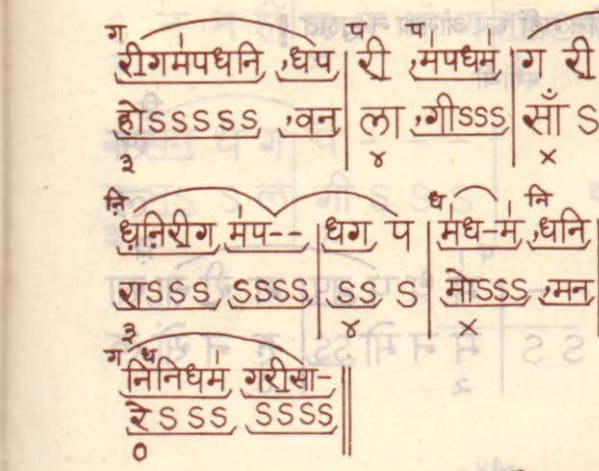

अंतरा

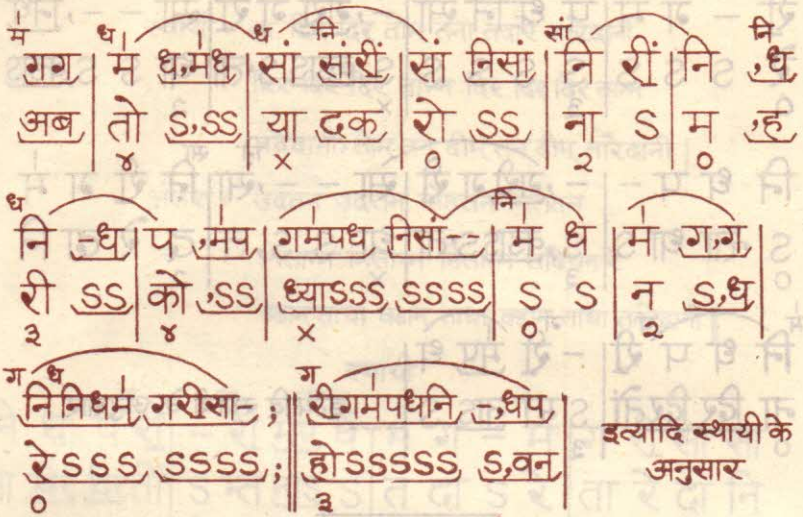

राग बरारी–त्रिताल(मध्यलय)

स्थायी : लगन लगी मनमोहन सों

बिन दरस तरसे जिया अकुलात |

अंतरा : छब सुन्दर श्याम बरन रसीली

मन बसी, ध्यान लगत रैन दिन

चैन नहीं घर आंगना न सुहात ‖

स्थायी

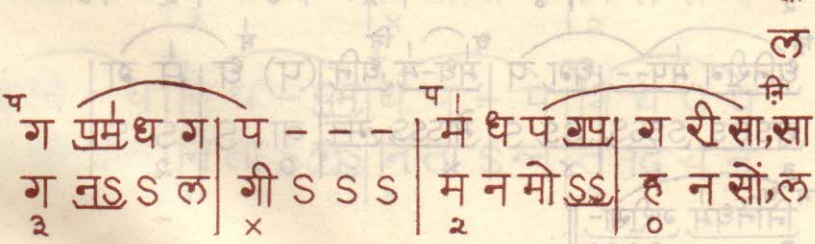

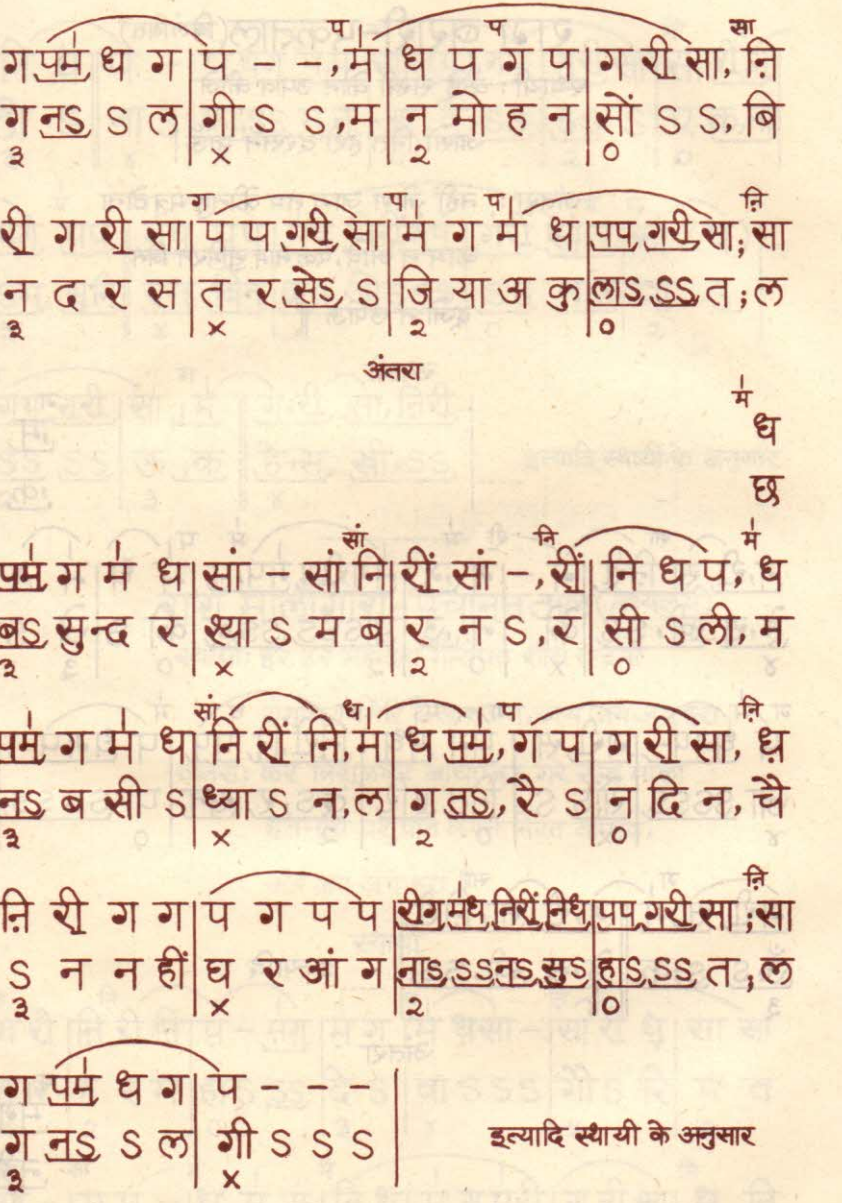

ग पम॑ ध ग	प – –, म॑	ध प ग प	ग री सा, ऩि
ग नऽ ऽ ल	गी ऽ ऽ, म	न मो ह न	सों ऽ ऽ, बि
३	×	२	०

री ग री सा	प प गरी सा	म॑ ग म॑ ध	पप गरी सा; सा
न द र स	त र सेऽ ऽ	जि या अ कु	लाऽ ऽऽ त; ल
३	×	२	०

अंतरा

ध (म॑)

छ

पम॑ ग म॑ ध	सां – सां नि	रीं सां –, रीं	नि ध प, ध
बऽ सुन्द र	श्या ऽ म ब	र न ऽ, र	सी ऽ ली, म
३	×	२	०

पम॑ ग म॑ ध	नि रीं नि, म॑	ध पम॑, ग प	ग री सा, ध़
नऽ ब सी ऽ	ध्या ऽ न, ल	ग तऽ, रै ऽ	न दि न, चै
३	×	२	०

ऩि री ग ग	प ग प प	रीग म॑ध निरीं निध	पप गरी सा; सा
ऽ न न हीं	घ र आं ग	नाऽ ऽऽ नऽ सुऽ	हाऽ ऽऽ त, ल
३	×	२	०

ग पम॑ ध ग	प – – –
ग नऽ ऽ ल	गी ऽ ऽ ऽ
३	×

इत्यादि स्थायी के अनुसार

राग बरारी-एकताल(विलंबित)

स्थायी : कहे सखी कौन उपाव कीजे
जासों नित हरी दरसन पाऊँ|

अंतरा : नहीं जोग जाग तप कौनहु मंत्र टोना
काम न आवे, एक नाम सुमिरन बिन
दूजो न उपाऊ ‖

स्थायी

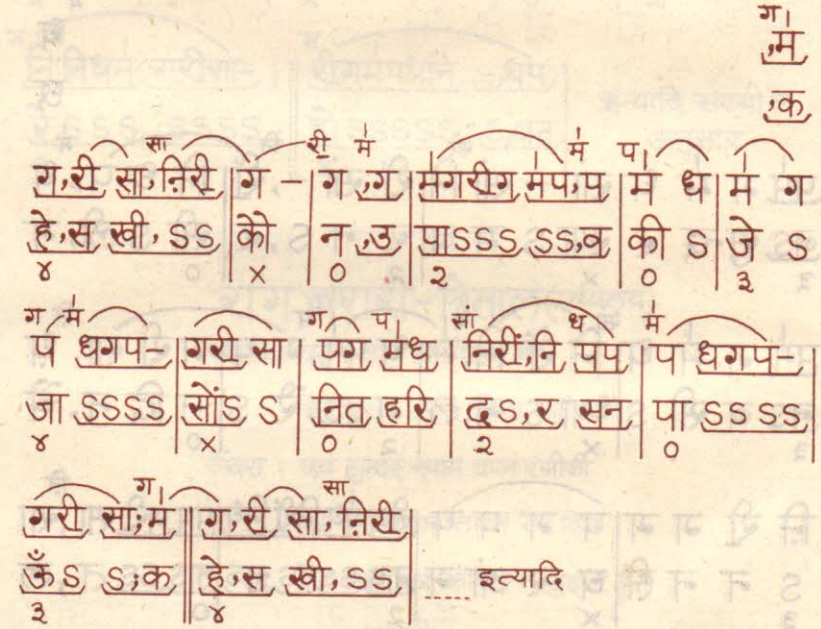

अंतरा

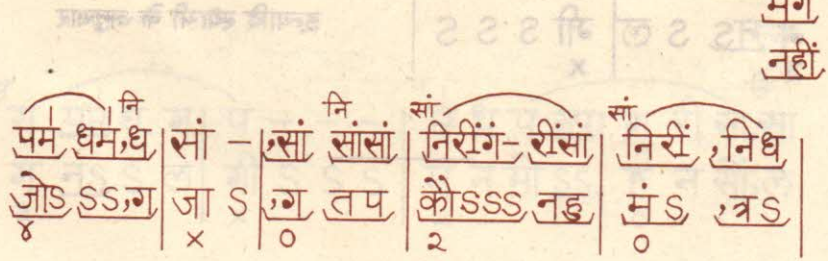

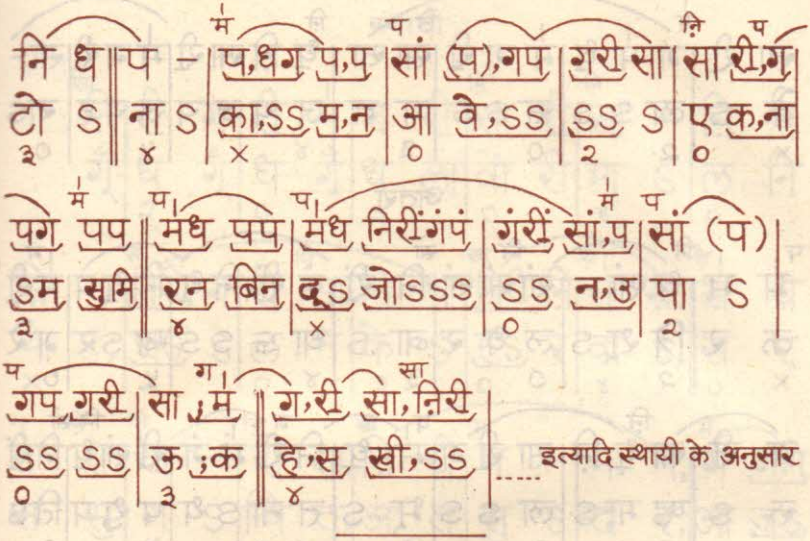

राग मालीगोरा-पंचानन ताल (मध्यलय)

स्थायी: हर हर महादेवा गौरीपत शीश चन्द्रमा
गंगाधर गिरि कैलासपत, जय जय जय हरा |

अंतरा: कर त्रिशूलधर बाघाम्बर गरे रुण्ड माला
भूतनाथ पशुपति करत निरत ताण्डव,
जय जय जय हरा ||

स्थायी

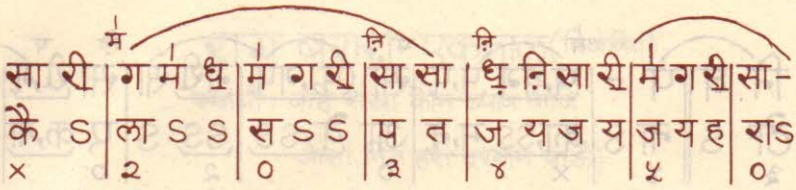

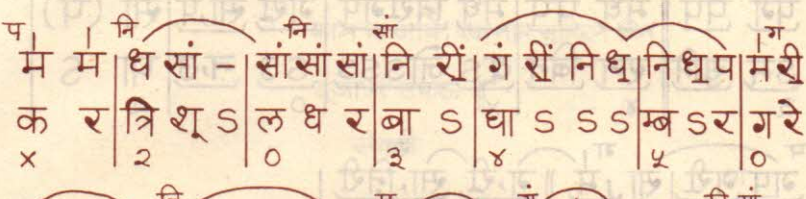

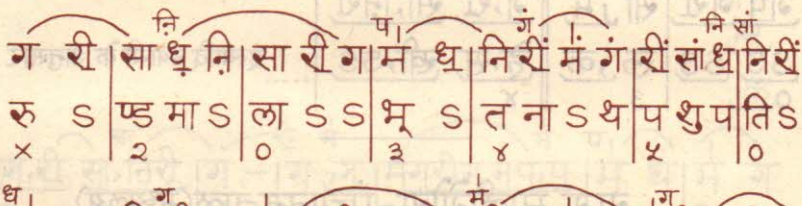

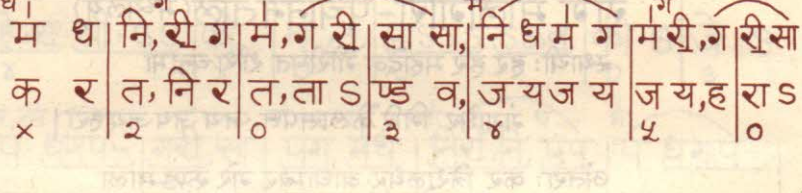

(कण)	मं	ऩि	ऩि			
सा री	ग मं ध	मं ग री	सा सा	ध़ ऩि सा री	मं ग री	सा -
कै ऽ	ला ऽ ऽ	स ऽ ऽ	प त	ज य ज य	ज य ह	राऽ
×	२	०	३	४	५	०

अंतरा

(कण) प	नि	नि	सां			ग
मं मं	ध सां -	सां सां सां	नि रीं	गं रीं नि ध	नि ध प	मं री
क र	त्रि शू ऽ	ल ध र	बा ऽ	घा ऽ ऽ ऽ	म्ब ऽ र	ग रे
×	२	०	३	४	५	०

(कण)	ऩि		प	गं		नि सां
ग री	सा ध़ ऩि	सा री ग	मं ध	नि रीं मं गं	रीं सां ध	नि रीं
रु ऽ	ण्ड मा ऽ	ला ऽ ऽ	भू ऽ	त ना ऽ थ	प शु प	ति ऽ
×	२	०	३	४	५	०

(कण) ध	ग			मं	ग	
मं ध	नि, री ग	मं, ग री	सा सा,	नि ध मं ग	मं री, ग	री सा
क र	त, नि र	त, ता ऽ	ण्ड व,	ज य ज य	ज य, ह	रा ऽ
×	२	०	३	४	५	०

राग साज़गिरी - आड़ाचौताल (मध्यलय)

स्थायी : गूँध गूँध गूँध लावोरी मालनिया
फूलन के हरवा सरस सुगंधित अत सुंदर
आज घर आये मोरा पिया प्यारा।

अंतरा : सज सोलह सिंगार सजनी अब
अपने बालमसों मिलबे को जाऊँ
गरवा लागूँ वार डारूँ तन मन धन
मोरा पिया प्यारा ॥

स्थायी

नि़	री ग	री म	ग री	सा री	सा -	नि़ ध़
गूँ	ध गूँ	ध गूँ	ध ला	वो री	मा ऽ	ल नि
	२	०	३	०	४	०

नि़ -,	नि़री ग	री सा	नि़ ध़	नि़री नि़	म़ ग़,	म़ ध़
या ऽ,	फूऽ ऽ	ल न	के ऽ	हऽ र	वा ऽ,	स र
×	२	०	३	०	४	०

म़ ध़	सा -	री सा,	नि़ री	म -	म म,	ग गनि
स सु	ग ऽ	न्धि त,	अ त	सु ऽ	न्द र,	आ जऽ
×	२	०	३	०	४	०

नि निध	म मध	म ग	नि़री गम	ध ग	-, म	ग री
घ रऽ	आ येऽ	मो रा	पिऽ ऽऽ	ऽ या	ऽ, प्या	ऽ र
×	२	०	३	०	४	०

सा; नि़	री ग	री म	ग
ऽ; गूँ	ध गूँ	ध गूँ	ध ----- इत्यादि
×	२	०	३

अंतरा

सा सा	प प	प प	प -	प प	म ध	रीं निध
स ज	सो ल	हु सिं	गा ऽ	र स	ज नी	अ बऽ
×	२	०	३	०	४	०

नि ध	प प	ध ग	मग नि	ध म	ग री	- सा
अ प	ने बा	ल म	सोंऽ मि	ल बे	को जा	ऽ ॐ
×	२	०	३	०	४	०

सा ध़ नि़ ग ग म
नि निरी | नि म़ | - ध़ | सा - | री म | - म | ग गनि
ग रऽ | वा ला | ऽ गूँ | वा ऽ | र डा | ऽ रूँ | त नऽ
× 2 0 3 0 ४ 0

ध सा ध ग
नि निध | म मध | म ग | निरी गम | ध ग | - ,म | ग री
म नऽ | ध नऽ | मो रा | पिऽ ऽऽ | ऽ या | ऽ ,प्या | ऽ रा
× 2 0 3 0 ४ 0

सा
सा; नि़ | री ग | री म | ग
ऽ; गूँ | ध गूँ | ध गूँ | ध ..... इत्यादि स्थायी के अनुसार
× 2 0 3

राग साज़गिरी-तराना-त्रिताल(मध्यलय)

स्थायी: दिर तन दिर तन दिर तनोम् तदीम् दीम्
दिर दिर तननन दिर दिर दिर दिर दिर तारेदानी।

अंतरा: उदानि दानि तदानी दीम् तदीम् दीम्
दिर दिर दिर दिर दिर दिर तोम्,ना दिर दिर दानी
तुं दिर दिर दानी धित्लांग् तधा धित्लांग् तधा॥

स्थायी

नि़ नि़ नि़ ध़ नि़ नि़ नि़
म ग री,सा | नि़ ध़,री नि़ | म़ - -, ध़ | सा -री सा
दिर त न,दिर | त न,दिर त | नो ऽ म्, त | दी म् दी म्
0 3 × 2

सा म ग म ग
नि़ री ग म | म म,म नि | ध म ग,म | ग री सा सा
दिर दिर त न | न न,दिर दिर | दिर दिर दिर,ता | ऽ रे दा नि
0 3 × 2

अंतरा

सा सा सा प	प,प प ध	प – –,ध	म – ग –
उ दा नि दा	नि,त दा नि	तो ऽ म्,त	दी म् दी म्
०	३	×	२
म ध म ग	म ग री सा	ऩि ऩि री ग	म म,म म
दिर दिर दिर दिर	दिर दिर तो म्,	ना दिर दिर दा	ऽ नि,तुं दिर
०	३	×	२
नि नि ध म,	ध म ग म	ग –, री ऩि	– री सा –;
दिर दा ऽ नि,	धि त्लां ग् त	धा ऽ, धि त्लां	ग् त धा ऽ;
०	३	×	२
म ग री,सा	ऩि ध़,री ऩि	म	
दिर त न,दिर	त न,दिर त	नोम्	इत्यादि स्थायी के अनुसार
०	३	×	

राग साज़गिरी–एकताल(विलंबित)

स्थायी: अरज सुनो मेरी या रब हो

तुंव करीम रहीम, दूर करो दुःख दालिद्र हरो।

अंतरा: हो दाता दोऊ जगके सेवनहार

बिनती करत हूँ कर जोर जोर, दया करो अब हो॥

स्थायी

,ऩि	रीग–री ,म	म ग	ऩिरी सा	ऩि,–री गरी	सा,ऩिध़	
,अ	रजऽऽ ,सु	नो ऽ	मेऽ री	या,ऽऽ रब	हो,तुंव	
	४	×	०	२	०	

नि़री नि़,म़		ध़सा -सा	नि़री गम	म ,मनि	निमं धग
कS री,म		रही Sम	दS रक	रो,दुख	दाS SS
३		४	×	०	२

| मंग गमंपमं | मंगरीसा -;नि़ || रीग-री,मं | मं ग |
| लिS द्रSSS | SSहरो S;अ || रजSS,सु | नो S | इत्यादि
| ० | ३ || ४ | × |

अंतरा

सा प	ध पप	मंमं मंग	रीग मंधग	मं ग	नि़ री
हो दा	ता दोऊ	जग केS	सेव नSS	हा S	S S
४	×	०	२	०	३

सा -	नि़री गम	मम म,मनि	निमं धग	मंग री,गमंपमं
र S	बिन तिक	रत हूँ,कर	जोS Sर	जोर दयाSSS
४	×	०	२	०

| मंग,री नि़ -री,गरी || सा;नि़री ग--री,मं | मं ग | इत्यादि स्थायी के अनुसार
| SS,करो SS,अब || हो;अर जSSS,सु | नो S |
| ३ || ४ | × |

राग विभास (मारवा थाट) – त्रिताल (मध्यलय)

स्थायी : बँधा समा सुर-लय-राग-ताल सों आसमान छायो
गुनी गंधर्व ठाड़े सुनतहु आछी नीकी तान ।

अंतरा : शाहे अकबर रसिक गुन-ग्यानी
रिझायो ऐसो महा गुन-खानी
कहाँलें बखान कीजे करतब तुम्हरे
तानसेन गुनि-चतुर 'सुजान' ॥

स्थायी

ध प ग री	सा - ,प ग	प प ध -	प प ध ग
बँ धा ऽ स	मा ऽ,सु र	ल य रा ऽ	ग ता ऽ ल
३	×	२	०
प -,सां -	सां (प) मं ग	प ध प,सा	ग मं ध प
सों ऽ,आ ऽ	स मा ऽ न	छा ऽ यो,गु	नि गं ध र्व
३	×	२	०
ग री सा,सा	सा प ग,प	प ध ग ग	प - धप धसां;
ठा ऽ ड़े,सु	न त हु,आ	छी नी ऽ की	ता ऽ ऽऽ नऽ;
३	×	२	०

अंतरा

प
शा

ध सां - सां	सां -सां,सां	सां रीं सां सां	नि ध प, प
हे अ ऽ क	ब ऽ र,र	सि क गु न	ग्या ऽनि, रि
३	×	२	०
ध ग प सां	- (प) -,प	ध ग पध पप	ग री सा,सा
झा ऽ यो ऐ	ऽ सो ऽ,म	हा ऽ गुऽ नऽ	खा ऽ नि,क
३	×	२	०
सा पग प प	ध - ध सां	प ध,सां सां	रीं गं रीं सां
हाँ लोंऽ ऽ ब	खा ऽ न की	ऽ जे,क र	त ब तु म्ह
३	×	२	०
सां,गं पं गं	रीं सां सां,प	प ध ग प	धप ध-प धसां;
रे,ता ऽ न	सै ऽ न,गु	नि च तु र	सुऽ जाऽऽ नऽ;
३	×	२	०

राग विभास(मारवा थाट)-एकताल(विलंबित)

स्थायी : रहे नाम तेरो रहे गुन चर्चा

कीरत रहे तानसेन तान चितहारे।

अंतरा : राग को रहे धरम रहे ताल को सिंगार

ध्रुवपद रीत रहे जोलों धरनी ध्रुव तारे॥

स्थायी

नि़ सा
र

पग प | – धग | प – | धप ध | – सां | (प) – || धग प
हेऽ ना | ऽ ऽम | ते ऽ | ऽऽ रो | ऽ र | हे ऽ || ऽऽ ऽ
३ | ४ | × | ० | २ | ० || ३

– पधपप | ग –री | सा –, | सा सा | प –ग || प –म | ध मध
ऽ गुऽनऽ | च ऽर | चा ऽ, | की र | त ऽर || हे ऽऽ | ऽ ऽऽ
४ | × | ० | २ | ० || ३ | ४

सां – | मध सां | – (प) | – धग || प – | प धप | ध प
ता ऽ | ऽन से | ऽ न | ऽ ऽऽ || ता ऽ | न चित | हा ऽ
× | ० | २ | ० || ३ | ४ | ×

– गप | ग –री | सा सा || पग प | – धग
ऽ ऽऽ | ऽ ऽऽ | रे र || हेऽ ना | ऽ ऽम ---- इत्यादि
० | २ | ० || ३ | ४

अंतरा

म ध | सां सां | सां – | – नि | रीं सां, | सां गं || पं गं | – रीं
रा ग | को र | हे ऽ | ऽ ध | र म, | र हे || ऽ ता | ऽ ऽल
३ | ४ | × | ० | २ | ० || ३ | ४

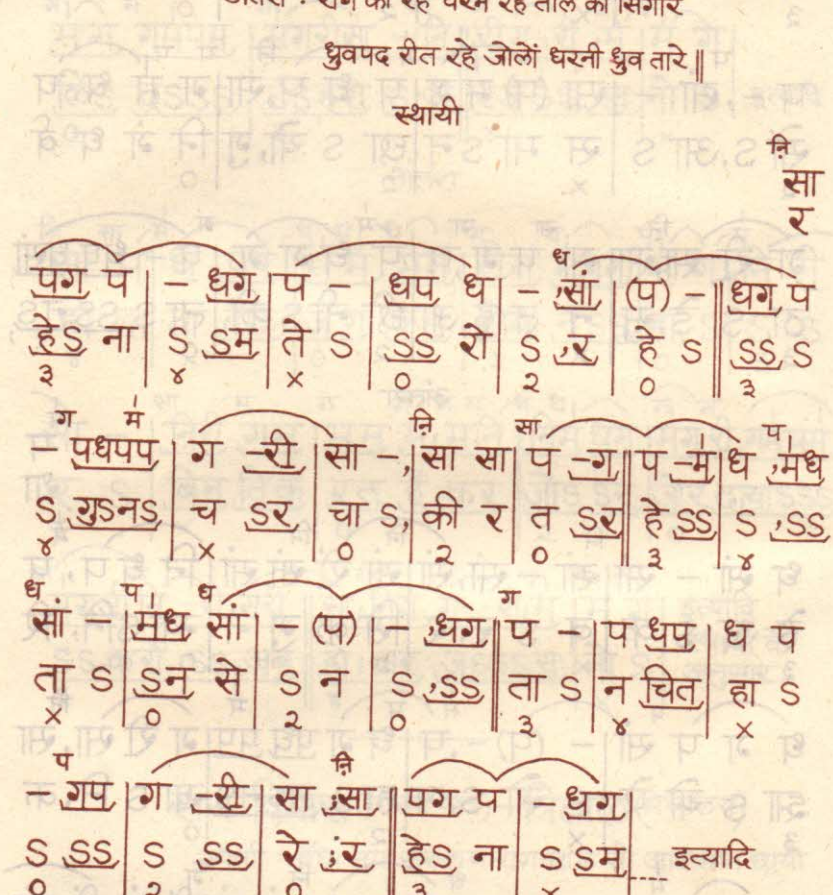

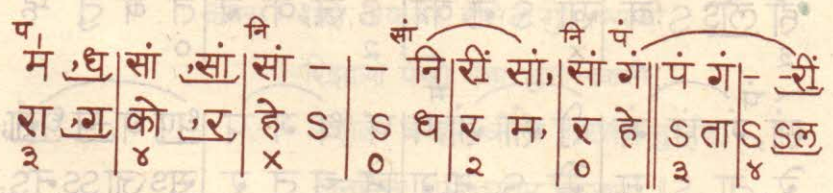

सां −	सां (प)	− ग,	सा ग || मं ध	सां −	−(प)
को ऽ	सिं गा	ऽ र,	ध्रु व || प द	री ऽ	ऽ त
×	०	२	० || ३	४	×

ग प,	सां −,	नि रीं || गं रीं	सां सां	ध प
ऽ ,र	हे ऽ,	जो ऽ || लों ध	र नी	ध्रु व
०	२	० || ३	४	×

धग प	ग री	सा ;सा		पग प	− धग	इत्यादि स्थायी के अनुसार
ऽऽ ता	ऽ रे	ऽ ;र		हेऽ ना	ऽ ऽम	
०	२	०		३	४	

राग पंचम−त्रिताल (मध्यलय)

स्थायी : आवो गावो, गावो रिझावो मिल
'सुजनवा' के संग, राग तान
तालकी संगत सों नीकी, आज।

अंतरा : नित नई नई उपज की फिरत
अत रंग रस सों पंचम राग नाम
ताही सों पंचम बरजे, आज॥

स्थायी

मं ग री सा	−, ग मं ध	सां − − नि	− नि ध −
आ वो गा वो	ऽ, गा वो रि	झा ऽ ऽ वो	ऽ मि ल ऽ
०	३	×	२

मं ध मं ग	− मं ग री	सा − सा, म	− म, म −
सु ज न वा	ऽ के सं ग	रा ऽ ग, ता	ऽ न, ता ऽ
०	३	×	२

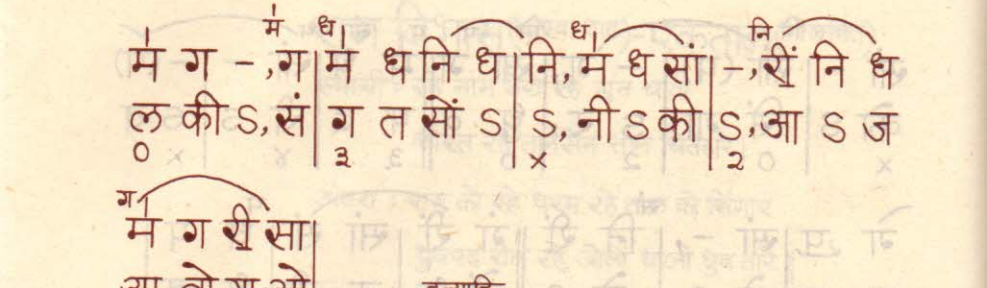

मं ग -,ग	मं धनि ध	नि,मं ध सां	-,रीं नि ध
ल की ऽ,सं	ग त सों ऽ	ऽ,नी ऽ की	ऽ,आ ऽ ज
०	३	×	२

मं ग री सा	
आ वो गा ओ	----- इत्यादि
०	

अंतरा

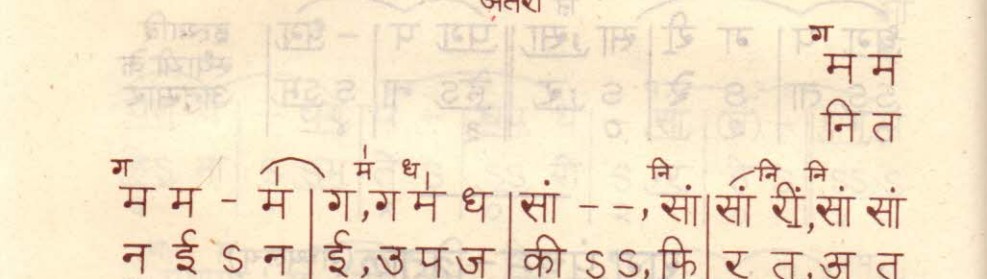

म म
नि त

म म - मं	ग,ग मं ध	सां - -, सां	सां रीं,सां सां
न ई ऽ न	ई,उपज	की ऽऽ,फि	र त,अ त
०	३	×	२
नि रीं गं रीं	सां -,रींनि	नि ध - ध	मं - मं,मं
रं ग र स	सों ऽ,पंच	म र ऽ ग	ना ऽ म,ता
०	३	×	२
- म ग -	-,नि ध मं	ग री सा -	-,रीं नि ध
ऽ हि सों ऽ	ऽ,पं च म	ब र जे ऽ	ऽ,आ ऽ ज
०	३	×	२

मं ग री सा	
आ वो गा ओ	----- इत्यादि स्थायी के अनुसार
०	

राग पंचम–एकताल(विलंबित)

स्थायी : चंद्र जाके भाल बिराजे,जटाजूट में
गंगा बिराजे, उरग बिराजे गले
नील बरन बिराजे |

अंतरा : गोर कांति अत सोहे,गौरी को मन मोहे
पाप ताप दुःख-दंद हरन,हर हर हर शिव शंकर
ऐसो महादेव कैलासपति बिराजे ||

स्थायी

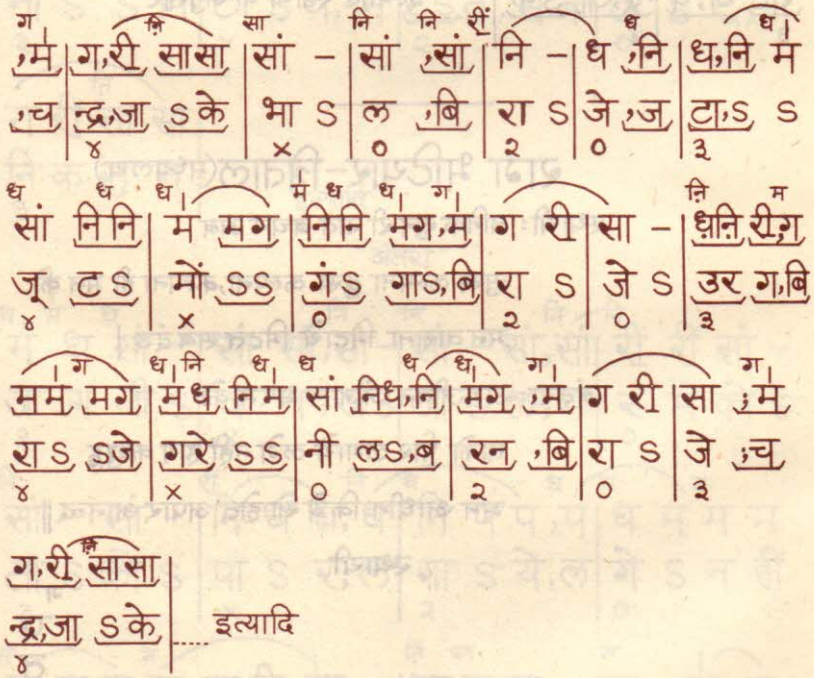

अंतरा

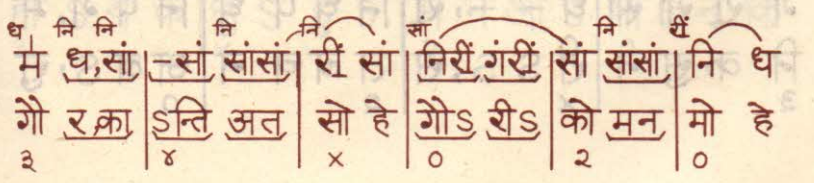

ध नि			ध ग		सा म	ध
म धनि	मध सांसां	मध मग,म	गरी सा	ऩिरी गम	मग ,मध
पा प,ता	Sप दुख	दंS दS,ह	रS न	हर हर	हर ,शिव
३	४	×	०	२	०

नि	सां मं	गं	नि	ध ध	ग
सां सांसां	निरीं गं-मं,मं	मं गं	मंगं रींसां	म सां निध,नि	मग ,म
शं कर	ऐS सोSS,म	हा S	देS Sव	केला सS,प	तिS ,बि
३	४	×	०	२	०

ग	ऩि
गरी सा;म	ग,री सासा
राS जे;च	न्द्र,जा Sके
३	४

...... इत्यादि स्थायी के अनुसार

राग भटियार–त्रिताल(मध्यलय)

स्थायीः तनिक सुन री संत बचन अब

सुख कल्पना दुख कल्पना, कल्पना ही मन की

मन वासना मिटाये मिटत सब दंद ।

अंतराः जगजीवन जंजाल भरम को

ताको पार लगाये लगे नहीं हाथ कछुहु

मन आधीन किये सो होत अपार आनन्द ॥

स्थायी

ग
प
त

ऩि	सा ध		ध ग
ग री सा सा	ध – –, रीं	नि ध प ध	नि प ग, म
नि क सु न	री S S, स	त ब च न	अ ब S, सु
३	×	२	०

ग री सा सा	म – –, म	म म म मं	म ग –, ग
ख क ल प	ना ऽ ऽ, दु	ख क ल प	ना ऽ ऽ, क
३	×	२	०
मं ध सां –	रीं नि ध ध	नि प –, म	ध ध म म
ल प ना ऽ	ही ऽ म न	की ऽ ऽ, म	न वा ऽ स
३	×	२	०
प – – ध	नि – प, म	मध ध, ध मं	ग री सा; प
ना ऽ ऽ मि	टा ऽ ये, मि	टऽ त, सब	दं ऽ द; त
३	×	२	०
ग री सा सा			
नि क सु न			
३	----- इत्यादि		

अंतरा

मं ध सां –	सां सां, सां –	सां – सां, सां	रीं रीं सां –
ज ग जी ऽ	व न, जं ऽ	जा ऽ ल, भ	र म को ऽ
३	×	२	०
सां – सां –	नि ध ध, ध	नि प प, प	ध म म म
ता ऽ को ऽ	पा ऽ र, ल	गा ऽ ये, ल	गे ऽ न हीं
३	×	२	०
प ग ग प	ग री सा –,	सा म म –	म – मं, ग
हा ऽ थ क	छु ऽ इ ऽ,	म न आ ऽ	धी ऽ न, कि
३	×	२	०

मं धसा –,	रीं नि ध, प	ध म म, प	ग री सा; प
ये ऽ सो ऽ,	हो ऽ त, अ	पा ऽ र, आ	न ऽ न्द; त
३	×	२	०

ग री सा सा	
नि क सु न	..... इत्यादि स्थायी के अनुसार
३	

राग भटियार–तिलवाडा (विलंबित)

स्थायी : कहियो ब्रिजराज महाराज
रैन कहाँतें गँवाई, अत अलसाये
आये हो, डगमग चाल चलत।

अंतरा : लिपटी गर पाग बिंदी लगी लाल कपोल
को ऐसी बड़भागनी जो बस कीन्हो तोहे या रीत॥

स्थायी

,सासा साध –,–प ध,निध	नि–ध प,पध ध––प म	प गप गरी सा,
,कहि योऽ ऽ,ऽऽ ब्रि,जऽ	रा,ऽऽ ज,मऽ हाऽऽऽ ऽ	रा ऽऽ ऽऽ ज,
३	×	२

धनि ,साम म,–प प,–ग	गमध सां ,रींनि धप	नि,–ध प,–ध
रैऽ ,नक हाँ,ऽऽ तें,ऽऽ	गँवाई ऽ ,अत अल	सा,ऽऽ ऽ,ऽऽ
०	३	×

पध–प म––प	मप गप गरी सा	सागमध प,–म पगरी– सा;
येऽऽऽ ऽऽऽऽ	आऽ ऽऽ येऽ हो	डगमग चाऽल चलऽऽ त;
	२	०

अंतरा

ध मधसां-	-सां,सांनि	रींसां सांसां	नि,रींगं रींसां	रींनि	ध,पध
लिपटीऽ	ऽऽ,गर	पाऽ ऽग	बिं,दिल गीऽ	लाऽ	ल,कऽ
		×		२	

पध-प म	प गप,गरी सा	धनि -,री ग गम	प,-ध निरीं,निधप
पोऽऽऽ ऽ	ऽ ऽऽ,ऽऽ ल	कोऽ ऽ,ऐ सी बड़	भा,ऽग नीऽ, ऽऽऽ
	०	३	×

गमंधनिरींगं ,रींसां	रींनि धप पध-प म	प गप गरी सा;
जोऽऽऽऽऽ ,बस	कीऽ -होऽ तोऽऽऽ हे	या ऽऽ रीऽ त;
	२	०

सासा साध ---प ध,निध	
कहि योऽ ऽऽऽऽ ब्रि,जऽ	---- इत्यादि स्थायी के अनुसार
३	

राग भंखार- तीव्रा अथवा रूपक (मध्यलय)

स्थायी: गूँध गूँध लावोरी फूल हरवा

मालनिया अजहुं।

अंतरा: बालम मोरे आज घर आये

मंगल गाऊँ और गरे हूँ लगाऊँ॥

स्थायी

सा नि़ सा	ग म	प - म	प -	म -	प ग -
गूँ ध	गूँ ध	ला ऽ वो	री ऽ	ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ
२	३	⊗	२	३	⊗

मं			म			ध
ग ग	मं ग	री सा -	ग -	म ग	मं ध मं	
फु ल	ह र	वा ऽ ऽ	मा ऽ	ल नि	या ऽ ऽ	
२	३	⊗	२	३	⊗	

			सा	म	
ध मं	ग मं	ग री सा;	ऩि सा	ग म	
ऽ ऽ	ऽ ऽ	अ ज हुं;	गूँ ध	गूँ ध	इत्यादि
२	३	⊗	२	३	

अंतरा

ऩि	म		म		
सा -	ग म	प - म	प -	म -	प ग -
बा ऽ	ल म	मो ऽ ऽ	रे ऽ	ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ
२	३	⊗	२	३	⊗

ऩि	सा		ऩि	सा	म
सा सा	मं ग	री - सा,	सा -	ऩि री	ग म म
आ ज	घ र	आ ऽ ये,	मं ऽ	ग ल	गा ऽ ऽ
२	३	⊗	२	३	⊗

म	मं	ध ध	ध	ग	
ग -,	ग ग	मं मं ध	मं -	ग, मं	ग री सा;
ॐ ऽ,	औ र	ग रे ऽ	हूँ ऽ	ऽ, ल	गा ऽ ॐ;
२	३	⊗	२	३	⊗

सा	म	
ऩि सा	ग म	
गूँ ध	गूँ ध	इत्यादि स्थायी के अनुसार
२	३	

राग भंखार – त्रिताल (मध्यलय)

स्थायी : करीम करतार परवर दिगार
जो रब गरीब नवाज़ रहीम
जपत ही नाम हरत दुख दंद |
अंतरा : सकल जग वन्दन पाक नाम
ज्योंही धरत ध्यान छूटत भवबंध ||

स्थायी

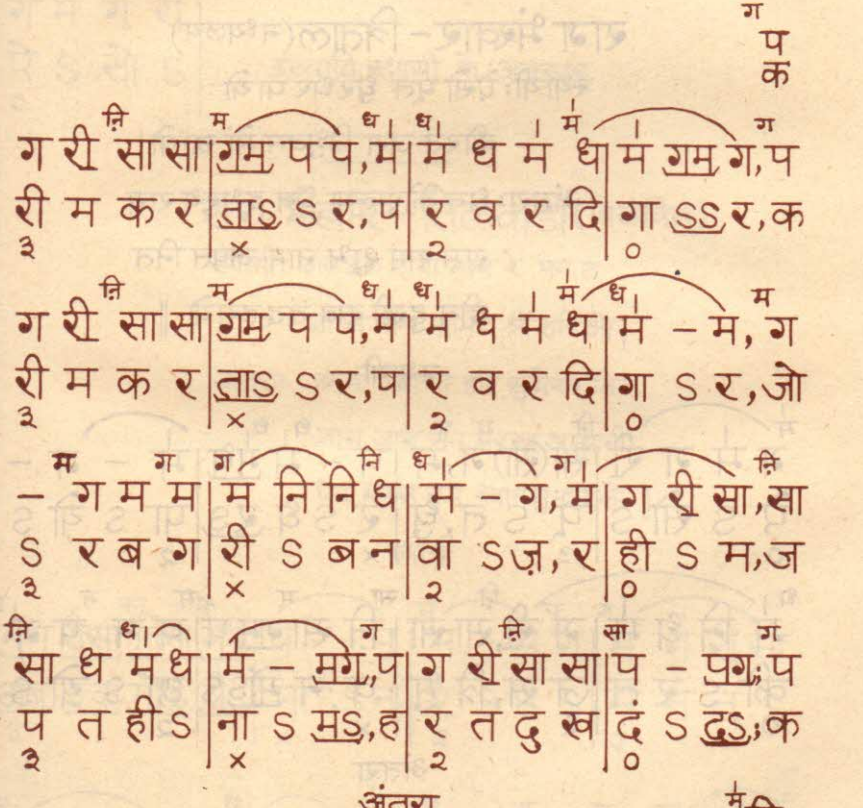

अंतरा

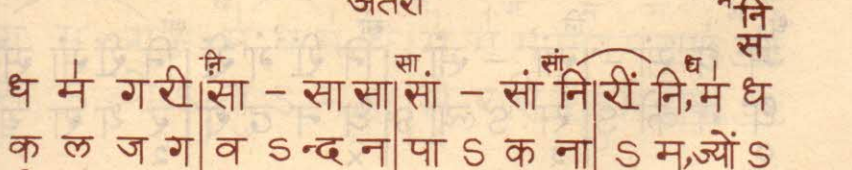

मं, ग म ग	नि़ री गम निनि	धमं गरी सा सा	प – ग; प
हि, ध र त	ध्या ऽ नऽ छूऽ	टऽ तऽ भ व	ब ऽ -ध; क
३	×	२	०

ग री सा सा	गम प प,	
री म क र	ताऽ ऽ र, ...	.... इत्यादि स्थायी के अनुसार
३	×	

राग भंखार – त्रिताल (मध्यलय)

स्थायी: ऐसो पूत धुरंधर पायो
कीरत जस त्रिभुवन मों छायो।

अंतरा: धन कौसल्या धन दशरथ राय
राम राम शुभ नाम जपत नित
दीन दुखी सब दंद हरायो ॥

स्थायी

ग मं ग री	सा(सा) ग, म	प – मं मंध	मं – ग –
ऐ ऽ सो ऽ	पू ऽ त, धु	रं ऽ ध रऽ	पा ऽ यो ऽ
०	३	×	२
मं नि ध मं	ग री, सा सा	नि़ सा गम प	प म प ग
की ऽ र त	ज स, त्रि भु	व न मोंऽ ऽ	छा ऽ यो ऽ
०	३	×	२

अंतरा

मं ध सां –	सां – सां –	नि रीं गं रीं	नि रीं सां सां
ध न कौ ऽ	स ऽ ल्या ऽ	ध न द श	र थ रा य
०	३	×	२

प म म प	ग री सा सा	नि़ – नि़ री	ग ग म ग
रा S म रा	S म शु भ	ना S म ज	प त नि त
०	३	×	२

म नि ध मं	गं री सा सा	नि़ सा ग म	प म प ग
दी S न दु	खी S स ब	दं S द ह	रा S यो S
०	३	×	२

ग मं ग री	
ऐ S सो S	..... इत्यादि स्थायी के अनुसार
०	

राग भंखार—तिलवाडा (विलंबित)

स्थायीः अब इक मोरी मान रे मन तू

साचो नाम सुमिर श्री हरि को।

अंतराः जनम गँवायो हरि सुमिरन बिन

जाग जाग मन मूरख अग्यानी

धर ध्यान रूप श्यामसुन्दर को ॥

स्थायी

मग रीसा नि़सा गम	प – – म	प – म ग	मं ग री सा
अब इक मोS रीS	माSSन	रे S S S	म न तू S
३	×	२	०

ग म ग –	मं ध मं, ध	मं मं म म	ग म गमम मग
सा S चो S	ना S म, सु	मि र सि रि	ह रि कोSS SS
३	×	२	०

अंतरा

मध सां,सां	नि रीं सां -,	नि रीं गं रीं	नि रीं सां सां
जन म,गँ	वा ऽ योऽ,	ह रि सु मि	र न बि न
	×	२	०
प म म,प	ग रीसासा	ऩि री ग,म	प म प ग
जा ऽ ग,जा	ऽ ग म न	मू र ख,अ	ग्या ऽ नीऽ
३	×	२	०
ग ग म॑ ध	म॑ ध म॑ ग,	गम पग,प	ग रीसा -;
ध र ध्या ऽ	न रु ऽ प,	श्याऽ ऽ म,सु	न्द र को ऽ;
३	×	२	०
मग रीसा ,ऩिसा गम			
अब इक ,मोऽ रीऽ	इत्यादि स्थायी के अनुसार		
३			

राग काफी-सरगम-त्रिताल (मध्यलय)

स्थायी

सा रे ग॒ रे	ग॒ म प म	प -,प म	ग॒ रे सा ऩि॒
०	३	×	२
सा रे ग॒ म	प ध नि॒ ध	प म,ध प	म प,म ग॒
०	३	×	२
रे,म ग॒ रे	सा -,सां -	नि॒ ध प म	ग॒ रे सा ऩि॒;
०	३	×	२

अंतरा

नि॒ ध प,म	म प - ध	नि - सां -	नि नि सां-
०	३	×	२

ध़ नि॒ सां रें	ग॒ं रें,सां रें	सां नि॒ ध प	म ग॒ रे सा,
0	3	×	2
नि़॒ सा -,सा	रे -, रे ग॒	-, ग॒ म -,	म प -, प
0	3	×	2
ध़ -, ध नि॒	-, नि॒ सां-	नि॒ ध प म	ग॒ रे सा नि॒
0	3	×	2

राग काफी-लक्षणगीत-त्रिताल(मध्यलय)

स्थायी : सुन सुलच्छनि काफी रागनी को
मृदु गमनि सुर मेल मिलावत
परि समवाद करत नित सुन्दर ।

अंतरा : सम्पूरन कर चढ़ते नी तीवर
दूजे पहर निस गावत सुस्वर
काफी धनाश्री मल्हार सारंग कान्हर
पंच अंग राग मधुर उपजत जासों
ऐसी मनोहर ॥

स्थायी

, (नि़॒)सा सा री	(म)ग॒ - म म	प - (प)प,(ध)ध	(म)म प ग॒ -
, सु न सु	ल ऽच्छ नि	का ऽ फि,रा	ऽ ग नी ऽ
	3	×	2
री,(म)नि॒ ध नि॒	(ध)प ध (प)म प	म -(ग॒)म (ध)प	(म)ग॒ - री री,
को, मृ दु ग	म नि सु र	मे ऽ ल मि	ला ऽ व त,
0	3	×	2

ग	री सा	ग	म सा
री ग री ग	सा री नि़,सा	री ग म प	ग - री री
प रि स म	वा ऽ द,क	र त नि त	सु ऽन्द र
०	३	×	२

नि़	म	
-;सा सा री	ग - म म	
ऽ; सु न सु	ल ऽच्छ नि	इत्यादि
०	३	

अंतरा

प	सां	सां सां	
म - प ध	नि नि सां सां	नि नि सां नि	सांरीं नि ध प
स ऽम्पू ऽ	र न क र	च ढ़ ते नि	तीऽ ऽ व र
०	३	×	२

प	प	म म	
म प सां नि	ध प म प	ग री ग म	ग री सा सा
दु ऽ जे प	ह र नि स	गा ऽ व त	सु ऽ स्व र
०	३	×	२

नि़ सा	म प	नि़	
सा - री,री	ग - म,म	प - प,ध	नि सां नि सां
का ऽ फि,ध	ना ऽ श्री,म	ल्हा ऽ र,सा	ऽ रं ऽ ग
०	३	×	२

प	प		म म
नि प प प	म - म,प	सां नि,ध प	म,प ग री
का ऽन्ह र	पं ऽच,अं	ऽ ग,रा ऽ	ग,म धु र
०	३	×	२

ग ग	म	सा ध	म री
री ग री म	ग री सा -,	सां - नि प	ग - सा री
उ प ज त	जा ऽ सों ऽ,	पै ऽ सी म	नो ऽ ह र
०	३	×	२

नि़	म	
-;सा सा री	ग - म म	इत्यादि स्थायी के अनुसार
ऽ; सु न सु	ल ऽच्छ नि	
०	२	

राग काफी–त्रिताल (मध्यलय)

स्थायी : कैसी सजी है फूली फुलवारी प्यारी
सरस सुगन्धित रंगरंगीले फूल खिले
हँसत करत सैन।

अंतरा : जूही गुलाब चमेली चंपा अपने अपने
रूप गंध रस भेंट चढ़ावत सृष्टि देवि के
चरण कमल पर होवत लीन ॥

स्थायी

(सा) री
कै

(सा)नि़ सा री री	(म)ग ग म म	प – पध निसां	निध पम गरी सारी
सी स जी है	फू ली फु ल	वा ऽ रीऽ ऽऽ	प्याऽ ऽऽ रीऽ ऽऽ
0	3	×	2
(ग)री (प)प (म)म प	म ग री सा	(प)सां नि (ध)प (नि)ध	(सां)नि (सां) नि धप
स र स सु	गं ऽ धि त	रं ऽ ग रं	गी ऽ ले ऽऽ
0	3	×	2
(प)म – पध मप	(म)ग री, (म)नि ध	(प)म, प (म)ग म,	ग री सा; (सा)री
फू ऽ लऽ खिऽ	ले ऽ, हँ स	त, क र त,	से ऽ न ; कै
0	3	×	2

अंतरा

(प),म प ध	(सां)नि – (नि)सां, (नि)सां	सांरीं गं रीं सां	रीं (सां)नि सां –
,जू ही गु	ला ऽ ब, च	मेऽ ऽ ली ऽ	च ऽ म्पा ऽ
	3	×	2

नि नि नि -	सां नि सां (सां)	नि ध प,म	- म,प ध
अ प ने ऽ	अ प ने ऽ	रू ऽ प,ग	ऽ-ध, र स
०	३	×	२
पध निसां नि ध	(म) - ग री,	ग री ग री	सा री नि सा
भेंऽ ऽऽ ट च	दा ऽ व त,	सृ ऽ ष्टि दे	ऽ वि के ऽ
०	३	×	२
री ग म प	ध नि सां सां	नि ध म प	ग री सा ,री
च र ण क	म ल प र	हो ऽ व त	ली ऽ न ,कै
०	३	×	२
नि सा री री			
सी सजी है			
०			

इत्यादि स्थायी के अनुसार

राग काफी – त्रिताल (मध्यलय)

स्थायी : कृष्ण कन्हैया तोरी बाँसुरी की धुन सुनि
भई बावरी अत ब्रिजकी ग्वारनी सब
भूल गई सुध सबहु तन मन की।

अंतरा : राग ताल रस रंग भरी है
मन मोहत नित मधुर सुरन सों
मति हरत सुर नर मुनीजन की ॥

स्थायी

,ग री ग	सा री नि सा	री म पध प	ग गरी सा सा
,कृ ष्ण क	न्है या तो री	बाँ सु रीऽ की	धु नऽ सु नि
	३	×	२

म	ध प	म	
-, नि ध नि	प ध म प	प सां नि (सां)	नि ध प प
ऽ, भ ई बा	व रि अ त	ब्रि ज की ख्वा	र नी स ब
०	३	×	२

म	सां	ध प म	नि
-, री म प	ध नि सां, प	ध म, पध प	ग गरी सा -
ऽ, भू ल ग	ई सु ध, स	ब हु, तऽ न	म नऽ की ऽ
०	३	×	२

अंतरा

म	ध प	सां सां	नि
ध - ध, नि	प ध, म प	नि - सां, नि	सां - सां -
रा ऽ ग, ता	ऽ ल, र स	रं ऽ ग, भ	री ऽ है ऽ
०	३	×	२

ध सां		नि सां	
-, प नि नि	सां सां सां सां	प नि सां रीं	सां नि ध प
ऽ, म न मो	ह त नि त	म धु र सु	र न सों ऽ
०	३	×	२

नि	नि प	म	म
-, सां नि सां	प नि, म प	री म पध प	ग गरी सा -
ऽ, म ति ह	र ति, सु र	न र मुऽ नि	ज नऽ की ऽ
०	३	×	२

राग काफी–त्रिताल (मध्यलय)

स्थायी: जनम वृथा बिन पर उपकार
दीन दुखियन को भरोसो तिहारो
तनिक देख यह हाल बेहाल।

अंतरा: धन दारा सुख चैन पसारा, खेल जमायो
निज स्वार्थ को, जीवन बिन पुरुषार्थ गँवायो,
तनिक सोच यह हाल बेहाल॥

स्थायी

[प]म प ध प	[म]ग - [सा]री री	[म]ग ग म म	प - - प
ज न म वृ	था ऽ बि न	प र उ प	का ऽ ऽ र
२	०	३	×
[म]री म प्ध प	[म]ग - [सा]री री	[म]ग ग म म	प - प, [प]सां
ज न मऽ वृ	था ऽ बि न	प र उ प	का ऽ र, दा
२	०	३	×
नि (सां) नि॒ ध	नि॒ प ध [सां]नि॒	सां निसां नि धप	[म]ग - री -
ऽ न दु खि	य न को भ	रो ऽऽ सो तिऽ	हा ऽ रे ऽ
२	०	३	×
[म]ग री ग,री	सा [सा]री, नि़सा	[ग]री ग म म	प - - प;
त नि क, दे	ऽ ख, ये ऽ	हा ऽ ल बे	हा ऽ ऽ ल;
२	०	३	×

अंतरा

[सां]नि [सां]नि नि -	सां - [नि]सां सां	सांरीं [मं]गं रीं सां	रीं नि सां -
ध न दा ऽ	रा ऽ सु ख	चैऽ ऽ न प	सा ऽ रा ऽ
२	०	३	×
[सां]नि - [सां]नि नि	सां - सां -	[नि]सां नि सां (सां)	नि॒ ध प -
खे ऽ ल ज	मा ऽ यो ऽ	नि ज स्वा ऽ	र थ को ऽ
२	०	३	×
[म]ध - ध ध	[नि॒]ध नि॒ ध प	पध निसां नि सां	[नि॒]ध (नि॒) ध प
जी ऽ व न	बि न पु रु	खाऽ ऽऽ र्थ गँ	वा ऽ यो ऽ
२	०	३	×

म . . म	. सा ग .	. . . .	प . . .
नि ध प ग	- ग री री	री ग म म	प - - प;
त नि क सो	ऽ च य ह	हा ऽ ल बे	हा ऽ ऽ ल;
२	०	३	×

राग काफी – त्रिताल (मध्यलय)

(संस्कृत में रचित)

स्थायी : भज भज हरि चरण पांशुं मनः

द्रुततरमधिगमयति शिवमसंशयम्

शमयतिदारुणमपि भव तापम्

कुरुत्वराम् त्यजनिद्राम् ।

अंतरा : भक्तिविशेषवशो यदुनाथा

नृत्य गीतसंकीर्तित नामा

क्षणमपि न विलम्बयति कृपाम्

कुरुत्वराम् त्यजनिद्राम् ॥

स्थायी

			नि़ .
			सा नि़
			भ ज
. . म .	. . . म	री . सा .	. . नि़ .
सा री ग म	प ध प ग	- सा री नि़	सा -, सा नि़
भ ज ह रि	च र ण पां	ऽ शुं ऽ म	नः ऽ, द्रु त
२	०	३	×
. . म .	. . सां .	. . प .	. म . .
सा री ग म	प धनि सां	नि ध प म	प ग री -
त र म धि	ग म य ति	शि व म सं	ऽ श यं ऽ
२	०	३	×

ग	नि		म
री ग म प	ध नि सां रीं	सां नि ध प	ग म प -
श म य ति	दा S रु ण	म पि भ व	ता S पं S
2	0	3	×

ध ध	ध	सां प	नि
-, नि प ध	सां - - -	नि ध म -	(ग) री; सा नि
S, कु रु त्व	रां S S S	त्य ज नि S	द्रां S; भ ज
2	0	3	×

म	
सा री ग म	
भ ज ह रि	...... इत्यादि
2	

अंतरा

प	सां	मं	सां
रीं - रीं रीं	रीं - रीं रीं	सांरीं गं रीं सां	रीं नि सां -
भ S क्ति वि	शे S ष व	शोS S य दु	ना S था S
2	0	3	×

नि	ग	प	म
सां रीं सां, नि	ध प, म -	रीम पध म प	ग - री -
नृ S त्य, गी	S त, सं S	कीS SS र्ति त	ना S मा S
2	0	3	×

ध	नि	म	
नि ध नि प	ध नि सां -	नि धप ग म	प - - -
क्ष ण म पि	न वि ल S	म्ब यS ति कृ	पां S S S
2	0	3	×

ध ध	ध	सां प	नि
-, नि प ध	सां - - -	नि ध म -	(ग) री; सा नि
S, कु रु त्व	रां S S S	त्य ज नि S	द्रां S; भ ज
2	0	3	×

म	
सा री ग म	
भ ज ह रि	.... इत्यादि स्थायी के अनुसार
2	

राग काफी – त्रिताल (मध्यलय)

स्थायी : नमो नमो गुणि गंधर्व चरण
सुस्वर कण्ठ मधुरता तें बस भयो
सकल संसार तिहारे
धन्य गुणी गंधर्व कहायो ।

अंतरा-१: पलुश ग्राम सुख धाम निवासी
विप्र दिगम्बर ब्रह्म शिरोमणि
सूनु विष्णु शुभ नाम धरायो
ग्यान ध्यान गुण मान बढ़ायो ॥

अंतरा-२: नाद वेद सेवा व्रत धरिके
जन गण मन संगीत जगायो
परम पावन संदेस जतायो
भक्ति भाव रस प्रेम सिखायो ॥

स्थायी

नि ध पम प	ग री म म	प – प –	प, ध म प
न मो SS न	मो S गुणि	गं S ध S	र्व, च र ण
०	३	×	२
पनि सांरीं नि ध	प – प, म	म म पध निसां	नि ध, म प
सुS SS स्व र	क S ण्ठ, म	धु र ताS SS	तें S, ब स
०	३	×	२
ग री –, ग	सा री निसा	री – म म	प – प –
भ यो S, स	क ल सं S	सा S र ति	हा S रे S
०	३	×	२

नि – नि नि	सां –,सां –	निसांरींगं सांरीं	नि ध नि सां;
ध ऽन्य गु	णी ऽ, गं ऽ	धऽ ऽऽ र्व क	हा ऽ यो ऽ;
०	३	×	२

अंतरा-१

म म म प	– प,नि नि	सां – सां,नि	सां – सां –
प लु श्र ग्रा	ऽ म,सु ख	धा ऽ म,नि	वा ऽ सी ऽ
०	३	×	२
रीं – रीं रीं	सांरीं गं रींसां	–,म प ध	नि – सां सां
वि ऽ प्र दि	गऽ ऽम्ब र	ऽ,ब्र ह्म शि	रो ऽ म णि
०	३	×	२
नि ध नि,ध	प ध,नि नि	सां – सां,सां	निसां रींनि ध प
सू ऽ नु,वि	ऽ ष्णु,शु भ	ना ऽ म,ध	राऽ ऽऽ यो ऽ
०	३	×	२
म प सां,नि	ध प,म प	ग री म,म	प – पध निसां;
ध्या ऽ न,ध्या	ऽ न,गु ण	मा ऽ न,ब	ढ़ा ऽ योऽ ऽऽ;
०	३	×	२

अंतरा-२

रीं – रीं,रीं	– रीं, रीं –	सांरीं गं रींसांरीं	नि नि सां –
ना ऽ द,वे	ऽ द,से ऽ	वाऽ ऽव्रऽ त	ध रि के ऽ
०	३	×	२
नि नि नि नि	सां सां,सां –	निसांरींगं सां,रीं	नि ध नि सां
ज न ग ण	म न,सं ऽ	गीऽ ऽऽ त,ज	गा ऽ यो ऽ
०	३	×	२

म ध	ध	ध	नि॒ ध	ध	ध,ध	नि॒ नि॒	S	पध निसां निसांरीं	सां नि॒	ध	प	–
प	र	म	पा	व	न,सं	S		देS SSसजS	ता	S	योS	
०				३				×	२			

री ग॒	सा री	री,	प म	–	म,	प	प	पध निसां	सां नि	सां	निसां रींनि॒	ध	प;
भ	S	क्ति,	भा	S	व,	र	स	प्रेS SS	म	सि	खाS SS	यो	S;
०				३				×			२		

टीपः इस गीत की रचना लेखक ने गायनाचार्य पं.विष्णु दिगम्बर पलुस्कर की पुण्यस्मृति में की है।

राग काफी-तराना-त्रिताल (मध्यलय)

स्थायीः तन नादिर दिर तन तुंद्रेद्रे तोम् तोम् तनन
दिर दिर तन ननन्न द्रियानारे तोम् तन
तदियानारे नितारेदानि तदारे तदारेदानी
तोम् तननन ननननन।

अंतरा : द्रितन द्रितन दिर दिर तोम् दिर दिर तोम्
तन नितान्न, तन नितान्न, तन नितान्न,
धा किटतक धुम किटतक किडनग, तक्डान्
तक धा, तक्डान् तक धा, तक्डान् तक धा, दीम् ॥

स्थायी

															म नि॒	ध
															त	न
प	म	ग॒	री	सा नि़,	सा री	री	री	ग॒	–	–,	म नि॒	ध	प प,	नि॒	ध	
ना	दिर	दिर	त	न,	तुं	द्रे	द्रे	तों	S	म,	तो	S	म्,	त	न	
०				३				×				२				

प म ग री	नि़, सा री री	ग – –, नि	ध नि प ध,
ना दिर दिर त	न, तुं द्रे द्रे	तो ऽ म्, तो	म् त न न,
०	३	×	२
नि सां नि ध	प म ग री,	री प म प	म ग री सा;
दिर दिर त न	न न न न,	द्रि या ना रे	तो ऽ म्त न,
०	३	×	२
सा सा री री	ग, ग म म	प प, ध ध	नि, प ध नि
त दि या ना	रे, नि ता रे	दा नी, त दा	रे, त दा रे
०	३	×	२
सां सां, रीं गं मं	गं रीं सां नि	ध प म ग	री सा; नि ध
दा नी, तोऽ म्	त न न न	न न न न	न न; त न
०	३	×	२

अंतरा

म म म, प	प प, नि नि	सां –, नि नि	सां –, नि ध
द्रि त न, द्रि	त न, दिर दिर	तो म्, दिर दिर	तो म्, त न
०	३	×	२
नि रीं सां रीं,	प ध, नि सां	नि सां, नि ध,	प ग – री,
नि ता ऽ न्न,	त न, नि ता	ऽ न्न, त न,	नि ता ऽ न्न,
०	३	×	२
सा री ग म	प ध नि सां	मं गं – रीं	सां –, नि ध
धा किट तक धुम	किट तक किड नग	त क्डान् ऽ तक	धा ऽ, त क्डान्
०	३	×	२
– प ग –,	ग री सा री	प – –, नि	ध प; नि ध
ऽ तक धा ऽ,	त क्डान् ऽ तक	धा ऽ ऽ, दी	ऽ म्; त न
०	३	×	२

राग काफी–होली–दीपचंदी (मध्यलय)

स्थायी : न मारो पिचकारी रंग की भरी रे
कन्हैया मानो, देखो दूँगी अब गारी
करूँगी लराई मैं तोरे संग।

अंतरा : जानत हूँ मैं तुम हो अनारी
निपट नीलज धीट मोहे ना भावत
तुम्हरे ऐसे अनोखे ढंग॥

स्थायी

म	री सा प		म
रीम मपध मप	ग री -म म	प - -	प - - -
नऽ माऽऽ ऽऽ	रो ऽ ऽपि च	का ऽ ऽ	री ऽ ऽ ऽ
०	३	×	२
म	नि नि		मप म
ध ध -	धनि सांसां निधनि ध	प - -	धधपम रीमपध - प
रं ग ऽ	कीऽ ऽऽ ऽऽऽ भ	री ऽ ऽ	रेऽऽऽ ऽऽऽऽ ऽ क
०	३	×	२
प ध	म	ग ग	
म प -	ग री - - -	रीगमम गरी	ग रीसारी सानि सा
क न्है ऽ	या ऽ ऽ ऽ	माऽऽऽ ऽऽ	ऽ ऽऽऽ नोऽ ऽ
०	३	×	२
सां			
नि नि -	सां - (सां) -	निध नि -	धप ध प -
दे खो ऽ	दूँ ऽ ऽ ऽ	गीऽ ऽ ऽ	अऽ ऽ ब ऽ
०	३	×	२
ग	म		म म म
म ग म	पध निसां -, प	म ग म	गम पध पप, प
गा ऽ ऽ	रीऽ ऽऽ ऽ, क	रूँ ऽ ऽ	गीऽ ऽऽ ऽऽ, ल
०	३	×	२

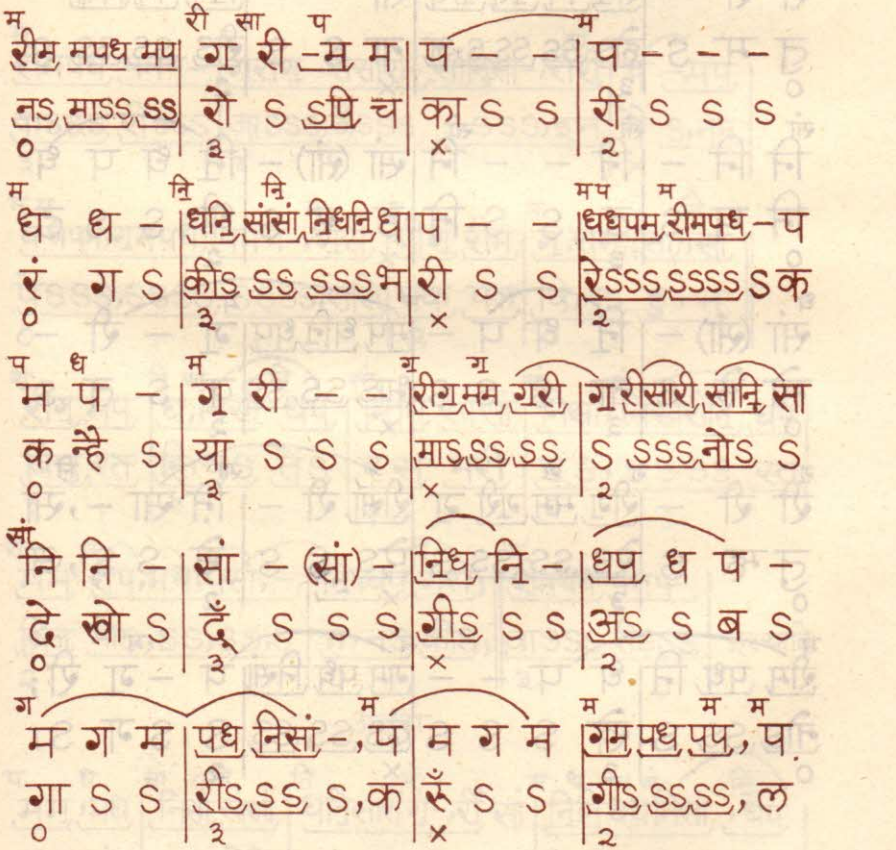

ग री ग	रीसा री, सा –	री ग रीग	मप धनि ध प;
रा ऽ ऽ	ईऽ ऽ, मैं ऽ	तो रे ऽऽ	संऽ ऽऽ ऽ ग;
०	३	×	२

अंतरा

धनि पध –	धनि सां – नि	सां – –	सां – – –
जाऽ ऽऽ ऽ	नऽ ऽ ऽ त	हूँ ऽ ऽ	मैं ऽ ऽ ऽ
०	३	×	२
रीं रीं –	रींगं मंमं गंरीं गं,रीं	सां – –	निध पध निसां –
तु म ऽ	होऽ ऽऽ ऽऽ ऽ,अ	ना ऽ ऽ	रीऽ ऽऽ ऽऽ ऽ
०	३	×	२
नि नि –	नि – – नि	सां (सां) –	नि ध प ध
नि प ऽ	ट ऽ ऽ नि	ड र ऽ	धी ऽ ऽ ट
०	३	×	२
सां (सां) –	नि ध प –	मप धनि धप	ग – री –
मो हे ऽ	ना ऽ ऽ ऽ	भाऽ ऽऽ ऽऽ	व ऽ त ऽ
०	३	×	२
री री –	रीग मम गरी ग	रीसा री –	नि सा –,सा
तु म्ह ऽ	रेऽ ऽऽ ऽऽ ऽ	ऐऽ ऽ ऽ	से ऽ ऽ,अ
०	३	×	२
रीम पध नि	ध प – –	गम पध निसां	प – ग री;
नोऽ ऽऽ ऽ	खे ऽ ऽ ऽ	ढंऽ ऽऽ ऽऽ	ऽ ऽ ग ऽ;
०	३	×	२

राग काफी-एकताल (विलंबित)

स्थायी : वारी जाऊँ इन नैनन पे सखि
एक पल छिनहु न बिछुरत हियतें
रस भरी मूरत ब्रिज मोहन की।

अंतरा : घर आंगना मोहे अब ना सुहावे कछु
सुध बुध ना काहू की, चेरी भई मैं
ब्रिज नन्दन की ॥

स्थायी

म	म सा	म	
रीमपध, पमप-	गरीग-, रीसारी-, सानि़सा-, रीरी	प -,पप	
वाSSS, रीSSS	जाSSS, ऊँSSS, SSSS, इन	नै S,नन	
३	४	×	

मप म	ग	म नि़	
धधपम,गमपध, पमप-,गरी	रीग, रीम	ग,रीग, (सा),सा ‖	
पेSSS,SSSS, SSSS,सखि	एक, पल	छि,नS, हु, न ‖	
०	२	०	

ग	नि सां नि	सां	सां सां
रीग, मप	ध,नि़सां, धप	निनि, सांसां	निसां, निसांरींनि, धप
बिछु, रत	हि,यS, तेंS	र स, भरी	मूS, SSSS, रत
३	४	×	०

री म	म	म	
मम, रीप,मध,पसां,-	नि,धप, गरी; ‖	रीमपध, पमप-	
ब्रिज, मोS,SS,SS,S	ह,नS, कीS; ‖	वाSSS, रीSSS	इत्यादि
२	०	३	

अंतरा

प ध	सां नि	नि मं	म ध प सां नि
मम,पध	निसां,सांसां	धनिसांरींगं-,रीं सां	निनिधधनिसां, ,धप
घर,आंग	नाS, मोहे	अबनाSSS,सु, हा	वेSSSSS, ,कछु
४	×	०	२

प ध ध म प गं गं

मम ,पध ‖ सां(सां) निधपमपध | पमप- गरी | रीं,रींरीं रींगंमंमंगंरींगं- |
सुध ,बुध ‖ ना ऽ काऽऽऽऽऽ | हूऽऽऽ कीऽ | चे,रीभ ईऽऽऽऽऽऽऽ |
० ‖ ३ | ४ | ×

नि. प म म

रींसांरीं,सां निसां,सां | मम रीप,मध,पसां,- | नि,धप गरी; ‖
ऽऽऽ ,ऽ ऽऽ,मैं | ब्रिज नऽ,ऽऽ,ऽऽ,ऽ | न्द,नऽ कीऽ; ‖
० | २ | ० ‖

म

रीमपध पमप- |
वाऽऽऽ रीऽऽऽ | ..... इत्यादि स्थायी के अनुसार
३ |

राग काफी-ध्रुवपद-चौताल

स्थायीः आद नाद जासों उपजत द्वाविंशति श्रुति
श्रुतियनसों निकसत सुर सप्त शुद्ध पंच विकृत |

अंतरा : आरोही अवरोही स्थायी संचारी चतुर बरन
गान किये सुरन को सिंगार सजत ‖

संचारीः चौसठ अलंकार विविध राग रूप सजे
सम्पूरन षाडव औडवहु कहे जात ‖

आभोगः वादी समवादी अनुवादी कबहु बेवादि
चतुर भेद स्वर मंडित रागन को गुनी बरनत ‖

स्थायी

नि सा	-	सा	री	सा	री	री प	म ग	म	ग	री	-
आ	ऽ	द	ना	ऽ	द	जा	ऽ	ऽ	सों	ऽ	ऽ
×		०		२		०		३		४	

(ग)री	ग	(री)सा	री	(सा)नि़	सा	(ग)री	ग	(प)म	म	प	प
उ	प	ज	त	द्रा	ऽ	विं	ऽ	श	ति	श्रु	ति
×		०		२		०		३		४	

(प)नि	नि	धप	ध	(सां)नि	सां	(सां)नि	नि	ध	प	(प)म	प
श्रु	ति	युऽ	न	सों	ऽ	नि	क	स	त	सु	र
×		०		२		०		३		४	

(प)सां	–	नि	ध	(प)म	प	(म)ग	–	रीसा	री	(सा)नि़	सा;
स	ऽ	प्त	शु	ऽ	द्ध	पं	ऽ	चऽ	वि	कृ	त;
×		०		२		०		३		४	

अंतरा

(प)म	–	–	प	–	ध	(सां)नि	सां	–	(सां)नि	सां	सां
आ	ऽ	ऽ	रो	ऽ	हि	अ	व	ऽ	रो	ऽ	हि
×		०		२		०		३		४	

(गं)रीं	गं	रीं	(नि)सां	रीं	(सां)नि	(नि)सां	–	–	(नि)सां	रीं	नि
स्था	ऽ	ऽ	यी	ऽ	ऽ	सं	ऽ	ऽ	चा	ऽ	री
×		०		२		०		३		४	

ध	(प)म	प	(म)ग	री	(सा)सा	नि़	सा	(सा)री	री	(म)ग	–
च	तु	र	ब	र	न	गा	ऽ	न	कि	ये	ऽ
×		०		२		०		३		४	

(प)म	म	म	(ध)प	सां	नि़	ध	प	म	(म)प	(म)ग	री;
सु	र	न	को	ऽ	सिं	गा	ऽ	र	स	ज	त;
×		०		२		०		३		४	

संचारी

प			म			म				प	
म	-	-	म	-	म	प	प	-	ध	म	प
चौ	ऽ	ऽ	स	ऽ	ठ	अ	लं	ऽ	का	ऽ	र
×		०		२		०		३		४	

म			नि					प		म	
ग	म	प	ध	नि	सां	नि	ध	म	प	ग	री
वि	वि	ध	रा	ऽ	ग	रू	ऽ	प	स	जे	ऽ
×		०		२		०		३		४	

म		प							सा	सा	
री	प	म	प	म	ग	री	सा	-	री	नि़	सा
स	ऽ	म्पू	ऽ	र	न	खा	ऽ	ऽ	ड	ऽ	व
×		०		२		०		३		४	

ग		म				म			प	प	
री	-	ग	ग	म	-	प	प	-	ध	म	प
औ	ऽ	ड	व	हु	ऽ	क	हे	ऽ	जा	ऽ	त
×		०		२		०		३		४	

आभोग

सां				सां				सां		नि	
नि	-	नि	-	नि	-	सां	-	नि	सां	सां	सां
वा	ऽ	दी	ऽ	सं	ऽ	वा	ऽ	दी	ऽ	अ	नु
×		०		२		०		३		४	

गं			रीं			सां	सां		नि		
रीं	गं	रीं	गं	रीं	सां	रीं	नि	-	सां	-	सां
वा	ऽ	दि	क	ब	हु	बे	ऽ	ऽ	वा	ऽ	दि
×		०		२		०		३		४	

सां			नि			नि					
नि	नि	नि	सां	-	सां	सां	रीं	नि	ध	प	प
च	तु	र	भे	ऽ	द	स्व	र	म	ऽ	ष्डि	त
×		०		२		०		३		४	

प   प   ध प म   सा
सां - | नि ध | म - | प ध | ग ग | रीं री ;
रा ऽ | ग न | को ऽ | गु नी | ब र | न त ;
× | ० | २ | ० | ३ | ४

राग काफी-होरी-धमार

स्थायी: खेलन आये होरी अनोखे खिलारी
न जानूँ सखी कौन ये।

अंतरा: लुकछुप छोरत रंग भरी पिचकारी
कुमकुमे मुख पर फेंकत
ऐसो अतही अनारी, सखी कौन ये ॥

संचारी: अरी ये तो नंद दुलारो कृष्ण कन्हाई कहावत।

आभोग: श्यामसुन्दर ब्रिज बारो प्यारो गोप गोपीयन को
मोको अतही अचरज, तू ना जाने कौन ये ॥

स्थायी

प   री सा प   म   प
नि ध प | ग री म म | प - - प - | -,सां
खे ल न | आ ऽ ऽ ये | हो ऽ ऽ री ऽ | ऽ,हो
० | ३ | × | २

री सा प   म   नि
नि ध प | ग री म म | प - - प - | -,ध
खे ल न | आ ऽ ये री | हो ऽ ऽ री ऽ | ऽ,अ
० | ३ | × | २

सां रीं   ध म   री
नि सां - | नि ध म,प | ग - - री - | -,म
नो ऽ ऽ | खे ऽ ऽ,खि | ला ऽ ऽ री ऽ | ऽ,न
० | ३ | × | २

ग री ग | सा री नि़ सा, | नि – – सां – | – ;सां
जा ऽ ऽ | नूँ ऽ स खि, | को ऽ ऽ न ऽ | ऽ ;ये
० | ३ | × | २

नि ध प | ग री म म |
खे ल न | आ ऽ ऽ ये |... इत्यादि
० | ३

अंतरा

म म प ध | नि – – सां – | – सां, | नि नि –
लु क छु प | छो ऽ ऽ र ऽ | ऽ त, | रं ग ऽ
३ | × | २ | ०

सां नि सां रीं | नि ध नि ध – | प –, | ध ध रींसां
भ री पि च | का ऽ ऽ री ऽ | ऽ ऽ, | कु म ऽऽ
३ | × | २ | ०

रीं – रीं –, | गं रीं गं रीं – | सां –, | नि सां रीं
कु ऽ मे ऽ, | मु ख ऽ प ऽ | र ऽ, | फें ऽ ऽ
३ | × | २ | ०

नि ध,म प | सां – –,नि ध | म,प | ग री ग
क त,ऐ ऽ | सो ऽ ऽ,अ त | ही,अ | ना ऽ ऽ
३ | × | २ | ०

सा री नि़ सा, | नि – – सां – | –;सां | नि़ ध प
री ऽ स खि, | को ऽ ऽ न ऽ | ऽ;ये | खे ल न
३ | × | २ | ०

इत्यादि स्थायी के अनुसार

संचारी

सा सा ध ध - | - ध | नि ध नि | ध प ध,म
अ री ऽ ये ऽ | ऽ तो | नं ऽ ऽ | द ऽ ऽ,दु
× | २ | ० | ३

प - - प - | - -, | म - ग | म - -,प
ला ऽ ऽ रे ऽ | ऽ ऽ, | के ऽ ऽ | ष्ण ऽ ऽ,क
× | २ | ० | ३

ग - - री - | -,म | ग री ग | सा री नि सा
न्हा ऽ ऽ ई ऽ | ऽ,क | हा ऽ ऽ | व ऽ त ऽ
× | २ | ० | ३

आभोग

म प - नि नि | नि नि | सां सां नि | सां - सां -
श्या ऽ ऽ म सु | न्द र | ब्रि ज ऽ | बा ऽ रे ऽ
× | २ | ० | ३

रीं गं - रीं - | सां - | रीं नि नि | सां नि सां -
प्या ऽ ऽ रो ऽ | ऽ ऽ | गो ऽ प | गो ऽ पी ऽ
× | २ | ० | ३

नि सां रीं नि - | ध प, | म प ध | नि - सां -
य न ऽ को ऽ | ऽ ऽ, | मो ऽ ऽ | को ऽ ऽ ऽ
× | २ | ० | ३

म प रींसां रीं सां | रीं नि | ध प - | म ग म -
अ त ऽऽ ही ऽ | अ च | र ज ऽ | तू ऽ ऽ ऽ
× | २ | ० | ३

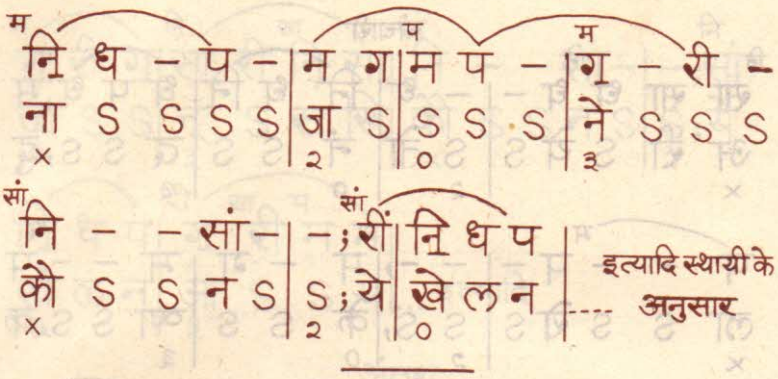

(म)नि	ध	-	प	-	म	ग	म	(प)प	-	(म)ग	-	री	-	
ना	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	जा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ने	ऽ	ऽ	ऽ	
×					२		०			३				

(सां)नि	-	-	सां	-	-;(सां)रीं	नि	ध	प		इत्यादि स्थायी के
कौ	ऽ	ऽ	न	ऽ	ऽ;ये	खे	ल	न	----	अनुसार
×					२	०				

राग काफी-राष्ट्र गीत

टीप: जिस जगह ⟶ यह चिन्ह दर्शाया गया है वहाँ आवाज़ को मुलायम करना चाहिये।

स्थायी : वन्दे मातरम्
सुजलाम् सुफलाम् मलयजशीतलाम्
सस्य श्यामलाम् मातरम् ।

अंतरा : शुभ्र जोत्स्नाम् पुलकित यामिनीम्
फुल्ल कुसुमित द्रुमदल शोभिनीम्
सुहासिनीम् सुमधुर भाषिणीम्
सुखदाम् वरदाम् मातरम् ॥

संचारी : त्रिंशकोटि कंठ कलकल निनाद कराले
द्वात्रिंशत्कोटिभुजै धृतखरकरवाले

आभोग: के बोले माँ तुमि अबले
बहुबल धारिणीम् नमामि तारिणीम्
रिपुदल वारिणीम् मातरम् ॥

स्थायी

प ग पम ध
नि प; ग़ रीग़-, म - मप - -- निधनि-----,
व S;न्दे SSS, माSतरम् SSS सुजलाम् SSSS,

प प प ध सां नि सां
धपध- - - म्, म म प ध निसां - धनिसां निसां - - - -
सुफलाSSSम्, मलय ज शीSS SSS तलाम् SSS

ग मप ग़ ग़
म - म- निनिपमप -(ग़)री-, रीगमम गरीग़-, रीसारी-, -
स Sस्यS श्याSSSS S म लाम् S, माSSSSSSS, SSSS S

सा
ऩि सा - - -
त रम् SSS

अंतरा

सा सां नि नि नि प
म -प ध नि- सां --, सां नि सां सां धनिसांसां,निधनि- धपध- मप --;
शु Sभ्र S जोSत्स्नाS, पु ल कि त याSSS, SSSS SSSS मिनीम् S;

सां नि सां सां
नि - नि- -, सां नि सां सां, सां नि सां रीं नि धपमपनि- -ध प -;
फु Sल्ल S, कु सु मि त, द्रु म द ल शो SSSSSSSभि नीम् S,

ध ध ध गं
प प रीं - - सां रीं -(नि)प; प ध सां रीं सांरींमंमंगंरींगं-, -
सु हा S SSसि नीम् S S; सु म धु र भाSSSSSSS S

सां
रींसांरीं-, - नि सां - - - म ग म - - पधनिसां- -,
SSSS, S षि णीम् SS सु ख दाSS SSSमSS,

प ग़ ग़ सा
नि प (ग़) री - , रीगमम गरीग़-, रीसारी-, - ऩि सा - -
व र दा Sम्, माSSSSSSS, SSSS, S त रम् SS

संचारी

म नि॒ ध नि॒ प म
ध – ध | ध – ध | नि॒ – नि॒ | – नि॒ नि॒ | ध नि॒ ध | प – प | ध म प | ग॒ री –
त्रिं ऽ श | को ऽ टि | कं ऽ ठ | ऽ क ल | क ल नि | ना ऽ द | क रा ऽ | ले ऽ ऽ
सा म म म म
ग – ग | – ग – | म – म | म म – | री री म | म प प | प – म | ध प –
द्वा ऽ त्रिं | ऽ श ऽ | को ऽ टि | भु जै ऽ | धृ त ख | र क र | वा ऽ ऽ | ले ऽ ऽ

आभोग

ध नि गं सां
प रीं – – रीं रीं –, सांरींमंमंगंरींगं–, – रीं सां रीं नि सां – –
के ऽ ऽ ऽ बो ले ऽ, माऽऽऽऽऽऽऽ ऽ तु मि अ ब ले ऽऽ

म प सां सां सां ध सां
प नि नि नि नि नि–प, पधनिसां, – नि सां – – –
ब हु ब ल ऽ ऽ ऽऽ, धाऽऽऽ ऽ रि णीम् ऽऽऽ

सां नि॒ नि॒ प
नि॒ नि॒ – नि धनि॒, सांसांनि॒धनि॒–, – धपध–, – म प – –
न मा ऽ मि ताऽ, ऽऽऽऽऽऽ ऽ ऽऽऽऽ ऽ रि णीम् ऽ

म प म प
री म प ध म – नि॒नि॒पमप– – –, (ग॒) री – – –;
रि पु द ल वा ऽ ऽऽऽऽऽऽऽऽ रि णीम् ऽ ऽ;

ग॒ ग॒ सा
रीग॒ममगरीग॒– – रीसारी–, – – नि॒सा – – –
माऽऽऽऽऽऽऽ ऽ ऽऽऽऽ ऽ ऽ त रम् ऽऽऽ

राग काफी- वर्णम्- आदिताल

(संस्कृत तथा हिन्दी में)

संस्कृत

पल्लवी : ईष्टे को लीलां ते विज्ञातुं
खिन्नोऽसीति जाने माधव |

अनुपल्लवी: न विधाता न हि विश्वेशो नैव देवा
न तपोधनास्ते रूपरसरागावगमक्षमाः ||

चरणम् : एकैव या ते हृधा हृद्गता
राधा तां यान्तु शरणं मे सर्वे मनोभावाः ||

हिन्दी

पल्लवी : करके मोंसे पीत काहे न्यारे होत अब तुम
श्याम सुन्दर नन्दलाल |

अनुपल्लवी : नहिं माने जिया नहिं आवे रैन दिना मोहे
तनहु चैन देवो दरस राधारमणा कन्हाई||

चरणम्: ना जानूँ काहे छाँडि पीत हम से
कासे कहूँ हो मनकी ये बिथा प्यारे ||

टीप: चूँकि लेखक ने संस्कृत तथा हिन्दी में रचित इस राग के 'वर्णम्'के स्वरकरण का आयोजन एक सा ही किया है, दोनों भाषाओं के साहित्य को एक के नीचे दूसरा लिखा गया है |

पल्लवी

गरीगसा रीप-म पधनिसां रीं,सांनिध	सांसां-नि धम,प-	मगरीग,सारीपम
ईऽऽऽ ऽष्टेऽऽ कोऽऽऽ ऽ,लीऽऽ	लांऽऽते ऽऽ,विऽ	ऽज्ञाऽऽ,तुंऽऽऽ
करके मों से पीऽत काऽऽऽ ऽ,हेऽऽ	न्याऽऽरे ऽऽ,होऽ	ऽतऽऽ,अबतुम
X	२	३

निधपम पधनि,गं रींसांनि,सां रींगंमं-	गंरीं-- गं,रींसांनि,	धमपसां, -निपम,
खिऽऽऽ ऽऽऽ,नो ऽऽऽ,सी ऽऽऽऽ	तिजाऽऽ ऽ,नेऽऽ	माऽऽऽ ऽ,धवऽ
ख्याऽऽऽ ऽऽम,सुं ऽऽऽ,ऽ ऽऽऽऽ	दरऽऽ ऽ,नंऽद,	लाऽऽऽ ऽऽलऽ
×	२	३

अनुपल्लवी

धनिरींसां रीं-गं,पं मंगंरींनि सांरींगंमं,	रीगमप -रीं-सां	निधम-, पधनिसां
नविधाऽ ऽऽऽ,ताऽऽनहि विऽऽऽ,	खेऽऽशो ऽ,नेऽव	देऽवाऽ, ऽऽऽऽ
नहिंमाऽ नेऽऽ,जि याऽनहिं आऽऽऽ	विऽऽऽ ऽ,रेऽन	दिनाऽऽ मोऽहेऽ
×	२	३

निपग- सारीगम -पपध मपसां-	रींगंमंगं रींसांनिध	निसां-,प गमनिप
नतपोऽ धनाऽस्ते ऽरूऽप रसराऽ	गाऽऽऽ ऽऽऽव	ग म ऽक्ष माःऽऽऽ
तनहूँऽ चेऽऽन ऽदेवोद रसराऽ	धाऽऽऽ ऽऽऽर	मणाऽ,क ह्माऽऽई
×	२	३

मुक्तायंपू

सारेप,रे परे,मनि धपध,ग मप,सारे	गमपध नि,रेगम	पधनिसां, मपधनि
×	२	३
सांरेंगं,मं -,सां-,प -,म-,सा -,रे-रे,	निधनि,प धनिरें-,	मपधनि -,रेगम
×	२	३
प-,सारे -,ग- -,म- -,प -,-,ध-	-,नि- -, सांनिरेंनि	सां,गपम,सामग,नि,
×	२	३
गरे,धरे सा,सां-रें गं,नि-सां,रें,ध-नि	सां,प-ध नि,म-प	ध,ग-म प,मपम
×	२	३

चरणम्

गंरींसांनि ध,रींसांनि धप,सां- -निधप	मगरीग -म-प	-ध-नि सां--,म
एऽऽऽ ऽ,कैऽऽ ऽव,याऽ ऽ,तेऽऽ	ऽऽऽह ऽधाऽह	ऽऽऽद्र तऽऽ,ज्ञा
नाऽऽऽ ऽ,जाऽऽ ऽनुँकाऽ ऽहेऽऽ	ऽऽऽछाँ ऽडिऽदी	ऽऽऽनी पीऽऽ,त
×	२	३

पध(म)ग- री--,रीं -सांनिध पमगरी,	गमप,म पध,पध	नि,धनिसां, निधपम ‖
ऽऽराऽ धाऽऽ,तां ऽयाऽन्तु शरणांऽ	मेऽऽ,स ऽऽ,वेंऽ	ऽ,मनोऽ भाऽवाःऽ
ऽऽहम् सेऽऽ,का ऽसेऽक हूँऽहोऽ	मन्ऽ,की ऽऽ,येऽ	ऽ,बिथाऽ प्याऽरेऽ
×	2	3

चिट्टस्वरम्

१.

नि-ध- प-म- ग-रे-,ग--,म	--,प- -,ध--	नि--,नि संरेंगंमं ‖
×	2	3

२.

प--,प मगरेग म--,म गरेसारे	ग--,ग रेसानिसा	रे-रे,ग -ग,म-
×	2	3
म,प-प, धनिरें,प धनि,मप ध,गमप	ध-,मप धनि-,प	धनिसां-, धनिसांरें ‖
×	2	3

३.

रें--- --,गंरें सां--,नि धपधनि	सां--,प मगरेग	म--,सा रेसा-,म
×	2	3
पम-,प धप-,ध मपधग रेग-म	प-,धनि -सांरें-	-,पध- निसां-नि ‖
×	2	3

४.

पपप,ध धध,निनि नि,सांरेंगं रेंसांनिध,	रेंसांनिधप,सांनिध	पम,गम म,निधप
×	2	3
मगरेग,गम,मप,पध,धनि, निसां-,सा	-रेगम नि--,मं	गंरेंनिध,गंरेंनिध
×	2	3
पसां-,म पधनिसां-,सारेग मप-,नि	सारेगम -प-ध	-नि-सां-सां-सां ‖
×	2	3

राग ज़िला काफी – त्रिताल (मध्यलय)

(होली गीत)

स्थायी : जमुना के तीर कन्हैया

ब्रिज-बालन संग खेलत होरी ।

अंतरा-१ : हिलमिल खेलत ग्वाल बाल सब

हँस हँस रंग उड़ावत, धूम मचावत

तकतक मारत पिचकारी॥

अंतरा-२ : लाल हरे अरु नील बसंती

छिरकत रंग फुहारे, हँसत गावत

बैनु बजावत, निरतत नंद दुलारे॥

अंतरा-३ : मन मोही अतही सुख पाये

ऐसो न्यारो रास रचाये

लाज काज सुध बुध बिसराये

जय जय कृष्ण मुरारी॥

स्थायी

				सा
				ग गरी
				ज मुऽ
ऩि सा	ऩि री	म	म प	
सा – ध़ नि़	सा ग ग सा	गम पध प म	प प मप ध	
ना ऽ के ऽ	ती ऽ र क	न्हैऽ ऽऽ या ऽ	ब्रिज बाऽ ऽ	
०	३	×	२	
	ऩि ऩि	री ग	म	
प म ग़ री	सा – ध़ नि़	सा – री ग	म धपम; ग गरी	
ल़ न सं ग	खे ऽ ल त	हो ऽ री ऽ	ऽ ऽऽऽ; ज मुऽ	
०	३	×	२	

सा - ध़ नि़	सा - - सा	
ना ऽ के ऽ	ती ऽ ऽ र	इत्यादि
०	३	

अंतरा-१

प प ग म	प - ग म	प - प ग	री ग सा सा
हि ल मि ल	खे ऽ ल त	ख्वा ऽ ल बा	ऽ ल स ब
×	२	०	३
ध़ नि़ सा री	म (म) ग म	री मग रीसा री	- - ग रीसा
हँ स हँ स	रं ऽ ग उ	ड़ा ऽऽ वऽ त	ऽ ऽ ऽ ऽऽ
×	२	०	३
ध़ नि़ सा री	म (म) ग म	री मग रीसा री	-, ध ध, ध
हँ स हँ स	रं ऽ ग उ	ड़ा ऽऽ वऽ त	ऽ, धू म, म
×	२	०	३
पध नि ध प	- - -, धप	ग म -, गरी	सा सा ध़ नि़
चाऽ ऽ व त	ऽ ऽ ऽ, तक	तु क ऽ, माऽ	र त पि च
×	२	०	३

सा - री ग	म धपम; ग गरी	सा - ध़ नि़	इत्यादि स्थायी के
का ऽ री ऽ	ऽ ऽऽऽ; ज मुऽ	ना ऽ के ऽ	अनुसार
×	२	०	

अंतरा-2

, सांनिसां सां	नि ध प प	म ग म म	री (ग) रीसा री
, लाऽ ल ह	रे ऽ अ रु	नी ऽ ल ब	सं ऽ तीऽ ऽ
	३	×	२

सा री म प	ध (नि) ध प	म – ग म	गरी सारी गम –
छि र क त	रं ऽ ग फु	हा ऽ ऽ ऽ	रेऽ ऽऽ ऽऽ ऽ
०	३	×	२
प धनि रीं	सां – नि ध	प, मग म म	री मग रीसा री
हाँ ऽ स त	गा ऽ व त	ऽ, बैऽ नु ब	जा ऽऽ वऽ त
०	३	×	२
ग री ग री	सा – ध़ नि़	सा – री ग	म धपम; ग गरी
नि र त त	न ऽन्द दु	ला ऽ रे ऽ	ऽ ऽऽऽ; ज मुऽ
०	३	×	२
सा – ध़ नि़	इत्यादि स्थायी के अनुसार		
ना ऽ के ऽ			
०			

अंतरा-३

प रीं रीं –	रीं – रीं रीं	सांरीं गंमं गं मं	रीं (गं) (सां) –
म न मो ऽ	ह्री ऽ अ त	हीऽ ऽऽ सु ख	पा ऽ ये ऽ
०	३	×	२
नि – ध प	मग म गरी सारी	–, री म म	प – पध निसां
ऐ ऽ सो ऽ	न्याऽ ऽ रोऽ ऽऽ	ऽ, रा स र	चा ऽ येऽ ऽऽ
०	३	×	२
–, नि ध प	मग म गरी सारी	– री म म	प – प –
ऽ, ऐ सो ऽ	न्याऽ ऽ रोऽ ऽऽ	ऽ रा स र	चा ऽ ये ऽ
०	३	×	२

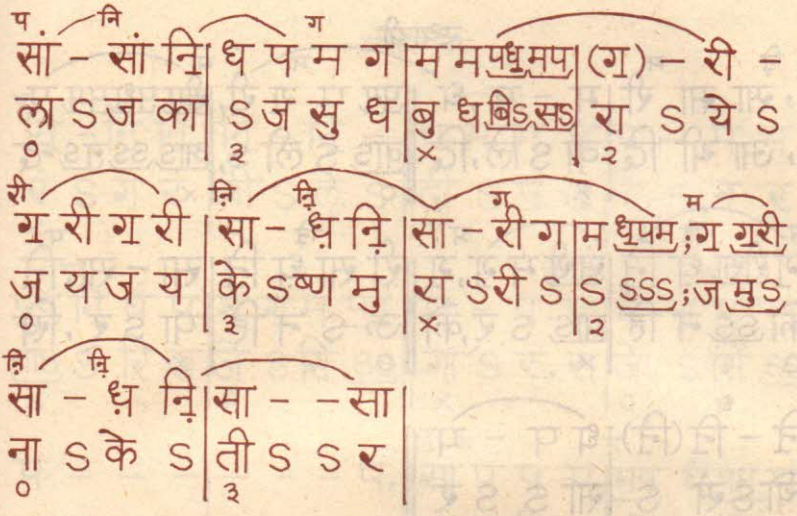

राग ज़िला काफी–कहरवा

(दिवाली गीत)

स्थायीः आयी दिवाली दिवाली, आनन्द को नहिं पार
को ऊ नहिं पार, खिल्यो संसार |

अंतरा-१ः दिया जरे हिया भरे, जिया डोले मंगल दीप निहार
दीप निहार, खिल्यो संसार ||

अंतरा-२ः रंग रंगीले दीप जरे, नर नारी सजे सिंगार
सजे सिंगार, दस दिस ज्योतिन की बौछार,
मिट्यो अंधकार, धरती भई उजियार
भई उजियार, खिल्यो संसार ||

अंतरा-३ः चल री सखि चल हम तुम मिलिके गावे सुनावे जयजयकार
जयजय श्री जय लक्ष्मी जय माधव मोहि निहार
बरनी न जाय अप्रंपार लीला अप्रंपार, खिल्यो संसार ||

स्थायी

नि़ म		म	म
, सा सा री	म - प , ध	पम प ग री,	रीम पध पम प
, आ यी दि	वा ऽ लि, दि	वाऽ ऽ ली ऽ,	आऽ ऽऽ नऽ न्द
	×	०	×
म नि़	म	नि़	प
गरीसा ध़ नि़	सारी म ग, ग	री सा ध़ नि़	सा - सा, नि
को ऽऽ न हिं	पाऽ ऽ र, को	ऊ ऽ न हिं	पा ऽ र , खि
०	×	०	×
ध			
नि - नि (नि)	ध प - प		
ल्यो ऽ सं ऽ	सा ऽ ऽ र		
०	×		

अंतरा-१

नि़ नि़		नि़ नि़	
, सा ध़ नि़	सा - रीग -	री, सा ध़ नि़	सा - - -
, दि या ज	रे ऽ ऽऽ ऽ	ऽ, हि या भ	रे ऽ ऽ ऽ
	०	×	०
सा ध	म	ग री	नि़ नि़
- , प प ध	पम, प ग म	री ग सा री	सा - ध़, नि़
ऽ, जि या ऽ	डोऽ ऽ ले ऽ	मं ऽ ग ल	दी ऽ प, नि
×	०	×	०
	नि़	प	ध
सा - रीग -	री सा ध़, नि़	सा - सा, नि	नि - नि (नि)
हा ऽ ऽर ऽ	दी ऽ प, नि	हा ऽ र, खि	ल्यो ऽ सं ऽ
×	०	×	०
	म		म
ध प - प	- ; सा सा री	म - प, ध	पम प ग री
सा ऽ ऽ र	ऽ; आ यी दि	वा ऽ लि, दि	वाऽ ऽ ली ऽ
×	०	×	०

----- इत्यादि स्थायी के अनुसार

अंतरा-२

प ध म प
नि - नि नि | नि - नि - || ध म म ध | प -, प प
रं ऽ ग रं | गी ऽ ले ऽ || दी ऽ प ज | रे ऽ, न र
× | ० || × | ०

सां प म प
पध नि ध प | म ग म पम || प - प, प | म ग म पम
नाऽ ऽ रि स | जे ऽ सिं ऽऽ || गा ऽ र्, स | जे ऽ सिं ऽऽ
× | ० || × | ०

नि सा प
प - - - | - - - प, || सा प प प | मप ध पम प
गा ऽ ऽ ऽ | ऽ ऽ ऽ र्, || द स दि स | ज्योऽ ऽ तिऽ न
× | ० || × | ०

री प ग प
मग ग, म प | म - म, म || गरी ग म प | म - - म
कीऽ ऽ, बौ ऽ | छा ऽ र, मि || व्योऽ ऽ अं ध | का ऽ ऽ र्
× | ० || × | ०

प सां प
नि नि नि - | नि नि सां गं || (सां) - -, नि | नि धप म ध
ध र ती ऽ | भ ई उजि || या ऽ र्, भ | ई ऽऽ उजि
× | ० || × | ०

प ध नि म
प - -, नि | नि - नि (नि) || ध प - प | -; सा सा री
या ऽ र्, खि | ल्यो ऽ सं ऽ || सा ऽ ऽ र् | ऽ; आ यी दि
× | ० || × | ०

----- इत्यादि स्थायी के अनुसार

अंतरा-३

प सां सां नि
नि नि नि, नि | नि - नि ध || सां सां सां सां | सां नि (सां) -
च ल रि, स | खी ऽ च ल || ह म तु म | मि लि के ऽ
× | ० || × | ०

री प	प		
म – म, म	प – सां (सां)	नि ध नि (नि)	ध प – प
गा ऽ वे, सु	ना ऽ वे ऽ	ज य ज य	का ऽ ऽ र
×	०	×	०

ध	सां गं	सां	नि नि
प रीं रीं रीं	रीं – रीं गंरीं	नि नि नि –	सां सां, सां प
ज य ज य	श्री ऽ ज यऽ	ल छ मी ऽ	ज य, मा ऽ
×	०	×	०

सां	नि मं	रीं	
प प, ध सां	सांरीं गंरीं, गं	सां – – –	– – – सां,
ध व, म न	मोऽ ऽ हि, नि	हा ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ र्,
×	०	×	०

ध	नि	ग	म
प नि पनिसांरीं	सां नि ध प	म म पनिमप	ग री – म,
ब र नीऽ ऽऽ	न जा ऽ य	अ प रऽ ऽऽ	म्पा ऽ ऽ र्,
×	०	×	०

	नि़	री	प
ग री सा –	ध़ नि़ सा री	प – – –	– – प, नि
ली ऽ ला ऽ	अ प र ऽ	म्पा ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ र्, खि
×	०	×	०

ध		नि़ म	
नि – नि (नि)	ध प – प	सा; सा सा री	म – प ध
ल्यो ऽ सं ऽ	सा ऽ ऽ र्	ऽ; आ यी दि	वा ऽ लि दि
×	०	×	०

..... इत्यादि स्थायी के अनुसार

राग भीमपलासी-सरगम-त्रिताल(मध्यलय)

स्थायी

म ग रे सा | -,म ग प | म - -,नि़ | सा ग रे सा
0 | 3 | × | 2

नि़ सा म ग | म,प म प, | नि ध प ग | -,म प नि
0 | 3 | × | 2

सां -,गं रें | सां रें सां नि | ध प,ग म | प सां -;प
0 | 3 | × | 2

अंतरा

नि़ सा ग म | प नि - नि | सां - -,नि | सां गं रें सां
0 | 3 | × | 2

मं गं रें सां | नि ध प ग | -,म ग रे | सा - -,सां
0 | 3 | × | 2

- सां,प - | म,ग - प | म - -,नि़ | सा ग रे सा;
0 | 3 | × | 2

राग भीमपलासी-लक्षणगीत-त्रिताल(मध्यलय)

स्थायी : सजत भीमपलासी माधुरी
हरप्रिय मेल मिलावत सुस्वर
सम समवादी वादी नित लच्छन ।

अंतरा : रिध सुर तज आरोहत औडव
सम्पूरन अवरोहत सुन्दर
दिन तीजे पहर गाये गुनीजन ॥

स्थायी

म	म	री ग	म
,नि ध प	ग - री सा	नि़ सा म,म	- प ग म
,स ज त	भी ऽ म प	ला ऽ सी,मा	ऽ धु री ऽ
	३	×	२
म	सा	म प	म
ग म प नि	ध प प,नि़	सा ग म प	ग - री सा
ह र प्रि य	मे ऽ ल,मि	ला ऽ व त	सु ऽ स्व र
०	३	×	२
सां सां	म	म	
नि नि सां सां	नि ध प,ग	री सा,ग म	ग री सा सा
स म स म	वा ऽ दी,वा	ऽ दी,नि त	ल ऽ च्छ न
०	३	×	२

अंतरा

ग	सां		सां
म म म म	प प नि -	सां - सां सां	नि सां सां सां
रि ध सु र	त ज आ ऽ	रो ऽ ह त	ओ ऽ ड व
०	३	×	२
सां सां		सां	
नि - नि -	सां गं,रीं सां	नि - सां सां	नि ध प प
स ऽ म्पू ऽ	र न,अ व	रो ऽ ह त	सु ऽ न्द र
०	३	×	२
प सां	सां	म म	म
म प नि सां	सां,गं रीं सां	ग - म प	ग - री सा
दि न ती ऽ	जे,प ह र	गा ऽ ये गु	नी ऽ ज न
०	३	×	२

राग भीमपलासी- लक्षणगीत-त्रिताल(मध्यलय)

स्थायी : तीजे पहर दिन मन मोहत नित
मृदु निग शुचि रिध मध्यम वदत
संवदत खरज, काफी मेल जनित |
अंतरा : रिध तजत अनुलोम ओडव
सम्पूरन बिलुम गंभीर सुर सजत
भीमपलासी चतुर सुरि संमत ||

स्थायी

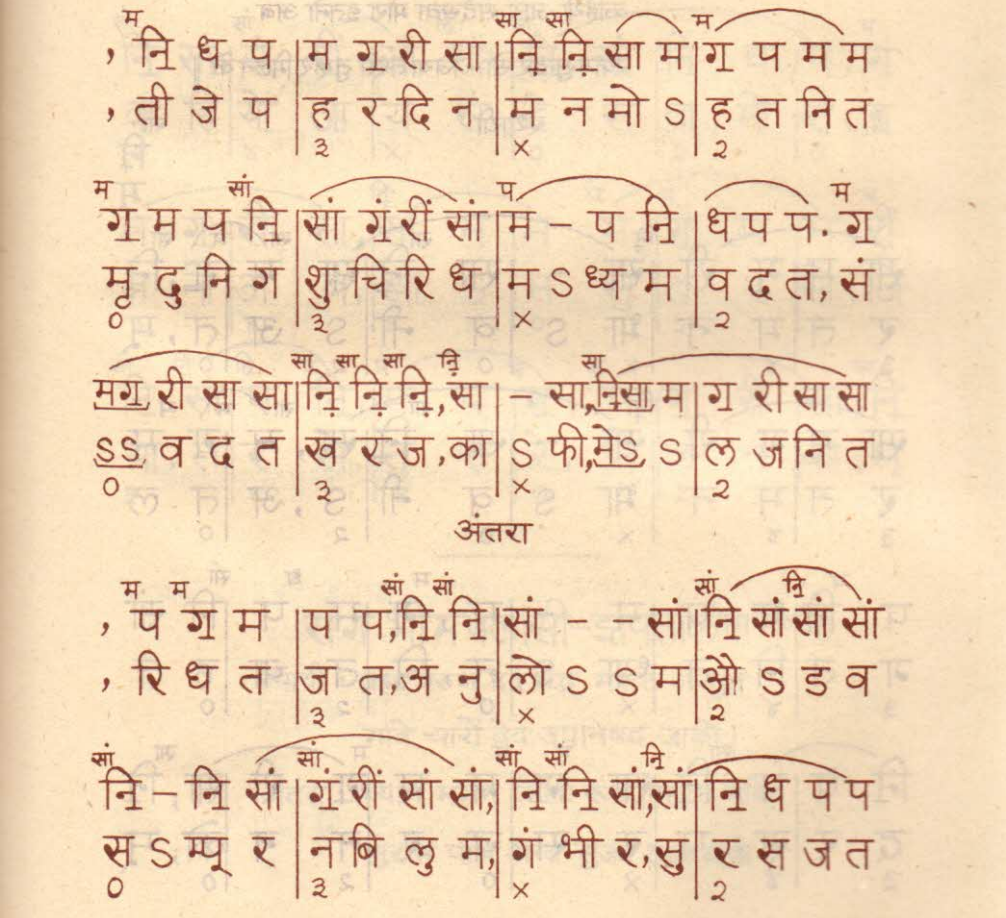

अंतरा

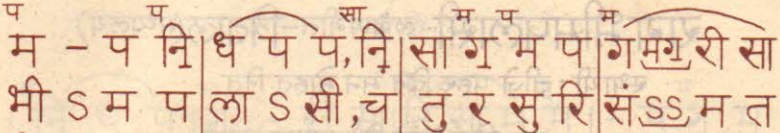

राग भीमपलासी–एकताल (मध्यलय)

स्थायी : मूरत मन भावनी अत लगत नित ध्यान
चित चाहत दरस परस चरनन को |

अंतरा : दिन चैन न निंदिया रैन सखि
कहियो जाय संदेसवा मोरा इतनो अब
श्याम सुन्दर सों – जिया तरसे तुम्हरे मिलन को ||

स्थायी

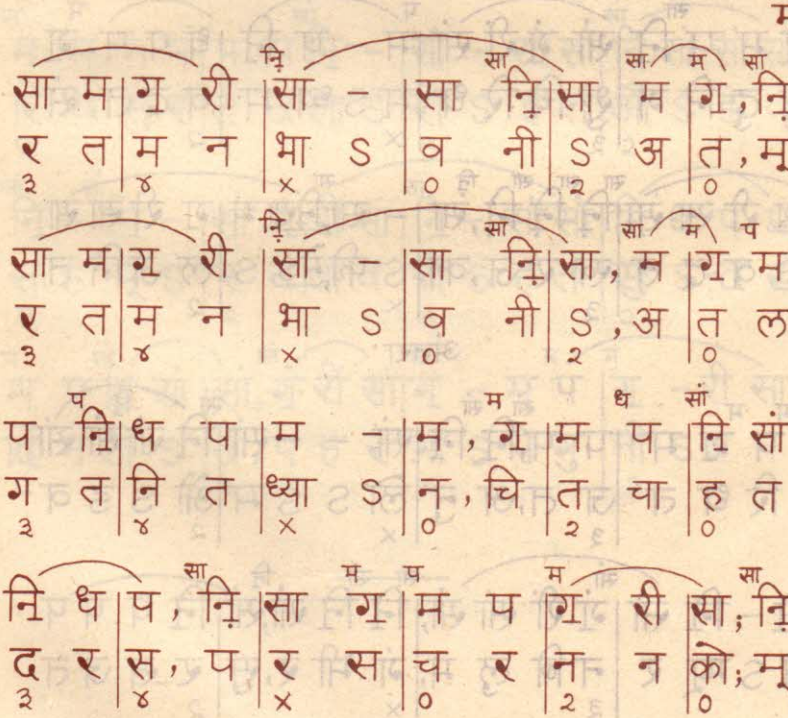

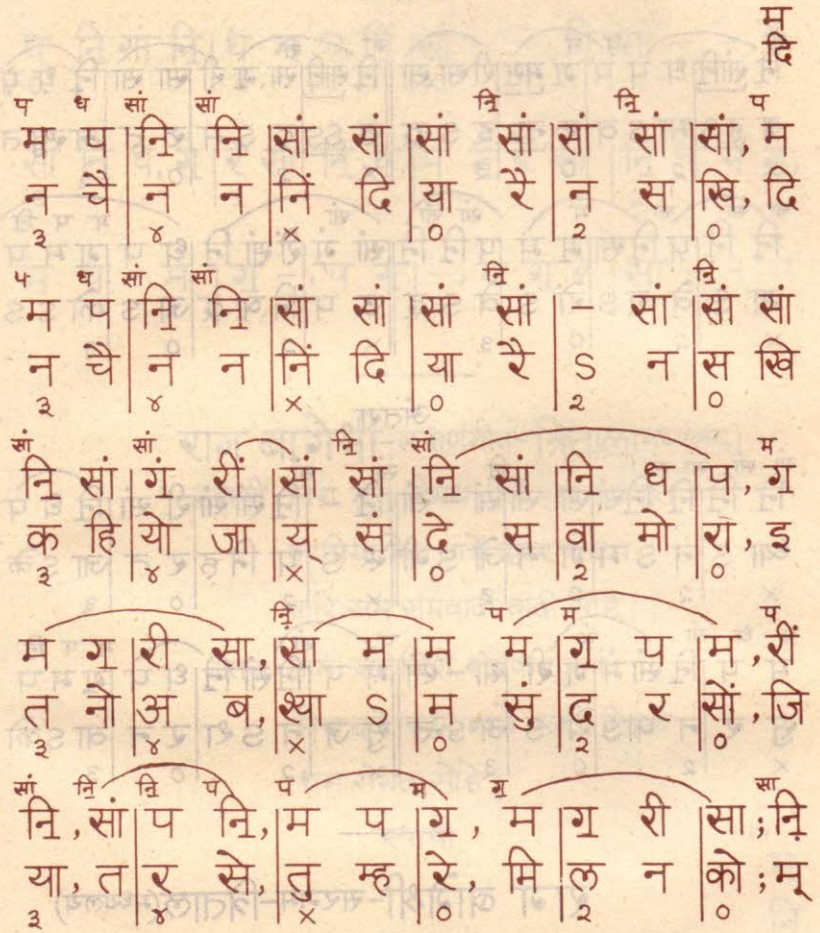

राग भीमपलासी-झपताल (मध्यलय)

स्थायी : ब्रह्मा वरुण इंद्र रुद्र मरुत अस्तुत
गावे चारों वेद उपनिषद जाको |

अंतरा : ध्यान मगन जोगी रूप निहरत जाके
सुर न पाये अन्त 'सुजन' शरन वाको ||

स्थायी

सां	ध	म		सा	री		
नि सांनि	ध प प	ग मग	री सा सा	नि सानि	सा ग री	सा सा	नि ध प
ब्र हS	मा S व	रु नS	इ S न्द्र	रु SS	द्र S म	रु त	अ स्तु त
×	2	0	3	×	2	0	3
सा सा	सा	म	सां सां	सां			म प नि
नि नि	प नि सा	ग म	प नि नि	सां गं	रीं सां नि	ध प	ग म प
गा S	वे चा S	रों S	वे S द	उ प	नि ष द	जा S	को S S
×	2	0	3	×	2	0	3

अंतरा

सां सां	सां सां		नि	सां	सां		
नि नि	नि निसां	सां सां	सां - सां	नि -	नि सांसां	रीं सां	नि ध प
ध्या S	न S म	ग न	जो S गी	रु S	प नि ह	र त	जा S के
×	2	0	3	×	2	0	3
प ध	सां	मं		प	सां		म प नि
म प	नि सां मं	गं रीं	सां - सां	म प	नि सां नि	ध प	ग म प
सु र	न पा S	ये S	अ S न्त	सु ज	न S श	र न	वा S को
×	2	0	3	×	2	0	3

राग बागेश्री-सरगम-त्रिताल(मध्यलय)

स्थायी

ग रे सा नि	सा ध नि सा	म -, ग म	ध -, नि ध
0	3	×	2
म ग -, म	नि ध सां -,	रें सां नि सां	नि ध -, ग
0	3	×	2
म धनिसां	-, नि ध -,	म ग -, रे	सा - - ; म
0	3	×	2

अंतरा

ध नि सां नि ०	ध म, ध नि ३	सां – –, नि ×	सां – –, रें २
सां नि ध, गं ०	रें सां नि ध, ३	मं गं रें सां ×	नि ध म ग, २
म ध – म	ग – , प ग ३	–, म ग रे ×	सा – –; म २

राग बागेश्री-लक्षणगीत-त्रिताल(मध्यलय)

स्थायी : निग मृदु रिमध शुचि सुर सप युत
हरप्रिया मेल तामें दूबर पंचम
करि सम समवादी वादी सोहे।

अंतरा : नाम बागेसिरी रसिक रंजनी
निस दूजे पहर गाये बजाये रिझाये
धम संगत सोहे॥

स्थायी

सा म नि

ग री सा, री	नि सा, ध धप	ध नि, ध म	प ध, म ग
ग मृ दु, री ०	म ध, शचिऽ ३	सु र, स प ×	यु त, ह र २
म नि ध, सां	– सां, निसां रीं	सां, नि ध ध	पध नि ध म
प्रि या ऽ, मे ०	ऽ ल, ताऽ ऽ ३	में, दू ब र ×	पंऽ ऽ च म २

(ध)प ध म ग	री सा री -	सा, ध़ (नि़)नि़ सा	ध (नि)नि ध; (ग)म
क रि स म	स म वा ऽ	दि, वा ऽ दि	सो ऽ है; नि
०	३	×	२

अंतरा

(म)ग - (म)म नि	ध नि (सां)सां सां	(नि)सां - -, नि	(सां)सां रीं (नि)सांनि सां
ना ऽ म बा	ऽ गे ऽ सि	री ऽ ऽ, र	सि क रेंऽ ऽ
०	३	×	२

नि ध -, (नि)ध	नि सांरीं गं रीं	(नि)सां रीं सां, (सां)नि	सां नि ध, (प)ध
ज नी ऽ, नि	स दृऽ ऽ जे	प ह र, गा	ऽ ये ऽ, ब
०	३	×	२

(नि)धनि सां नि, ध	म ग (म)म, ध	(म)म नि ध सां	(नि)ध नि ध; (ग)म
जाऽ ऽ ये, रि	झा ऽ ये, ध	म सं ग त	सो ऽ है; नि
०	३	×	२

ग री (सा)सा, (री)री	नि़ सा
ग मृ दु, री	म ध ..... इत्यादि स्थायी के अनुसार
०	३

राग बागेश्री - त्रिताल (मध्यलय)

स्थायी : हरि सुमिरन बिन जनम गँवायो
रे बौरे अब तो जाग जाग
छाँड़ निंदिया भरम जंजाल।

अंतरा : सुत दारा संपद संतति सब, साँस मिटे
नहिं संग चले कोऊ, तारनहार एक
जगजीवन, जप ले नाम गोविंद गोपाल॥

स्थायी

सा	री	सा	नि
म ग री सा	री नि सा सा	ध ध ध ध	पध नि ध म
हृ रि सु मि	र न बि न	ज न म गँ	वाऽ ऽ यो ऽ
0	3	×	2
ग ध	म	म	ध गं
म निध सां -	नि ध म, ग	ग म नि ध	सां - सां, रीं
रे ऽऽ बौ ऽ	रे ऽ ऽ, अब	तो जा ऽ ग	जा ऽ ग, छाँ
0	3	×	2
नि	ग म	म	सां
गं रीं, सां रीं	सां - -, म	ग म, नि ध	नि सां - सां;
ऽ ड़, निं दि	या ऽ ऽ, भ	र म, जं ऽ	जा ऽ ऽ ल;
0	3	×	2

अंतरा

म म ग	म	सां नि	सां नि
ग ग म -	नि ध, नि -	सां सां, सां -	नि सां सां सां
सु त दा ऽ	रा ऽ, सं ऽ	प द, सं ऽ	त ति स ब
0	3	×	2
सां नि नि		सां	सां
नि सां सां, सां	रीं - सां सां	नि सां सां, सां	नि सां नि ध
साँ ऽ स, मि	टे ऽ न हिं	सं ऽ ग, च	ले ऽ को ऊ
0	3	×	2
मं गं	नि	सां	सां
गं - रीं गं	रीं - सां, सां	नि सां, रीं सां	नि सां नि ध
ता ऽ र न	हा ऽ र, ए	ऽ क, ज ग	जी ऽ व न
0	3	×	2
ग ध	म म	नि ध नि	सां
म म प ध	ग - ग, नि	ध - प, ध	नि सां - सां;
ज प ले ऽ	ना ऽ म, गो	विं ऽ द, गो	पा ऽ ऽ ल;
0	3	×	2

राग बागेश्री–त्रिताल (मध्यलय)

स्थायीः दे दरस मोहे श्याम मुरारी
गिनत जात घड़ियाँ।
अंतराः जाग रही हूँ सगरी रतियाँ
बेग दिखावो सूरतिया॥

स्थायी

,ध – नि	ध ध सांनि	ध ध नि ध	म ग रीसा
,दे ऽ द	र स मोहे	श्या ऽ म मु	रा ऽ री ऽ
	३	×	२
ध़ नि़ सा ग	म म नि ध	सां नि ध प	म ग री सा;
गि न त जा	ऽ त घ ड़ि	याँ ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ;
०	३	×	२

अंतरा

ग म ध नि	सां – सां –	नि सां निसां मंगं	रीं रींसां (सां) निध
जा ऽ ग र	ही ऽ हूँ ऽ	स ग रीऽ ऽऽ	र तिऽ या ऽऽ
०	३	×	२
धनि सांरीं गंरीं, सांरीं	सांनि सांरीं सां, नि	ध ध नि, ध	म ग री सा;
बेऽ ऽऽ ऽऽ, ऽऽ	ऽऽ ऽऽ ग, दि	खा ऽ वो, सू	र ति या ऽ;
०	३	×	२

राग बागेश्री – त्रिताल (मध्यलय)

स्थायी : एरी कौन यह बारो साँवरो
सुन्दर सलोना, मुकुट माथे
कट पीताम्बर गरे बैजयन्ती
धरि अधर मुरली धुन मधुर बजावत।

अंतरा : यही तो नन्द दुलारो सखीरी
कृष्ण कन्हाई कहावत
गोकुल गाँव गोप गोपीजन मन
जेहि मोहि लेत सुध बुध बिसरावत ॥

स्थायी

ध नि	प	सां	ध
सां – सां नि	ध नि ध ध	नि – नि,ध	– म प ध
ए ऽ री कौ	ऽ न य ह	बा ऽ रो,साँ	ऽ व रो ऽ
0	३	×	२
म म		सा सा	म
ग गरी रीसा	री – सा –,	नि़ ध़ ध़,नि़	सा सा,ग म
सु न्द र सऽ	लो ऽ ना ऽ,	मु कु ट,मा	ऽ थे,क ट
0	३	×	२
म	सां	सां	नि
नि ध सां –	सां सां,निसां	रीं – सां नि	सां नि,ध नि
पी ऽ ता ऽ	म्ब र,ग रे	बै ऽ ज यं	ऽ ति,ध रि
0	३	×	२
नि		प प	म
सां गं रीं सां	रीं सां,नि ध	म म प ध	ग – री सा;
अ ध र मु	र ली,धु न	म धु र ब	जा ऽ व त;
0	३	×	२

अंतरा

नि़ सां	नि़ सां	नि़	सां
सां सां धनि़	सां – ध नि़	सां – सां,रीं	नि़ सां नि़ ध
य ही ऽतो	न ऽन्द दु	ला ऽ रो,स	खी ऽ री ऽ
0	3	×	2
मं		सां	ध
गं – रीं सां	रीं – सां,रीं	नि़ सां नि़ ध,	पध नि़ ध म
के ऽष्ण क	न्हा ऽ ई,क	हा ऽ व त,	गोऽ ऽ कु ल
0	3	×	2
म म	ध		नि़
ग – म, नि़	– ध,सां –	नि़ ध म ग	री सा, ध़ नि़
गाँ ऽ व, गो	ऽ प, गो ऽ	पी ऽ ज न	म न, जे हि
0	3	×	2
नि़ सा		नि	म
सा – सा म	– ग, म म	ध नि़ ध म	गमग री सा;
मो ऽ हि ले	ऽ त, सु ध	बु ध बि स	रा ऽऽ व त;
0	3	×	2

राग बागेश्री–त्रिताल (मध्यलय)

स्थायी: रास रच्यो है जमुना नीर तीर
ब्रिज गोपीयन के संग, रंग रससों
खेले कन्हैया।

अंतरा: इत बृखभान नंदिनी, उत नन्द नन्दन
सोहत अत रूप जोबन ले हूँ बलैंया ॥

टीप: इस राग के बंदिश-रूप को 'पुरानी बागेश्री', 'संपूर्ण बागेश्री' अथवा 'बागेश्री-कान्हड़ा' इन भिन्न भिन्न नामों से जाना जाता है।

स्थायी

	री नि	म ग	ग
,री सा री	नि़ सा,सा प	प - ग म	ग री ग री
,रा स् र	च्यो है, ज मु	ना S S नी	र ती S र
	३	×	२

सा म	ध	म	म नि
सा, नि़ सा ग	म प ध नि	ध म प ग	-,ग म धनि
S, ब्रि ज गो	पी य न के	सं S S ग	S, रं S गS
०	३	×	२

	प	प	म म
सां, नि ध पध	नि - -, ध	म प -, ध	ग - री सा
S, र ससोंS	S S S, खे	S ले S, क	न्है S या S
०	३	×	२

अंतरा

म	प सां	नि	नि
, ग म प	निप सां - नि	सां - - निध	सां - -,सां
, इ त बृ	खS भा S न	नं S S दिS	नी S S,उ
	३	×	२

नि	सां रीं	म	नि
सां रीं - सां	नि सां - सां	नि ध -,ग	म प ध नि
त न S न्द	न S S न्द	न S S,सो	ह त अ त
०	३	×	२

ध	म	म	नि सा सा
ध - म, प	ध म ग, ग	गम री सा,सा	नि़ सारी री सा
रू S प, जो	ब न S, ले	SS हूँ S, ब	लें SS या S
०	३	×	२

राग बागेश्री–ध्रुवपद–चौताल

स्थायीः गोप गोपीयन संग खेले कन्हाई
जमुना नीर तीर नीको रास रच्यो है।
अंतराः बीन मृदंग झाँझ किनरी ढप मुरली
झनकार प्रबल नाद गरज उठ्यो है॥
संचारीः खग मृग पुनि उरग मीन बृखबेलि चराचर
रास बिलास देखि स्तिमित मुग्ध ठाढ़े हैं॥
आभोगः धन राधे माधव धन बृजभूमि धन गोकुल
बृजवासिन ग्वारन अतुल भाग पायो है॥

स्थायी

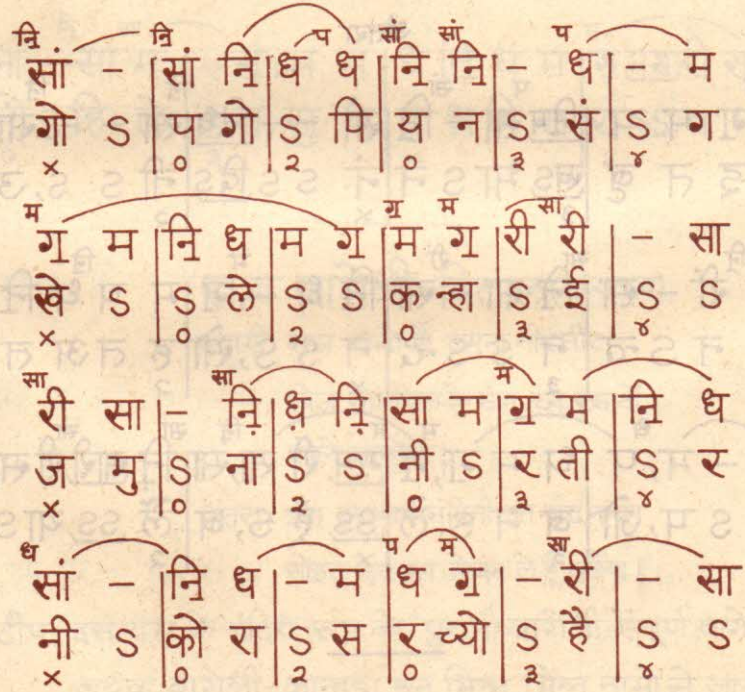

अंतरा

(grace) सा म		सां	नि़		
नि़ सा	ग म	ध, नि	सां -	सां,सां	- सां
बी S	S न	S, म्रि	दं S	ग, झाँ	S झ
×	०	२	०	३	४

(grace) सां सां			नि़ सां		
नि नि	सां रीं	- सां,	सां नि	सां, नि	ध ध
कि न	S री	S S,	ढ प	S, मु	र ली
×	०	२	०	३	४

(grace) नि़ नि़		मं		सां	
ध ध	नि सां	मं गं	रीं सां	सां नि	सां सां
झ न	S का	S र	प्र ब	ल ना	S द
×	०	२	०	३	४

(grace) सां	सां			म सा	
रीं सां	- नि	सां नि	ध म	ग री	- सा
ग र	S ज	S उ	ब्यो S	S है	S S
×	०	२	०	३	४

संचारी

(grace) नि़	सा		सां सां	सां	
सा सा	ध ध	ध ध	नि नि	नि ध	- ध
ख ग	मृ ग	पु नि	उ र	ग मी	S न
×	०	२	०	३	४

(grace) ग म	ग		म	सा	
म ग	- म	नि ध	म ग	- री	- सा
बृ ख	S बे	S लि	च रा	S च	S र
×	०	२	०	३	४

(grace) सा	नि़	नि़ सा		सा	म
नि़ सा	री सा	ध़ नि़	सा -	सा म	ग म
रा S	S स	S बि	ला S	स दे	S खि
×	०	२	०	३	४

नि						म			म		
ध	नि	सां	नि	ध	म	ग	-	म	नि	ध	-
स्ति	मि	त	मु	S	ग्ध	ठा	S	ड़े	है	S	S
×		०		२		०		३		४	

आभोग

नि					सां			नि		नि	
रीं	सां	-	नि	ध	नि	सां	-	सां	सां	सां	सां
ध	न	S	रा	S	धे	मा	S	ध	व	ध	न
×		०		२		०		३		४	

मं	मं		सां		सां			सां			
गं	गं	-	रीं	-	सां	नि	सां	नि	-	ध	ध
ब्र	ज	S	भू	S	मि	ध	न	गो	S	कु	ल
×		०		२		०		३		४	

नि				मं		नि					
ध	नि	सां	मं	गं	रीं	सां	नि	सां	नि	ध	ध
ब्रि	ज	बा	S	सि	न	श्या	S	S	र	S	न
×		०		२		०		३		४	

नि						ध		म	सा		
ध	नि	सां	नि	ध	म	प	ध	ग	री	-	सा
अ	तु	ल	भा	S	ग	पा	S	यो	है	S	S
×		०		२		०		३		४	

राग धनाश्री-एकताल (मध्यलय)

स्थायी: मन की अंग मन में रही
सखी अब लर पछताई
श्याम पीत खोय दई।

अंतरा: किये गुमान बैठी मनाये एक हू न मानी
आप किये आप रोई, रीत पीत की न जानी
अत अनारी बौरी भई॥

स्थायी

म		प				म					
प	प	ग	म	प	प	ग	म	ग	री	सा	–
म	न	की	उ	मं	ग	म	न	में	र	ही	S
×		०		२		०		३		४	

सा		म				म			सां		
नि़	सा	ग	म	प	प	ग	म	प	नि	सां	–
स	खी	अ	ब	ल	र	प	छ	ता	S	ई	S
×		०		२		०		३		४	

सां						म				सा	
निसां	रीं	सां	नि	ध	प	ग	–	री	सा	नि़सा	गम
श्याऽ	S	म	पी	S	त	खो	S	य	द	ईS	SS
×		०		२		०		३		४	

अंतरा

म		म	म								नि
प	प	प	ग	–	म	प	नि	–	सां	–	,सां
कि	ये	गु	मा	S	न	बै	S	S	ठी	S	,म
×		०		२		०		३		४	

सां			गं			सां		सां	नि		
नि	–	सां	रीं	–	सां	नि	–	नि	ध	प	प
ना	S	ये	प	S	क	ह	S	न	मा	S	नि
×		०		२		०		३		४	

प		सां		मं		मं			गं		
म	प	नि	सां	गं	पं	गं	मं	गं	रीं	सां	सां
आ	S	प	कि	ये	S	आ	S	प	रो	S	ई
×		०		२		०		३		४	

सा			म					सां			
नि़	–	सा	ग	–	म	प	–	नि	सां	–	सां
री	S	त	पी	S	त	की	S	न	जा	S	नि
×		०		२		०		३		४	

सां रीं	सां नि	ध प	ग -	री सा	निसा गम		
अ त	अ ना	ऽ रि	बो ऽ	रि भ	ईऽ ऽऽ		
×	०	२	०	३	४		

राग धानी- त्रिताल (मध्यलय)

स्थायीः सजी सजी सिंगार किये बैठी नार
अपने पिया सों मिलन बन बन बैठी।
अंतराः वाये कहा कल पिया परदेस
जिनके दिन बीतत गिन गिन तारे॥

स्थायी

म
स

ग सा नि़ प़	नि़ सा सा, म	ग म प प	म ग सा, नि़
जि स जि सिं	गा ऽ र, कि	ये बै ऽ ठी	ना ऽ र, अ
३	×	२	०
सा ग म प	नि सां नि प	ग म नि प	म ग सा; म
प ने पि या	सों मि ल न	ब न ब न	बै ऽ ठी; स
३	×	२	०

अंतरा

नि - नि नि	सां - सां सां	नि नि सां गं	सां नि प, मं
वा ऽ ये क	हा ऽ क ल	पि या प र	दे ऽ स, जि
३	×	२	०
गं सां नि प	म प नि, ग	म प ग म	ग सा सा; म
न के दि न	बी त त, गि	न गि न ऽ	ता ऽ रे; स
३	×	२	०

राग धानी–त्रिताल(मध्यलय)

स्थायी: भज भज गोपाल मुकुन्द मुरारी
बिन सुमिरन बीतत जनम तिहारे।

अंतरा: नाथ अनाथन जग प्रतिपालन
शरन जैयो चरन वाके मन बौरे॥

स्थायी

सा
म
भ

म ग सा नि़	सा	सा म म ग	सा
ग सा नि़ प़	नि़ सा सा,म	गम प ग म	ग सा सा,नि
ज भ ज गो	पा ऽ ल,मु	कुऽ ऽन्द मु	रा ऽ री,बि
३	×	२	०

म नि		म म नि	सा
सा ग म प	नि सां नि प,	ग म नि,प	म ग सा;म
न सु मि र	न बी त त,	ज न म,ति	हा ऽ रे;भ
३	×	२	०

अंतरा

सां सां सां		सां सां	नि सां
नि – नि,नि	सां – सां सां,	नि नि सां गं	सां नि प,मं
ना ऽ थ,अ	ना ऽ थ न,	ज ग प्र ति	पा ल न,श
३	×	२	०

मं गं सां नि	प म	म	सा
गं सां नि प	म प नि,ग	म प ग म	ग सा सा;म
र न जै यो	च र न,वा	ऽ के म न	बौ ऽ रे;भ
३	×	२	०

म ग सा नि़	सा
ग सा नि़ प़	नि़ सा सा
ज भ ज गो	पा ऽ ल.... इत्यादि स्थायी के अनुसार
३	×

राग धानी–झपताल (मध्यलय)

स्थायी: हा पीर मेरे औलिया निजामुद्दीन
तुम्हरे बिना दूजो जग में नहीं
आसरो मेरो है।

अंतरा: दीन दुनि के दानि तुम हो अत प्रवीन
आयो है दरबार शरन 'सुजन' आज
दूर करो बिपत बिनती यही है॥

स्थायी

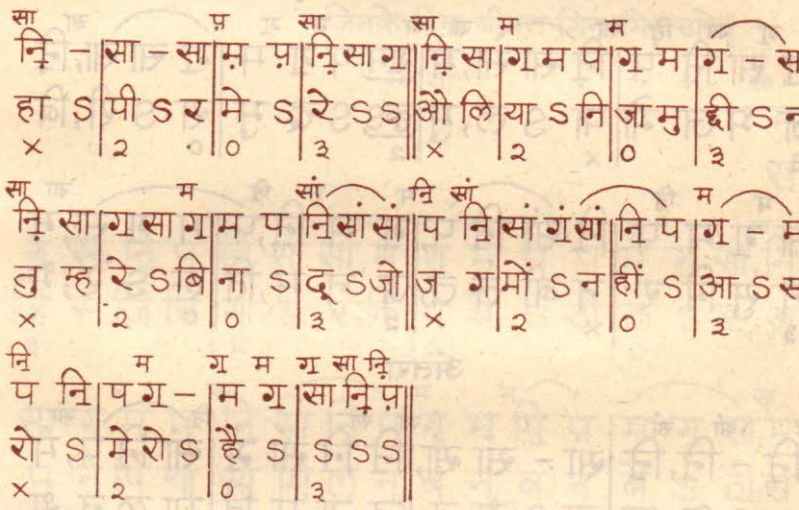

अंतरा

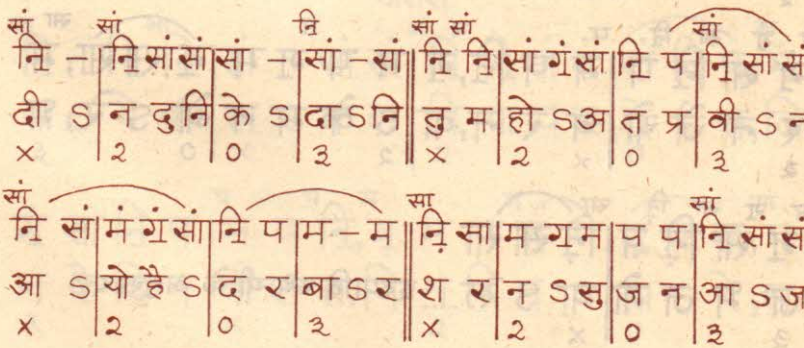

सां		नि॒ प		म	म		म ग॒ म ग॒ सा नि॒
मं गं	सां – प	सां –	नि प ग॒	म नि	प – ग॒	म ग॒	सा नि॒ प़
द॒ ऽ	र ऽ क	रो ऽ	बि प त	बि न	ती ऽ य	ही ऽ	है ऽ ऽ
×	2	0	3	×	2	0	3

राग बरवा–त्रिताल (मध्यलय)

स्थायी : नहीं मानत नारी गुमान भरी

नहिं लाख मनावत कैसी रूठी।

अंतरा : कौन उपाव करे सजनी अब

को समझावे जो समझे नहीं ॥

स्थायी

म
प प
न हीं

री म प	ग॒	नि॒ सा नि॒	नि॒ म प
म ध म प	री ग॒ री सा	री सा सा सा	री मरी म प
ऽ मा न त	ना ऽ री गु	मा ऽ न भ	री ऽऽ न हीं
0	3	×	2
प नि	म	म री नि॒	म प
सां – ध प	री म पध ध	ग॒ ग॒ सा सा	री मरी; म प
ला ऽ ख म	ना ऽ वऽ त	कै ऽ सी रू	ठी ऽऽ; न हीं
0	3	×	2

अंतरा

प	सां	सां	सां
म – प ध	नि – सां सां	नि –, सां सां	रीं नि ध प
कौ ऽ न उ	पा ऽ व क	रे ऽ, स ज	नी ऽ अ ब
0	3	×	2
सां	नि सां ध	ग॒	म प
नि – सां सां	ध नि प –,	री ग॒ री सा	री मरी; म प
को ऽ स म	झा ऽ वे ऽ,	जो ऽ स म	झे ऽऽ; न हीं
0	3	×	2

राग बरवा- तराना - त्रिताल (मध्यलय)

स्थायी : तदारेदानि द्रियानारे तोम् तन देरेना
तान्न दिर दिर तनन दीम् दीम् दीम्
तनोम् तनन नननननन द्रे द्रे द्रे द्रे द्रे ।

अंतरा (संस्कृत में) : किं नाम तत्सत् किं नाम ब्रह्मेऽति चिन्तने
मा भूव्दृथायासस्तपस्विन अंतरात्मैव
तदोम् सत् ॥

स्थायी

			(सा) ग
			त
(सा) सा री नि़ सा,	(म) री म पध मप	(म) री ग री सा	(सा) री नि़ सा, (सा) सां
दा रे दा नि,	द्रिया नाऽ रेऽ	तो ऽ म्त न	दे रे ना, ता
०	३	×	२
– नि ध प	म ग री, (प) म	– (नि) प – (सां) नि	(नि) सां (रीं) सां मं –
ऽ न्न दिर दिर	त न न, दीम	ऽ दीम ऽ दी	म् त नोम्
०	३	×	२
– गं रीं सां	नि ध प म	ग री, (प़) म़ प़	(सा) नि़ सा री; (री) ग
ऽ त न न	न न न न	न न, द्रे द्रे	द्रे द्रे द्रे; त
०	३	×	२

अंतरा

			(ग) म
			किं
– प – ध	(सां) नि – – –	– – सां –	(नि) – सां –, म
ऽ ना ऽ म	त ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ	ऽत्स त्, किं
३	×	२	०

सां नि रीं
\- प - ध | नि - सां - | सां - सां,मं | गं रीं सां सां
S ना S म | त S S S | त्त S त्, किं | S ना S म
३ | × | २ | ०

सां सां ग सा म ग री सा
रीं नि सां नि | ध,प म ग | री म -, म | ग री सा, री
भ्र S ह्मे S | ति,चि S न्त | ने S S, मा | S S S, भू
३ | × | २ | ०

सा म सां
नि़ सा री - | - म - प | - प प गं | रीं सां,रीं नि
S व्वृ था S | S या S स | S स्त प S | खि न,अ S
३ | × | २ | ०

म री री सा
सां नि ध प | म पधमप री | - ग री; ग | सा री नि़ सा
न्त रा S त्मे | S वS तS दो | म् स त्; त | दा रे दा नी
३ | × | २ | ०

इत्यादि स्थायी के अनुसार

राग बरवा-एकताल (विलंबित)

स्थायी : तुम परदेस बसैया पिया हमरे नित हो |

अंतरा : कोयलिया पुकारे मेरे आँगन मों करत

बिरहा की माती कासे कहूँ अब मैं

अपने जिया की बिथा हो ‖

स्थायी

म म ग ग म म प
रीम पधपप | रीग ,रीसा | री -ग | सा ,री | म ,प | ध म
तुम परSरस | देS ,सब | सै SS | या ,S | S ,पि | या S
३ | ४ | × | ० | २ | ०

म म ग प़
प री | म ,पधमप | री ग | – ,रीसा | ऩिध़ प़ | सा – ;
S S | S ,हSमS | रे S | S ,नित | होS S | S S ;
३ | ४ | × | ० | २ | ०

अंतरा

प सां सां नि नि सां
म ,पध | निसां -नि | सां – | सां निसां | – सांसां | निसांरीमं गं
को ,यलि | याS Sपु | का S | रे SS | S मेरे | आँSSS S
३ | ४ | × | ० | २ | ०

सां प सा प म
रींसां नि | ध प | मग री | – गसा | मम प | प धपमरी,मपध
गन मों | S S | कर त | S SS | बिर हा | की माSSS,SSS
३ | ४ | × | ० | २ | ०

सां प म नि सां प
नि धनि | ध प | पगं रींसां,सां | नि ध | प मम | प ,मप
S SS | ती S | काS सेS,क | हूँ S | S अब | मैं ,SS
३ | ४ | × | ० | २ | ०

प म म सा प़
मपध पमप | (री) ग,सा | रीम ग | रीग सासा | ऩिध़ प़ | सा –;
अSS पSS | ने S,जि | याS की | SS बिथा | होS S | S S;
३ | ४ | × | ० | २ | ०

——

राग बरवा–एकताल (विलंबित)

स्थायी : आली री न माने जिया मोरा
अब कासे कहूँ अपनी बिथा।
अंतरा : देखे बिना मोहे कछु ना सुहावे
उनसे कहियो इतनी कथा॥

स्थायी

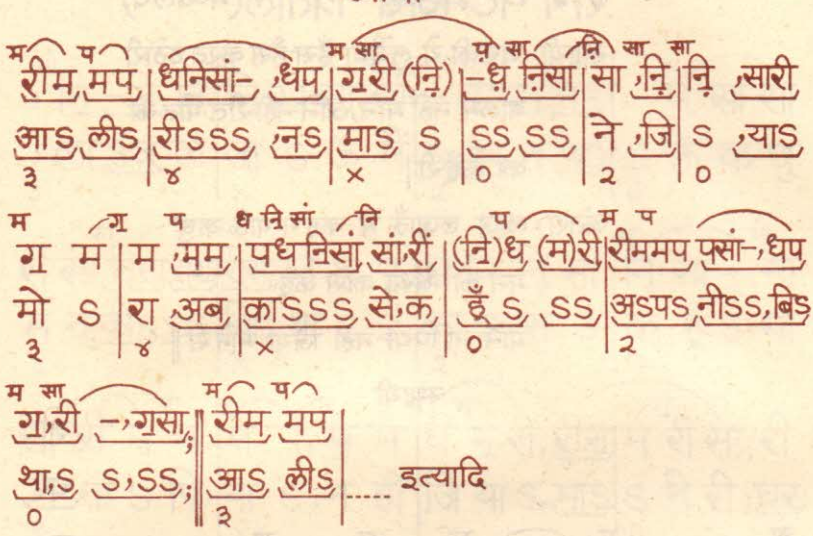

म प म सा प़ सा नि़ सा सा
रीम मप | धनिसां- ,धप | गरी (नि़) | -ध़ नि़सा | सा ,नि़ | नि़ ,सारी
आऽ लीऽ | रीऽऽऽ ,नऽ | माऽ ऽ | ऽऽ ऽऽ | ने ,जि | ऽ ,याऽ
३ | ४ | × | ० | २ | ०

म ग प ध नि सां नि प म प
ग म | म ,मम | पधनिसां सां,रीं | (नि)ध (म)री | रीममप पसां-,धप
मो ऽ | रा ,अब | काऽऽऽ से,क | हूँ ऽ ऽऽ | अऽपऽ नीऽऽ,बिऽ
३ | ४ | × | ० | २

म सा म प
ग,री -,गसा ; || रीम मप |
था,ऽ ऽ,ऽऽ ; || आऽ लीऽ | ..... इत्यादि
० || ३

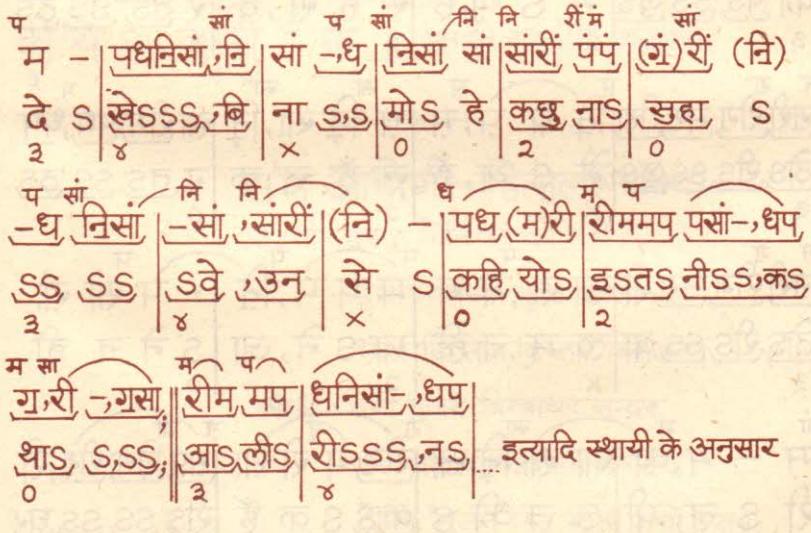

अंतरा

प सां प सां नि नि रीं म सां
म - | पधनिसां,नि | सां -,ध | निसां सां | सांरीं पंप | (गं)रीं (नि)
दे ऽ | खेऽऽऽ,बि | ना ऽ,ऽ | मोऽ हे | कछु नाऽ | सुहा ऽ
३ | ४ | × | ० | २ | ०

प सां नि नि ध म प
-ध निसां | -सां ,सांरीं | (नि) - | पध (म)री | रीममप पसां-,धप
ऽऽ ऽऽ | ऽवे ,उन | से ऽ | कहि योऽ | इऽतऽ नीऽऽ,कऽ
३ | ४ | × | ० | २

म सा म प
ग,री -,गसा ; || रीम मप | धनिसां- ,धप |
थाऽ ऽ,ऽऽ ; || आऽ लीऽ | रीऽऽऽ ,नऽ | .... इत्यादि स्थायी के अनुसार
० || ३ | ४

राग पटमंजरी–त्रिताल(मध्यलय)

स्थायी: घरकी ये लुगैया हँस हँस करत ठठोरी
बालम नहीं माने, जाने नहीं रीत पीत की
का कहूँ री|

अंतरा: लाज लजाऊँ मैं कह न पाऊँ कछु
मन की बिथा कासे कहूँ
माने ना पिया नहीं जिया माने री॥

स्थायी

री
घर

सा	प	प सा सा	प
सा निसा रीग रीसा	नि ध प, म	प नि सा, नि	सा रीम पध, धप
की येऽ ऽऽ लुऽ	गै ऽ या, हँ	स हँ स, क	र तऽ ऽऽ, ठऽ
३	×	२	०
म ग	प प	सा सा	प
गरी रीग मग रीसा	नि ध प, म	प नि सा, नि	सा रीम पध, धप
ठोऽ रीऽ ऽऽ लुऽ	गै ऽ या, हँ	स हँ स, क	र तऽ ऽऽ, ठऽ
३	×	२	०
म ग	प	प प	प
गरी रीग मग री	सा सा, म म	म प प, नि	– प सां सां
ठोऽ रीऽ ऽऽ बा	ल म्, न हीं	मा ऽ ने, जा	ऽ ने न हीं
३	×	२	०
सां म	सा	ग ग	प सा
म – म, प	सा सा नि सा	रीग म री सा	मप निसा रीग, री
री ऽ त, पी	ऽ त की ऽ	काऽ ऽ क हूँ	रीऽ ऽऽ ऽऽ, घर
३	×	२	०
	प		
सा निसा रीग रीसा	नि ध प		
की येऽ ऽऽ लुऽ	गै ऽ या ..... इत्यादि		
३	×		

अंतरा

३	×	२	०
, नि -नि नि	नि सां सां सां	- ,म म मप	- प सा सा
, ला ऽज ल	जा ऽ ऊँ मैं	ऽ,कह न पाऽ	ऽ ऊँ क छु
री सा निसा रीग	रीसा नि ध प,	म प नि सा	नि सा -, सा
म न कीऽ ऽऽ	बिऽ था ऽ ऽ,	का ऽ से ऽ	क हूँ ऽ, मा
सा री म म	म प, प प	ध ग री, रीग	म री सा; री
ने ना ऽ पि	या ऽ, न हीं	जि या ऽ, माऽ	ऽ ने री; घर
सा नि सारी सा	नि ध प		
की ये ऽऽ लु	गे ऽ या ..... इत्यादि स्थायी के अनुसार		

राग आभोगी–त्रिताल(मध्यलय)

स्थायी : दसन मोतियन की लडी

मृग दृगनसी द्युति परकासत

भाल खितिज बिस्तार बिराजत।

अंतरा : बेनी भुजग बिम्बाधर सुन्दर

चाल चलत गजगामि मनोहर

देखि 'सुजन' मन मोहि गयो अत॥

स्थायी

सा ग | सा सा | ध सां सां | ध म ग री
, ग री सा | ध़ ध़ सा सा | म ध सां ध | म ग री सा
, द स न | मो ति य न | की ऽ ऽ ल | डी ऽ ऽ ऽ
० | ३ | × | २

ग | | सां | म
-, म ध ध | सां सां सां, रीं | सां -, ध सां | ध म ग री
ऽ, मृ ग द | ग न सी, धु | ति ऽ, प र | का ऽ स त
० | ३ | × | २

ग सां | सां सां ध | | सां ध म ग
म - म ध | ध ध सां - | सांरीं गं रीं सां | ध म ग री
भा ऽ ल खि | ति ज बि ऽ | स्ताऽ ऽ र बि | र ऽ ज त
० | ३ | × | २

री सा ग | सा सा |
सा; ग री सा | ध़ ध़ सा सा |
ऽ; द स न | मो ति य न | ..... इत्यादि
० | ३ |

अंतरा

सां | म री | सां | ध
ध सां ध म | ग री म - | ध - सां सां | सांरीं गं रीं सां
बे ऽ नि भु | ज ग बि ऽ | म्बा ऽ ध र | सुऽ ऽ न्द र
० | २ | × | २

मं मं | सां | ग | ग ग
गं गं रींसां रीं | सां सां ध सां | ध म ग री | रीग म म म
चा ऽ लऽ च | ल त ग ज | गा ऽ मि म | नोऽ ऽ ह र
० | ३ | × | २

सा सा म | सां | ध | सां ध म ग
ध़ - सा म | ग म ध सां | सांरीं गं रीं सां | ध म ग री
दे ऽ खि सु | ज न म न | मोऽ ऽ हि ग | यो ऽ अ त
० | ३ | × | २

री सा ग सा सा
सा ; ग़ री सा | ध़ ध़ सा सा |
S ; द स न | मो ति य न | ..... इत्यादि स्थायी के अनुसार
० | ३ |

राग आभोगी-झूमरा(विलंबित)

स्थायीः दैया री न माने जिया, अब मैं कासे कहूँ
ये गत सही न जात |

अंतरा : मुझ बिरहन को अधिक सतावे कूक कोयल की
भई मोरी कैसी बैरन दुख देनी नित ॥

स्थायी

ग ग री सा ग ग सा सा सा ग
रीगम- रीसा ध़सा री,री | ग री रीगम- | रीसा, मग़ रीसा | ध़म़ ध़सा, रीग़
दैSSS याS रीS S,न | मा S नेSSS | जि या, अब मैंS | काS SS, सेक
३ | × | २ | ०

ग म म ग ग सां ध सा
री ,रीगम धम गरी | गम -गरीसा | म ममधसां धसां -ध | मग़ री सा ;
हूँ ,येSS SS SS | SS SS गत | स हीSSS SS Sन | जाS S त ;
३ | × | २ | ०

अंतरा

ध सां ध सां सां ध म सा सां
मम धध | सां सां सां | धसां रीं,सां धसां -ध | म ग़ री || सां - ध ,सां
मुझ बिर | ह न को | अधि क,स ताS SS | S S वे || कू S क ,को
| × | २ | ० || ३

सां री ग सां सां
धम गरी ,म | मधसांरींगं- - -रींसा रीं सां | ध सां ध || मग़ री,
यल कीS ,भ | ईSSSSSSS SS मो S | S S S || रीS S,
× | २ | ० || ३

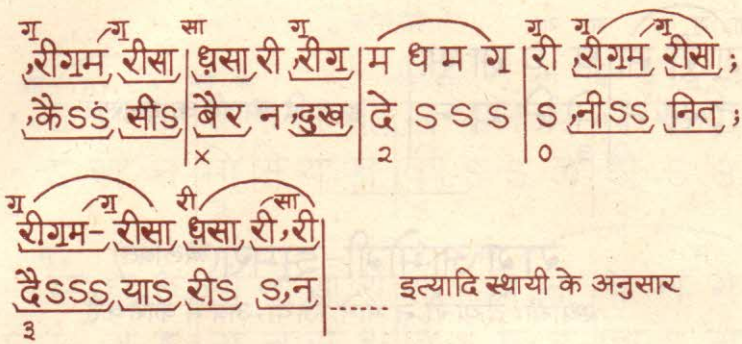

..... इत्यादि स्थायी के अनुसार

राग आभोगी - दाक्षिणात्य रूपक

(संस्कृत)

[आभोगी रागिण्याम् रूपकताले गीयते]

तौर्यत्रिक संगोपनकार्यरतां, प्रथित यशसीमिमां रसिक रंजनीम् प्रसादयितुकामोऽयं जनः| सविनयमथ समर्पयतिनवरचनामाभोगी सुरागिणी स्वरयुक्ताम्॥१॥

रीगमसारीग धसारीम धमधसां, मध, रीग, सारी, गरी गध मध साध सांरीं, सांरींमं, सांरींगं, धसांरीं मधसां - ध - म - ग - री - सा - , धसारी, रीग म, मधसां - ध मग रीसा ॥२॥

श्यामशास्त्री मुथुस्वामीदीक्षित त्यागराजस्वामीति नादवेदव्यासत्रय साक्षाद्दत्तात्रेयं त्रिमूर्तिमिव संस्मृत्य तच्चरणारविंद पूजन कार्यम् सम्पादयेद्रचनेयम्॥३॥

टीपः इस गीत की रचना लेखक ने कर्णाटक संगीत के 'त्रिमूर्ति के प्रति आदरांजली के रूप में की है|

सा म री ग ग सां
ध़ सा | री - री री || री - | म म री सा || री ग | म म ध सां
तो ऽ | र्य ऽ त्रि क || सं ऽ | गो ऽ प न || का ऽ | र्य र ता ऽ
× | 2 || × | 2 || × | 2

सा
धसां धम | गरी गम धम गरी || ध़ सा | री - री री || मध सांरीं | सांध मग री सा
ऽऽ ऽऽ | ऽऽ ऽऽ ऽऽऽम् || तो ऽ | र्य ऽ त्रि क || संऽ ऽऽ | गोऽ ऽऽ प न
× | 2 || × | 2 || × | 2

ग सां सां
री ग | म म ध सां || - - | - - - सां || ध सां | रीं सां सां ध
का ऽ | र्य र ता ऽ || ऽ ऽ | ऽ ऽ ऽम् || प्र थि | त य श सी
× | 2 || × | 2 || × | 2

सां रीं
सां ध | मग रीग म म || ध सां | ध सां रीं -रीं || गं रीं | सां रीं सां ध
ऽ मि | माऽ ऽम् र सि || क रं | ऽ ज नी ऽम् || प्र सा | ऽ द यि तु
× | 2 || × | 2 || × | 2

सां
मग रीग | मध सांरीं सां - || ध सां | - सां ध म || ध सां | ध म ग री
काऽ ऽऽ | मोऽ ऽऽ यं ऽ || ज न | ऽ ह् स वि || न य | न म ऽ य
× | 2 || × | 2 || × | 2

ग री | सा री सा ध़ || सा री | म म धसां रींगं || रींगं रींसां | धसां धम रीग रीसा
स म | ऽ र्प य ति || न व | र च नाऽ ऽऽ || माऽ ऽऽ | मोऽ ऽऽ गीऽ ऽऽ
× | 2 || × | 2 || × | 2

ग म ग सां
री ग | म म ध - || री री | म - ध सां || धसां रींसां | धम गरी गरी सारी
सु रा | ऽ गि णीऽ || स्व र | यु ऽ क्ता ऽ || ऽऽ ऽऽ | ऽऽ ऽऽ ऽऽ ऽम्
× | 2 || × | 2 || × | 2

||१||

री ग | म,सारी ग, ‖ ध़ सा | री म,ध म ‖ ध सां | ऽ,म ध ऽ,
× | 2 ‖ × | 2 ‖ × | 2

री ग | ऽ,सा री ऽ, | गरी गध | मध,सांध सां,रीं सांरीं ‖ मं सांरीं | गं,धसां रीं,मध
× | 2 | × | 2 ‖ × | 2

सां ऽध | ऽ म ऽग ऽ ‖ री ऽसा | ऽ,ध़सा री,रीग ‖ म,मध | सां ऽध मग रीसा
× | 2 ‖ × | 2 ‖ × | 2

‖2‖

मं मं मं मं मं रीं सां मं
रीं – | रीं रीं – रीं ‖ रीं रीं | मंगं रीं सां सां ‖ ध ध | रीं सां – ,रीं
श्या ऽ | म शा ऽ स्त्री ‖ मु श्रु | ऽऽ स्वा ऽ मि ‖ दी ऽ | क्षि त ऽ,त्या
× | 2 ‖ × | 2 ‖ × | 2

रीं गं गं म म
मं मं | मं रीं सां सां ‖ ध ध | रीं सां ध म ‖ ग री | ग री सा सा
ऽ ऽ | ग रा ऽ ज ‖ ऽ स्वा | ऽ मी ऽ ति ‖ ना ऽ | द वे ऽ द
× | 2 ‖ × | 2 ‖ × | 2

री म री ग ग री री री
ध़ सा | री म म म ‖ म ग | म – म – ‖ धसां रीसां | धसां धम म री
व्या ऽ | सं ऽ त्र य ‖ सा ऽ | क्षा ऽ द्द ऽ ‖ त्ताऽ ऽऽ | त्रेऽ ऽऽ यं ऽ
× | 2 ‖ × | 2 ‖ × | 2

री री री ग सा सा री
म ग | ध़ सा री री ‖ रीग मम | री – सा – ‖ ध़ ध़ | री सा री –
त्रि मू | ऽ र्ति मि व ‖ संऽ ऽऽ | स्मृ ऽ त्य ऽ ‖ त ऽ | च्च र णा ऽ
× | 2 ‖ × | 2 ‖ × | 2

री म सां रीं गं
मरी म | – म ध ध ‖ सां सां | मं मं रीं सां ‖ रींगं मंरीं | सांरीं गंरीं धसां रीसां
रऽ वि | ऽ न्द पू ऽ ‖ ज न | का ऽ र्यं ऽ ‖ संऽ ऽऽ | पाऽ ऽऽ ऽऽ ऽद
× | 2 ‖ × | 2 ‖ × | 2

म म
ध – | री री मध सांरीं ‖ गंरीं धरीं | सांध सांध मध मग ‖ रीग मध | सां धम गरी सारी
ये ऽ | द्र च न्देऽ ऽऽ ‖ ऽऽ यंऽ | ऽऽ ऽऽ ऽऽ ऽऽ ‖ ऽऽ ऽऽ | ऽ ऽऽ ऽऽ ऽऽ
× | 2 ‖ × | 2 ‖ × | 2

‖3‖

राग चन्द्रकौंस–झपताल (मध्यलय)

स्थायी: विघ्नहर गणेश गजवदन गौरीसुत
सिंदुर बरन एकदन्त लम्बोदरा ।

अंतरा : रिध सिध बुधी दाता तुम हो परम नाथ
ध्यान जप तप मंत्र सकल विधाधरा ॥

स्थायी

म	नि़ सा		सा नि़	म			म म
ग म	ग सा,सा	नि़ सा	ध़ नि़सा	सा ग	म ध नि	ध –	म ग ग
बि घ	न S,ह	र ग	णे S श	ग ज	व द न	गो S	री सु त
×	2	0	3	×	2	0	3

म म	सां		नि़	नि़	सां	सां नि	ध म
ग ग	म ध नि	सां सां	गं – सां	गं –	सां,निसां	नि ध	म ग –
सें S	दु र ब	र न	ए S क	द S	न्त,ल S	म्बो S	द रा S
×	2	0	3	×	2	0	3

अंतरा

नि़	नि़ नि़ सां		नि़	मं		सां	
सां सां	सां ध नि	सां –	सां – सां	गं मं	गं – सां	नि सां	नि ध ध
रि ध	सि ध बु	धी S	दा S ता	तु म	हो S प	र म	ना S थ
×	2	0	3	×	2	0	3

नि	मं गं	मं		नि	सां	सां नि	ध म
ध –	नि,सां मं	गं मं	गं – सां	गं सां	सां निसां	नि ध	म ग –
ध्या S	न,ज प	त प	मं S त्र	स क	ल वि S	धा S	ध रा S
×	2	0	3	×	2	0	3

राग चंद्रकौंस-त्रिताल (मध्यलय)

स्थायी : रहस रस बतियाँ पिया की
सुनि सुनि सखि मेरो मन लुभाय गयो।

अंतरा : चेरी भई मैंतो 'सुजन' रंग रस की
भावे न घर आँगना कछु, सुध बुध नहीं
अब मेरो ध्यान ग्यान बिसराय गयो॥

स्थायी

सा	सा नि	ग	म
, म ग सा	नि़ सा ध़ नि़	सा म –, म	ग म ग सा
, र ह स	र स ब ति	याँ ऽ ऽ, पि	या ऽ की ऽ
	३	×	२

म	नि	म नि	नि ध म
–, ग म ग	सा, ध नि ध	म, सां नि सां	नि ध म ग
ऽ, सु नि सु	नि, स खी मे	रो, म न लु	भा ऽ य ग
०	३	×	२

ग सा	सा नि		
सा; म ग सा	नि़ सा ध़ नि़	सा म	
यो; र ह स	र स ब ति	याँ ऽ	इत्यादि
०	३	×	

अंतरा

सां नि	सां नि	नि	मं गं सां नि
, गं सां सां	नि सां ध नि	सां सां, सां मं	गं सां नि ध
, चे री भ	ई मैं तो सु	ज न, रं ग	र स की ऽ
	३	×	२

ध	म सा	नि सा	ग म ध नि
–, नि ध म	ग म ग सा	नि़ सा ध़, नि़	सा ग म ध
ऽ, भा वे न	घ र आँ ग	ना क छु, सु	ध बु ध न
०	३	×	२

नि सां म म सा
नि,सां गं सां | नि ध -म | ग -म ग | सा ध -ध नि
हीं,अ ब मे | रो ध्याऽन | न्याऽन बि | स राऽय ग
0 | 3 | × | 2

ग सा नि
ध; म ग सा | नि सा ध नि | सा म
यो; र ह स | र स ब ति | याँ ऽ..... इत्यादि स्थायी के अनुसार
0 | 3 | ×

राग चन्द्रकौंस-एकताल(विलंबित)

स्थायी

म
गम
मद

सा नि सा ग म म
ग सा | ,निसा धनि | सा - | म ,म | ग ,ग | मधनिसां ,निसां
मा ते | ,आऽ येऽ | हो ऽ | ऽ ,पि | या ,क | होऽऽऽ ,ऽऽ
3 | 4 | × | 0 | 2 | 0

नि नि म
नि ध | धनि सांगं | मंगं सां | गंसां नि,ध | मग गम | गसा निध
ऐ सी | कौंऽ ऽऽ | ऽऽ न | चतु र,सु | घर सुंद | रस खीऽ
3 | 4 | × | 0 | 2 | 0

नि म ग म नि म नि म
धनि साग | म - | म गम | धनि धम | गम धनिसांगं | सां,निसां; गम
जिन हर | ली ऽ | नो ऽऽ | तन मन | तुम्ह रोऽऽऽ | ऽ,ऽऽ; मद
3 | 4 | × | 0 | 2 | 0

अंतरा

नि नि सां नि मं नि म सा नि
सां सां,नि | सां - | सां ,निसां | गंमं गंसां,सां | गम गसा | निसाधनि सा
नै ना,उ | नीं ऽ | दे ,ऽऽ | कज राऽ,क | पोऽ लऽ | डगमग चा
4 | × | 0 | 2 | 0 | 3

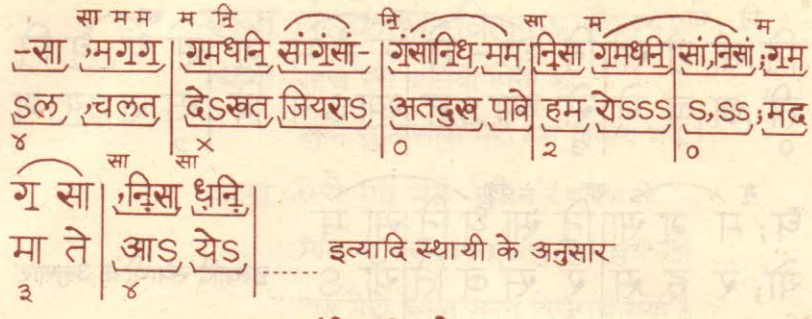

बंदिश के बोल

स्थायी : मदमाते आये हो, पिया कहो ऐसी कौन चतुर
सुघर सुंदर सखी, जिन हर लीनो तन मन तुम्हरो |

अंतरा : नैना उनींदे कजरा कपोल डगमग चाल चलत
देखत जियरा अत दुख पावे हमरो ||

राग चंद्रकौंस (आधुनिक प्रकार)

चंद्रकौंस का एक और राग-स्वरूप गत कुछ वर्षों से हिंदुस्तानी संगीत में प्रचलित हुआ है | राग मालकौंस में ही कोमल निषाद के स्थान पर शुद्ध निषाद का प्रयोग करते हुए इस राग का विस्तार होता है | अर्थात, 'सा, ग, म, ध, नि, सां' ये स्वर इसमें लगते हैं | इसकी लाग-डाँट सब मालकौंस की ही है | शुद्ध निषाद पर न्यास करने से यह राग अधिक रंजक बन जाता है और सुनने को भी अच्छा लगता है | इसका वादी मध्यम एवम् संवादी षड्ज है |

इस राग का मेल (थाट) दाक्षिणात्य संगीत प्रणाली के अनुसार या तो 'धेनुका' (९वाँ मेलकर्ता अथवा 'कीरवाणी' (११वाँ मेलकर्ता) हो सकता है | इन दोनों मेलों में से किस मेल के अंतर्गत इस राग की गिनती होगी, यह सब ऋषभ का कहीं अल्प प्रयोग भी हो तो वह किस ऋषभ का हो, इस बात पर निर्भर रहेगा | जो लोग शुद्ध ऋषभ को स्पर्श करेंगे वे कीरवाणी मेल में इसे

मानेंगे; जब कि, जो लोग कोमल ऋषभ का प्रयोग करेंगे, उन्हें इस राग को धेनुका मेल में मानना होगा। गाने का समय इस राग का मध्यरात्रि का ही माना जाता है।

उठाव

ग, म, गसा, नि, सा, धनि, सा, म, गम, धनि, धनिसां, निध, म, ग, म, ग सा।

स्वर-विस्तार

१. म, ग म, ग, सा, नि, सा, धनि, सा, म, धनि, सा, सां, धनि, ध, म, ग, सा।

२. सा, निसा, धनि, सा, म, गम, धनि, धनि, सां, ध, म, ग, सा, ध, निसा।

३. सा, ग सा, म ग, सा, नि - ध म, गसा, सां - धनि सां, ध म, गसा, धनि, सा।

४. नि, साग - सानि, धनि, सागमधनि, धम, गसानि, म धनि, सागमधनि, मनि, धनि, गमधनि, सां - निसां - गंसांनि, धसां, नि, धमगसा।

अंतरा

५. म, ग, म ध, नि, सां, निसां, धसां, गंमंगंसां, गंसां, धनिसां, निध, म, गम, सां, धनि, धम, ग, मग, सा।

६. सां, सा, ग, म, ध, सां, गं नि, सां, मंगं, सां, धनिसांगं, मं, गंमंगं, सां, गंसां, धनि, ध म, गमधनिसां, धमि, नि, धमि, गम, गसा।

कुछ तानें

७. सागमग सानिधनिसा, सागमध निधमगसानिधनिसा, सागमध निसांनिध निधमग सानिधनिसा, सागमध निसांगंसांनिधम गमधनि सांनिधमगसा।

८. गमगसा, गमधमगसा, गमधनि सांनिधमगसा, गमधनि सांगंमंगंसांनि धनिसांनिधमगसा, निसागमधनि सांमंगंसांनिधमगसा।

९. सांनिसां, धनिसां, मधनिसां, गमधनिसां, निसागमधनि सांगंमंगंसां, गंसांनि सांनिध निधम धमग मगसा।

१०. सामि गधि मनि धसां निगं सांमं गंमं सांगं निसां धनि मधि गमि साग निसागमधनि सांगंसांनिधमगसा।

राग चंद्रकोंस–त्रिताल (मध्यलय)

स्थायी : चमके चन्दा बिकसे कुमुदिनी
कोश खिल्यो भँवर उड़ि गयो
गूँजत मोद भर्‍यो : ऐ चंदा
ऐ कुमुदिनी ऐ कोश |

अंतरा : नीको बढ़ायो गरब सों नहीं समात
फूल्यो, कहे बार बार : ऐ चंद्रकोश
चन्द्रकोश, हँसि हँसी कहे 'सुजनवा'
नहीं चंद्रकोश, ये तो नीको तीवर मालकोंस |

स्थायी

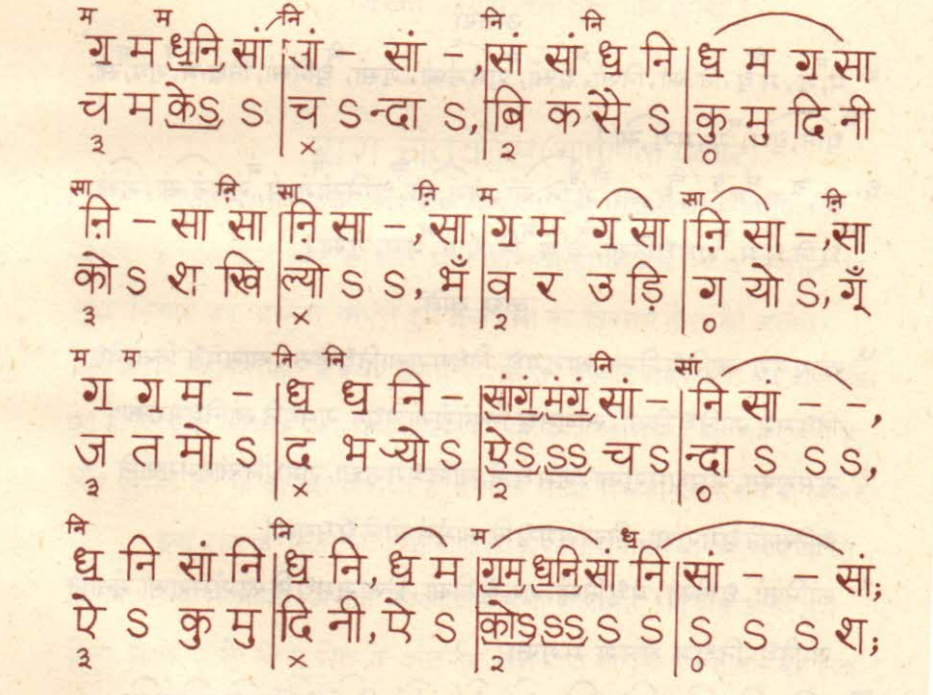

अंतरा

ध   ग   म   नि   मं

नि – ध म | ग – सा, ग | म मधनि सां | गं मं गं सां
नी S को ब | ढ़ा S यो, ग | र ब सोंS S | न हीं स मा
३ | × | २ | ०

नि नि नि म म सा

– सां सां – | ध नि, सां सां | ग म म, ग | – सा, ऩि सा
S त फू S | ल्यो S, क हे | बा S र, बा | S र, ऐ S
३ | × | २ | ०

म नि नि नि सां नि

ग – म ध | – नि, सां – | सां सां – सां, | गं सां ध नि
च S न्द्र को | S श, च S | न्द्र को S श, | हँ सि हँ सि
३ | × | २ | ०

नि म म म म

सां सां – ध | नि ध म – | ग म ग – | सा ग – ग
क हे S सु | ज न वा S | न हीं च S | न्द्र को S श
३ | × | २ | ०

ग नि सां नि नि

म ध नि – | नि – सां – | सां सां ध नि | ध म – म;
ये तो नी S | को S ती S | व र मा S | ल कौं S स;
३ | × | २ | ०

राग चंद्रकौंस–एकताल(विलंबित)

स्थायी : पीर निजामुद्दीन मुष्किलकुशा
दोऊ जग के हो तुम ही सेवनहार।

अंतरा : ऐ मोरे दस्तगीर अरज सुनो
मुष्किलात मोरी दोऊ जग की देओ टार॥

स्थायी

म नि॒	म नि	सां	नि	नि	ध
गम, गसा,सा	गम, -,ध	नि सां	-सां,सां	सांध, निसां,	नि सांगं
पीऽ, रऽ,नि	जाऽ, ऽ,मु	द्दी ऽ	ऽ न,मु	शकि, ल,कु	शा ऽऽ
३	४	×	०	२	०

नि नि		म	नि	सा नि॒
सां सांसां	धनि ध	गमधनि सां	धनि धम	निसा ,धनि
ऽ दोऊ	जग के	होऽऽऽ ऽ	तुम हीऽ	सेऽ ,वन
३	४	×	०	२

नि॒
सागमग सासा ; ‖
हाऽऽऽ ऽर ; ‖
०

अंतरा

नि सा	म सां	नि
धनिसांनिधमगसा ,निसा	गमधनि सां,निनि	सां निसां,सां
ऐऽऽऽऽऽऽऽ ,मोऽ	रेऽऽऽ ऽ,दस्त	गी ऽऽ,र
३	४	×

नि मं गं	म	नि	नि नि
सांगं मंगं	सां ,गम	धनिसांगं -सां	धनि,सां धम
अर ज,सु	नो ,मुष्कि	लाऽऽऽ ऽत	मोऽ,ऽ रीऽ
०	२	०	३

सा नि॒सा		सा नि	नि
निसा ध,निनि	सा निसा	निसागमधनिसां- ,धनि	ध म
दोऽ ऊ,जग	की ऽऽ	देऽऽऽऽऽऽऽ ,ओऽ	टा ऽ
४	×	०	२

नि॒	म नि॒	म नि
सागमग सासा ; ‖	गम गसा,सा	गम ,ध
ऽऽऽऽ ऽर ; ‖	पीऽ रऽ,नि	जाऽ ,मु
०	३	४

इत्यादि स्थायी के अनुसार

राग पीलु-सरगम-त्रिताल(मध्यलय)

स्थायी

0	3	×	2
ग ग सा नि़	सा प म प	ग -, नि़ सा	म ग रे सा,
नि़ सा रे, नि़	सा नि़ ध़ प़,	म़ प़ नि़ सा	ग - नि़ सा,
प ध प ग	- ,रे ग म	प म ग रे	सा -, नि ध
प ग - म	प ध प म	ग प म ग	रे सा नि़ सा;

अंतरा

0	3	×	2
प म ग रे	सा, ग - म	प -, ग म	प - - -
म प नि सां	गं रें सां नि,	सां रें सां नि	ध प, ग म
प म ग रे	सा -, नि सां	गं रें सां नि	ध प म प;

राग पीलु-लक्षणगीत-त्रिताल(मध्यलय)

स्थायी : धुन सुन री नीकी रस रंगीली पीलु की

हरप्रिया मेल जात कहावत, शुचि गनि मृदु रिध

तीवर मध्यम हूँ सोहत राग सिंगार बढ़ावे |

अंतरा: मृदु गांधार वादी सप्तम समवादी, रात समे दूजे पहर

सुगम स्वरूप गावे रिझावे ‖

स्थायी

			(सा) ग
			धु
सा	प		
गरी सा ऩि सा	प - प, नि	ध प ध प	म ग म -
नऽ सु न री	नी ऽ की, र	स रं गी ली	पी लु की ऽ
३	×	२	०
म म		सा	
प म प ग	- (सा) - ऩि	ऩि - रा, री	सा ऩि ध़ प़
ह र प्रि या	ऽ मे ऽ ल	जा ऽ त, क	हा ऽ व त
३	×	२	०
प सा ऩि		ऩि री	
म़ प़ ऩि ऩि	सा सा सा सा	सा ग री म	ग गरी सा -
शु चि ग नि	मृ दु रि ध	ती व र म	ध्य मऽ हूँ ऽ
३	×	२	०
प	म	म	म
री - म म	पध नि ध, प	म ग म, प	म ग म; ग
सो ऽ ह त	राऽ ऽ ग, सिं	गा ऽ र, ब	ढ़ा ऽ वे; धु
३	×	२	०

अंतरा

म म	सा	म	सां
ग ग ग री	सा ऩि सा, प	- प, ग म	प नि, सां गं
मृ दु गा ऽ	-धा ऽ र, वा	ऽ दी, स ऽ	प्त म, स म
३	×	२	०
	सां		म सा
(सां) - सां -,	नि - सां रीं	सां नि, ध प	ग गरी ऩि सा,
वा ऽ दी ऽ,	रा ऽ त स	मे ऽ, द ऽ	जे पऽ ह र,
३	×	२	०

सा सा ऩि ऩि सा ,म	प ग॒ री सा , नि॒	ध प ध॒ , प	म म ग म ; ग॒
सु ग म,ख	रू ऽ प , गा	ऽ वे ऽ , रि	झा ऽ वे ; धु
२	×	२	०

सा ग॒री सा ऩि सा	
नऽ सु न री	.... इत्यादि स्थायी के अनुसार
२	

राग पीलु-भजन-कहरवा (मध्यलय)

स्थायी : टेक रखो प्रभुजी अब मोरी
पतित पावन तुम दीन जनोद्धर
बिपत हरो हरिजू अब मोरी।

अंतरा : लाज रखी तुँव द्रौपदी की पुनि
उधरि अहिलिया पाहन परस तें
ब्रिजबासिन पर बरसायो प्रेम
कृपा कीजियो सुनियो अब मोरी॥

स्थायी

सा प - प प	सां पध नि॒ ध प	म ग (म) -	ग॒ री सा री ग॒ सा री
टे ऽ क र	खोऽ ऽ प्र भु	जी ऽ ऽ ऽ	अ ब मो री
×	०	×	०
री प - प प	सां पध नि॒ ध प	म - ध॒ प	म सा ग ग॒री ऩि सा
टे ऽ क र	खोऽ ऽ प्र भु	जी ऽ ऽ ऽ	अ बऽ मो री
×	०	×	०

सा री ग सा नि़ म ग म
ग ग ग ग | रीगरी नि़ सा || सारी गम ग(म) | री ग रीसा री
प ति त पा | व नऽ तु म || दीऽ ऽऽ न ज | नो ऽ द्धऽ र
× | ० || × | ०

म प ग
नि नि नि ध | प –, ध प || म ग (म) – | री ग रीसा री;
बि प त ह | रो ऽ, ह रि || जू ऽ ऽ ऽ | अ ब मोऽ री;
× | ० || × | ०

अंतरा

प. रीं रीं नि
गं – गं गं | गं – गं गं || गं – रीं गं | (सां) – सां सां
ला ऽ ज र | खी ऽ तुँ व || द्रौ ऽ पदी | की ऽ पु नि
× | ० || × | ०

म प म म सा नि़ सा
प पम प | ग गरी सा – || नि़ नि़ नि़ सा | सा सा ग –
उ धरि अ | हि लिऽ या ऽ || पा ह न प | र स ते ऽ
× | ० || × | ०

प ध
– – – – | – – – –, || नि नि नि – | नि नि नि नि
ऽ ऽ ऽ ऽ | ऽ ऽ ऽ ऽ, || ब्रि ज बा ऽ | सि न प र
× | ० || × | ०

नि सां
प नि सां रीं | सां नि ध प, || नि नि – सां | – सां सां –
ब र सा ऽ | यो प्रे ऽ म, || कृ पा ऽ की | ऽ जि यो ऽ
× | ० || × | ०

नि म
प निप म | ग गरीसा री; ||
सु नि यो ऽ | अ बमोऽ री; ||
× | ० ||

राग पीलु– त्रिताल(मध्यलय)

स्थायी : अब मैंतो चेरी भई हरि की |

अंतरा-१: दिन रैन वाही मूरत मोहनी
सूरत सोहनी मन बैठी री
धुन बाँसुरी सुनि माधुरी
सुध ना रही तन मन की री ‖

अंतरा-२ : घर अंगना कछु ना सुहावे
लगन लगी नित कान्ह की
भई बौरी मैं जिया नहीं माने
तजि लाज री कुल कान की री ‖

स्थायी

			सा ग
			अ
गरी (सा) – ऩि	सा – सा सा	(ऩि) री (ग) गरी ग (म) प	मग (म) –; ग
बऽ मैं ऽ तो	चे ऽ रि भ	ई ऽऽ ह रि	कीऽ ऽ ऽ; अ
३	×	२	०

अंतरा-१

			(म) प
			दि
प (म) ग – म	प – (म) प, प	प ध (म) ग प	म ग –, (ग) म
न रै ऽ न	वा ऽ हि, मू	र त मो ऽ	ह नी ऽ, सू
३	×	२	०
म ग म –	(ग) म म –, (म) री	म प नि प	(म) ग री सा, (धॣ) पॣ
र त सो ऽ	ह नी ऽ, म	न बै ऽ ठो	री ऽ ऽ, धु
३	×	२	०

ध़ म़ प़ प़	नि़ – –,सा	सा नि़ सासा	ग़ – –,प
न बाँ ऽ सु	री ऽ ऽ,सु	नि मा ऽ धु	री ऽ ऽ,सु
३	×	२	०

प ग़ –री नि़	सा – –,नि़	सा री गरी मप	म ग(म); ग़
ध ना ऽऽ र	ही ऽ ऽ,त	न म ऽऽ नऽ	की ऽ री;अ
३	×	२	०

अंतरा-२

नि
ध

नि नि – नि	नि – –,नि	नि ध प प	मप ध प,म
र अं ऽ ग	ना ऽ ऽ,क	छु ना ऽ सु	हाऽ ऽ वे,ल
३	×	२	०

प नि – नि	सां – –,म	प नि सां सां	गं – –,सां
ग न ऽ ल	गी ऽ ऽ,नि	त का ऽ न्ह	की ऽ ऽ,भ
३	×	२	०

सां रीं गंरीं गंपं	मं गं मं,गं	गं रीं सां सां	नि ध प,प
ई बौ ऽऽ रीऽ	मैं ऽ ऽ,जि	या ऽ न हीं	मा ऽ ने,त
३	×	२	०

प पध नि धप	म ग म,री	म प नि प	(ग)– ग;ग
जि लाऽ ऽ जऽ	री ऽ ऽ,कु	ल का ऽ न	की ऽ री;अ
३	×	२	०

गरी (सा) – नि़	सा – सा,
बऽ मैं ऽ तो	चे ऽ रि,.... इत्यादि स्थायी के अनुसार
३	×

राग पटदीप

यह राग-स्वरूप आज से लगभग ६०-७० वर्ष पूर्व अस्तित्व में आया तथा गत कुछ वर्षों तक अति लोकप्रिय था। आज यह राग बहुत ही अल्प प्रमाण में सुनाई देता है। ग्रंथों में प्रदीपकी नाम का राग पाया जाता है। परन्तु उसका स्वरूप इस पटदीप से बहुत कुछ भिन्न है।

भीमपलासी को कुछ विद्वान 'भीम' तथा 'पलास' नामक दो रागों के संमिश्रण से बना है, ऐसा मानते हैं। पर न तो भीम का न पलास का निश्चित स्वरूप यथायोग्य प्रमाण के आधार पर मिलता है। स्वर्गीय भातखंडे जी की क्रमिक पुस्तक मालिका के छट्ठे भाग में 'पलास' का एक गीत छपरा मठ की पोथी से लिया हुवा दिया है। पर वह भी इस पटदीप से भिन्न है। प्रायः भीमपलासी के ही गंधार निषाद को तीव्र करके एवम् उसके आरोहावरोह में कुछ परिवर्तन करके 'भीम' तथा 'पलास' गाते हुवे सुनाई देते हैं। इन्हीं में से कोई एक प्रचार से हटकर 'पटदीप' के नये नाम से पुनश्च प्रचार में आया हो, ऐसा यदि कोई कहे, तो आश्चर्य नहीं। जो हो, पटदीप का स्वरूप कर्णमधुर अवश्य है।

धनाश्री की भूमिका साधारण स्वर-संचार में रखते हुवे, कोमल निषाद को मूलतः हटाकर केवल एक तीव्र निषाद के प्रयोग से तथा कहीं कहीं अल्प प्रमाण में धैवत का प्रयोग करते हुवे 'पटदीप' गाया जाता है। इसमें निषाद स्वर पर न्यास एवम् पुष्टि रहती है। वादी स्वर षड्ज तथा संवादी पंचम रहेगा। गान समय दिन का तीसरा पहर माना गया है।

राग-वाचक स्वर-समुदाय

सा, प[म]ग, मपनि, धनिसां-[नि]धप, म[नि]ध, [नि]धप, [म]ग, मगरेसा।

राग-विस्तार

१. सा, प[म]ग, मपध, धप, मपनि, धनिसां-[नि]धप, मपनि-धप, [म]ग, मप[म]ग, रेसा।

२. सा, रेसानि़, सागरेसा, सानि़, सागमप, [नि]धप, [म]ग, मगरेसा, नि़सागमपनिध, प
मपनि-धप, [म]ग, मपध-प, मपनि, सांरेंसां, नि, धनिसां-[नि]धप, पनिधप[म]ग, [ग]मगरेसा।

३. सा,प, म ध, ध,प, मपनि, ध,प, गमपनि,सां, धनिसां, गंरेंसां,रें, सांनि, धनिसां - ध,प, मम,पनि - धपग, मगरेसा, मपधप ग,मपनि,धनिसां, -धप, गमपनि, धनिसां - धपग, मगरेसा, नि़,सागरे,सा|

४. धपग-, मपनि, धनिसां, निसां,रेंसां, गंरेंसां, निसां मंगंरेंसां, पनिसां गंमंपं गं, मंगंरेंसां, नि-सांरेंसांनिधप, मपनिसां-धप, मम पनिध,प, ग,साग म प नि, धपग, मगरेसा|

५. नि़सारेसानि़, गरेसारेसानि़, पमगमगरे सारेसानि़, निधपग, मगरेसानि़, धप़मप़नि़, सागमपग-रेसा; मपधपग, मपनि, धनिसां-धप|

६. मगरेसा, नि़सागमपनि धपमगरेसा, नि़सागमपनिसांनिधपग-मगरेसा, नि़सागमपनि सांरेंसांनिधपग- मगरेसा, नि़सागमपनि सांगंरेंसां निसांरेंसां निधपम पनिधपग-मगरेसा, नि़सागमपनि सांगंमंपंगं - रेंसांनिसांरेंसांनिध पमपनिसां-धपग, गमपसां-(प)-ग-, मगरेसा|

राग पटदीप-त्रिताल(मध्यलय)

स्थायी: मन समझ आज काज कछु कीजो
अतुल मनुख देह पायो है
सुनियो साचि एक बात 'सुजान'|

अंतरा: लख चौरासी जनम गँवाये
अब तो जाग जाग सार्थक कीजो ||

स्थायी

ग	री	सां	सा	सां	-	सां	नि	नि	सां	ध	प	ग	मगरीसा,	म		
न	स	म	झ	आ	ऽ	ज	का	ऽ	ज	क	छु	की	ऽऽजोऽ,	म		
३				×				२				०				

म नि़ सा	नि सां	ध नि	म
ग री सा सा	सां - सां नि	नि सां ध प	ग मग री सा
न स म झ	आ ऽ ज का	ऽ ज क छु	की ऽऽ जो ऽ
३	×	२	०

सा	म	ध	
नि़ सा म ग	री सा,ग -	म प नि नि	सां - - निसां
अ तु ल म	नु ख,दे ऽ	ह पा ऽ यो	है ऽ ऽऽऽ
३	×	२	०

सां नि	म		म सा
मं गं रीं सां	- प,ग म	प निसांनिधप	ग मग रीसा;म
सु नि यो सा	ऽ चि,प क	बा ऽ तऽसुऽ	जा ऽऽ नऽ ;म
३	×	२	०

अंतरा

सा री म प	ध सां	सां सां	नि नि
नि़ सा ग म	प नि सां -	गं रीं सां नि	धनि सां ध प
ल ख चौ ऽ	रा ऽ सी ऽ	ज न म गँ	वाऽ ऽ ये ऽ
३	×	२	०

सा री म प	ध सां	सां सां	नि नि प
नि़ सा ग म	प नि सां -	गं रीं सां नि	धनि सां धप, ध
ल ख चौ ऽ	रा ऽ सीऽ	ज न म गँ	वाऽ ऽ येऽ, अ
३	×	२	०

ध म	री	म प ध सां	म ग
प ग म ग	री - सा,सा	ग म प नि	सांनि धप ग;म
ब्तो जा ऽ ग	जा ऽ ग,सा	ऽ र थ क	कीऽ ऽऽ जो;म
३	×	२	०

म नि़	
ग री सा सा	
न स म झ	----- इत्यादि स्थायी के अनुसार
३	

राग पटदीप-रूपक (मध्यलय)

(संस्कृत में रचित)

स्थायी : अज्ञानांधकारावृतः कोऽहं कस्य कुत आयात्

इति किंचिन्न जाने नैव जाने हं ।

अंतरा : मूढोतिमूढोस्त्वचरण शरणागतः

शिष्यस्ते 'सुजनः' शाधि मां त्वाम् प्रपन्नम्॥

स्थायी

(प) मप ध | (नि) ध प | (म) ग - म || (ध) प नि | (नि) धनि सां | (नि) ध प -
अऽ ऽ | ज्ञा ऽ | नां ऽ ध || का ऽ | राऽ ऽ | वृ तो ऽ
2 | 3 | ⊗ || 2 | 3 | ⊗

(प) मप ध | (नि) ध प | (म) ग - म || (ध) प - | (सां) नि - | सां सां -
अऽ ऽ | ज्ञा ऽ | नां ऽ ध || का ऽ | रा ऽ | वृ त ह्
2 | 3 | ⊗ || 2 | 3 | ⊗

(सां) नि - | सां गं | रीं - सां || (नि) ध प | (म) ग म | प सां सां
को ऽ | हं ऽ | क ऽ स्य || कु त | आ ऽ | या ऽ त्
2 | 3 | ⊗ || 2 | 3 | ⊗

(सा) ऩि (सा) ऩि | सा म | ग - री || सा - | (सा) ऩि सा | (म) ग - म
इ ति | किं ऽ | चि ऽ न्न || जा ऽ | ने ऽ | नै ऽ व
2 | 3 | ⊗ || 2 | 3 | ⊗

(ध) प - | (सां) नि - | सां - नि || धप मग | रीसा ऩिसा | (म) गम पनि सां
जा ऽ | ने ऽ | हं ऽ ऽ || ऽऽ ऽऽ | ऽऽ ऽऽ | ऽऽ ऽऽ ऽ
2 | 3 | ⊗ || 2 | 3 | ⊗

अंतरा

(प) म - | (ध) प - | (सां) नि सां - || सां - | - - | - - -
मू ऽ | ढो ऽ | ति मू ऽ || ढो ऽ | ऽ ऽ | ऽ ऽ ऽ
2 | 3 | ⊗ || 2 | 3 | ⊗

प ध सां नि सां मं

म - | प - | नि सां - | सां -सां | नि सां | गं मं पं
मू ऽ | ढो ऽ | ति मू ऽ | ढो ऽऽ | त व | च र ण
२ | ३ | ⊗ | २ | ३ | ⊗

मं प ध

गं मं | गं रीं | रीं सां - | म - | प -नि | ध प -
श र | णा ऽ | ग त ह् | शि ऽ | ष्य ऽऽ | ते ऽ ऽ
| | ⊗ | २ | ३ | ⊗

म म ध म म

ग म | गरी सा | ग - म | प सां | सां - | प ग -म
सु ज | नऽ ह् | शा ऽ धि | मां ऽ | त्वां ऽ | प्र प ऽन्
२ | ३ | ⊗ | २ | ३ | ⊗

म सा म

ग री | सा ऩिसा | गम पनि सां ||
नं ऽ | ऽ ऽऽ | ऽऽ ऽऽ ऽ ||
२ | ३ | ⊗ ||

राग पटदीप-झूमरा(विलंबित)

स्थायीः एरी दैया दुख की बतिया कौन सुने मेरी

मैंतो अकेली बिरहा की माती।

अंतराः अपने रसके रसिया वोतो ग्वार गुसैया

अनगिन बचन पीत के सुन सुन

भई बावरी बिरहा की माती॥

स्थायी

प ध प म ग नि प सां सां

नि निध धप,म ग,मपध | ध प - | म प नि सां | निसां गं,रीं सांनि
ए रीऽ ऽऽ,ऽ ऽ,दैऽऽ | या ऽ ऽ | दु ख की ऽ | ऽऽ ऽ,ब तिऽ
३ | × | २ | ०

नि नि प गु सा म सां
धनि सां ध प | (प)म प ,नि | धप मग़ मग़ रीसा | ऩिसा ग़मपनिसां ,गं
SS S या S | कोS न ,सु | नेS SS मेS रीS | मेंS तोSSSS ,अ
३ | × | २ | ०

सां प ध ध नि म म नि म
रीं सां रीं,सांनि सां | म प ,निनि | सां ,धप ग़ ,ग़मप | सां,धपम ग़म ,रीसा
के S S,SS S | ली S ,SS | S ,बिर हा ,कीSS | S,माSS SS ,तीS
३ | × | २ | ०

अंतरा

म म प नि सां मं मं नि
,धप ग़ ,मप | सां निसां ,सां | रीं सां निसां ,निसां | गंमंपं गंमं रीं,सां
,अप ने ,रस | के SS ,र | सि या SS ,वोतो | ख्वाSS SS र,गु
| × | २ | ०

सां सां नि प सां नि म ग़
नि सांरीं,सां नि सां | ध प - | म प निसां ,धप | ग़ ,म-ग़ री
सै SS,S S S | या S S | अ न गिन ,बच | न ,पीSS त
३ | × | २ | ०

सा री म प ध सां रीं ध नि म म नि म
सा ऩिसा ग़म पनि | सांगं रींसां ,निनि | सां धप ग़ ,ग़मप | सां,धपम ग़मरीसा
के सुन सुन भई | बाS वरी ,SS | S ,बिर हा ,कीSS | S,माSS SS तीS
३ | × | २ | ०

प ध प म ग़ नि
नि निध धप,म ग़,मपध | ध प - |
ए रीS SS,S S,दैSS | या S S | ..... इत्यादि स्थायी के अनुसार
३ | × |

राग बिंद्राबनीसारंग–झपताल(मध्यलय)

(सरगम)

स्थायी

म   सा   म   म
रे म |रे सा – |ऩि ऩ |ऩि सा – ‖ रे म |प नि प |रे रे |सा – सा
×   2   0   3   ×   2   0   3

म   म   सां   म
ऩि सा |रे म,रे |म प |नि प – ‖ नि सां |रें – सां |नि प |रे – सा
×   2   0   3   ×   2   0   3

अंतरा

प   सां   मं
म म |प नि प |नि नि |सां – सां ‖ रें मं |रें सां – |रें सां |नि – प
×   2   0   3   ×   2   0   3

म   म
प रें |सां सां रें |नि सां, |म प नि, ‖ रे म |प नि सां |नि प |रे – सा
×   2   0   3   ×   2   0   3

राग बिंद्राबनीसारंग-लक्षणगीत–त्रिताल(मध्यलय)

स्थायी : हरप्रिय मेल जनित बिन्दराबन
सारंग नाम अधग औडव कर
दिन दुपहरिया में नित गावत।

अंतरा : अंश रिखब पंचम समवादी
आरोहत सप्तम सुर तीवर
धैवत अल्प प्रयोग बिलुम सज
सुन हो 'सुजान' चतुर गुनि संमत॥

स्थायी

प   म   ऩि   म   प
नि नि प पम |री – सा,सा |री री म म |प – प प
ह र प्रि यऽ |मे ऽ ल,ज |नि त बिन्द |रा ऽ ब न
0   3   ×   2

प म	प	ध	म
सां - नि प	री - म,म	पनि नि प म	री री सा सा
सा ऽ रं ग	ना ऽ म,अ	धुऽ ग औ ऽ	ड़ व क र
०	३	×	२
नि सा	म	म	म
प़ प़ नि़ सा	री सा रीम पनि	प म प पम	री - सा सा;
दि न दु प	ह रि याऽ ऽऽ	में ऽ नि तऽ	गा ऽ व त;
०	३	×	२

अंतरा

प	सां	नि	सां
म - प प	नि प नि -	सां सां सां सां	नि सां सां -
अं ऽ श रि	ख ब पं ऽ	च म स म	वा ऽ दी ऽ
०	३	×	२
सां	नि	सां	
नि - नि -	सां सां सां -	नि सां रीं सां	नि - प प
आ ऽ रो ऽ	ह त स ऽ	प्त म सु र	ती ऽ व र
०	३	×	२

प	ध	म	सा
म - म म	प - प प	री - सा री	नि़ सा सा सा
धै ऽ व त	अ ऽ ल्प प्र	यो ऽ ग बि	लु म स ज
०	३	×	२
मं नि	प	प	म
रीं मं रीं सां	नि - प,म	म प नि पम	री - सा सा;
सु न हो सु	जा ऽ न,च	तु र ग निऽ	सं ऽ म त;
०	३	×	२

राग बिंद्राबनी सारंग-त्रिताल(मध्यलय)

स्थायी : कारी करूँ मैं अकेली नारसखि
पनघट पे मग रोकत कान्ह कुँवर।

अंतरा : ना देख्यो ऐसो छोर छैल नटखट
निपट निठोर गैल गैल फिरत
करत ठठोरी बरजोरी श्यामसुन्दर॥

स्थायी

नि़ सा		म सा	सा म
सा सां नि सां	- (नि़)-,प	री - सा,री	नि़ सारी म
का री क रूँ	ऽ मैं ऽ,अ	कि ऽ लि,ना	ऽ र स खि
०	३	×	२
सा म	प	सां	सां सां
नि़ सा री म	प,नि़ म प	नि सां,रीं -	सां,रीं नि सां;
प न घ ट	पि,म ग रो	क त,का ऽ	न्ह,कुँ व र;
०	३	×	२

अंतरा

प प	नि	नि	सां मं
म म प,नि़	प नि,सां -	सां,सां - सां,	नि सां रीं मं
ना दे ख्यो,ऐ	ऽ सो,छो ऽ	र,छै ऽ ल,	न ट ख ट
०	३	×	२
	प	प	सां
रीं सां नि,सां	रीं - सां,नि़	- प,म -	प,नि सां रीं
नि प ट,नि	ठो ऽ र,गै	ऽ ल,गै ऽ	ल,फि र त
०	३	×	२
रीं नि	प	सां	सां सां
पं मं रीं,सां	नि़ प,म प	नि सां,रीं -	सां रीं नि सां;
क र त,ठ	ठो री,ब र	जो री,श्या ऽ	म सु न्द र;
०	३	×	२

राग बिंद्राबनी सारंग – त्रिताल (मध्यलय)

स्थायी : नैना निरखि छबि अतही सुहानी सखि

माथे मुकुट काछे पीताम्बर ओर

मकराकृत कुंडल कान अत लस्यो री

अधर मुरली मधुर मधुर बोले बानी ।

अंतरा : जल भरने जो गई जमुना नीर तीर

सुध बुध हारी सारी नारी, वारी मन मोहनी

मूरत पर, ग्वालनी भई बावरी, देखि देखि लजानी ॥

स्थायी

नि़	म री	प	म सा
, प़ नि़ सा	री म सा री	म प पनि पम	री सा नि़ सा
, नै ना नि	र खि छ बि	अ त हीऽ सुऽ	हा नी स खि
	३	×	२
सां	सां नि प	नि प म री	सा नि़
–, नि सां रीं	नि सां, प नि	प म री सा	नि़ सा, प़ नि़
ऽ, मा थे मु	कु ट, का छे	पी ताम्ब र	औ र, म क
०	३	×	२
म	म	प प नि	सां मं
सा री सा री	म प, री म	प, नि म प	नि सां, रीं मं
रा कृ त कु	ण्ड ल, का ऽ	न, अ त ल	स्यो री, अ ध
०	३	×	२
नि	नि प	म	नि़
रीं, सां रीं सां,	प नि प, म	प म, री म	री, सा नि़ सा
र, मु र ली,	म धु र, म	धु र, बो ऽ	ले, बा ऽ नी
०	३	×	२
नि़ सा	म री		
–, प़ नि़ सा	री म सा री	---इत्यादि	
ऽ, नै ना नि	र खि छ बि		
०	३		

अंतरा

ऩि सा री म	प नि॒ म प	नि नि नि सां	- सां सां सां
ज ल भ र	ने जो ग ई	ज मु ना नी	ऽ र ती र
0	३	×	२
रीं मं पं मं	रीं - सां नि॒	- प,म प	म री सा,री
सु ध बु ध	हा ऽ रि सा	ऽ रि,ना ऽ	री वा री,म
0	३	×	२
प म प नि॒	म प म री	सा,री म री	म प म प
न मो ह नी	मू र त प	र,ख्वा ऽ ल	नी ऽ ऽ भ
0	३	×	२
नि सां - रीं	मं रीं सां -	-,रीं सां नि॒	प म री -
ई ऽ ऽ बा	ऽ व री ऽ	ऽ,दे खि दे	खि ल जा ऽ
0	३	×	२
सा; प़ ऩि सा	री म सा री		
नि; नै ना नि	र खि छ बि	...... इत्यादि स्थायी के अनुसार	
0	३		

राग बिंद्राबनी सारंग-दादरा (मध्यलय)

स्थायी: अली कलियन रस मदमातो, करत मधुर
गुंजारव सुनि सुनि सखि, मन लुभाय गयो मेरो।

अंतरा : हुलसत जिया उपजत हिय नई उमंग नयो तरंग
तन काँपे उर धरके कछु न सूझ बूझ परे
कौन बिथा ये कहो सखि व्याकुल चित भयो मेरो॥

स्थायी

प प म॒	री म री	सा री नि़	सा, री री	म प नि॒	प – पम
अ ली ऽऽ	क लि ऽ	य न र	स, म द	मा ऽ ऽ	तो ऽ ऽऽ
×	०	×	०	×	०

री म पम	री सा सा	नि़ – नि़	– नि़ नि़	सा सा सा	सा सा सा
क र तऽ	म धु र	गुं ऽ जा	ऽ र व	सु नि सु	नि स खि
×	०	×	०	×	०

री म प	सां – नि॒	पम री –	म प नि॒;
म न लु	भा ऽ य	गऽ यो ऽ	मे रो ऽ;
×	०	×	०

अंतरा

नि॒ नि॒ प	म री सा	नि़ सा री	म प नि	सां सां नि	सां – सां
हु ल स	त जि या	उ प ज	त हि य	न ई उ	मं ऽ ग
×	०	×	०	×	०

रीं मं रीं	सां – सां,	सां नि सां	(सां) नि॒ –	प म प	नि॒ प म
न यो त	रं ऽ ग,	त न कँा	ऽ पे ऽ	उ र ध	र के ऽ
×	०	×	०	×	०

री म री	सा नि़ सा	री म प	नि सां –,	रीं पं मं	रीं सां नि
क घु न	सू ऽ झ	बू ऽ झ	प रे ऽ,	कौ ऽ न	बि था ऽ
×	०	×	०	×	०

सां –, म	प नि सां	रीं – सां	नि॒ प म	री म री	म प नि॒,
ये ऽ, क	हो स खि	व्या ऽ कु	ल चि त	भ यो ऽ	मे रो ऽ;
×	०	×	०	×	०

राग बिंद्राबनी सारंग–कहरवा(मध्यलय)

स्थायी: ऐ मुसाफ़िर आ, मुसाफ़िर आ
तनिक आराम कीजो अब मेरे चमन में
आ मुसाफ़िर आ|

अंतरा-१: भरि दुपहरिया ओ दुपहरिया घाम भयोहै
तेज भयो है तेज, करिले कलेउ मधुर जलपान
मधुर जलपान, आ मुसाफ़िर आ, मुसाफ़िर आ ||

अंतरा-२: सारंग गाइ रिझाऊँ मैं तोहे
सुनि सुनि सुख सपनो निहार, हो निहार
तेरे बरगद की छाव घनी है, आ मुसाफ़िर आ,
मुसाफ़िर आ ||

अंतरा-३: या बिध कोयल करत पुकार, करत पुकार
गयो मुसाफ़िर अति ही लुभाय, राग रंग
रस को नहीं पार, बिसरावे दुख दंद संसार
कूक मधुर सुनि आ, सुनि आ मुसाफ़िर आ ||

स्थायी

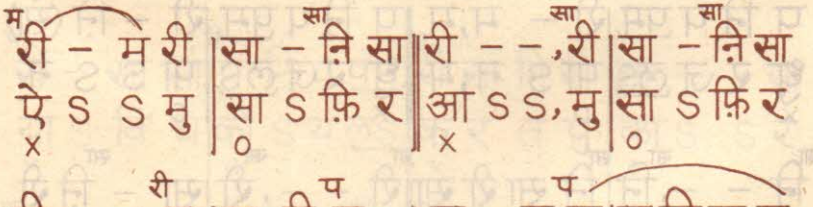

नि़ सा	सा	सा	सा सा
री सा – ,सा	नि़ री सा – ‖	री – – ,री	सा – नि़ नि़
मे रे ऽ ,च	म न् में ऽ ‖	आ ऽ ऽ ,मु	सा ऽ फ़ि र
×	०	×	०

नि़	
सा – – –	– – – –; ‖
आ ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽऽ; ‖
×	०

अंतरा–१

री	सा	सा	सां
म म री सा	नि़ री सा – ‖	म – री सा	नि़ री सा –
भ रि दु प	ह रि या ऽ ‖	ओ ऽ दु प	ह रि या ऽ
×	०	×	०

म प		म	
री – म म	प म प नि ‖	प – प, प	प म प नि
घा ऽ म भ	यो ऽ है ऽ ‖	ते ऽ ज, भ	यो ऽ है ऽ
×	०	×	०

		सां	म
प – – –	– – – प, ‖	नि सां रीं सां	नि – प, प
ते ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ज, ‖	क रि ले क	ले ऽ उ, म
×	०	×	०

म प	म प	म प	म
प नि प प॒म॒	री – म, म ‖	प नि प प॒म॒	री – नि़ (सा)
धु र ज ल॒ऽ॒	पा ऽ न, म ‖	धु र ज ल॒ऽ॒	पा ऽ ऽ न्
×	०	×	०

सा सा	सा	सा	सा
नि़ – –, नि़	नि़ सा री सा ‖	री – –, री	सा – नि़ री
आ ऽ ऽ, मु	सा ऽ फ़ि र ‖	आ ऽ ऽ, मु	सा ऽ फ़ि र
×	०	×	०

सा – – –	– – – –; ‖
आ ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽऽ; ‖
×	०

अंतरा-२

(नि)प निपपम | (म)री - (सा)सा, री || (सा)ऩि - सा री | (री म)प प म री
सा ऽ रंगऽ | गा ऽ इ, रि || झा ऽ ऊँ मैं | तो ऽ हे ऽ
× | ० || × | ०

(म)री री (प)म म | प प (म)प (प)म || प निप, पम | (म)री - - री
सु नि सु नि | सु ख स प || नो ऽऽ, निऽ | हा ऽ ऽ र
× | ० || × | ०

(नि)प निपपम | (म)री - री, (प)सां || (नि)सां नि (नि)सां रीं | सां नि प म
हो ऽऽ निऽ | हा ऽ र, त || रे ऽ ब र | ग द कीऽ
× | ० || × | ०

(नि)प नि पपम | (म)री - सा (सा) || ऩि - -, (सा)ऩि | (सा)ऩि सा री सा
छा ऽ व घऽ | नी है ऽ || आ ऽऽ, मु | सा ऽ फ़ि र
× | ० || × | ०

(म)री - (प)म, म | (म)री - (सा)ऩि ऩि || (ऩि)सा - - - | - - - -;
ओ ऽ ऽ, मु | सा ऽ फ़ि र || आ ऽ ऽ ऽ | ऽ ऽ ऽऽ;
× | ० || × | ०

अंतरा-३

(प)रीं - सां सां | (नि)प नि प पम || (म)री सा ऩि री | सा - - सा
या ऽ बि ध | को ऽ यलऽ || क र त पु | का ऽ ऽ र
× | ० || × | ०

(सा)री सा ऩि सा | री - (ऩि)री, सा || (म)री म री, म | (प)प - प प
क र त पु | का ऽ र, ग || यो ऽ ऽ, मु | सा ऽ फ़ि र
× | ० || × | ०

(कण) म प म	म	प	नि॒
प नि प पम	री – – री,	नि – नि नि	– नि म प
अ ति ही लुऽ	भा ऽ ऽ य,	रा ऽ ग रं	ऽ ग र स
×	०	×	०
(कण) सां			
नि सां रीं सां	रीं – – –	– – – –	– – – रीं
को ऽ न हीं	पा ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ र्
×	०	×	०
(कण) नि	म प	प म	
सां रीं सां नि	प म प नि	प म री –	सा – – सा
बि स रा ऽ	वे ऽ दु ख	दं द सं ऽ	सा ऽ ऽ र्
×	०	×	०
(कण) सा सा			सा
नि़ – प़, नि़	नि़ सा री सा	री – – –	नि़ सा री सा
कू ऽ क, म	धु र सु नि	आ ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ सु नि
×	०	×	०
(कण) म	सा		
री – –, पम	री – नि़ री	सा – – –	– – – –
आ ऽ ऽ, मुऽ	सा ऽ फ़ि र	आ ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ
×	०	×	०

राग बिंद्राबनी सारंग-तराना-त्रिताल (मध्यलय)

स्थायी : द्रियानारे तदियानारे तोम् तदीम्
तदीम् तदीम् तननदेरे तानोम् तादीम्
तनोम् तनोम् तारेदानी।

अंतरा : ना दिर दिर तन तुं दिर दिर तोम्
दिर दिर तोम् दिर दिर तोम् नेतेतेले
उदानि दानि तदानि तोम् नित नोम्
तदियानारे तोम्॥

स्थायी

निसारीम पनि पम | पनि सांरीं सांसां निनि | पमरीसा निसारीम | पनि नि – सा
द्रिऽ ऽऽ ऽऽ याऽ | नाऽ ऽऽ रेऽ तऽ | दिऽयाऽ ऽऽ ऽऽ | ऽऽ ना ऽ रे
× | २ | ० | ३

सां – –,सां | रीं – –,सां | सां नि प म | री – –,पम
तो ऽ म्,त | दी ऽ म्,त | दी ऽ ऽऽ | ऽ ऽ म्,तऽ
× | २ | ० | ३

री – –,सा | म प नि सा | री म री,म | नि प,नि सां
दी ऽ म्,त | न न दे रे | ता ऽ ऽ,नो | ऽ म्,ता ऽ
× | २ | ० | ३

–,रीं मं रीं | सां – –,रीं | सां – –,निसां | रींसां निनि पमरीसा
ऽ,दी म् त | नो ऽ म,त | नो ऽ म्,ताऽ | ऽऽ रेऽ दाऽ नीऽ
× | २ | ० | ३

अंतरा

प नि प म | री,सा नि सा | रीं –,सां सां | रीं –,सा सा
ना दिर दिर त | न, तुं दिर दिर | तो म्,दिर दिर | तो म्,दिर दिर
× | २ | ० | ३

री –, म प | नि सा,साम | री प म नि | प सां नि रीं
तोम्, ने ते | ते ले, उदा | नि दा नि त | दा नि तोम्
× | २ | ० | ३

सां मं रीं पं | –,मंमं रींसां निनि | पमरीसा निसारीम | पनि नि – सा
नि त नो ऽ | म्,तऽ दिऽ याऽ | ऽऽ ऽऽ ऽऽ ऽऽ | ऽऽ ना ऽ रे
× | २ | ० | ३

सां – –,सां | रीं – –,सां |
तो ऽ म्,त | दी ऽ म्,त | .... इत्यादि स्थायी के अनुसार
× | २

राग बिंद्राबनी सारंग - ध्रुवपद - चौताल

स्थायीः बिंदराबन मों भई दुपहरिया
तापत भानू प्रकाश घाम भयो अत दुःसह।

अंतराः ऐसे समे कान्ह गयो धेनू चरावन
कदम्ब की छैया त्रिभंगी ठाड़ो है ॥

संचारीः मधुर मधुर मुरली धुन निकसत हरी अधरतें
निमीलीत नैन सुनत सुर नर मुनि भये लीन॥

आभोगः ग्वाल बाल गोपीजन पशू पंछी बनचर
छाँड़ि के स्वभाव सकल मुग्ध मूक ठाड़े हैं ॥

स्थायी

(सा)री	सा	–	नि़	प़	–	(सा)नि़	सा	–	(नि)सा	–	–
बिं	द	ऽ	रा	ऽ	ऽ	ब	न	ऽ	मों	ऽ	ऽ
×		०		२		०		३		४	
(म)री	री	–	(प)म	प	प्रम	(म)री	–	–	सा	–	–
भ	ई	ऽ	दु	प	हऽ	रि	ऽ	ऽ	या	ऽ	ऽ
×		०		२		०		३		४	
(सा)नि़	–	सा	सा	(म)री	–	म	–	(प)म	प	–	प
ता	ऽ	प	त	भा	ऽ	नू	ऽ	प्र	का	ऽ	श
×		०		२		०		३		४	
(प)म	प	नि	(नि)प	(म)री	–	(प)म	प्रम	(म)री	–	सा	सा
घा	ऽ	म	भ	यो	ऽ	अ	तऽ	दुः	ऽ	स	ह
×		०		२		०		३		४	

अंतरा

(प)म	-	प	नि	प	(सां)नि	सां	-	-	(सां)नि	सां	सां
ऐ	ऽ	ऽ	से	ऽ	स	मे	ऽ	ऽ	का	ऽ	न्ह
×		०		२		०		३		४	

(सां)नि	(सां)नि	सां	रीं	-	सां	रीं	सां	-	(प)नि	प	प
ग	यो	ऽ	धे	ऽ	नु	च	रा	ऽ	व	ऽ	न
×		०		२		०		३		४	

(प)नि	प	-	(म)री	-	सा	री	(सा)ऩि	सा	(ऩि)सा	-	-
क	द	ऽ	म्ब	ऽ	की	छै	ऽ	ऽ	या	ऽ	ऽ
×		०		२		०		३		४	

(प)मप	(प)सां	-	नि	प	-	(म)री	म	पम	(म)री	-	सा
त्रिऽ	भं	ऽ	गी	ऽ	ऽ	ठा	ऽ	ड़ोऽ	है	ऽ	ऽ
×		०		२		०		३		४	

संचारी

(प)म	म	म	(प)म	म	म	प	प	प	-	(म)प	प
म	धु	र	म	धु	र	मु	र	ली	ऽ	धु	न
×		०		२		०		३		४	

(प)म	(प)म	प	प	(प)नि	प	-	(प)नि	(नि)प	पम	(म)री	-
नि	क	स	त	ह	री	ऽ	अ	ध	रऽ	तें	ऽ
×		०		२		०		३		४	

(म)प	प	म	(म)री	-	सा	री	-	(सा)ऩि	सा	सा	सा
नि	मी	ऽ	ली	ऽ	त	नै	ऽ	न	सु	न	त
×		०		२		०		३		४	

(नि़)प़	(सा)प़	नि़	सा	री	सा	(म)री	म	री	(प)म	प	प
सु	र	न	र	मु	नि	भ	ये	ऽ	ली	ऽ	न
×		०		२		०		३		४	

आभोग

(प)म	-	प	नि़	प	(सां)नि	सां	-	(नि)सां	-	(नि)सां	सां
ख्वा	ऽ	ल	बा	ऽ	ल	गो	ऽ	पी	ऽ	ज	न
×		०		२		०		३		४	

(सां)नि	सां	-	(मं)रीं	मं	रीं	(नि)सां	नि़	प	(सां)नि	सां	सां
प	शू	ऽ	पं	ऽ	छि	ब	न	ऽ	च	ऽ	र
×		०		२		०		३		४	

(सां)रीं	-	सां	नि़	प	(सां)नि	रीं	-	सां	(सां)नि	सां	सां
घ्राँ	ऽ	ड़ि	के	ऽ	स्व	भा	ऽ	व	स	क	ल
×		०		२		०		३		४	

(प)म	प	नि़	प	-	(प)म	(म)री	म	पम	(म)री	-	सा
मु	ऽ	ग्ध	म्	ऽ	क	ठा	ऽ	ड़ऽ	है	ऽ	ऽ
×		०		२		०		३		४	

राग शुद्ध सारंग–त्रिताल (मध्यलय)

स्थायी : शरम रख लीजे आज मोरे पीर
तुम बिना कौन हरे दुख दंद ।

अंतराः दीन दुनी को एक अधार
पाक नाम तुमरो नित सुमरन
बिनति करत राखो अपनो ब्रीद ॥

स्थायी

री
म
श

री सा ऩि सा	री प प,प	मं प नि प	म (म) री,म
र म र ख	ली ऽ जे,आ	ऽ ज मो रे	पी ऽ र,तु
३	×	२	०
री सा ऩि सा	री मं प नि	सां रीं सां नि	(प) – मं;प
म बि ना ऽ	कौं ऽ न ह	रे ऽ दु ख	दं ऽ द;श
३	×	२	०

अंतरा

म प निप नि	सां – सां –	प नि सां रीं	सां नि प प
दी ऽ नऽ दु	नी ऽ के ऽ	प ऽ क अ	धा ऽ ऽ र
३	×	२	०
रीं मं रीं सां	– रीं सां सां	री म री सा	री री सा सा
पा ऽ क ना	ऽ म तु म	रो ऽ नि त	सु म र त
३	×	२	०
री म री मं	प नि,सां रीं	सां,प नि प	म री री;म
बि न ति क	र त,रा ऽ	खो,अ प नो	श्री ऽ द;श
३	×	२	०

री सा ऩि सा |
र म र ख | ----- इत्यादि स्थायी के अनुसार
३

राग शुद्ध सारंग-त्रिताल(मध्यलय)

स्थायीः गगन चढ़ि आयो भानु दुपहारे
तपत भई तन मन की अति भारी।

अंतराः कदम्ब की छैया ठाड़े कन्हैया
शुद्ध नाम सारंग बिराजत
नाद रूप दोऊ ताप हारी॥

स्थायी

म
ग

री सा नि सा	री प प,प	मं प नि प	म री री,म
ग न च ढ़ि	आ ऽ यो,भा	ऽ नु दु प	हा ऽ रे,त
३	×	२	०
री सा नि सा	री मं प नि	सां रीं सां नि	(प) – मं;प
प त भ ई	त न म न	की ऽ अ ति	भा ऽ री;ग
३	×	२	०

अंतरा

म प निप नि	सां सां – सां	प नि सां रीं	सां – नि प
क दं बऽ की	ऽ छै ऽ या	ठा ऽ ड़े क	न्है ऽ या ऽ
३	×	२	०
रीं मं रीं सां	– रीं सां –	री म री सा	री – सा सा
शु ऽ द्ध ना	ऽ म सा ऽ	रं ऽ ग बि	रा ऽ ज त
३	×	२	०
री म री,मं	प नि,सां रीं	सां,प नि प	म – री;म
ना ऽ द,रू	ऽ प,दो ऽ	ऊ,ता ऽ प	हा ऽ री;ग
३	×	२	०

राग शुद्धसारंग-तराना-सूलफाक(मध्यलय)

स्थायी : दिर दिर तनद्रे तनद्रे तन तोम्
तदीम् तननन ना दिर दिर दानी
तुं दिर दिर दानी तोम् तदानी यलियल
यला याल्ले यलल।

अंतरा : सुमिर नाम हरि नित, दुख हरन सुख करन
मान मान रे मन, बिन जप तप बीतत
जनम तिहारो॥

स्थायी

नि़ सा	री म	री,मं	प ध,	मं प	सां –,	नि प	मं,प	म री	सा नि़
दिर दिर	त न	द्रे,त	न द्रे,	त न	तो म्	त दी	म्,त	न न	न न
×	०	२	३	०	×	०	२	३	०

प़ नि़	प़ नि़	सा,री	म री	मं प	रीं –	सां नि	ध नि,	मं मं	प प
ना दिर	दिर दा	नि, तुं	दिर दिर	दा नि	तो म्	त दा	ऽ नि,	य लि	य ल
×	०	२	३	०	×	०	२	३	०

ध प	–,म़	– प़	नि़ नि़	सा सा
य ला	ऽ,या	ऽ ल्ले	य ल	ल ल
×	०	२	३	०

अंतरा

नि नि	नि नि	– नि	सां सां	सां सां	नि सां	रीं मं	रीं,री	मं प	ध प
सु मि	र ना	ऽ म	ह रि	नि त	दु ख	ह र	न,सु	ख क	र न
×	०	२	३	०	×	०	२	३	०

री म	री नि़	सा सा	सां –	नि प	प़ प़	नि़ नि़	सा सा	री –	सा सा
मा ऽ	न मा	ऽ न	रे ऽ	म न	बि न	ज प	त प	बीं ऽ	त त
×	०	२	३	०	×	०	२	३	०

री मं	प सां	नि प	म री	नि़ सा
ज न	म ति	हा ऽ	ऽ ऽ	रो ऽ
×	०	२	३	०

राग शुद्ध सारंग-एकताल (विलंबित)

स्थायी : आन परी मजधार
बिन तुम्हरे लगावे को पार |

अंतरा : नदिया गहरी नैया पुरानी मोरी
आज आयो शरण तिहार ‖

स्थायी

निसा निसा,रीप	रीम,री ,मंमं	प ,मंप	मंपध- प(प)	म री	
आऽ ऽऽ,नप	रीऽ,ऽ ,मज	धा ,ऽऽ	ऽऽऽऽ,ऽऽ	ऽ ऽ	
३	४	×	०	२	

सा(सा) नि ‖	मंप ,निनि	सा ,सा	री मं	प मंप	मंपमंप निसां -नि
ऽ ऽ र ‖	बिन ,तुम्ह	रे ,ल	गा ऽ	वे ऽऽ	कोऽऽऽ,ऽऽऽऽ
०	३	४	×	०	२

(प)म रीसा ; ‖	निसा निसा,रीप	रीम,री	
पाऽ ऽर ; ‖	आऽ ऽऽ,नप	रीऽ,ऽ.....	इत्यादि
०	३	४	

अंतरा

सांनि (प)	मरी ,मंप	सां ,निसां	सांरीं मं,रीं	सां नि	
नदि या	ऽऽ ,गह	री ,ऽऽ	नैया ऽ,पु	रा ऽ	
३	४	×	०	२	

प,मंपध प(प) ‖	म री	सा(सा) नि	मंप -प	निसा रींमंपनिसां-	
नी,ऽऽऽ मोऽ ‖	री ऽ	ऽ ऽ ऽ	आऽ ऽज	आऽ योऽऽऽऽऽ	
०	२	४	×	०	

निप मं,(प)	मरी सा(सा),सा; ‖	"आन परी".... इत्यादि स्थायी के अनुसार
शर ण,ति	हाऽ ऽ ऽ ,र; ‖	
२	०	

राग शुद्ध सारंग–होरी–धमार

स्थायी : डारो ना, न डारो, ना डारो
रंग भरी पिचकारी, भीजेगी नई मोरी सारी
ये कौन रीत अनोखी होरी खेलन की अनारी|

अंतरा : गारी दूँगी रे निपट, मुख मींडूँगी अबीर गुलालसों
भाज अब तुम कहाँ जैहो, नये हो खिलारी अनारी ||

स्थायी

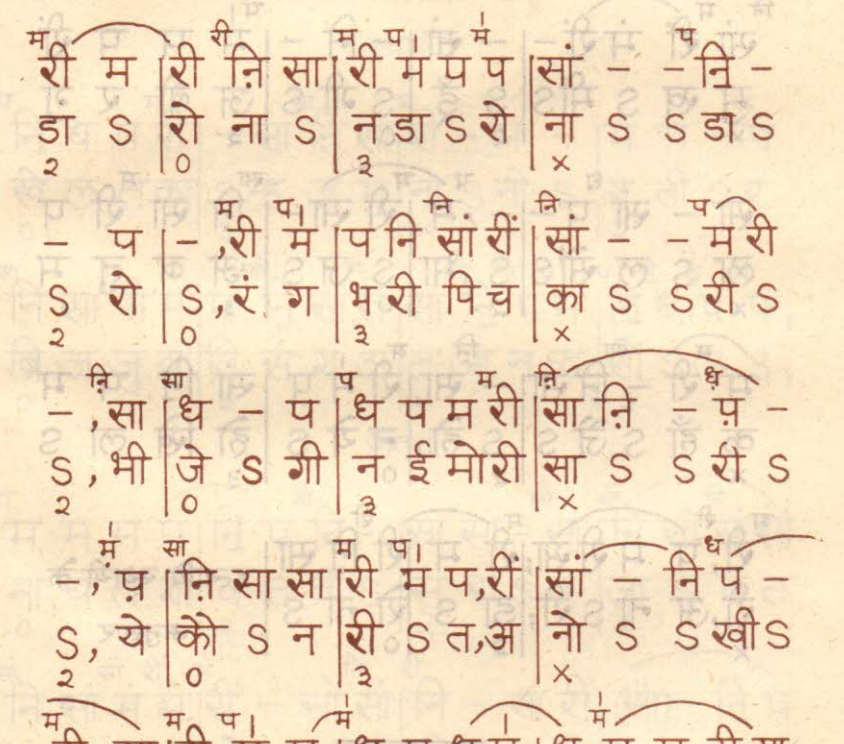

अंतरा

×	2	0	3
प	नि	नि	नि ध
म प - सां -	- सां	- सां -	सां नि प प
गा S S री S	S दूँ	S गी S	रे नि प ट

×	2	0	3
प	नि	नि	नि नि
म प - सां -	- सां	- सां -	सां सांनि रीं सां
गा S S री S	S दूँ	S गी S	रे निS प ट

×	2	0	3
नि मं			प
सां रीं मं रीं -	- सां	- नि -	मं प प रीं
मु ख S मींS	S ईं	S गी S	अ बी र गु

×	2	0	3
ध	प म		सा म
सां - सां प -	- ,म	री सा -	ऩि सा री प
ला S ल सोंS	S ,भा	S ज S	अ ब तु म

×	2	0	3
म सा	ऩि	म	
म री - ऩि सा	- सा,	री मं प	सां नि प म
क हाँ S जै S	S हो,	न ये S	हो खि ला S

×	2	0	
म री	म	री	
री, प म री सा;	री म	री ऩि सा	इत्यादि स्थायी के
री,अ ना S री;	डा S	रो ना S	अनुसार

राग सामंत सारंग–त्रिताल (मध्यलय)

स्थायी : खेलत कान्ह जमुना नीर तीर
ब्रिज जुवति संग अत आनन्द सों |

अंतरा : नाचत गावत बाँसुरी बजावत
जल थल व्योम गंभीर निनादत
श्रवन सुनत मधुर मधुर तान
ताल की संगत सों ||

स्थायी

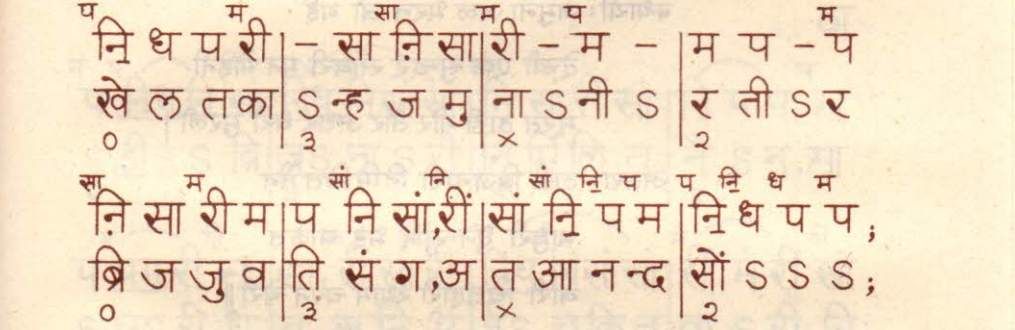

अंतरा

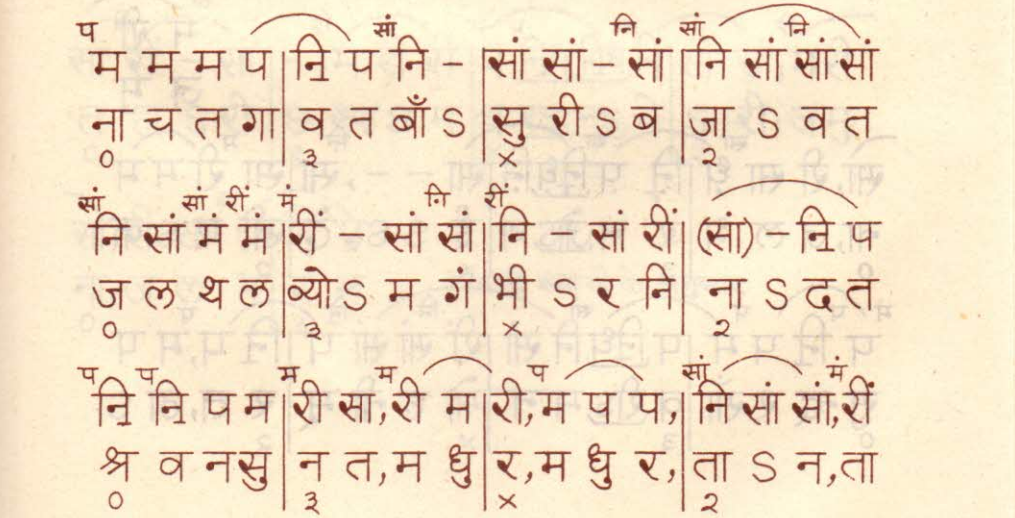

मं रीं सां –	–,प म प	नि सां रीं सां	नि ध प प;
ऽ ल की ऽ	ऽ,सं ग त	सों ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ;
०	३	×	२

नि ध प्रम री	– सा
खे ल तऽ का	ऽ न्ह...... इत्यादि स्थायी के अनुसार
०	३

राग मीयाँ सारंग–त्रिताल (मध्यलय)

स्थायी : जमुना जल भरन जो गई
देखी एक सुन्दर साँवरी मन मोहनी
मूरत ठाडी नीर तीर अधर धरी मुरली |

अंतरा : ठाडी ब्रिजनारी निमिलित नैन
माधुरी धुन सुनि भई चकित
वारी चितहारी श्याम चरन चेरी ||

स्थायी

			म री
			ज मु
सा, री सा ध़	नि़ प़ निध़नि़	सा – –, सा	सा री म म
ना, ज ल भ	र नजोऽ ग	ई ऽऽ, दे	खी ए ऽ क
०	३	×	२
प नि प म	प निधनि सां	रीं सां सां प	नि प, म प
सु न्द र साँ	व रीऽ म न	मो ह नी मू	र त, ठा ऽ
०	३	×	२

पम री सारी | - सा, म़ प़ | ऩि सारी ऩिध़ | ऩि सा; म री
डीऽ नी रती | ऽ र, अ ध | र धरी मुऽ | रं ली; ज मु
० | ३ | × | २

सो, री सा ध़ | ऩि प़
ना, ज ल भ | र न..... इत्यादि
० | ३

अंतरा

नि
ठा

प निध नि सां | निध नि सां सां | नि सां रीं सां | नि प प, म
ऽ डीऽ ऽ ब्रि | जऽ ना ऽ री | नि मि लि त | नै ऽ न, मा
० | ३ | × | २

प पम री सा | सा, रीं सां रीं | निध निसां सां | रीं मं रीं सां
ऽ धुऽ री धु | न, सु नि भ | ईऽ च कि त | वा ऽ री चि
० | ३ | × | २

सां रीं - सां | - , म री री | प निध निध नि | सां सां; म री
त हा ऽ री | ऽ, श्या ऽ म | च रऽ नऽ चे | ऽ री; ज मु
० | ३ | × | २

सो, री सा ध़ | ऩि प़
ना, ज ल भ | र न..... इत्यादि स्थायी के अनुसार
० | ३

राग मीयाँ सारंग – झपताल (मध्यलय)

स्थायी: जय जय राम जप नाम निस दिना बावरे
टरत दुख दंद सब हरत भव फंद रे।

अंतरा: माया जगत जाल छिन छिन लुभाव ही
अजहु तन चेत मन सुन 'सुजनवा' प्यारे॥

स्थायी

री सा	ऩि म़ प़	ध़ ऩि	सा री सा	सा सा	सा री प	पम रीम	री सा –
जै जै	रा S म	ज प	ना S म	नि स	दि ना S	बाS SS	व रे S
×	2	0	3	×	2	0	3
ऩि सा	सा री म	प ऩिध	नि सां सां	रीं नि	सां ऩि प	पम रीप	पम री सा
ट र	त दु ख	दं SS	द स ब	ह र	त भ व	फंS SS	दS रे S
×	2	0	3	×	2	0	3

अंतरा

म प	नि सां सां	सां सां	सां – सां	नि सां	रीं मं रीं	(सां) ध	नि सां –
मा S	या S ज	ग त	जा S ल	छि न	छि न लु	भा S	व ही S
×	2	0	3	×	2	0	3
म प	रीं नि सां	ऩि –	प म प	री म	प सां सां	री म	री – सा
अ ज	हु त न	चे S	त म न	सु न	सु ज न	वा S	प्या S रे
×	2	0	3	×	2	0	3

राग मधमादसारंग–ध्रुवपद–चौताल

स्थायीः लेहों बलैया, या मोहनी मूरत पे
बार बार वारी जाऊँ मोरी आली|
अंतराः काछे पीताम्बर श्याम बरन कँवल नैन
कुंडलन की झलक निराली ‖
संचारीः मोर मुकुट माथे गरे बैजयंती माल
त्रिभंगी ठाड़ो है कदम्ब की छैया‖
आभोगः बाँसुरी निनाद तें गूँज उठ्यो बिंद्राबन
शरण आऊँ चरण तोरे बनमाली‖

स्थायी

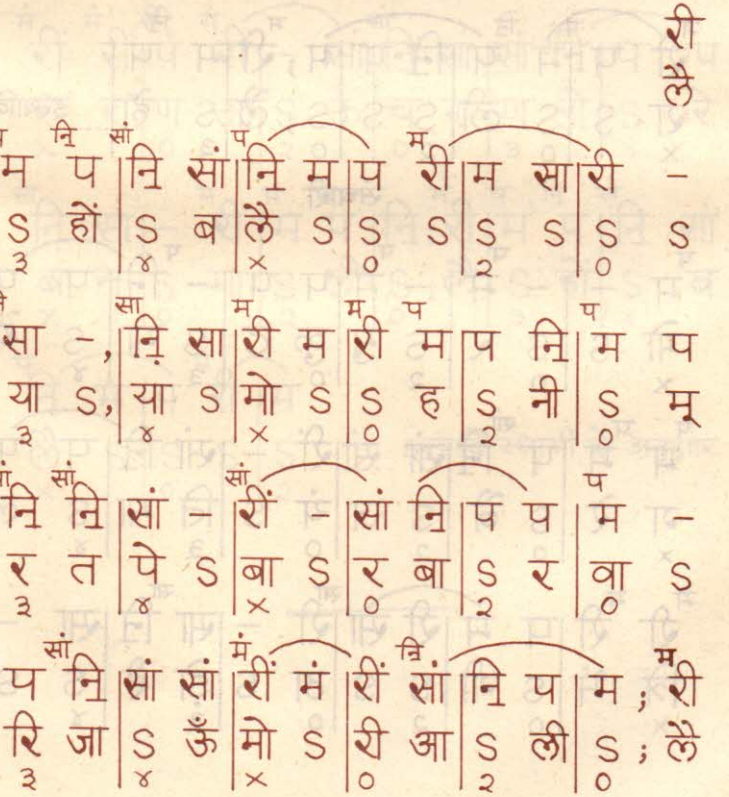

अंतरा

(प)नि	प	म	प	(सां)नि	सां	रीं	–	सां	–	(नि)सां	सां
का	S	S	छे	S	S	पी	S	ता	S	म्ब	र
×		०		२		०		३		४	
(सां)नि	–	सां	(मं)रीं	मं	रीं	(सां)नि	सां	रीं	सां	नि	प
श्या	S	म	ब	र	न	कँ	व	ल	नै	S	न
×		०		२		०		३		४	
(प)म	म	प	नि	प	म	(म)री	सा	–	नि़	सा	(नि़),सा
कु	ण्ड	ल	न	S	की	झ	ल	S	क	S	,नि
×		०		२		०		३		४	
(म)री	प	(प)म	(नि)प	नि	प	म;	(म)री	म	(नि)प		
रा	S	S	ली	S	S	S;	लै	S	हैं	..... इत्यादि	
×		०		२		०		३			

संचारी

(प)म	–	–	(प)म	–	(प)म	प	प	–	(प)नि	प	प
मो	S	S	र	S	मु	कु	ट	S	मा	S	थे
×		०		२		०		३		४	
(प)म	(प)म	प	(सां)नि	सां	सां	रीं	–	सां	नि	प	प
ग	रे	S	बै	S	ज	यं	S	ति	मा	S	ल
×		०		२		०		३		४	
(म)री	(म)री	प	म	री	सा	(सा)री	–	सा	(सा)नि़	सा	–
त्रि	भं	S	गी	S	S	ठा	S	ड़ो	है	S	S
×		०		२		०		३		४	

सा			म			नि			नि		
नि़	सा	-	री	प	म	प	नि	-	म	प	-
क	द	ऽ	म्ब	ऽ	की	छे	ऽ	ऽ	या	ऽ	ऽ
×		0		२		0		३		४	

आभोग

सां		सां	सां		सां				नि		
नि	-	नि	नि	-	नि	सां	-	सां	सां	-	-
बाँ	ऽ	सु	री	ऽ	नि	ना	ऽ	द	तें	ऽ	ऽ
×		0		२		0		३		४	

मं		मं	रीं								
रीं	-	रीं	मं	रीं	सां	रीं	सां	-	नि	प	प
गूँ	ऽ	ज	उ	ठ्यो	ऽ	बिं	द्रा	ऽ	ब	ऽ	न
×		0		२		0		३		४	

मं	मं	रीं	मं			सां					
रीं	रीं	पं	रीं	-	सां	नि	सां	सां	नि	प	प
श	र	ण	आ	ऽ	ॐ	च	र	ण	तो	ऽ	रे
×		0		२		0		३		४	

सा			म	प	नि		म	प	नि	सां	
नि़	सा	-	री	म	प	नि;	री	म	प	नि	सां
ब	न	ऽ	मा	ऽ	ली	ऽ;	लै	ऽ	हों	ऽ	ब
×		0		२		0		३		४	

प			म	
नि	म	प	री	म
लै	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
×		0		२

----- इत्यादि स्थायी के अनुसार

राग बहार-त्रिताल (मध्यलय)

स्थायीः करत केली कुंजन में कन्हैया
ग्वाल बाल अत हरख भरे सब
हँसत गावत नाचत तारी दै दै |

अंतराः बाँसुरी की धुन सुन उठ धाये धाये
नर नारी जन ब्रिज के बासी
देखत सुनत बलैया लै लै ||

स्थायी

प	म ग म	नि	
, नि प प	पम प ग म	नि ध नि, सां	(सां) – निध निसां
, क र त	केऽ ऽ ली कुं	ज न में, क	न्है ऽ याऽ ऽऽ
	३	×	२
प प	प	म म म ग	
सां – सां नि	– प म प	ग ग ग म	री – सा सा
ग्वा ऽ ल बा	ऽ ल अ त	ह र ख भ	रे ऽ स ब
०	३	×	२
नि म म	म		सां
सा म म प	ग म नि ध	नि सां – (सां)	– नि ध नि
हाँ स त गा	व त ना च	त ता ऽ री	ऽ दै ऽ दै
०	३	×	२
सां; नि प प			
ऽ; क र त	----- इत्यादि		
०			

अंतरा

मं मं मं मं		सां	रीं
ग ग ग गमं	रीं रीं सां सां	नि सां रीं –	सां सां – निध
बाँ सु री कीऽ	धु न सु न	उ ठ धा ऽ	ये धा ऽ येऽ
०	३	×	२

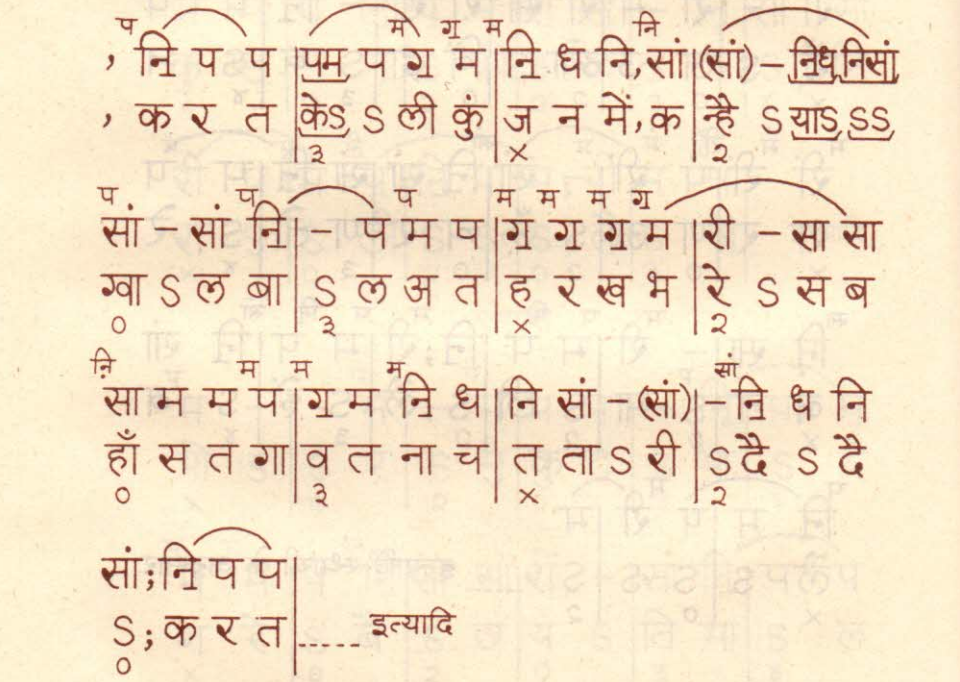

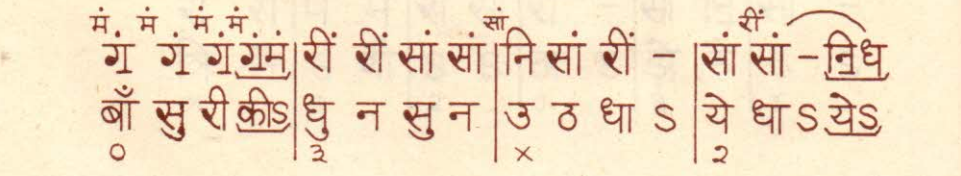

0	३	×	२
^प^नि प ^प^म प	^म^ग म री सा	म ^ग^म ^नि^धनि सां	निप ^म^मप गम
न र ना ऽ	री ऽ ज न	ब्रि ज केऽ ऽ	बाऽ ऽऽ सी ऽ
–, ^म^नि ध नि	सां नि सां सां	^नि^रीं ^गं^-गं रीं सां	–, ^सां^नि ध ^सां^नि
ऽ, दे ख त	सु न त ब	लै ऽऽ या ऽ	ऽ, लै ऽ लै
सां; ^प^नि प प			
ऽ; क र त			

इत्यादि स्थायी के अनुसार

राग बहार–त्रिताल (मध्यलय)

स्थायीः देखो री माई जसोदा तुम्हरो छोरो
राऱ करत हमसे नित उठ घरि पल
मग रोकत बैंया मरोरत बरजे
नहीं माने मैं भोरी हारी।

अंतरा : जल भरन गई मैं जमुना तट जो
कंकरी मारी फोरी मटकी मोरी
का करूँ री अब कैसे घर जाऊँ
सास ननंद मोरी देगी गारी अत भारी॥

स्थायी

			^रीं^रीं नि
			दे खो
^सां^सां ध नि, ^प^म	प ^म^ग म ^प^प	सां –, ^सां^नि ध	नि सां –, धनि
री मा ई, ज	सोदा तु म्ह	रो ऽ, छो ऽ	रो ऽ ऽ, राऽ
0	३	×	२

सांसां नि प नि	म प ग म	री री सा सा,	सा सा म म
SS क र त	ह म् से S	नि त उ ठ,	घ रि प ल
0	3	×	2

नि प नि म	प, ग म ध	नि सां सां सां,	गं मं रीं सां
म ग रो क	त, बैं या म	रो S र त,	ब र जे S
0	3	×	2

ध नि सांरीं गंरीं	सांरीं गंरीं सां निसां	रींसां निध, नि सां	सां – ; रीं नि
न हीं माS SS	नेS SS में भोS	SS रीS, हा S	री S ; दे खो
0	3	×	2

अंतरा

रीं सां नि ध	नि, सां नि सां,	गं मं रीं सां	रीं रीं सां –
ज ल भ र	न, ग ई में,	ज मु ना S	त ट जो S
0	3	×	2

गं मं पं गं	मं, रीं सां रीं	नि सां नि प,	सा – म म
कं क री मा	री, फो री म	ट की मो री,	का S क रूँ
0	3	×	2

प, ग म नि	ध नि, सां सां	गं मं रीं सां	–, रीं सांसां रीं
री, अ ब कै	S से, घ र	जा S ऊँ S	S, सा SS न
0	3	×	2

नि सां ध नि,	प – प म	प, ग म पध	निसां सां; रीं नि
नं द मो री,	दे S गी गा	री, अ त भाS	SS री; दे खो
0	3	×	2

राग बहार–झपताल(मध्यलय)

स्थायीः शुभ दिन शुभ मुहूरत आज आयो है
राष्ट्रपति मान्यवर राजेन्द्र प्रसाद
राष्ट्रजीवन महा पुरुष आयो है।

अंतरा-१ः संस्कृति भारती दाक्षिण्य सौजन्य की
ध्वजा आप हिंद-मात-सुपुत्र
धीर वीर गंभीर आसरो राष्ट्र को
अभिमत सदा रहे॥

अंतरा-२ः चिरजीव रहे राष्ट्र राजेन्द्रजी रहे
जस कीर्ति नाम तें त्रिभुवन गरज उठे
गुण की प्रशंसा सदा धन्यता रहे॥

स्थायी

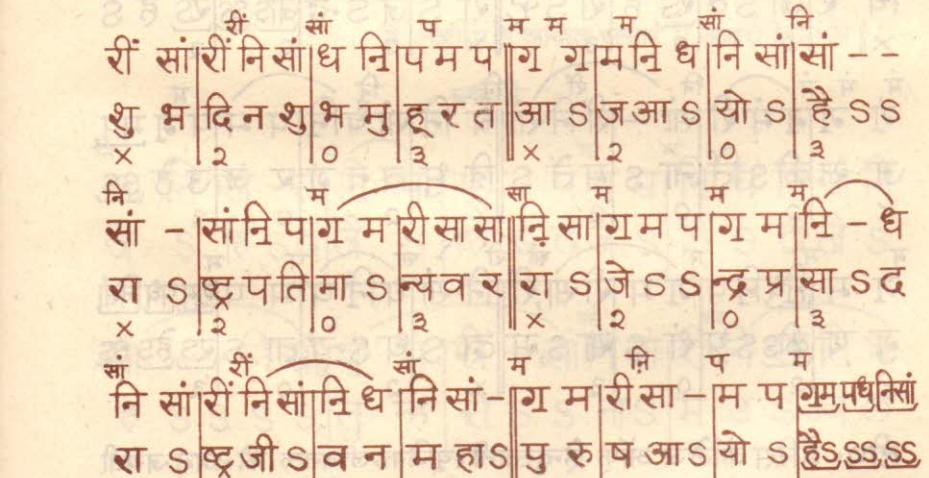

अंतरा-१

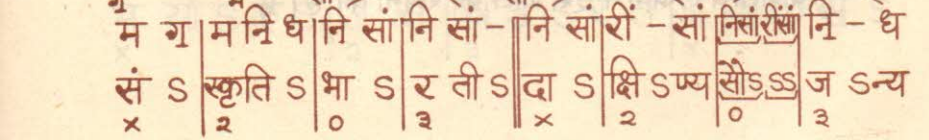

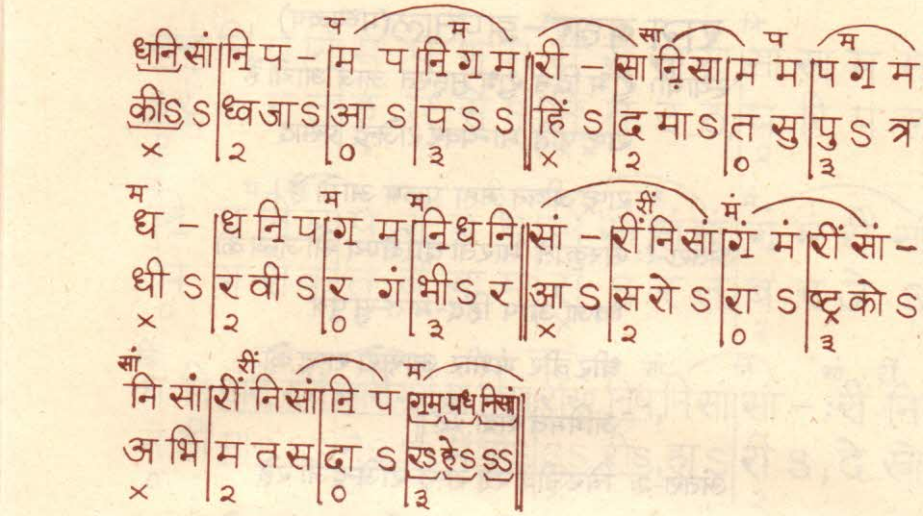

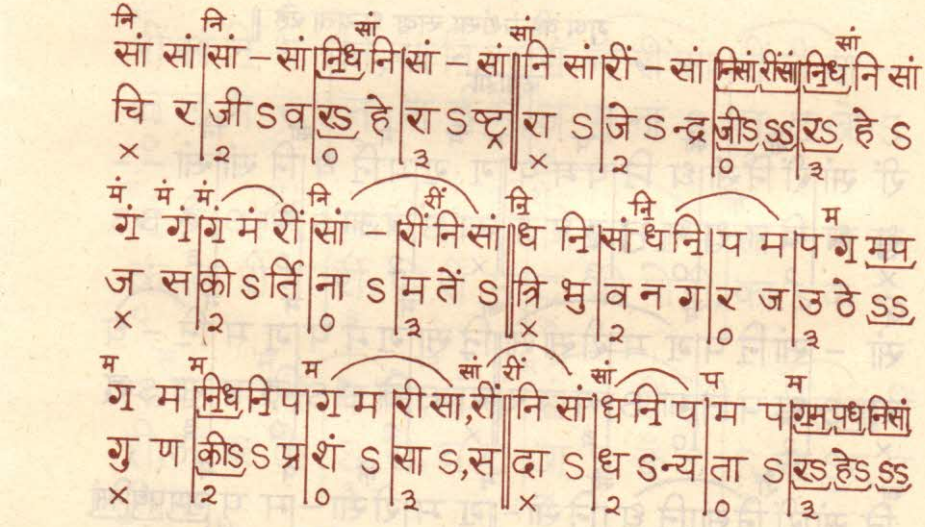

धनि सां	नि प -	म प	नि ग म	री -	सा नि सा	म म	प ग म
कीऽ ऽ	ध्वजा ऽ	आ ऽ	प ऽ ऽ	हिं ऽ	द मा ऽ	त सु	पु ऽ त्र
×	2	0	3	×	2	0	3
ध -	ध नि प	ग म	नि ध नि	सां -	रीं नि सां	गं मं	रीं सां -
धी ऽ	र वी ऽ	र गं	भी ऽ र	आ ऽ	स रो ऽ	रा ऽ	ष्ट्र को ऽ
×	2	0	3	×	2	0	3
नि सां	रीं नि सां	नि प	गमपधनिसां				
अ भि	म त स	दा ऽ	रऽहेऽऽऽ				
×	2	0	3				

अंतरा-2

सां सां	सां - सां	निध नि	सां - सां	नि सां	रीं - सां	निसां रींसां	निध नि सां
चि र	जी ऽ व	रऽ हे	रा ऽ ष्ट्र	रा ऽ	जे ऽ न्द्र	जीऽ ऽऽ	रऽ हे ऽ
×	2	0	3	×	2	0	3
गं गं	गं मं रीं	सां -	रीं नि सां	ध नि	सां ध नि	प म	प ग मप
ज स	की ऽ र्ति	ना ऽ	म तें ऽ	त्रि भु	व न ग	र ज	उ ठे ऽऽ
×	2	0	3	×	2	0	3
ग म	निध नि प	ग म	री सा, रीं	नि सां	ध नि प	म प	गम पध निसां
गु ण	कीऽ ऽ प्र	शं ऽ	सा ऽ, स	दा ऽ	ध ऽ न्य	ता ऽ	रऽ हेऽ ऽऽ
×	2	0	3	×	2	0	3

टीप: मॅरिस कॉलेज ऑफ् हिन्दुस्तानी म्यूजिक, लखनऊ, की रजत जयंती के अवसर पर माननीय राष्ट्रपति डॉक्टर राजेंद्र प्रसादजी के स्वागतार्थ लेखक ने इस गीत की रचना की है।

राग बहार–ध्रुवताल(खंडजाति)

स्थायी : जय हिंद जय हिंद जय हिंद जय हे
तुम्हरो नाम उज्वल भयो है
जस कीरत अखिल संसार में आदर्श देशन को |

अंतरा-१: अहिंसा सत्य शान्ति ध्वज तिरंगी गगन में बिराजे
दीन दुर्बल दुखी जन को है भरोसो एक जो
अखिल संसार में आदर्श देशन को ||

अंतरा-२: अन्न विद्या आरोग्य सत्र संघोषणा सुनि
धाये नर नारी पाये आनन्द अति कंठ गदगदसों
करत जयजयकार अखिल संसार में आदर्श देशन को ||

अंतरा-३: सुख शांति युक्त जनता गावे बजावे जस गान तुमरो
जय मात जय भारती जय स्वातंत्र्य देवि
दे आशीष है अखिल संसार में आदर्श देशन को ||

स्थायी

नि	प	म म	
सां नि सां - सां	नि प	म - प ग म	नि ध नि सां नि
जै ऽ हिं ऽ द	जै ऽ	हिं ऽ द जै ऽ	हिं ऽ द जै ऽ
×	२	३	४

	मं	सां	सां
सां - - नि सां,	गं मं	रीं - सां नि सां	रीं नि सां नि प
है ऽ ऽ ऽ ऽ,	तु म्ह	रो ऽ ऽ ना ऽ	म उ ऽ ज्व ल
×	२	३	४

म म	नि	नि प	म म म
ग ग म री -,	सा सा	सा म - म प	ग ग म नि ध
भ यो ऽ है ऽ,	ज स	की ऽ ऽ र त	अ खि ल सं ऽ
×	२	३	४

सां सां	गं	सां	
नि सां रीं नि सां	रीं गं	रीं - सां नि सां	रीं सां नि॒ ध नि
सा S र में S	आ S	द S र्श दे S	श न को S S
×	२	३	४

अंतरा-१

ग॒ म			
म ग॒ म नि॒ -	ध नि	सां - नि सां -	नि॒ ध नि सां -
अ हिं S सा S	S S	स S त्य शां S	ति S S S S
×	२	३	४
सां नि		सां रीं	म
नि सां सां रीं -	सां -	रीं नि सां नि॒ -	प म प ग॒ म
ध्व ज ति रं S	गी S	ग ग न में S	बि रा S जे S
×	२	३	४
मं मं मं			
गं - गं गं मं	रीं सां	रीं सां - नि॒ ध	नि॒ - प म प
दी S न दु S	र्ब ल	दु खी S ज न	को S S S S
×	२	३	४
म		नि॒ प	म म म
ग॒ - म री -	सा -,	सा म म म प	ग॒ ग॒ म नि॒ ध
है S भ रो S	सो S,	प S क जो S	अ खि ल सं S
×	२	३	४
सां सां	गं	सां	
नि सां रीं नि सां	रीं गं	रीं - सां नि सां	रीं सां नि॒ ध नि
सा S र को S	आ S	द S र्श दे S	श न को S S
×	२	३	४

अंतरा-२

सा म		प म	म
म - म प -	प -	म नि॒प ग - म	नि॒ ध नि सां -
अ S न्न वि S	धा S	आ SS रो S ग्य	स S त्र सं S
×	२	३	४

नि – प म प	ग़ म	री – सा सा म	म – प ग़ म
घो ऽ ष णा ऽ	सु नि	धा ऽ ये न र	ना ऽ ऽ री ऽ
×	२	३	४

नि ध नि सां रीं	सां –	सां, गं मं रीं –	सां, नि सां रीं नि
पा ऽ ये आ ऽ	नं ऽ	द, अ ति कं ऽ	ठ, ग द् ग द्
×	२	३	४

सां नि प म प	ग़ म	री सा सा म प	ग ग़ म नि ध
सों ऽ क र त	जै ऽ	जै ऽ का ऽ र	अ खि ल सं ऽ
×	२	३	४

नि सां रीं नि सां	रीं गं	रीं – सां नि सां	रीं सां नि ध नि
सा ऽ र में ऽ	आ ऽ	द ऽ र्श दे ऽ	श न को ऽ ऽ
×	२	३	४

अंतरा-३

गं गं गं – मं	रीं –	सां नि सां रीं सां	नि ध नि सां, सां
सु ख शां ऽ ति	यु ऽ	क्त ज न ता ऽ	गा ऽ वै ऽ, ब
×	२	३	४

नि प नि म प	ग़ म	री – सा सा म	म – प, ग़ म
जा ऽ ऽ वै ऽ	ज स	गा ऽ न तु म	रो ऽ ऽ, जै ऽ
×	२	३	४

नि ध नि, सां रीं	सां नि	सां गं –, गं मं	रीं सां रीं – सां
मा ऽ त, जै ऽ	भा ऽ	र ती ऽ, जै ऽ	स्वा ऽ तं ऽ त्र्य
×	२	३	४

नि सां रीं नि सां	नि॒ प	ग॒ - म री सा	सा म प ग॒ म
दे ऽ वि दे ऽ	आ ऽ	शी ऽ ष है ऽ	अ खि ल सं ऽ
×	२	३	४

नि ध नि सां -	रीं गं	रीं - सां नि सां	रीं सां नि॒ ध नि
सा ऽ र में ऽ	आ ऽ	द ऽ र्श दे ऽ	श न को ऽ ऽ
×	२	३	४

राग बसंत बहार–त्रिताल(मध्यलय)

स्थायीः फूली नई नई बेलरी, सखि रंग रस सों भरी

अत हरखे मन मेरो, जिया हुलसत निहारे निहारे।

अंतराः अम्बुवा की डार बैठी कोयलिया कुहू कुहू करत पुकार

मानो मनावत सरस बसंत बहार ॥

स्थायी

सां - नि॒ प	म प ग॒ म	-, नि॒ ध नि	सां -, ध॒ नि
फू ऽ ली न	ई न ई ऽ	ऽ, बे ऽ ल	री ऽ, स खि
०	३	×	२

सां मं गं रीं	सां -, नि॒ ध	नि सां नि॒ प	म प ग॒ म
रं ग र स	सों ऽ, भ री	अ त ह र	खे ऽ म न
०	३	×	२

री - सा -,	सा सा म ग	म ध॒, नि सां	रीं सां नि ध॒
मे ऽ रो ऽ,	जि या हु ल	स त, नि हा	रे नि हा रे
०	३	×	२

अंतरा

ग म - नि	- ध नि -	सां - सां सां	सां सां नि ध
अ म्बु ऽ वा	ऽ की डा र्	बै ऽ ठी को	य लि या ऽ
०	३	×	२
ध नि सां रीं	सां नि ध,सां	नि ध प -,	म ग ग,म
कु हू कु हू	क र त,पु	का ऽ ऽ र्,	मा ऽ नो,म
०	३	×	२
ग री सा सा	सा म म प	ग म ध नि	सां सां;ध नि
ना ऽ व त	स र स ब	स ऽन्त ब	हा र्;स खि
०	३	×	२

राग बसंत बहार–त्रिताल(मध्यलय)

स्थायी: आयो आयो आयो बसन्त ऋतु आयो
अत मन भायो सुख पायो, सोलेहुँ सिंगार
संसार सजायो, चहूँ ओर अत मोद बढ़ायो।

अंतरा-१: सरस सुगंध समीर सुहायो, बिरख बेली पे
फूल झुलायो, अत ही आनन्द हिया भरि आयो
राग रंग रस उपजायो॥

अंतरा-२: भँवर गुंजार करे कलियन पे, पीहू पीहू
पपीहा बुलायो, डार डार पे कोयल कूकत
नई बहार बसंत बहार सजत,
नर नारी जन मन हुलसायो॥

अंतरा-३: बीन मृदंग झाँझ मुरली धुन राग ताल सुर संगत पे
सब हँसत गावत नाचत पुरजन मिलि
नाद सिंगार सजायो सजायो॥

स्थायी

×	2	0	3
म ध़ सां -	- - - -	रीं - सां -	- - - -
आ ऽ यो ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ	आ ऽ यो ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ
म - ध़नि सां	नि ध़ प प	म ग म ध़	सां - - -
आ ऽ योऽ ऽ	ब स ऽ न्त	रि तु आ ऽ	यो ऽ ऽ ऽ
ग ग ग नि	नि ध़ म ग	म ग री -	सा - - -
अ त म न	भा ऽ यो ऽ	सु ख पा ऽ	यो ऽ ऽ ऽ
सा सा सा म	म -म ग -	प (प) -प मग	म - ग -
सो ले हुँ सिं	गा ऽर सं ऽ	सा ऽ ऽर सऽ	जा ऽ यो ऽ
म म ध़ सां	- सांसां सांनि	रीं -सां सां	नि ध़ सां नि
च हूँ ऽ ओ	ऽ र अ तऽ	मो ऽ द ब	ढ़ा ऽ यो ऽ

अंतरा-१

×	2	0	3
म म म ध़	सां - सां सां	सां - सां सांनि	रीं - सां -
स र स सु	ग ऽ न्ध स	मी ऽ र स्तुऽ	हा ऽ यो ऽ
सां सां सां -	रीं - सां -	नि सां सां (सां)	नि ध़ नि ध़
ब्रि ख बे ऽ	ली ऽ पे ऽ	फू ऽ ल झु	ला ऽ यो ऽ

ध नि रीं मं	गं रीं सां, सां	नि ध सां सां	नि ध प –
अ त ही आ	न ऽ न्द, हि	या ऽ भ रि	आ ऽ यो ऽ
×	२	०	३

मं – मं धनि	सां नि ध प	मं ग गमं धनि	सांरीं सांनि धप मंग
रा ऽ ग रंऽ	ऽ ग र स	उ प जाऽ ऽऽ	ऽऽ योऽ ऽऽ ऽऽ
×	२	०	३

अंतरा-२

म नि ध नि	सां – सां सां	सां नि सां रीं	सां (सां) नि ध
भँ व र गुं	जा ऽ र क	रे ऽ क लि	य न पे ऽ
×	२	०	३

गं – गं मं	रीं – सां –	नि सां रीं सां	निसां रींसां नि ध
पी ऽ ह् ऽ	पी ऽ ह् ऽ	प पी हा बु	लाऽ ऽऽ यो ऽ
×	२	०	३

म – म म	– प ग म	नि ध ध नि	सां सां, ध नि
डा ऽ र डा	ऽ र पे ऽ	को य ल् क्	क त, न ई
×	२	०	३

सां मं –मं, सां	नि ध प, प	ग म –म, ध	नि सां, ध नि
ब हा ऽर्, ब	स ऽन्त, ब	हा ऽ ऽर्, स	ज त, न र
×	२	०	३

रीं मं गं रीं	सां नि ध प	मं ग मंध निरीं	गंरीं सांनि धप मंग
ना ऽ री ऽ	ज न म न	हु ल साऽ ऽऽ	ऽऽ योऽ ऽऽ ऽऽ
×	२	०	३

अंतरा-३
(दाक्षिणात्य वसंत)

[नि]सां - [नि]सां सां	नि ध ध [ध]म	- म,ध [नि]नि	सां रीं सां सां
बी ऽ न म्रि	दं ऽ ग झाँ	ऽ झ,मु र	ली ऽ धु न
×	२	०	३
[ग]म - [ग]म म	नि नि ध ध	[ग]म - ग ग	री -[ऩि] ,सा सा
रा ऽ ग ता	ऽ ल सु र	सं ऽ ग त	पे ऽ,स ब
×	२	०	३
[ऩि]सा ऩि [सा]ध़ ऩि	सा [सा]सा, म -	ध [सां]ध,नि नि	सां रीं सां सां
हाँ स त गा	व त, ना ऽ	च त,पु र	ज न मि लि
×	२	०	३
[नि]ध नि [रीं]रीं मं	गं रीं [नि]सां,सां	नि ध [मं]प, प	मं ग मंधं निसां
ना ऽ द सिं	गा ऽ र,स	जा ऽ यो,स	जा ऽ योऽ ऽऽ
×	२	०	३

राग हिंडोल बहार-त्रिताल(मध्यलय)

स्थायी : देखो सखि कान्ह केली करत है
मधुबन में ग्वाल गोपी संग आज ।
अंतरा : मृदंग ढप मुरली बाजत अत धूम धाम तें
एक गावत एक नाचत दे दे तारी
अत सोहत ब्रिज नारी बीच मोहन जदुराज ॥

स्थायी

मं
दे

ग सा ध़ सा	म – – म,	नि (नि) प, ग	मं ध सां, ध
खो स खी ऽ	का ऽ ऽ न्ह,	के ऽ ली, क	र त है, दे
३	×	२	०
मं ग सा ध़सा	म – म, नि	(नि) प –, ग	मं ध सां मं
खो स खी ऽऽ	का ऽ न्ह, के	ऽ लीऽ, क	र त म धु
३	×	२	०
गं सां ध –,	धनि सांरीं निसां नि	– प ग म,	धनि सां सांध; मं
ब न में ऽ,	खाऽ ऽऽ लऽ गो	ऽ पि सं ग,	आऽ ऽ जऽ; दे
३	×	२	०

अंतरा

सां सां सां ध	नि सां सां सां	गं मं रीं सां,	नि सां रीं –
म्रि दं ग ढ	प मु र ली	बा ऽ ज त,	अ त धू ऽ
३	×	२	०
सां, सांध सांमं ध	सां –, ध मं	ग मं ग, सा	सा म म प
म, धाऽ ऽऽ म	सों ऽ, ए क	गा व त, ए	क ना च त
३	×	२	०
ग – म नि	– ध, निसां	रीं सां रीं नि	(सां) नि ध नि,
दे ऽ दे ता	ऽ री, अ त	सो ह त ब्रि	ज ना ऽ री,
३	×	२	०
सां गं मं गं	सां सां, सांमं ध	सां सां नि प	ग म रीसा; मं
बी ऽ च मो	ह न, जऽ दु	रा ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ जऽ; दे
३	×	२	०

राग हिंडोल बहार–त्रिताल(मध्यलय)

स्थायी : झूलत हिंडोल बहार आयी
बसंत ऋतु की सरस सुगंध खिल्यो चहूँ ओर
डार डार अत आनन्द भरे गोपीयन संग कान्ह।

अंतरा : झूलो झूलावत एक एक सखि, गूँथत फूल हरवा
एक हँसत गावत इक दै दै तारी
या रीत गोपीयन संग कान्ह ॥

स्थायी

म ग सा सा	ध़ सा सा,सा	नि – – ध	नि सां सां –
झू ल त हिं	डो ऽ ल,ब	हा ऽ ऽ र	आ ऽ यी ऽ
0	3	×	2
रीं सां नि सां	नि प म –,	ध नि सां,सां	नि प म,प
ब सं ऽ त	रि तु की ऽ,	स र स,सु	ग ऽ न्ध,खि
0	3	×	2
ग म –,री	सा री – सा,	सा – सा,म	– ग,म ध
ल्यो ऽ ऽ,च	हूँ ओ ऽ र,	डा ऽ र,डा	ऽ र,अ त
0	3	×	2
सां सां सां गं	सां –,म ध	सां ध सां म	ध,सां – ध
आ न न्द भ	रे ऽ,गो पी	य न सं ग	ऽ,का ऽ न्ह
0	3	×	2

अंतरा

सां नि ध नि	सां – ध नि	सां – सां रीं	– सां ध नि
झू लो ऽ झू	ला ऽ व त	ए ऽ क ए	ऽ क स खि
0	3	×	2

सां नि ध,नि	सां - ध नि,	सां - सां,रीं	- सां,नि सां
झू लो ऽ,झू	ला ऽ व त,	ए ऽ क,ए	ऽ क, गूँ ऽ
०	३	×	२

रीं सां नि सां	नि प म -,	सा - सा,म	म म, नि ध
ध त फू ल	ह र वा ऽ,	ए ऽ क,हाँ	स त, गा ऽ
०	३	×	२

मं ध सां सां	मं - -,गं	- -,सां -	ध सां मं ध,
व त इ क	दै ऽ ऽ,दै	ऽ ऽ,ता ऽ	ऽ री ऽ ऽ,
०	३	×	२

सां ध मं ग	- सा,सा ग	मं ध,सां मं	ध,सां - ध;
या ऽ ऽ री	ऽ त,गो पी	य न,सं ग	ऽ,का ऽ न्ह;
०	३	×	२

राग बागेश्री बहार - त्रिताल (मध्यलय)

स्थायी : मेरो मन अटक्यो श्याम सुन्दर सों
सुध बुधहु सब बिसराई, घर अंगना कछु
सूझत नहीं काम धाम |

अंतरा : माथे मुकुट काछे पीताम्बर
गर बैजन्ती माल बिराजत
नैन विशाल अतही अभिराम ‖

स्थायी

,री नि सा	ग म प ध	नि - ध म	प ध ग म
,मे रो म	न अ ट क्यो	श्या ऽ म सुं	द र सों ऽ
	३	×	२

सा	म प ध नि॒	सां	प ध म
री,सानि़ सा	ग॒ म प ध	नि॒ - ध म	प ध ग॒,म
ऽ, मेरो म	न अ टक्यो	श्याऽमसुं	द रसों,सु
0	3	×	2

म नि॒ सां		सां	प
ग॒ म ध नि॒	सां सां,रीं सां	नि॒ सां नि॒ प	-,नि॒ प म
ध बु ध हु	स ब,बिस	रा ऽ ई ऽ	ऽ, घ र अं
0	3	×	2

म	नि॒ नि॒	ध	म
प ग॒ म री	सा,रीं सां सां	नि॒ ध, म -	म प ग॒ म
ग ना ऽ क	छु,सू झ त	न हीं,का ऽ	म धा ऽ म
0	3	×	2

सा री	म प ध नि॒	
-;री नि़ सा	ग॒ म प ध	
ऽ; मे रो म	न अ टक्यो	इत्यादि
0	3	

अंतरा

नि॒ प		मं	सां मग॒
म प नि॒ प,	सां - सां गं	मं रीं सां सां	सां,रीं सां रीं
थे मुकु ट,	का ऽ छे पी	ऽ ता ऽ म्ब	र,ग र बै
3	×	2	0

सां	ध	म	सा म
नि॒ सां नि॒ ध	पध निधप मप	ग॒ म री सा,	नि़ सा ग॒ म
ज ऽन्ती ऽ	माऽ ऽलऽ बिऽ	रा ऽ ज त,	नै ऽ न वि
3	×	2	0

नि॒	नि॒	प म	सा री
धनि॒ सां सां,नि॒	प म प नि॒	म प ग॒ म	रीसा;री नि़ सा
शाऽ ऽ ल,अ	त ही अ भि	रा ऽ ऽ ऽ	मऽ; मे रो म
3	×	2	0

म प ध नि॒	
ग॒ म प ध	
न अ टक्यो	इत्यादि स्थायी के अनुसार
3	

राग बागेश्री बहार–एकताल(विलंबित)

स्थायी : जिया हुलसे, बेकल होत सखी
साजन मोरा परदेसी अजहुँन पाती न पठाई।

अंतरा : जब से गये पिया इकहू न लीनी ख़बर मोरी
कासे कहूँ ये बिथा, सूझत कछु बूझत नाहीं॥

स्थायी

सा री	नि सा		नि	मे म
,री	नि सा,सासा	ध ,पधनि	ध नि,धप	धपमपध ग,गम
,जि	या S,हु ल	से ,SSS	बे S,कल	होSSSS त,सS
	४	×	०	२

	सा	सा	सा म
री सा,निसा	निसा,निसारीसा निध	निसा सा,निसा	निसा गमपधनि
खी S,SS	साS,SSSS जन	मोS रा,SS	पर देSSSS
०	३	४	×

म नि	सां	नि सां	म सा
ध,निप गमधनि	सां,निसां निध	धनिसांरीं -,निसां	निपमप गमसा,री
S,सीS अजहुँन	पा,SS तीS	SS SS S,नप	ठाSSS SSई,जि
०	२	०	३

री नि	सा
नि सा,सासा	ध
या S,हुल	से ----- इत्यादि
४	×

अंतरा

नि सां		नि नि	सां	
,धधनि	सां निसां,सां	सां ,निसां	निसां रीं--सां	रींसां,निसांरींसां निध
,जब्से ग	ये SS,पि	या ,SS	इक हूSSन	लीS,SSSS नीS
	४	×	०	२

नि मं		म ग म	म म
,धनिसां गंमं	रींसां म,गम	म,निप गम	गमपधनिसां,निप गम
,ख़बर मोS	रीS का,SS	से,कS हूँS	येSSSSS,बिS थाS
०	३	४	×

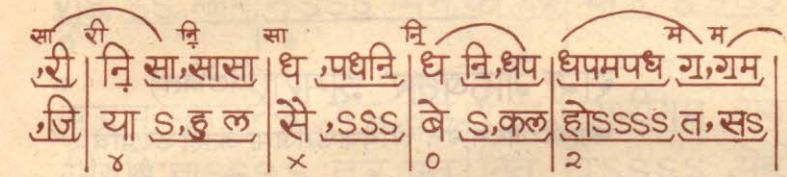

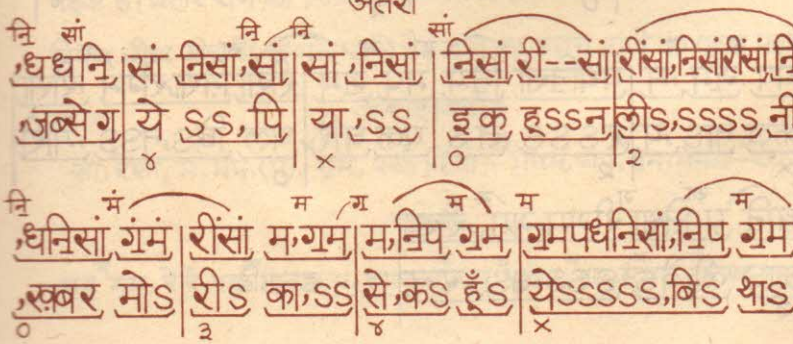

नि़ ग प म म म म सा
साम, ,मम | ,मप, गमपधनि़ | पप, गम, गमप- | गमरीसा, रीसासा; री
सूऽ, ,झत | ,कछु बूऽऽऽऽ | झत, नाऽ,ऽऽऽऽ | ऽऽऽऽ, ऽऽहीं; जि
० | २ | ० | ३

री नि़ सा
नि़ सा,सासा | ध
या ऽ, हुल | से ..... इत्यादि स्थायी के अनुसार
४

राग गौड़बहार-झूमरा (विलंबित)

स्थायी : बैरन रैन अँधियारी, जिया अतही डर पावे
कल ना परत एक घरि पल छिन, मोरी आली।

अंतरा : मिलवे को मन चाहे कासे कहूँ री अपने मन की बिथा
पिय बिना तरपत नित हों, मोरी आली॥

स्थायी

सा ग ग सा म म प प प
- ,नि़सा, रीगम, गम, ,रीसा, | नि(नि) प,मप, ,पप | निनिनिनि, पम
ऽ ,बैऽ ऽऽऽ,ऽऽ ,रन | रै ऽ न,ऽऽ, अँधि | याऽऽऽ ,ऽऽ
३ | × | २

ग ग ग म म नि सां
प,मग, म म | म,मरी प ,पप || पपधनिसांरीं ,सांसां धनि प |
ऽ,ऽऽ, ऽ री | जि,याऽ ऽ ,अत || हीऽऽऽऽऽ ,डर पाऽ वे |
| ० || ३

प म प प म सा ग
मप, गम, ,म | पधनिसां निप, मप, गम | रीसा, नि़सा, रीगम ,रीसा |
कल, नाऽ ,प | रऽऽऽ तऽ, एक घरि | पल छिऽ,नऽऽ ,मोरी |
× | २ | ०

सा सा ग ग
ध़नि़ प़; नि़सा, रीगम, गम, ,रीसा |
आऽ ली; बैऽ ऽऽऽ,ऽऽ, ,रन | ..... इत्यादि
३

अंतरा

– ,पपप, सांध, सां,सांसां	रीं – सां	,निसांरीं सां ,रींसां, निसांरींसां
S,मिलवे, कोऽ, S,मन	चा S हे	,काSS, से ,कऽ, हूँSSS
३	×	२

निध, निप, ,मम	धनिसां– ,निप, म ,म	(म)री, प ,मप
रीऽ, SS, ,अप	नेSSS, ,मन, की ,बि	थाऽ, S ,SS
०	३	×

,पपप, मपधनिसां, मप, गम	रीसा, निसारीगम, ,रीसा
,पियुबि, नाSSSS, तर, पत	नित, हेंSSSS, ,मोरी
२	०

धनि, प; निसा, रीगम,गम, ,रीसा	
आऽ, ली; बैS, SSS,SS, ,रन	---- इत्यादि स्थायी के अनुसार
३	

राग केदारबहार

हिन्दुस्तानी संगीत में बहार एक ऐसा राग है कि जो बहुत से रागों में मिलकर उनकी शोभा बढ़ाता है। केदार के साथ बहार की संगति बहुत सुलभ व सुन्दर हो जाती है। इस राग का वादी स्वर मध्यम और संवादी षड्ज है। बहार राग का मिश्रण होने के कारण कोमल गंधार और कोमल निषाद बीच बीच में लगते रहते हैं। गाने का समय रात्रि का दूसरा प्रहर होगा।

आरोहावरोह

सा, रेसा, म, मप, (प), गम, पसां । रेंसां – धपम, मप, गम, मपम – रेसा, रे, सा

पकड़

मप गम, रे रे, सा, निसाम, प, धपम, प, गम, गमप, गम, मपम – रे, सा ।

सा,रेसा,म, ^ग मम, ^ग प, ^म धपमे,प, ^म गम, ^ग मम, ^ग पप,सां,निपम,प, ^म गम, ^सा रेसा|

सा, पम ^ग – रेसा, धपमे,पम ^ग – रेसा,मप,सां, रेंसां,निपम,प, ^म ग,म,मम, पसां, ^नि धपमे, प, ^म ग,म, रेसारे,सा|

म ^ग –रेसा,पम ^ग –रेसा,रेंसां – ^नि धपमे,प, ^म गम, मनि (नि) प,मप, ^म गम, पम ^ग –रेसा|

सा,प,मम ^ग –प, धप, सां – ^नि धप, धपमे, मम ^ग प,सांरेंसां – ^नि धपमे, निप,म, ममप, ^म गम, ^सा रे,सा|

पपसां,सांरेंसां,मं ^गं – रेंसां,निप,मप,मपधनिसांरें–सां,निप,मप, ^म ग,म, नि(नि)–प, मप, ^म ग,म, पम ^ग –रेसा|

सां,सां – ^नि धपम, ^म गम, ^सा रेसा, रेंसां – ^नि धपमे,प, ^म गम, ^सा रेसा, ममप,सां,रेंसां, निसांरेंगंमंपं–मं,पं, ^मं गंमं, ^सां रेंसां, निसांरेंसां,निप,मपसां – ^नि धपमे,प, ^म गम, ^म गमप, ^म गम, ^ग रेसारे,सा|

राग केदार बहार–त्रिताल (मध्यलय)

स्थायी: मदमाते आये अत अलसाये
कौन सखी अनुराग बढ़ाये|

अंतरा: नैन उनींदे तन में रंगे हो
चाल चलत डगमगे पिया
कहो कहाँ तें रैन गँवाये ‖

स्थायी

प म ^ग – रीसा	री – सा –	^सा नि़ सा री ग	^प म प मग, म ^सा ^ग म म
द मा ऽ तेऽ	आ ऽ ये ऽ	अ त अ ल	सा ये ऽऽ, कौ
३	×	२	०

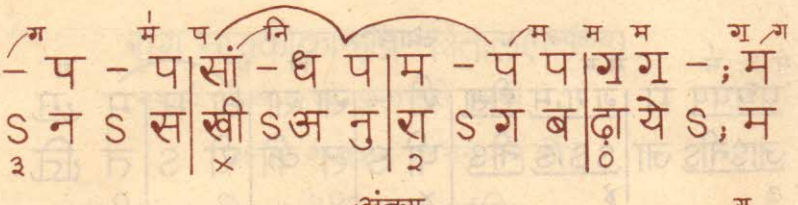

अंतरा

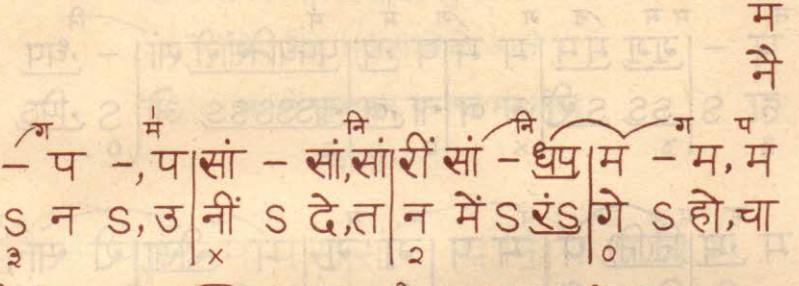

राग केदार बहार – एकताल (विलंबित)

स्थायी : जानी जानी पीत की रीत तिहारी
अब ना बनाओ पिया बतियाँ अपने नेहा की |

अंतरा : मुझ बिरहन को सुख ना नहीं चैन
तुम अपने रस के रसिया हर जैया
कौन सुने हमरे मन की ||

स्थायी

पधपप म | गग,म रीसा | री – | सा सा | सा म | म ,म
जाऽनीऽ जा | ऽऽ,ऽ नीऽ | पी ऽ | त की | री ऽ | त ,ति
३ | ४ | × | ० | २ | ०

प – | गग मम | म म | प ,प | पपधनिसांरीं सां | – ,धप
हा ऽ | ऽऽ ऽरी | अ ब | ना ,ब | नाऽऽऽऽऽ ओ | ऽ ,पिऽ
३ | ४ | × | ० | २ | ०

म ,म | नि(नि) प | म प | ग ग | म ,रीसा | री सा ;
या ,ब | तिऽ याँ | अ प | ने ऽ | ऽ ,नेऽ | हा की ;
३ | ४ | × | ० | २ | ०

अंतरा

म मग | प प | सां सां | सां – | – सांसां | रीं सांसां
मु झऽ | बि र | ह न | को ऽ | ऽ सुख | ना नहीं
३ | ४ | × | ० | २ | ०

सां(सां) निध | नि(नि) पप | म म | – पप | सां धप | मप गग
चै ऽ ऽऽ | ऽऽ ऽन | तु म | ऽअप | ने स्व | केऽ ऽऽ
३ | ४ | × | ० | २ | ०

म रीसा | री सा | सा री | ग म | म – | म पप
ऽ रसि | या ऽ | ह र | जै ऽ | या ऽ | कौ नसु
३ | ४ | × | ० | २ | ०

गमधनिसां ,निप | म – | निम प | ग ग | म,रीसा | री सा;
नेऽऽऽऽ ,हम | रे ऽ | ऽऽ ऽ | ऽ ऽ | ऽ,मन | की ऽ;
३ | ४ | × | ० | २ | ०

राग नायकीकान्हडा–त्रिताल (मध्यलय)

स्थायी: कैसी फूली फुलवारी आली
अतही सुखकर या तन मन को।

अंतरा: बेला चमेली सरस सुगंधित
पियु पियु पपीहा बोले आली
अतही सुखकर या तन मन को॥

स्थायी

-, नि - प	नि म प सां	सां - प नि	प प म म
S, कै S सी	फू ली फुल	वा S S S	री आ S ली
0	३	×	२
ग ग ग ग	ग म नि प	प ग म मसा	री री सा -
अ त ही S	सु ख क र	या S त नS	म न को S
0	३	×	२

अंतरा

-, नि प नि	सां - सां -	नि सां रीं सां	निसां रींसां नि प
S, बे ला च	मे S ली S	स र स सु	गंS SS धि त
0	३	×	२
-, रीं सां रीं	नि सां नि प	-नि प - म	-, प म म
S, पि यु पि	यु प पी हा	SS बो S ले	S, आ S ली
0	३	×	२
ग ग ग ग	ग म नि प	प ग म मसा	री री सा -
अ त ही S	सु ख क र	या S त नS	म न को S
0	३	×	२

राग नायकीकान्हडा – त्रिताल (मध्यलय)

(संस्कृत में रचित)

स्थायीः कापि वृजवनिता याता
कालिंदी तट निकटम् जल भरणाय।

अंतराः कुंजवने हरि वेणु निनादिते
हृत हृदय स्थिता मूग्धा कान्ता
कालिंदी तट निकटम् जल भरणाय॥

स्थायी

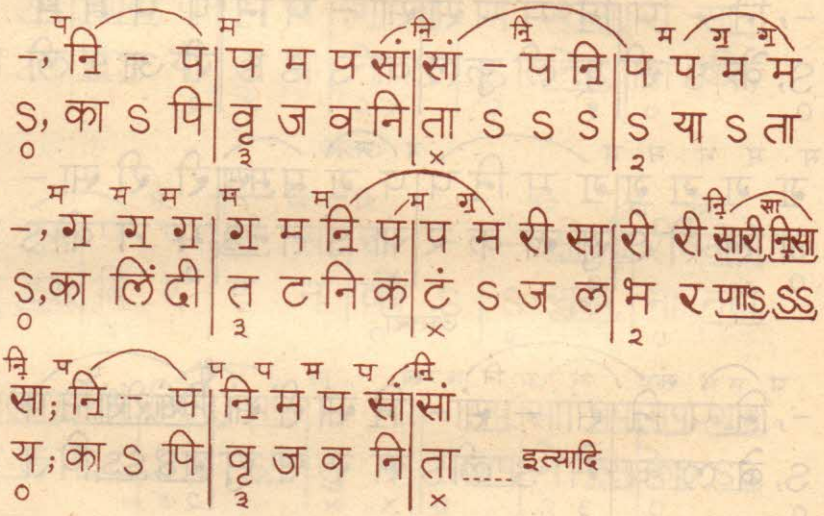

अंतरा

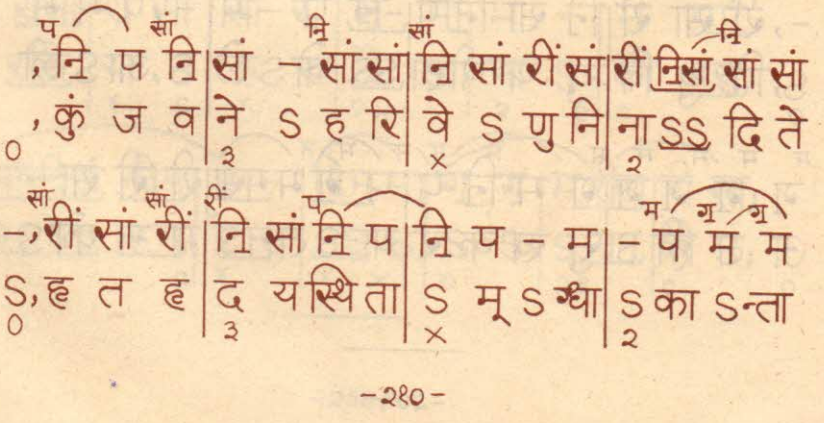

म म म म म म ग़ नि़ सा
-, ग ग ग | ग म नि प | प म री सा | री री सारी नि़सा
ऽ, का लिं दी | त ट नि क | टं ऽ ज ल | भ र णाऽऽ ऽऽ
० ३ × २

नि़ प
सा ;नि - ग |
य ;का ऽ पि |
० ..... इत्यादि स्थायी के अनुसार

राग नायकीकान्हडा-तराना-त्रिताल(मध्यलय)

स्थायी : ओदानि दानि तदीम् तदीम् तदीम्
दीम् तदीम् दिर दिर दिर दिर तार्दीनि दीम् |

अंतराः ना दिर दिर दीम् तदीम् तदरे तदरे दानि
द्रियानारे तनन दिर तनन दिर तनन ॥

स्थायी

प
नि
ओ

ध म म म प ध नि़
नि प प म | प म - , प | ग म , री प | - , निनि म प
दा नि दा नि | त दी म् , त | दी म् , त दी | म् , दीऽ ऽम्त
३ × २ ०

प प ध म सा
सां - - , नि | नि पम प , ग | म री - सा | री सा - ; नि
दी ऽ म् , दिर | दिर दिर दिर , ता | ऽ र्दी ऽ नि | दी म् ऽ ; ओ
३ × २ ०

अंतरा

नि सां
ना

सां सां नि प सां प
सां सां नि सां | नि सां - , प | नि प , नि सां | रीं रीं सां , निनि
दिर दिर दी म | त दी म् , त | द रे , त द | रे दा नि , द्रिऽ
३ × २ ०

म म म ‍ ‍ नि प नि प प ‍ ‍ म ग ‍ ‍ ‍ ‍ सा

पप ग ग म | प नि प, सां | नि प ग, म | री री सा; नि
याऽ ना ऽ रे | त न न, दिर | त न न, दिर | त न न; ओ
३ | × | २ | ०

ध
नि प प म |
दा नि दा नि | ----> इत्यादि स्थायी के अनुसार
३

राग देवसाख–त्रिताल (मध्यलय)

स्थायी : ननंदिया मोरी जागे
पिया को मिलन अब कैसे जाऊँ।

अंतरा : ये तो पायल बाजे झनन झनन
जिया डरपावे अत हुलसावे
कौन उपाव छुपाऊँ॥

स्थायी

सा
री
न

री ‍ ‍ ‍ ‍ ‍ ‍ नि ‍ ‍ म

नि सा साम गप | मनि पनि म प | ग म री सा | री – सा –
न ऽ न्दिऽ ऽऽ | ऽऽ ऽऽ या ऽ | ऽ ऽ मो री | जा ऽ गे ऽ
२ | ० | ३ | ×

सा ‍ ग ‍ ‍ सा ‍ ‍ प ‍ प सा ‍ ‍ म ‍ ‍ सा

नि सा मम रीसा | निसा रीसा नि प | मप निसा रीम पनि | ग म रीसा; री
पि या केऽ मिऽ | लऽ नऽ अ ब | कैंऽ सेऽ ऽऽ ऽऽ | जा ऽ ऊँऽ; न
२ | ० | ३ | ×

रींरीं सांनि पमरीसा	नि़सा री म प	सां सां, सां सां	सां, सां सां सां
येऽ तोऽ ऽऽ ऽऽ	ऽऽ पा य ल	बा जे, झ न	न, झ न न
०	३	×	२
ग॒ं ग॒ं ग॒ं ग॒ं	ग॒ं ग॒ं ग॒ं मं	ग॒ ग॒ ग॒ म	री - सा -
जि या ड र	पा ऽ वे ऽ	अ त हु ल	सा ऽ वे ऽ
०	३	×	२
सा रीं सां रीं	नि सां निप, निनि	पमरीसा नि़सा; री	नि़ सा साम ग॒प
को ऽ न उ	पा ऽ वऽ, छुऽ	पाऽ ऊँऽ ऽऽ; न	न ऽन्दिऽ ऽऽ
०	३	×	२
मनि पनि म प			
ऽऽ ऽऽ या ऽ	..... इत्यादि स्थायी के अनुसार		
०			

राग काफी कान्हडा

यह राग 'काफी' एवम् 'कान्हड़ा' के संयोग से उत्पन्न होता है। कान्हड़े के अंग वाचक 'नि़प' संगति, अवरोह में गंधार का वक्रत्व एवम् गंधार पर आन्दोलन, ये सब इसमें आते हैं। पंचम वादी एवम् षड्ज संवादी स्वर हैं। गाने का समय रात्रि का दूसरा प्रहर है।

उठाव

सा, नि़सा, रेरे ग॒, म, रे रे, नि़धप, धपमपध, ग॒, म, रे, सा; ममप, मपसां, नि़ध–प, मपध, ग॒म, रे, सा।

चलन

सा, रे रे, ग॒, म, रे रे, नि़ध–प, मप, ग॒म, ग॒मप, मपध, ग॒, रेग॒म, रेसा, नि़सारेसा, नि़धनि़प, मप नि़, सा, रेग॒, म, ग॒मप, ग॒म, ग॒रेग॒, रेसारे, सानि़, सा।

सा,रेग, गमप, गम,निधप,सां, निप, मप ग,रे, रेगम, गमप, गम,रे,सा|
म,प ग,रे,प, गमपधनि ध,प, गरे ,मप, निधप, मपनिप,सां,निप,
म,पधनिसां, नि प, मपधनि ध,प, मपनिप, गम ,रें रे,सा|
मम, पध नि,सां, निसां,मपनिसां,रेंगं,मं,रेंसां,रेंसां,निसांरेंमं,रेंसां,
नि,प, मपसां, नि,प, गमनिप, सा,रेग,मनिधप,धपमप, गम,रे,सा|

राग काफी कान्हड़ा–त्रिताल(मध्यलय)

स्थायी : साँवरो चितचोर ठाड़ो जमुना तीर
मोर मुकुट और पीताम्बर
मकराकृत कुण्डल कानन अत सोहे |

अंतरा : तन मन धन वारूँ वाकी सोहनी सूरत पे
लागी लगन अत मन मोहे ||

स्थायी

री
साँ

नि सा ग म	नि ध प,नि	म प ,ध प	गम री सा,म
व रो चि त	चो ऽ र ,ठा	ऽ ड़ो ,ज मु	नाऽ ती र ,मो
३	×	२	०
प सां – नि	ध प,म प	ग म री –	सा सा,नि सा
ऽ र ऽ मु	कु ट,औ र	पी ऽ ता ऽ	म्ब र ,म क
३	×	२	०
री म प नि	सां रीं,गं मं	रीं सां,म प	ग मरीसा;री
रा कृ त कु	ण्ड ल,का ऽ	न न ,अ त	सो ऽ हेऽ;साँ
३	×	२	०

अंतरा

प
म
त

ध सां नि सां नि नि
म प - ध | नि - सां - | सां - नि सां | सां - - ,सां
न म ऽ न | ध ऽ ऽ ऽ | न ऽ वा ऽ | रूँ ऽ ऽ ,वा
३ | × | २ | ०

प म नि सा
रीं सां - ,नि | ध म - ,प | ग म री सा | री सा - ,नि
ऽ की ऽ ,सो | ह नी ऽ ,सू | र ऽ त ऽ | पे ऽ ऽ ,ला
३ | × | २ | ०

सा म म प म सा
सा री - री | ग - म - | नि धप म प | ग म रीसा ;री
ऽ गी ऽ ल | ग ऽ न ऽ | अ तऽ म न | मो ऽ हेऽ ;साँ
३ | × | २ | ०

री म
नि सा ग म |
व रो चि त | ----- इत्यादि स्थायी के अनुसार
३

राग काफीकान्हडा-एकताल (विलंबित)

स्थायी: बालम तोरे छलबल सों मैंतो अत बेबस भई

नित तुम्हरे यही अनोखे ढंग |

अंतरा: हमसे तो मीठी मीठी बतियाँ करत

औरन तें साचि बतावत पीत के उमंग ||

स्थायी

सा री म म प म ग म प
,री निसा,री | गम रीसा,री | निध प | धधपमपध गरी | रीगम,गम प,मपधप
,बा लम,तो | रेऽ छऽ,ल | बऽ ल | सोंऽऽऽऽऽ मैंऽ | तोऽऽ,अऽ ऽ,तऽऽऽ
३ | ४ | × | ० | २

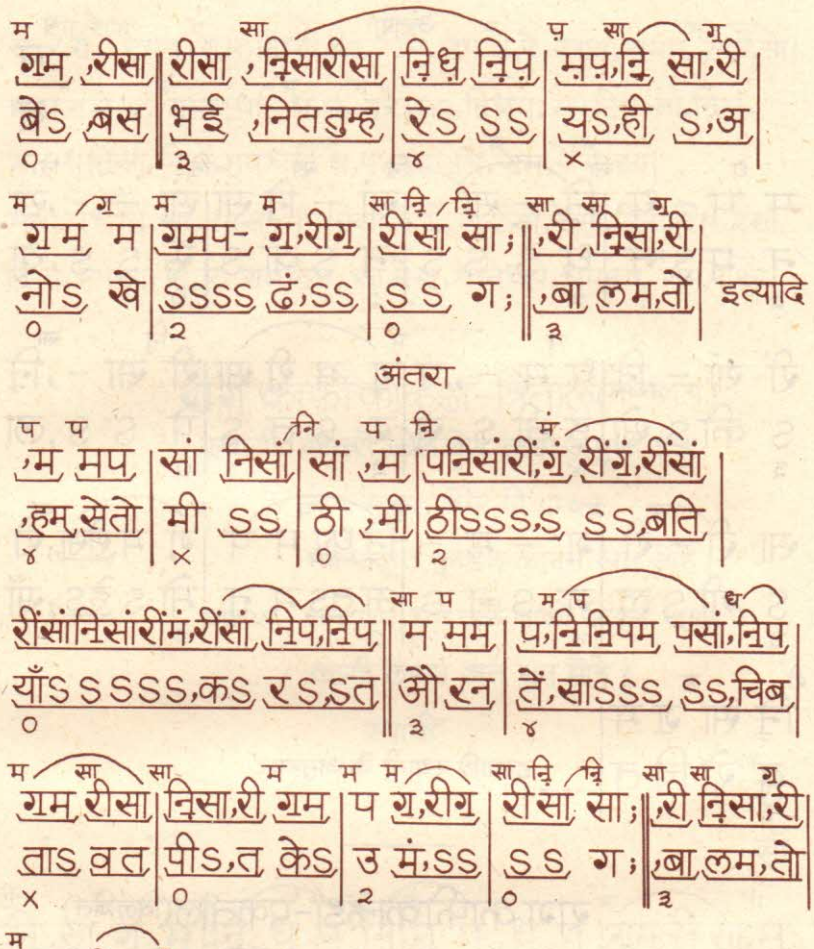

म	सा		प़ सा ग	
गम ,रीसा	रीसा ,नि़सारीसा	नि़ध़ नि़प़	म़प़,नि़ सा,री	
बेऽ ,बस	भई ,नितत्तुम्ह	रेऽ ऽऽ	यऽ,ही ऽ,अ	
०	३	४	×	

म ग	म म	सा नि़ नि़	सा सा ग	
गम म	गमप- ग,रीग	रीसा सा;	,री नि़सा,री	
नोऽ खे	ऽऽऽऽ ढं,ऽऽ	ऽऽ ग;	,बा लम,तो	इत्यादि
०	२	०	३	

अंतरा

प प	नि	प नि	मं
,म मप	सां निसां	सां ,म	पनिसांरीं,गं रींगं,रींसां
,हम सेतो	मी ऽऽ	ठी ,मी	ठीऽऽऽ,ऽ ऽऽ,बति
४	×	०	२

	सा प	म प ध
रींसांनिसांरींमं,रींसां निप,निप	म मम	प,निनिपम पसां,निप
याँऽ ऽऽऽऽ,कऽ रऽ,ऽत	औ रन	तें,साऽऽऽ ऽऽ,चिब
०	३	४

म सा	सा म	म म	सा नि़ नि़	सा सा ग
गम रीसा	नि़सा,री गम	प ग,रीग	रीसा सा;	,री नि़सा,री
ताऽ वत	पीऽ,त केऽ	उ मं,ऽऽ	ऽऽ ग;	,बा लम,तो
×	०	२	०	३

म	
गम रीसा,री	
रेऽ छऽ,ल	----- इत्यादि स्थायी के अनुसार
४	

राग शहाना–झूमरा (विलंबित)

स्थायी : नैया परी मझधार मोरी पुरानी आज
तुम हो खिवैया देहो लगाये पार |

अंतरा : जग के हो वाली नाथ निधान
शरन आयो है 'सुजनवा' लाचारो द्वारे तिहारे ||

स्थायी

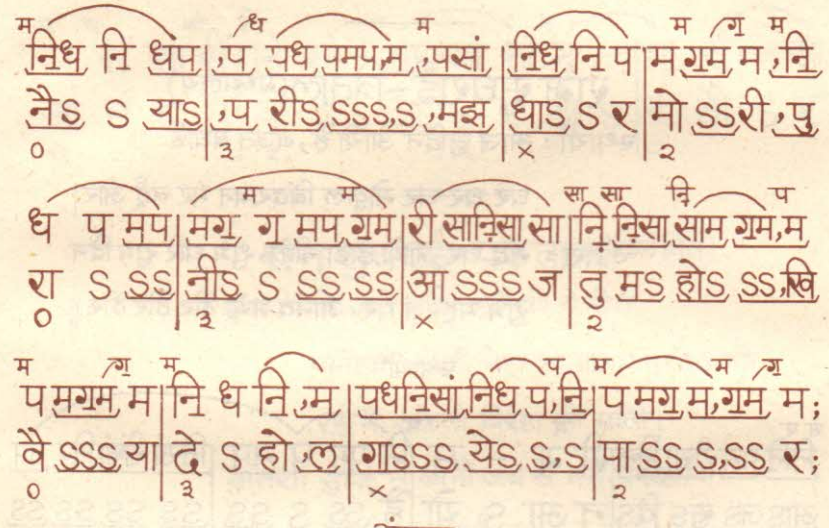

अंतरा

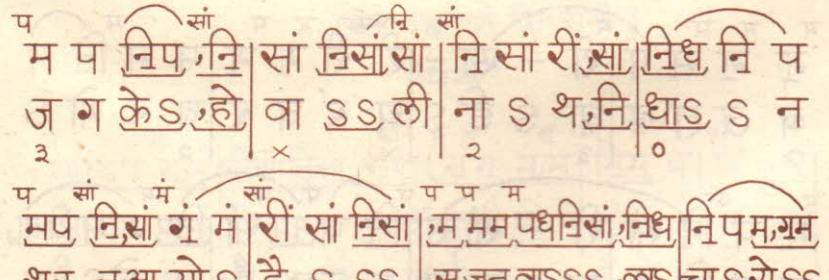

नि़ म ग ग मप म ग
सारीनि़सा म – गम | म गम,म | धधपम प,मग म गम,म, |
द्वाऽऽऽ ऽ ऽ ऽऽ | रे ऽऽ,ति | हाऽऽऽ ऽ,ऽऽ ऽ ऽऽ,रे, |
३ × २

म ध नि
निध नि धप | ,प पध पमप,म ,पसां |
नैऽ ऽ याऽ | ,प रीऽ ऽऽऽ,ऽ ,मझ | ..... इत्यादि स्थायी के अनुसार
० ३

राग सुघराई–त्रिताल(मध्यलय)

स्थायी : आज सुदिन आयो है, बजत बधाई
घर घर घर गोकुल बिंदराबन भर चहूँ ओर।
अंतरा : नंद घर जायो ढोटा नीको, शुभ घरि शुभ दिन
शुभ महूरत पर, आनंद भयो ठौर ठौर॥

स्थायी

मप म म
निनि पमरीसा नि़सा री | ग – म | नि पम प मप | निसां रींसां निप मप
आऽजऽ सुऽ दिऽ | न आ ऽ यो | है ऽऽ ऽ ऽऽ | ऽऽ ऽऽ ऽऽ ऽऽ
० ३ × २

म म प म सा म म म
ग ग म प | री – सा – | री री ग ग | म म नि प
ब ज त ब | धा ऽ ई ऽ | घ र घ र | घ र गो ऽ
० ३ × २

प सां प प प म
म प नि सां | रीं – सां सां | नि पमप सां | निप ग म रीसा,
कु ल बिं द | रा ऽ ब न | भ रचऽ हूँ | ऽऽ ओ ऽ रऽ,
० ३ × २

प प सां सां नि
म म प प | नि प नि - | सां - सां - | नि सां सां -
नं द घ र | जा ऽ यो ऽ | ढो ऽ टा ऽ | नी ऽ को ऽ
० | ३ | × | २

मं मं प सां
गं गंमं रीं सां, | रीं रीं सां सां, | म प नि सां | रीं सां नि प
शु भऽ घ रि, | शु भ दि न, | शु भ म ह | र त प र
० | ३ | × | २

म प सां रीं प म
प रीं सां रीं | नि सां - मप | सां सां, ग - | म, री - सा;
आ नं द भ | यो ऽ ऽ, ठौऽ | ऽ र, ठौ ऽ | र, ठौ ऽ र;
० | ३ | × | २

राग सुघराई–एकताल (विलंबित)

स्थायी: को जाने सखि कहाँ की ये रीत

अनोखी नवेली नेहा की, बालम परदेस गये

रही मैं अकेली बिरहा की माती ।

अंतरा: सुधहू न लीनी जब से गये परदेस

पाती ना पठाई, इकहू न माने

जिया अकुलावे दिन राती ॥

स्थायी

प म सा म म ग म म
मपधप गम | रीसानिसा, रीरी | गग म, म | निम प | प , प |
कोऽऽऽ जाऽ | नेऽऽऽ , सखि | कहाँ की, ये | रीऽ ऽ | त , अ |
० | ३ | ४ | × | ० |

प म म मं म मं नि
निप, मपनिसांरींसां निप || ग गग | गमप- री, सा | री सा |
नोऽ, ऽऽऽऽऽऽ खीऽ || न वेऽ | ऽऽऽऽ ली, ने | हा की |
२ || ० | ३ | ४ |

,मममम ,पप | मपनिसांरीं- सां,रीं | निसां पनि || मप ,मम |
,बालम ,पर | देSSSSS स,ग | येS SS || SS ,रही |
× | 0 | 2 || 0 |

म,म प | निनिपम,रीमपनि ,मप | ग ग | म ,रीसा | री सा;
मैं,अ के | लीSSS,SSSS ,बिर | हा S | S ,कीS | मा ती;
3 | 4 | × | 0 | 2

निप,मपधप गम | रीसानिसा
कोS,SSSS जाS | नेSSS ..... इत्यादि
0 | 3

अंतरा

,मप निप,नि | सां सां | निसां रींसां | निसां प | नि प | मप निसां
,सुध हS,न | ली नी | जब्से गये | पर दे | S स | पाS तीS
4 | × | 0 | 2 | 0 | 3

रीं ,रीं | गं मं | रीं सां | परीं सां,रीं | निसां पनि | प ,म |
ना ,प | ठा S | ई S | इक हु,न | माS नेS | S ,जि |
4 | × | 0 | 2 | 0 | 3

म पप | मपनिसांरींसांनिप मपनिपमरीसारी | ग ,मप | री सा;
या अकु | लाSSSSSSSS वेSSSSSSS | S ,दिन | रा ती;
4 | × | 0 | 2

मपधप गम | रीसानिसा
कोSSS जाS | नेSSS ..... इत्यादि स्थायी के अनुसार
0 | 3

राग कौंसीकान्हडा(बागेश्री अंग)–एकताल(मध्यलय)

स्थायी : सुर श्रुति सुर-संगत,वादी विवादी अनुवादी
समवादी बखानत,राग को विस्तार करके
गुनि गावत तान|

अंतरा : राग ताल प्रबन्ध पदार्थ तीन लिये प्रकट भयो
परखायो, अत विचित्र नाद भेद
सुन सुनरे 'सुजान'‖

स्थायी

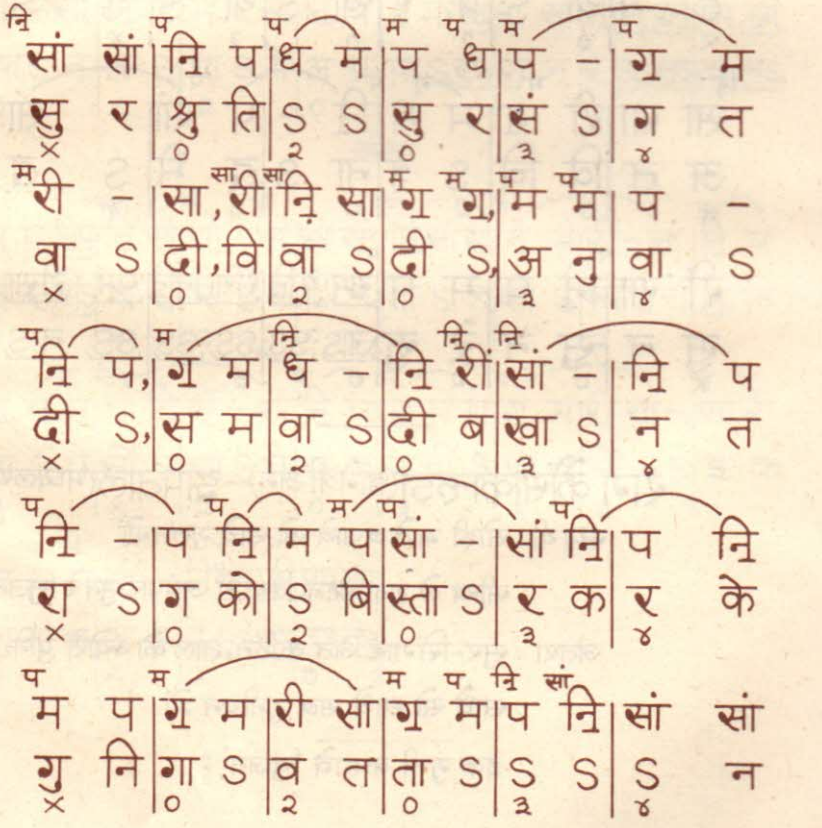

अंतरा

(प)म	-	प	सां	-	सां	-	(सां)नि	सां	-	सां	,(नि)सां
रा	S	ग	ता	S	ल	S	प्र	ब	S	ध	,प
×		०		२		०		३		४	
(मं)गं	मं	रीं	सां	रीं	-	(सां)नि	सां	नि	प	(प)म	ध
दा	S	र	थ	ती	S	न	लि	ये	S	प्र	क
×		०		२		०		३		४	
नि	रीं	सां	-	(प)म	प	(म)ग	म	री	(सा)सा	नि़	सा
ट	भ	यो	S	प	र	खा	S	यो	S	S	S
×		०		२		०		३		४	
(नि़)सा	सा	री	ग	(म)म	(ग)म	(प)नि	-	प	(प)सां	-	सां
अ	त	वि	चि	S	त्र	ना	S	द	भे	S	द
×		०		२		०		३		४	
रीं	सां	(प)नि	प	म	प	(म)गम	धनि	रींसां	निनि	पम	रीसा
सु	न	सु	न	रे	सु	जाS	SS	SS	SS	SS	नS
×		०		२		०		३		४	

राग कौंसीकान्हडा(बागेश्री अंग)—झपताल(मध्यलय)

स्थायी : सोही गावे बजावे जो साचे गुरुन सों

सीख ले गुन-ग्यान, विधा ये अप्रंपार सुन रे 'सुजन' ।

अंतरा : सुर-सिंगार अत कठिन, ताल को ब्योरो पुनि

साधे सो साधे सब गुनीयन मों

इक गुनी कहावे 'सुजन' ॥

स्थायी

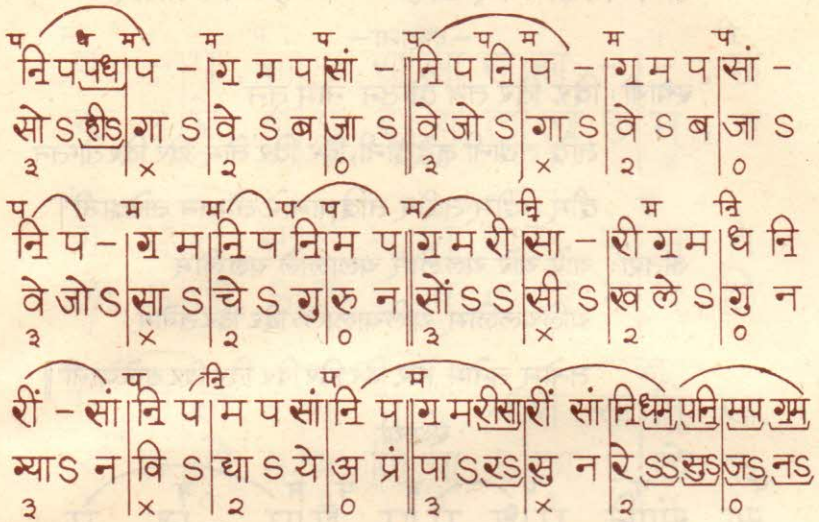

प ध म म प प प म म प
नि प पध | प - | ग म प | सां - || नि प नि | प - | ग म प | सां -
सो ऽ हीऽ | गा ऽ | वे ऽ ब | जा ऽ || वे जो ऽ | गा ऽ | वे ऽ ब | जा ऽ
३ | × | २ | ० || ३ | × | २ | ०

प म म प प म नि म नि
नि प - | ग म | नि प नि | म प || ग म री | सा - | री ग म | ध नि
वे जो ऽ | सा ऽ | चे ऽ गु | रु न || सों ऽ ऽ | सी ऽ | ख ले ऽ | गु न
३ | × | २ | ० || ३ | × | २ | ०

प नि प म
रीं - सां | नि प | म प सां | नि प || ग म रीसा | रीं सां | निधम पनि | मप गम
र्या ऽ न | वि ऽ | धा ऽ ये | अ प्रं || पा ऽ रऽ | सु न | रे ऽऽ सुऽ | जऽ नऽ
३ | × | २ | ० || ३ | × | २ | ०

अंतरा

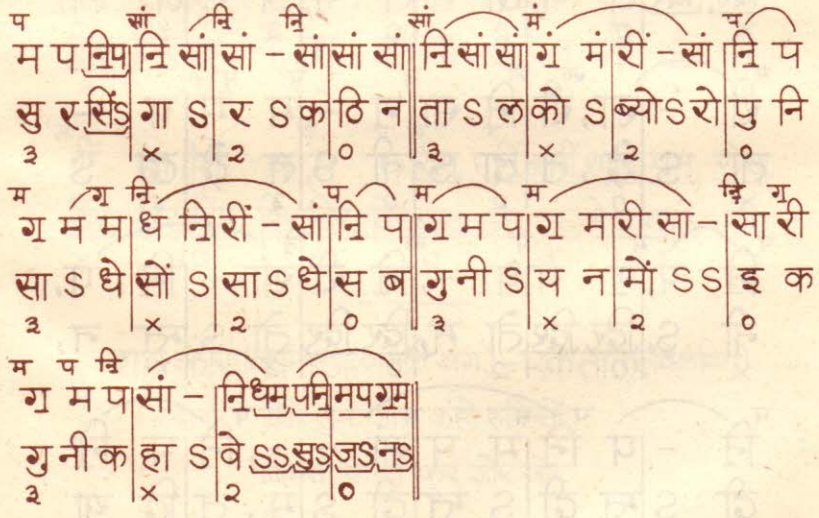

प सां नि नि सां मं प
म प निप | नि सां | सां - सां | सां सां || नि सां सां | गं मं | रीं - सां | नि प
सु र सिंऽ | गा ऽ | र ऽ क | ठि न || ता ऽ ल | को ऽ | ब्यो ऽ रो | पु नि
३ | × | २ | ० || ३ | × | २ | ०

म ग नि प म म नि ग
ग म म | ध नि | रीं - सां | नि प || ग म प | ग म | री सा - | सा री
सा ऽ धे | सों ऽ | सा ऽ धे | स ब || गु नी ऽ | य न | मों ऽ ऽ | इ क
३ | × | २ | ० || ३ | × | २ | ०

म प नि
ग म प | सां - | निधम पनि | मप गम ||
गु नी क | हा ऽ | वे ऽऽ सुऽ | जऽ नऽ ||
३ | × | २ | ० ||

राग कोंसीकान्हडा(बागेश्री अंग)–एकताल(मध्यलय)

–तराना–

स्थायी : दिर दिर तन दीम्तन नोम् तन

ताद्रे तदानी तद्रेदानी, दिर दिर तोम् दिर दिर तोम्तन

दीम् तदीम् तदीम् तदियानारे तोम्तन तारेदानी |

अंतरा : यारे यारे यललोम् यलालाले यललोम्

यलियललोम् यलियालाले, दिर दिर तनोम्

तनोम् तनोम् दिर दिर दिर दिर दिर दिर तारेदानी ‖

स्थायी

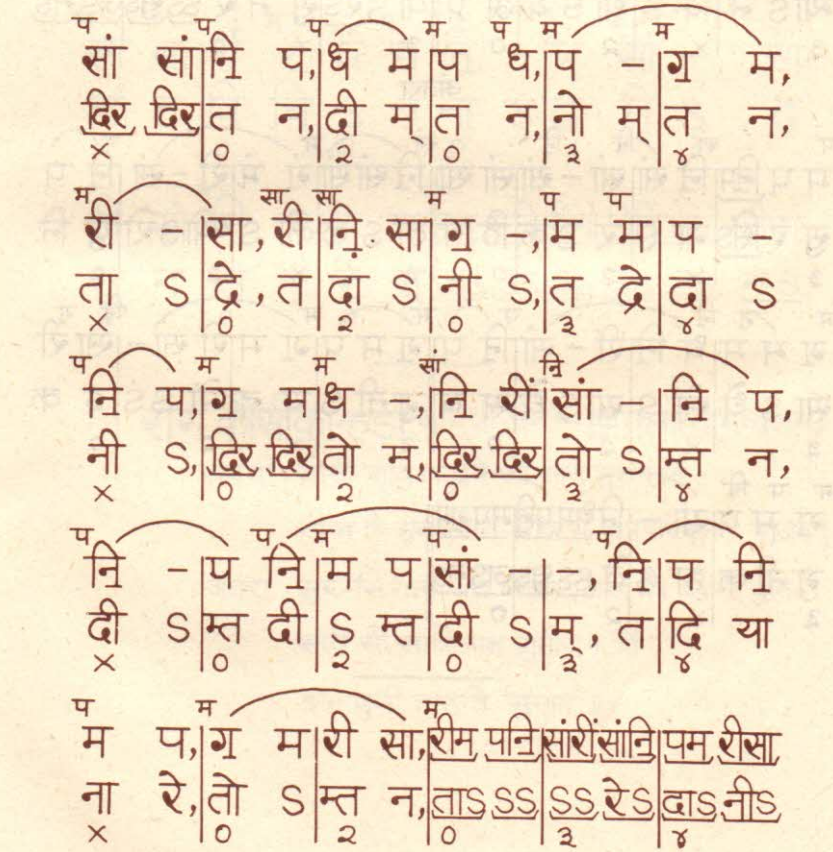

अंतरा

म	प	नि			नि
प –	प ,सां	– सां,	सां सां	सां –	–, सां
या ऽ	रे , या	ऽ रे,	य ल	लो ऽ	म् , य
×	०	२	०	३	४

मं		सां		ग	
गं मं	रीं सां	रीं –,	नि सां	नि प,	म ध
ला ऽ	ला ऽ	ले ऽ,	य ल	लो म्,	य लि
×	०	२	०	३	४

सां		प	म		सा
नि रीं	सां –,	म प	ग म	री सा	नि सा,
य ल	लो म्,	य लि	या ऽ	ला ऽ	ले ऽ,
×	०	२	०	३	४

नि	म	ग	प	प	
सा सा	री ग	म ,म	नि –,	प सां	– –
दिर दिर	त नो	म् , त	नो ऽ,	म्त नो	ऽ म्
×	०	२	०	३	४

सां		प	म		
रीं सां	नि प	म प	रीम पनि	सांरीं सांनि	पम रीसा
दिर दिर	दिर दिर	दिर दिर	ताऽ ऽऽ	ऽऽ रेऽ	दाऽ नीऽ
×	०	२	०	३	४

राग कौंसीकान्हडा (बागेश्री अंग) – एकताल (विलंबित)

स्थायी : उधो तुम जाय कहो हरि सों
बिनती करत कर जोर जोर
ब्रिज के सब नर नारी ।

अंतरा : उजट भयो गोकुल बिंदराबन
अत दुख पायो, तट जमुना निरस भयो
बिन गोवर्धन गिरधारी ॥

स्थायी

प प प म म प म म म प म म म

निप — | ध,मप —,पध | प,गग —,मप | प,गग म,रीसा |

उधो S | S,SS S,तुम | जा,SS S,यक | हो,SS S,हरि |

३ | ४ | × | ०

सा सा म नि नि रीं नि नि प

री सा,निसा | निसा ग,म || धनि धनि,रींसां | सां निप,प | नि प |

सों S,SS | बिन ति,क || रत SS,कर | जो SS,र | जो र |

२ | ० || ३ | ४ | ×

नि म प प प म म प म सा

म,पसां —,निप | म,पनि प ग | मपगम रीसा; ||

ब्रिजके S,सब | न,रS नाS | SSSS Sरी; ||

० | २ | ०

अंतरा

प प सां नि सां रीं नि प ग सां

मप सां,नि | सां ,निसां | सां निसां,रींसां | सां प | नि प || मध ,निरीं |

उज ट,भ | यो ,SS | गो कुल,बिंद | रा S | ब न || अत ,दुख |

४ | × | ० | २ | ० || ३

प प प नि म म म म सा

सां प | नि प | ,मम ,पसां | सां गग | ग,गम ,रीसा || री सा,निसा |

पा S | यो S | ,तट ,जमु | ना SS | नि,रS ,सभ || यो S,SS |

४ | × | ० | २ | ० || ३

सा म प प प म म म प म सा

निसा ,गम | निप सांसां | निसां ,नि,पनि | प गग | मपगम रीसा ||

बिन ,गोS | वर धन | SS ,गि,रS | धा SS | SSSS Sरी ||

४ | × | ० | २ | ०

राग जयजयवंती कान्हडा

जयजयवंती में यथायोग्य स्थान पर कान्हडे का लाग देकर जयजयवंती कान्हडा उत्पन्न होता है | इस राग-स्वरूप को कुछ गुणीजन जयन्त-कान्हडा के नाम से सम्बोधते हैं | ऐसे मिश्र रागों में भिन्न भिन्न राग-स्वरूप उत्पन्न होना, और उनके अनुसार भिन्न भिन्न आविष्कार एक ही राग के होना स्वाभाविक ही है | प्रस्तुत राग में जयजयवंती का अंग प्रबल रखकर कान्हडा अंग गौण रखना अथवा इसके उलटा, कान्हडे का अंग प्रधान और जयजयवंती गौण रखना; इन दोनों प्रकारों से इस राग का मंडन हो सकता है | इस पुस्तक में दिये हुवे गीतों में मुख्यतः जयजयवंती को प्रमुख रखकर उसमें कान्हडा अंग बीच बीच में प्रविष्ट किया गया है | इस राग का वादी स्वर ऋषभ तथा संवादी पंचम माना गया है | गान समय रात्रि का दूसरा प्रहर माना जाता है | कान्हडा अंग 'मगमरेसा' तथा 'निप' इन स्वर-संगतियों से प्रविष्ट किया गया है |

रागवाचक स्वर समुदाय

रेप, मगमरेसा, सांनिसारेगम, रेसा (सा), धनिंरें |

स्वर-विस्तार

सा, निसारेगम, रेसा, सा(सा), धनिंरे, रेगं, गमप, मगम, निप, मपधग, म, गमप, मगम, सांरे, सा, रे, निसा, धनिंरे |

सा, निसा, धनिरे, गरे, पमग, मगरे, गरेगमप, मगमरे, निप, धग, म, निसारेगमप, म, प, मग, म, सांरे, सा(सा), धनिंरे |

प, मप, गमप, मगम, निप, मपनि, मग, म, धनिरेगमप, धग, म, मपनिमप, मगम, सांरे, सा |

मपसां, निसां, निधनिसां, धनिरें, गंरें, सां, निसांरें, निध, प, पम, निप निम प, मग, म, रेगमपध, ग, मप, मगम, सांरे, सा |

सां, मपसां, निसांरें, रेंगं, गंमं, रेंगंरेंसां, धनिरेंगं, मंपं गंमं, रेंसां, रेंसां, निप, मपनिधप, धग, म, मपसां, निधपमग, मप गम, रे, सा|

ममरेसानिसा, रेगमप गमरेसा, निसारेग मपनिमप गमप गमरेसा, निसारेग मपनिसां रेंनिधप निपनिमप गमरेसा, निसारेगमप निसांरेंगंरेंसां, निसांमंमंरेंसां रेंनिसांनिप निमपगम, रेगमपधमप गमरेसा|

राग जयजयवंती कान्हडा – त्रिताल (मध्यलय)

स्थायी : काछे पीताम्बर माथे मुकुट सोहे
गरे बैजंती माला जाके|

अंतरा : ऐसो सुंदर नटनागर कान्हर
मुरली अधर धरि अत मन मोहे
ठाड़ो नीर तीर जमुना के ||

स्थायी

,री सा री	नि (सा) ध नि	री गरी गम, प	ग म री सा
,का छे पी	ता ऽ म्ब र	मा ऽऽ थेऽ, मु	कु ट सो हे
	३	×	२

–, री ग म	प नि ध प	–, नि प नि	मप, ग म री
ऽ, ग रे बै	ज ऽ न्ती ऽ	ऽ, मा ऽ ला	ऽऽ, जा ऽ के
०	३	×	२

सो, री सा री	नि (सा) ध नि	
ऽ, का छे पी	ता ऽ म्ब र	..... इत्यादि
०	३	

अंतरा

,म म प	सां नि,सां सां	रीं –गं रीं सां	रीं नि सां सां
,ऐ सो सु	न्द र, न ट	ना SS ग र	का S न्ह र
	३	×	२
रीं सां रीं नि	सां ध नि प	म म पनिमप	ग म म –
मु र ली अ	ध र ध रि	अ त मS नS	मो S हे S
०	३	×	२
–,री गरी, ग	म – प,पनि	सांरीं नि,ध प	मप निप,गमरीसा
S,ठा SS ड़ो	नी S र,तीS	SS र,ज मु	नाS SS,केS SS
०	३	×	२
निसा;री सा री	नि(सा) ध नि	----- इत्यादि स्थायी के अनुसार	
SS;का छे पी	ता Sम्ब र		
०	३		

राग जयजयवंती कान्हड़ा–तिलवाड़ा (विलंबित)

स्थायी: सुन री आज सखी मन की बतिया

आन बान परी जिया में मोरे

देखत मोहनी मूरत उस नन्दलाल ब्रिजबाल की।

अंतरा: कह न पावे कोऊ 'सुजनवा' की रस रंग भरी बातें

याद आवत निस दिना, अब तो लगी लगन

ग्यान ध्यान ब्रिज गोपाल की॥

स्थायी

,रीसा ,धनि | री -री गग ,मप | ग ग म ,रीसा | री -री निसा
,सुन ,रीऽ | आ ऽऽ ऽऽ ,जस | खी ऽ ऽ ,मन | की ऽऽ ऽ ऽ
× 2 0

रीसा ,निसा ,निसारीसा निप | म प निप ,नि | सासा रीसा
बति ,ऽऽ ,ऽऽऽऽऽ याऽ | आ ऽ नऽ ,बा | ऽन परी
3 × 2

,निसा री,गग | म प प ,मप | सां नि ध प | मपध गमप
,जिया में,ऽऽ | मो ऽ रे ,ऽऽ | दे ऽ खत | मोहनी मूरत
0 3 ×

ग,गम ,रीसा | निसारीगमप,निनि प,पमगम म ,गम |
उ,सऽ ,नंद | लाऽऽऽऽऽ,ऽऽ ऽ,ऽऽऽऽ ल ,ऽऽ |
2

मप गम -री सा; || निसारीग,म -,गम -,रीसा ,धनि |
ब्रिज,बाऽ ऽल की; || एऽऽऽ,ऽ ऽ,ऽऽऽ,सुन ,रीऽ | ...इत्यादि
0 3

अंतरा

,मम,प सां,निध निसां ,सांसां | ,नि सांसां गंमं रींसां | निनि सांसां
,कह,न पा,ऽऽ वेऽ ,कोऊ | ,सु जन वाऽकीऽ | रस रंग
3 × 2

रींनि धप | मपनिमप गम गमप-,गम रीसा | निसा,सा
भरी ऽऽ | बाऽऽऽऽ तेंऽ याऽऽऽ,दआ वत | निस,दि
0 3

प म सां म
रीगम–,मप,प निसांरीं– | निध प गम,रीसा |
नाSSS,अब्तो,ल गीSSS | लग न म्याS,नS |
×

सा प म म ग म म म प म
निसारीगमप,निनि प,पमगम –म,गम | गग मप गमरीसा
ध्याSSSSS,SS S,SSSS Sन,SS | ब्रिज गोS पाSलकी
२ ०

सा ग नि
निसारीगम– गम ;रीसा धनि |
पSSSSS SS ;सुन रीS |...... इत्यादि स्थायी के अनुसार
३

राग जयजयवंती कान्हडा–एकताल (विलंबित)

स्थायी : नेक न जाने तू नारी अनारी

नेहा लगायो वासो जो हरजैया ग्वार गुसैया ।

अंतरा : तू तो बैठी गँवाये सुख चैन

नहीं पूछत बात एकहू, वोतो ग्वार गुसैया ॥

स्थायी

नि म नि सा ग प
धनिसारी,गम ,रीसा | सा(सा) ,धनि | री,गरी ग,मप |
नेSSS,SS ,कने | जा S ,नेतू | ना,SS S,रीअ |
३ ४ ×

म सा सा री ध प म म
म,गम रीसा | निसारीगमप,मग गम,पनि | ध,पध(म) गगम
ना,SS रीS | नेSSSSS,SS SS,हाल | गा,SSयो SSS
० २ ०

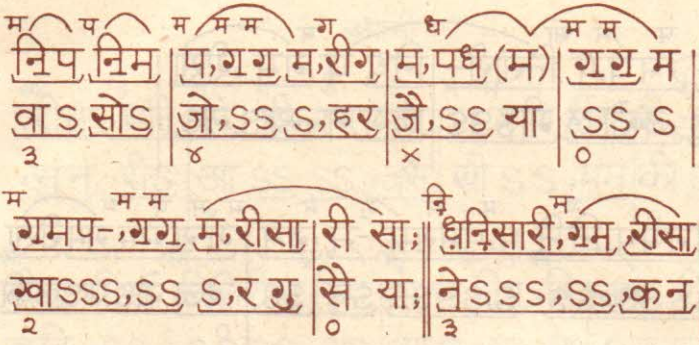

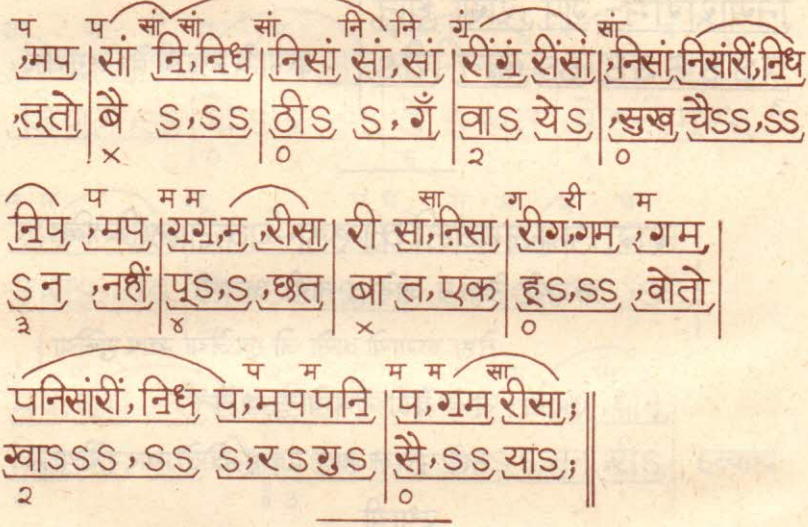

म प	म म म ग	ध	म म
निप निम	प,गग म,रीग	म,पध (म)	गग म
वाऽ सोऽ	जो,ऽऽ ऽ,हर	जै,ऽऽ या	ऽऽ ऽ
३	४	×	०

म म म		नि म	
गमप-,गग म,रीसा	री सा;	धनिसारी,गम ,रीसा	
खाऽऽऽ,ऽऽ ऽ,र गु	से या;	नेऽऽऽ,ऽऽ ,कन	इत्यादि
२	०	३	

अंतरा

प	प सां सां	सां नि नि	गं	सां
,मप	सां नि,निध	निसां सां,सां	रींगं रींसां	,निसां निसांरीं,निध
,तूतो	बै ऽ,ऽऽ	ठीऽ ऽ,गँ	वाऽ येऽ	,सुख चैऽऽ,ऽऽ
	×	०	२	०

प	म म	सा	ग री म
निप ,मप	गग,म ,रीसा	री सा,निसा	रीग,गम ,गम,
ऽन ,नहीं	पूऽ,ऽ ,छत	बा त,एक	हूऽ,ऽऽ ,वोतो
३	४	×	०

प म	म म सा
पनिसांरीं, निध प,मपपनि	प,गम रीसा;
खाऽऽऽ,ऽऽ ऽ,रऽगुऽ	सै,ऽऽ याऽ;
२	०

राग मीयाँमल्हार–लक्षणगीत–त्रिताल(मध्यलय)

स्थायी : सुनो 'सुजनवा' रागनी को, दोनों नी 'नि, निसां'
संगत सोहे अत सुखदायी, वादी संवादी समा
सजत कान्हर मलहरि संजोगिनी रंजनी रागनी को।

अंतरा : हरप्रिय के मेलन सों जनित नित आन्दोलित मृदु गांधार
चत्र गावे रिझावे सब लोगन को समझावे
बरखा रुत गामिनी मोहनी रागनी को ॥

स्थायी

म म
सुनो

री सा री ध़	नि़, प़ – प़	नि़ – – ध़	नि़ सा,म म
सु ज न वा	ऽ,राऽ ग	नी ऽ ऽ ऽ	कोऽ,सु नो
०	३	×	२
री सा री ध़	नि़, प़ – प़	नि़ – नि़ –	–, प – प
सु ज न वा	ऽ, रा ऽ ग	नी ऽ ऽ ऽ	ऽ, दो ऽ नो
०	३	×	२
नि – नि –	–, नि नि नि	सां – – –	–, रीं नि सां
नि ऽ ऽ ऽ	ऽ, नि ऽ नि	सा ऽ ऽ ऽ	ऽ, सं ग त
०	३	×	२
नि – प –,	म प ध नि	सां – – ग	म, री – सा
सो ऽ हे ऽ,	अ त सु ख	दा ऽ ऽ यी	ऽ, वा ऽ दी
०	३	×	२
–री, नि़ – प़	– नि़ नि़ नि़	सा – –, नि	म प, ग म
ऽऽ, सं ऽ वा	ऽ दी ऽ स	मा ऽ ऽ, स	ज त, का ऽ
०	३	×	२
री सा, नि़ सा	री म री, प	– नि नि नि	सां – –, नि़
न्ह र, म ल	ह री ऽ, सं	ऽ जो ऽ गि	नी ऽ ऽ, रं
०	३	×	२
नि़ नि़ सा –	–, प़ – प़	नि़ – – ध़	नि़ सा; म म
ऽ ज नी ऽ	ऽ, रा ऽ ग	नी ऽ ऽ ऽ	कोऽ; सु नो
०	३	×	२

अंतरा

सा ध नि प म नि़ | | सा सां | नि
नि नि प म | री, सा नि़ सा | सां – – नि | सां सां, सां सां
ह र प्रिय | के, मे ल न | सों ऽ ऽ ज | नि त, नि त
३ | × | २ | ०

सां नि | रीं | नि धनि प ध
ध नि ध सां | नि रीं नि सां, | ध नि म प | नि – सां सां
आ ऽ ऽ न्दो | ऽ ऽ लि त, | मृ दु गा ऽ | -धा ऽ ऽ र
३ | × | २ | ०

मं | | म | नि़
–, गं मं रीं | सां – – ग | म रीसारी – | – सा म री
ऽ, च ऽ त्र | गा ऽ ऽ वे | ऽ रिऽ झा ऽ | ऽ वे ऽ ऽ
३ | × | २ | ०

री म | सां नि | रीं | मं
प प प नि | ध नि नि सां | मं रीं, पं पं | गं मं रीं सां
स ब लो ऽ | ऽ ग न को | ऽ ऽ, स म | झा ऽ वे ऽ
३ | × | २ | ०

म प नि प | ध सां | सा | ध़ सा
री म प नि | – नि सां नि | सां – –, नि़ | – नि़ सा –
ब खा रु त | ऽ गा ऽ मि | नी ऽ ऽ, मो | ऽ ह नी ऽ
३ | × | २ | ०

म़ म़ प़ | | सा सा ग | सा री
–, प़ – प़ | नि़ – – ध़ | नि़ सा ; म म | री सा री ध़
ऽ, रा ऽ ग | नी ऽ ऽ ऽ | को ऽ ; सु नो | सु ज न वा
३ | × | २ | ०

ध़ म़ म़ प़ | ध़
नि़, प़ – प़ | नि़
ऽ, रा ऽ ग | नी ..... इत्यादि स्थायी के अनुसार
३ | ×

राग मीयाँ मल्हार-ध्रुवपद-चौताल

स्थायी : नाद वेद अप्रम्पार अत गम्भीर सागर
तामें एक तरनहार तानसेन गुन विस्तार |

अंतरा : राग रीत गीत नीत सुध बानी सुध मुद्रा
हरिदास तें पायो रिझायो अकबर ||

संचारी: विधा रतन गान विधा गान रतन राग रीत
ध्रुपद राग रीत रतन गाये तानसेन रतन ||

आभोग: सर नवाऊँ चरन पर नमो नमो बार बार
गुण निधान दीजो दान 'सुजन' को गुण अपार||

स्थायी

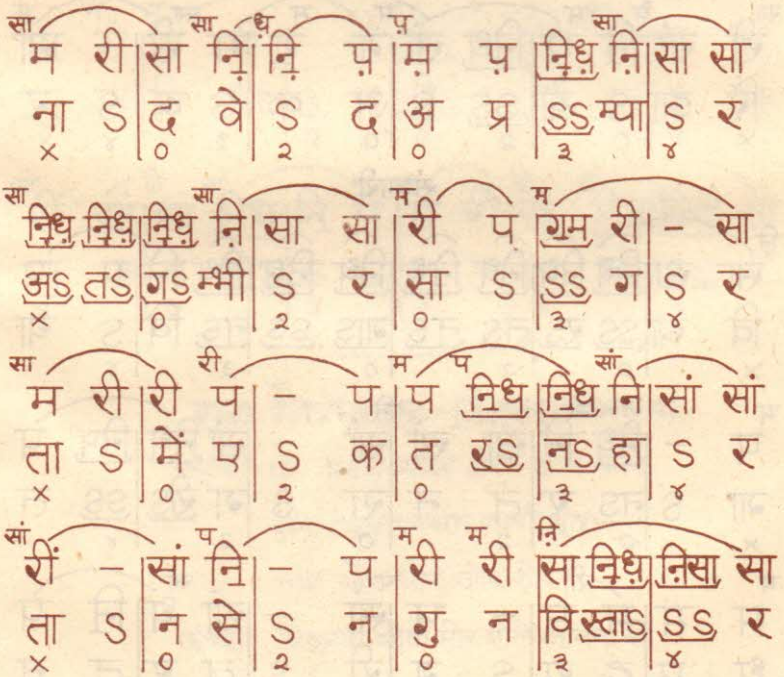

अंतरा

(म)प	-	प	(प)निध	निध	निध	(सां)नि	सां	सां	(नि)सां	-	सां
रा	ऽ	ग	रीऽ	ऽऽ	तऽ	गी	ऽ	त	नी	ऽ	त
×		0		2		0		3		४	
(सां)निध	निध	निध	(सां)नि	सां	सां	(सां)रीं	सां	-	(सां)ध	नि	प
सुऽ	धऽ	ऽऽ	बा	ऽ	नि	सु	ध	ऽ	मु	ऽ	द्रा
×		0		2		0		3		४	
(सा)म	(री)म	री	(री)प	-	प	(प)नि	मप	निध	(सां)नि	सां	सां
ह	रि	ऽ	दा	ऽ	स	तें	ऽऽ	ऽऽ	पा	ऽ	यो
×		0		2		0		3		४	
(सां)रीं	सां	(ध)नि	(म)प	निध	सां	(म)ग	(म)ग	म	(सा)री	-	सा
रि	झा	ऽ	यो	ऽऽ	ऽ	अ	क	ऽ	ब	ऽ	र
×		0		2		0		3		४	

संचारी

(ऩि)सा	सा	निध	निध	निध	निध	निध	निध	निध	नि	प	प
वि	द्या	ऽऽ	रऽ	तऽ	नऽ	गाऽ	ऽऽ	नऽ	वि	ऽ	द्या
×		0		2		0		3		४	
(म)प	-	निध	(सां)नि	सां	सां	(नि)सां	-	सां	निध	निप	प
गा	ऽ	नऽ	र	त	न	रा	ऽ	ग	रीऽ	ऽऽ	त
×		0		2		0		3		४	
(प)म	म	(री)म	प	-	प	(प)सां	-	सां	(सां)ध	नि	प
ध्रु	प	द	रा	ऽ	ग	री	ऽ	त	र	त	न
×		0		2		0		3		४	

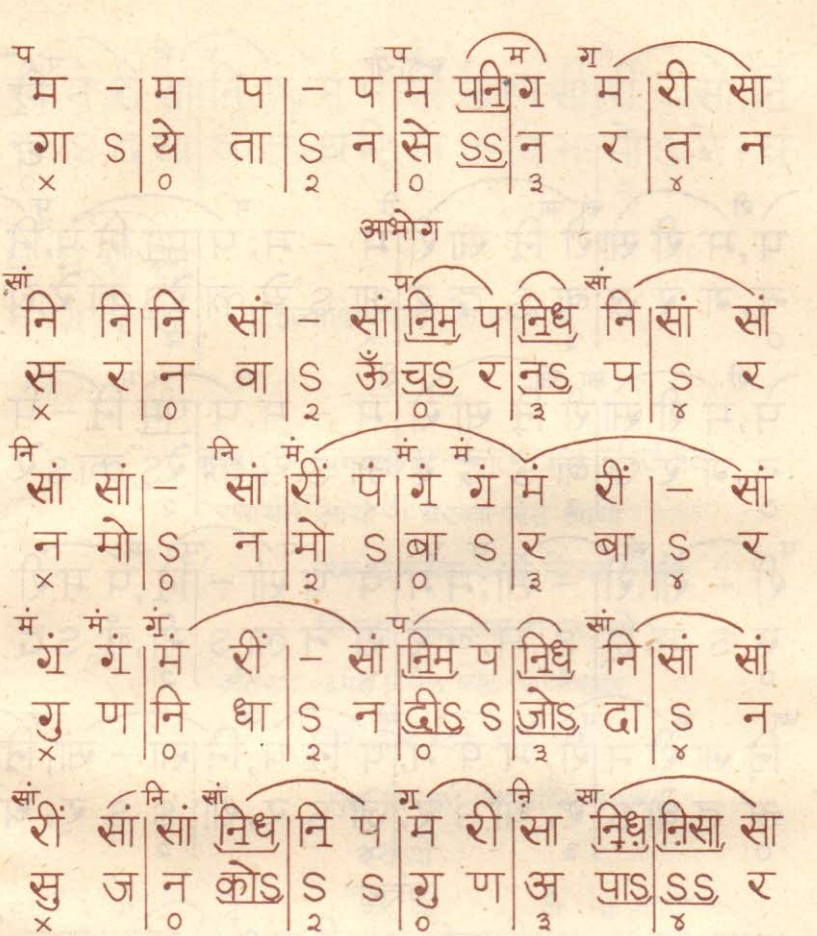

राग मेघमल्हार–त्रिताल(मध्यलय)

स्थायी: घन गरज बादर आये कारे कारे
रूम झूम बरसन लागी बूँद
अत घोर घोर ज़ोर शोर|

अंतरा: दादुरवा बोले मोर बोले आनन्द सों
पपीहा बोले मोरी अटरिया पीहू पीहू पीहू
परदेसी सजनवा, याद आवत घरि पल छिन मोरे‖

स्थायी

			नि
			ध
प,म री सा	री नि़ सा री	म - म,प	पम नि प,नि
न,ग र ज	बा ऽ द र	आ ऽ ये,का	रेऽ का रे,ध
0	३	×	२
प,म री सा	री नि़ सा री	म - म,प	पम नि - प
न,ग र ज	बा ऽ द र	आ ऽ ये,का	रेऽ का ऽ रे
0	३	×	२
रीं - सां,रीं	- सां,म म	प प सां -	नि,प म री
रू ऽ म,झू	ऽ म,ब र	स न ला ऽ	गी,बूँ ऽ द
0	३	×	२
नि़ सा री म	री, म प म,	प नि प,नि	सां - सां; नि
अ त घो ऽ	र, घो ऽ र,	ज़ो ऽ र,शो	ऽ ऽ र; ध
0	३	×	२

अंतरा

म म म प	प,नि प नि	सां - सां,सां	नि सां सां -
दा दुर्वी बो	ले, मो ऽ र	बो ऽ ले,आ	न न्द सों ऽ
0	३	×	२
प नि प,नि	सां सां,रीं -	सां,सां सां रीं	सां नि म प
प पी हा,बो	ऽ ले, मो ऽ	री,अ ट री	या ऽ ऽ ऽ
0	३	×	२
नि नि प म	री सा,नि़ सा	री म री,म	प प नि सां
पी ह पी ह	पी ह,प र	दे ऽ स,स	ज़ न वा ऽ
0	३	×	२

रीं मं रीं सां | नि प, म प | नि निसां सां | रीं – सां; निं

या ऽ द आ | व त, घरि | प ल छि न | मो ऽ रे ; घ

0 | 3 | × | 2

पें म री सा |

न ग र ज | इत्यादि स्थायी के अनुसार

0

राग मेघमल्हार–तिलवाडा (विलंबित)

स्थायीः आयो री बरखा रित आयो

रूम झूम मेहा बरसे बिजरी चमके

जियरा मोरा अत ही डर पावे |

अंतराः उमंड घुमंड घिर आये बादर

चहूँ ओर छाई अँधियारी

मुझ बिरहन को अधिक डरावे ||

स्थायी

, निमप | रीम री,सासा री,सानि नि,सारी | म ,म प ,मप |

, आऽऽ | योऽ री,बर खा,ऽऽ ऽ,रित | आ,यो ऽ ,ऽऽ |

| 3 | × |

रीं सां(सां) –नि ,मप | सां,निप मरी ,सासा || रीप मरी,सासा सा(सा) |

रू म,झू ऽम ,मेऽ | हा,बर सेऽ ,बिज || रीऽ ऽऽ ,चम केऽ |

2 | 0 || 3

नि ,मप निसा,नि सा,सासा | रीमपनिसां,निप पमरी |

ऽ ,जिय राऽ,मो रा,अत | हीऽऽऽऽ ,डर पाऽऽ |

× | 2

सा सा प म नि॒ सा सा

नि॒ ,सारी रीसा; ,नि॒मप || रीम री,सासा री,सानि॒ नि॒,सारी | इ

S ,SS वेS; ,आSS || योS री,बर खा,SS S,रित | त्या

० ३ दि

अंतरा

प म सां नि॒ सां

मम पप निप ,नि॒नि॒ | सां ,नि॒सां सां ,नि॒सां | नि॒सांरींमं रींसां रींसां नि॒प |

उमं ड़घु मंड घिर | आ ,SS ये ,SS | बाSSS दर चहूँ ओर |

३ × २

प प सा म री

मरी पम निप सां नि॒सां,नि॒प || मरी,सा नि॒सा ,रीप | मरीं सा – ,नि॒सा |

छाSSS SS ई SS,आँधि || याS री मुझ ,बिर | हन को S ,SS |

० ३ ×

सां मं प सां प

नि॒सां रींमं –रीं सां,नि॒सां | मपनि॒सां रींरींसांनि॒ पमरीसा; ,नि॒मप |

अधि कS SS रा,SS | वेSSS SSSS SSSS; ,आSS |

२ ०

म सा सा

रीम री,सासा री,सानि॒ नि॒,सारी |

योS री,बर खा,SS S,रित | इत्यादि स्थायी के अनुसार

३

राग मेघमल्हार–होरी–धमार

स्थायी : नाचत नंदकिशोर ब्रिज जुवती मंडल बीच

अनुपम अतही सुन्दर,कुंज बन में दिग दिगता

दिग दिग थेम ,शब्द बजत मृदंगतें घनघोर |

अंतरा : नीर जमुना लहर लहरत, वृक्ष वेली सबहुँ डोलत,

मंद मंद समीर शीतल, मुरली धुन संग रसिक जन मन

निरखि हरखत, उठत नाद निनाद हियते धन्य कृष्ण किशोर ||

स्थायी

नि सां, प, प, प, प, प
रीं नि सां | नि – म प | सां – सां, नि प | म प
ना च त | नं ऽ द कि | शो ऽ र, ब्रि ज | जु व
० | ३ | × | २

री, सा, सा, सा
म री – | री – सा सा | नि़ सा सा, म री | म म
ति ऽ ऽ | म ऽ ण्ड ल | बी ऽ च, अ नु | प म
० | ३ | × | २

म प, सां, नि, मं, नि
प नि प | नि सां सां सां | रीं मं रीं सां रीं | सां –
अ त ही | सु ऽ न्द र | कुं ऽ ज ब न | में ऽ
० | ३ | × | २

सां, रीं, प, म, म प, सां, नि
नि सां रीं | नि सां नि प | री – री म प | नि सां
दिग दिग ता | दिग दिग थो म | श ऽ द्ध ब ज | त मृ
० | ३ | × | २

प, नि, प, सां, नि
रीं – सां | नि – म प | सां – – नि सां | सां –
दं ऽ ग | तें ऽ घ न | घो ऽ ऽ ऽ ऽ | र ऽ
० | ३ | × | २

अंतरा

प, प, सां, सां, नि
म – प नि प | नि – | सां सां सां | नि सां सां सां
नी ऽ र ज मु | ना ऽ | ल ह र | ल ह र त
× | २ | ० | ३

सां, मं, सां रीं, प
नि – सां रीं मं | रीं सां | रीं नि सां | नि – प प
वृ ऽ क्ष वे ऽ | ली ऽ | स ब हुँ | डो ऽ ल त
× | २ | ० | ३

प ध प ध	म	म	नि़
नि नि प,नि नि	प , प	री – सा	री – सा सा
म ऽ न्द,मं ऽ	द , स	मी ऽ र·	शी ऽ त ल
×	२	०	३

सा सा सा		म प	सां सां
नि़ नि़ सा मरी	म म	प नि प	नि नि सां सां
मु र ली धुन	सं ग	र सि क	ज न म न
×	२	०	३

सा म प	सां	मं पं	रीं नि
नि़ सा री म प	नि सां,	रीं मं पं	मं – रीं, सां
नि र खि ह र	ख त,	उ ठ त	ना ऽ द, नि
×	२	०	३

री प	सां	सां	प नि
म – री म प	नि सां,	रीं – सां	नि – म प
ना ऽ द हि य	तें ऽ,	ध ऽ न्य	के ऽ ष्ण कि
×	२	०	३

प सां नि		सां रीं	
सां – – नि सां	सां –;	रीं नि सां	इत्यादि स्थायी
शो ऽ ऽ ऽ ऽ	र ऽ;	ना च त	के अनुसार
×	२	०	

राग सूरमल्हार–त्रिताल (मध्यलय)

(संस्कृत में रचित)

स्थायी: सखि राधिके त्वरित मायाहि
तव विरहदारुण दुरितदान्तोयम्
हरिर्नकथमपिसमाश्वसिति ।

अंतरा: मुरलिवादने विरक्तो न चापि
विलसति रासलीलायामति
ह्युदासीनस्त्वदृते ॥

स्थायी

प नि	
स	

पम म री सा	री म –, प	नि प नि सां	नि निम प, नि
खिऽ रा ऽ धि	के ऽ ऽ, त्व	रि त मा ऽ	या ऽऽ हि, स
३	×	२	०
पम री – सा	री म –, म	पनि प, नि सां	नि निम प, नि
खिऽ रा ऽ धि	के ऽ ऽ, त्व	रिऽ त, मा ऽ	या ऽऽ हि, त
३	×	२	०
प म री सा	नि सा री मरी	म प निप नि	सां सां – रीं
व वि र ह	दा ऽ रु णऽ	दु रि तऽ दा	ऽ न्तो ऽ यं
३	×	२	०
मं रीं सां –	नि म प नि	सां रीं सां नि	म प नि ; प
ऽ ह रि ऽ	र्न क थ म	पि स मा ऽ	श्व सिति ; स
३	×	२	०

अंतरा

म प	
मु र	

निप नि सां नि	सां – –, रीं	नि सां नि –	नि –, म प
लिऽ वा ऽ द	ने ऽ ऽ, वि	र ऽ क्तोऽ	यं ऽ, मु र
३	×	२	०
निप नि सां नि	सां – –, रीं	नि सां सां –	म प नि धप
लिऽ वा ऽ द	ने ऽ ऽ, वि	र ऽ क्तोऽ	न चा ऽ पिऽ
३	×	२	०

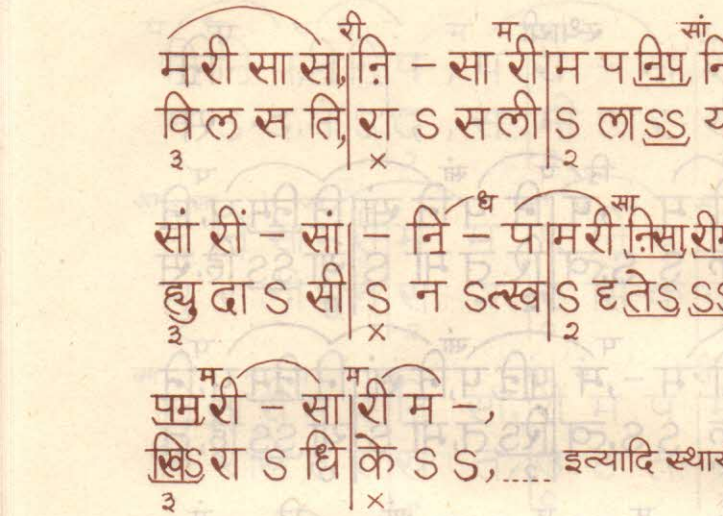

राग सूरमल्हार–झपताल(मध्यलय)

स्थायी : ऐसे समे आये बादर उमंड घुमंड
बिरहा की माती में तगती खरी राह
पियु के आवन की, कैसे मिलन होवे |

अंतरा : घोर घनघोर अत मेहा मूसलधार बरसे
गरज गरज, दामिनी दमक चमके,
छतिया धरक धरके, तगती खरी राह
कैसे मिलन होवे ‖

स्थायी

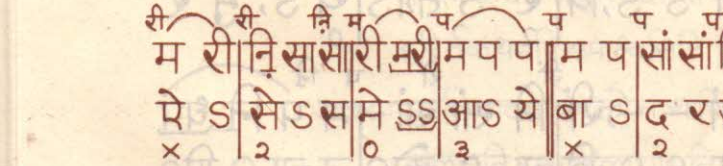

सा	म		सां	सां	मं		प
नि़ सा	री म म	प –	निसांसां	नि सां	रीं मं रीं	सां –	नि धम प
बि र	हा ऽ की	मा ऽ	ती ऽ मैं	त ग	ती ऽ ख	री ऽ	रा ऽऽ ह
×	2	0	3	×	2	0	3

प	प		री	सा	म	प	म ध
म प	सां – प	नि प	म री सा	नि़ सा	री म म	प प	नि – प
पि यु	के ऽ आ	व न	की ऽ ऽ	कै ऽ	से ऽ मि	ल न	हो ऽ वे
×	2	0	3	×	2	0	3

अंतरा

प	सां सां		नि	सां	मं		
म प	निप नि नि	सां –	सां सां सां	नि सां	रीं मं रीं	सां सां	नि धम प
घो ऽ	रऽ घन	घो ऽ	र अ त	मे ऽ	हा ऽ मू	स ल	धा ऽऽ र
×	2	0	3	×	2	0	3

मं मं	मं		नि सां		सां		ध
रीं रीं	रीं मं रीं	सां सां	म प नि,	सां –	रीं सां रीं	नि सां	नि प प
ब र	से ऽ ग	र ज	ग र ज,	दा ऽ	मि नि द	म क	च म के
×	2	0	3	×	2	0	3

प प	ध		म री	प़	सा	नि़ म	प
म म	प नि धा	प म	री नि़ सा	म़ प़	नि़ सा सा	री म	म प प
छ ति	या ऽ ध	र क	ध र के	त ग	ती ऽ ख	री ऽ	रा ऽ ह
×	2	0	3	×	2	0	3

म	ध		प ध
प रीं	सां – नि	म प	नि – प
कै ऽ	से ऽ मि	ल न	हो ऽ वे
×	2	0	3

राग सूरमल्हार – तिलवाडा (विलंबित)

स्थायी : कैसे के आऊँ तोहरे ढिंगवा
गरजे घटा घनघोर घोर घोर |

अंतरा : रैन अँधेरी जिया डर पावे
तन काँपे उर धरके बादर बरसे
ठोर ठोर चहूँ ओर ||

स्थायी

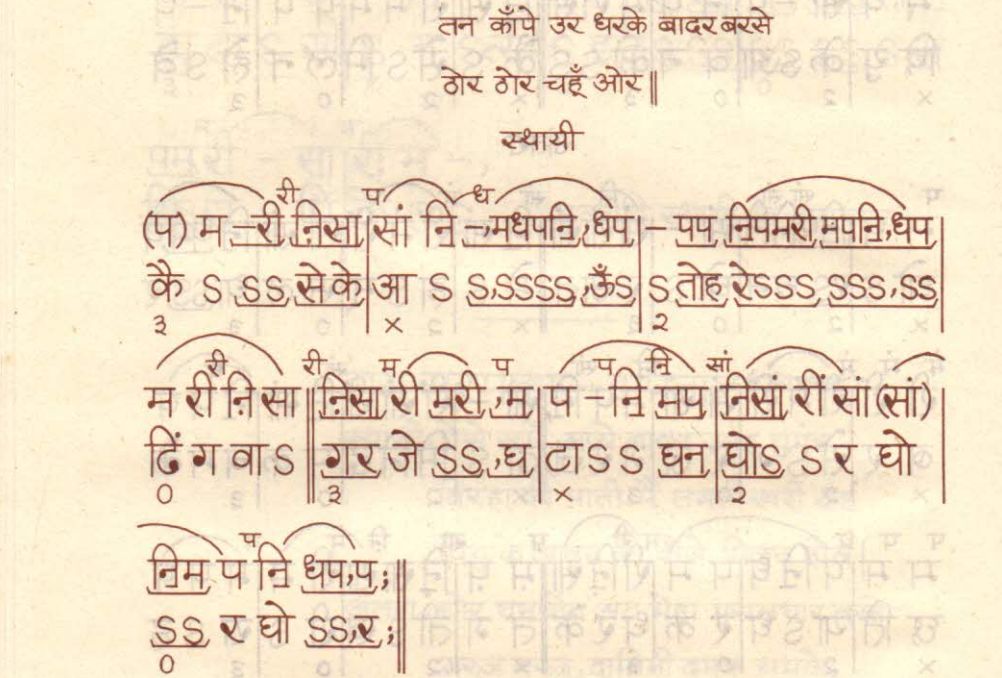

अंतरा

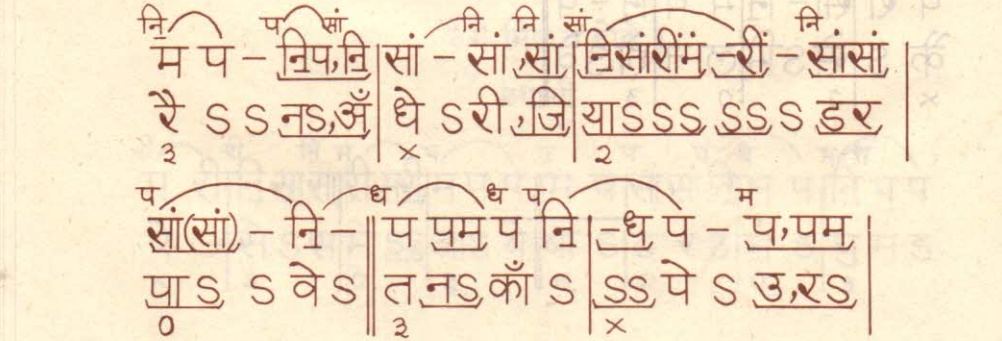

ध	री म	सां	प प	
पनि -धप मरी	नि सारी म ‖	पनि सां -	रीं -सां,नि	
धर ऽऽके ऽऽ	बा ऽ द र ‖	ब र से ऽ	ठो ऽ र,ठो	
२	०	३	×	
नि	प ध	म री		
निम प,म प	सां नि प प; ‖	(प) म -री निसा		इत्यादि स्थायी के अनुसार
ऽऽ र,च हूँ	ऽ ओ ऽ र; ‖	कै ऽ ऽऽ सेके		
२	०	३		

राग सूरमल्हार–ध्रुवपद–चौताल

स्थायी : घोर घोर घन गम्भीर नाद होत अत गरजत
दामनी की दमक चमक मानो प्रलय आयो है।

अंतरा : गोप गोपी ग्वार बार भयभीत भये सब
देवराज कोप कीन्हे धूम मचायो है ॥

संचारी : त्राहि त्राहि बिनती करत कर जोर ब्रिजबासी
हे गोविन्द हे गोपाल दीननाथ दयावन्त ॥

आभोग : या बिध सुनि करुण बानी भक्तवत्सल कृपासिंधु
गोवर्धन अंगुरी पै उचकि लिये ठाड़े हैं ॥

स्थायी

म	ध	री		सा	सा	म					
नि	-	प	म	री	सा	नि	नि	सा	री	म	म
घो	ऽ	र	घो	ऽ	र	घ	न	ग	म्भी	ऽ	र
×		०		२		०		३		४	
री		प			प	प		ध प	ध		
म	री	री	म	प	प	म	म	प	नि	प	प
ना	ऽ	द	हो	ऽ	त	अ	त	ग	र	ज	त
×		०		२		०		३		४	

प प ध सां सां सां
म – प नि – प नि नि नि सां सां सां
दा ऽ म नी ऽ की द म क च म क
× ० २ ० ३ ४

सां प म म प म री प म प सां
रीं – सां नि म म प म री म प सां
मा ऽ नो प्र ल य आ ऽ यो है ऽ ऽ
× ० २ ० ३ ४

अंतरा

प ध सां नि
म – प नि – प नि सां सां सां – सां
गो ऽ प गो ऽ पी ग्वा ऽ र बा ऽ र
× ० २ ० ३ ४

सां सां प ध
नि नि सां रीं – सां रीं सां – नि म प
भ य ऽ भी ऽ त भ ये ऽ स ऽ ब
× ० २ ० ३ ४

मं मं मं नि सां सां
रीं – रीं रीं मं रीं सां – नि रीं – सां
दे ऽ व रा ऽ य को ऽ प की ऽ न्हे
× ० २ ० ३ ४

प ध म प प
रीं सां – नि म प म री री म प सां
ध् ऽ ऽ म ऽ म चा ऽ यो है ऽ ऽ
× ० २ ० ३ ४

संचारी

सा म म प प ध
नि सा सा री म म प प प नि प प
त्रा ऽ हि त्रा ऽ हि बि न ति क र त
× ० २ ० ३ ४

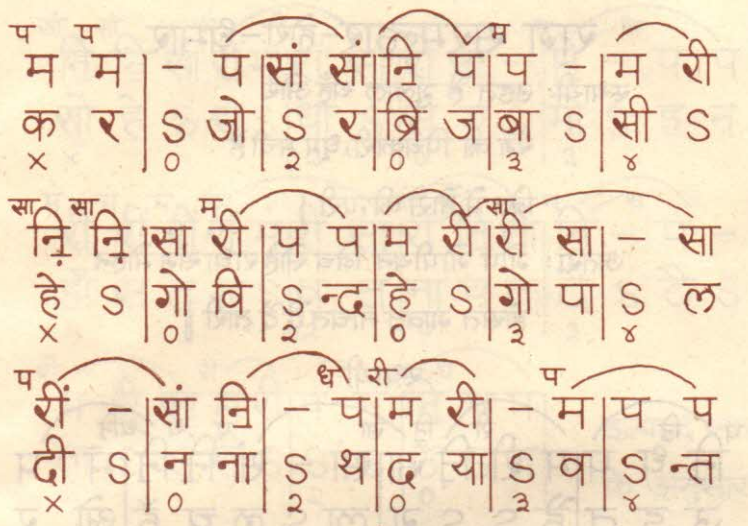

प	प							म			
म	म	-	प	सां	सां	नि	प	प	-	म	री
क	र	ऽ	जो	ऽ	र	ब्रि	ज	बा	ऽ	सी	ऽ
×		०		२		०		३		४	

सा	सा		म					सा			
नि़	नि़	सा	री	प	प	म	री	री	सा	-	सा
हे	ऽ	गो	वि	ऽ	न्द	हे	ऽ	गो	पा	ऽ	ल
×		०		२		०		३		४	

प					ध	री			प		
रीं	-	सां	नि	-	प	म	री	-	म	प	प
दी	ऽ	न	ना	ऽ	थ	द	या	ऽ	व	ऽ	न्त
×		०		२		०		३		४	

आभोग

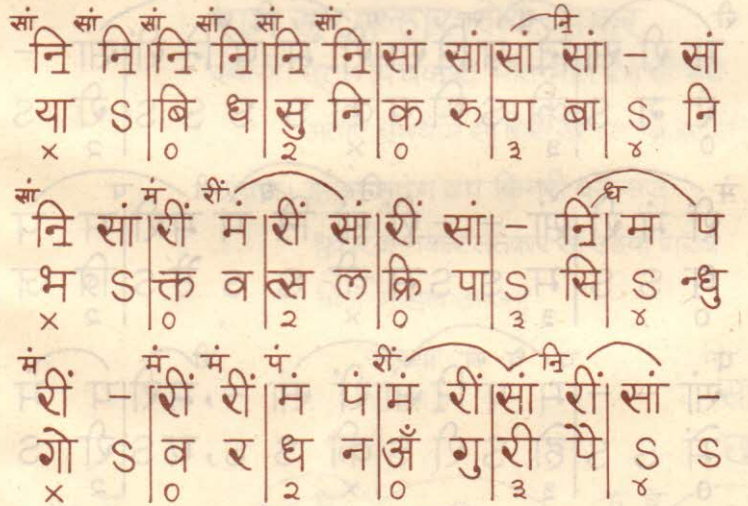

सां	सां	सां	सां	सां	सां				नि		
नि	नि	नि	नि	नि	नि	सां	सां	सां	सां	-	सां
या	ऽ	बि	ध	सु	नि	क	रु	ण	बा	ऽ	नि
×		०		२		०		३		४	

सां		मं	रीं							ध	
नि	सां	रीं	मं	रीं	सां	रीं	सां	-	नि	म	प
भ	ऽ	क्त	व	त्स	ल	क्रि	पा	ऽ	सि	ऽ	न्धु
×		०		२		०		३		४	

मं		मं	मं	पं		रीं			नि		
रीं	-	रीं	रीं	मं	पं	मं	रीं	सां	रीं	सां	-
गो	ऽ	व	र	ध	न	अँ	गु	री	पे	ऽ	ऽ
×		०		२		०		३		४	

सां		मं	रीं						ध नि		
नि	सां	रीं	मं	रीं	सां	रीं	सां	नि	म	प	सां
उ	च	कि	लि	ये	ऽ	ठा	ऽ	ड़े	है	ऽ	ऽ
×		०		२		०		३		४	

राग सूरमल्हार-होरी-धमार

स्थायीः उडत है गुलाल चहूँ ओर
रंग की पिचकारी, धूम मची है
ब्रिज में होरी की, एरी ।

अंतराः गोप गोपीयन बिच सोहे राधा संग मोहन
हाँसत गावत नाचत दे दे तारी ॥

स्थायी

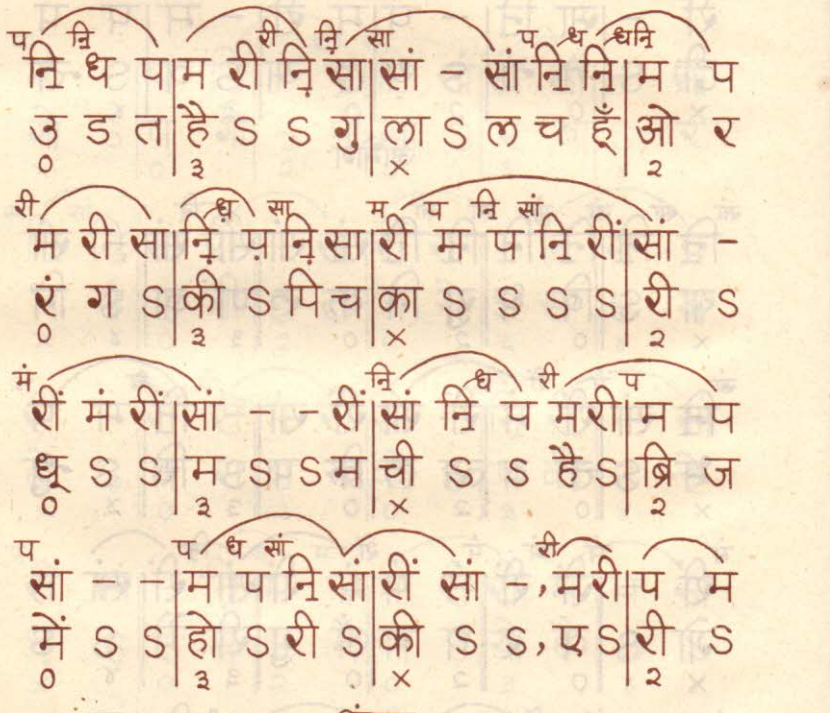

अंतरा

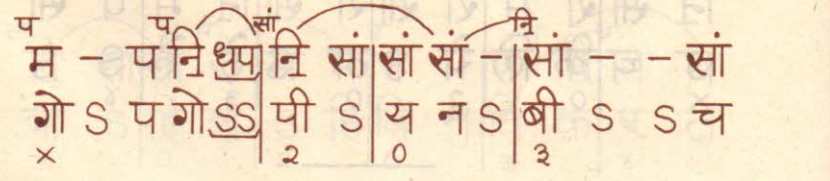

कण	सां सां म			प ध
स्वर	नि नि सांरींमं	रीं सां	रीं सां –	नि – प प
बोल	सो हे ऽ राऽ	धा ऽ	सं ग ऽ	मो ऽ ह न
ताल	×	2	0	3

कण	मं मं मं मं		सां रीं	प ध
स्वर	रीं रीं रीं रीं मं	रीं सां	रीं नि सां	नि – प –
बोल	हाँ स त गा ऽ	व त	ना च त	दै ऽ दै ऽ
ताल	×	2	0	3

कण	री री		म ध	
स्वर	म री सा म री	प म;	नि प प	इत्यादि स्थायी
बोल	ता ऽ ऽ री ऽ	ऽ ऽ;	उ ड त	के अनुसार
ताल	×	2	0	

राग सूर मल्हार–होरी–धमार

स्थायी : छूटत पिचकारी भाँत भाँत रंग सों भरी
अतही धूमधाम सों होरी खेलत ब्रिजराज।

अंतरा : झाँझ मृदंग ढप किनरी बजे सजे
धुकार झनकार ततकार सों उठ्यो गरज
ब्रिज-मण्डल आज॥

स्थायी

कण				नि
स्वर				सा
बोल				छू

कण	म प	ध		म ध
स्वर	री म प सां	नि – म प नि	ध प	–, प नि
बोल	ट त पि च	का ऽ ऽ ऽ ऽ	री ऽ	ऽ, भाँ ऽ
ताल	3	×	2	0

कण	ध री	सा म	री प	प
स्वर	प, म री सा	नि सा – री म	–, म	म प –
बोल	त, भाँ ऽ त	रं ग ऽ सों ऽ	ऽ, भ	री ऽ ऽ
ताल	3	×	2	0

म प ध सां मं

प रीं सां - | नि म प निसां | - सां | रीं मं रीं

अ त हीऽ | धू ऽ म धाऽ | ऽ म | सों ऽ ऽ

३ | × | २ | ०

नि धप धप री री नि

सां - नि - | म प नि धप | म री | नि सा;सा

होऽ रीऽ | खे ल त ब्रिज | र ऽ | ज ऽ;छू

३ | × | २ | ०

अंतरा

प प सां सां नि

म प - निप | - नि | सां - सां | नि सां सां -

झाँऽ ऽझ ऽ | ऽ त्रि | दं ऽ ग | ढ ऽ पऽ

× | २ | ० | ३

सां सां मं नि ध

नि नि सांरींमं | - रीं | सां - सां | नि - म प

कि न ऽरीऽ | ऽ ब | जे ऽ स | जे ऽ ऽ ऽ

× | २ | ० | ३

म प नि री नि

प सां - नि - | म प | म री - | नि सा,सा सा

धु का ऽ र ऽ | झ न | का ऽ ऽ | र ऽ, त त

× | २ | ० | ३

म सां नि मं सां

री म मपनि | सां सां | रीं पं मं | रीं सां, म प

का ऽ रसोंऽ | ऽ उ | ठ्योऽ ग | र ज, ब्रिज

× | २ | ० | ३

सां नि री नि म प ध प

नि सां रीं सांनि | प म | री नि, सा | री म प सां

मं ड लआऽ | ऽ ऽ | ज ऽ; छू | ट त पि च --इ०

× | २ | ० | ३

राग रामदासी मल्हार–त्रिताल(मध्यलय)

स्थायी : माधो मुकुंद गिरिधर गोपाल
कृष्ण मुरारी मधुसूदना|

अंतरा : जपत अनंत हरे नाम,पावे आनंद अत 'सुजाना' ॥

स्थायी

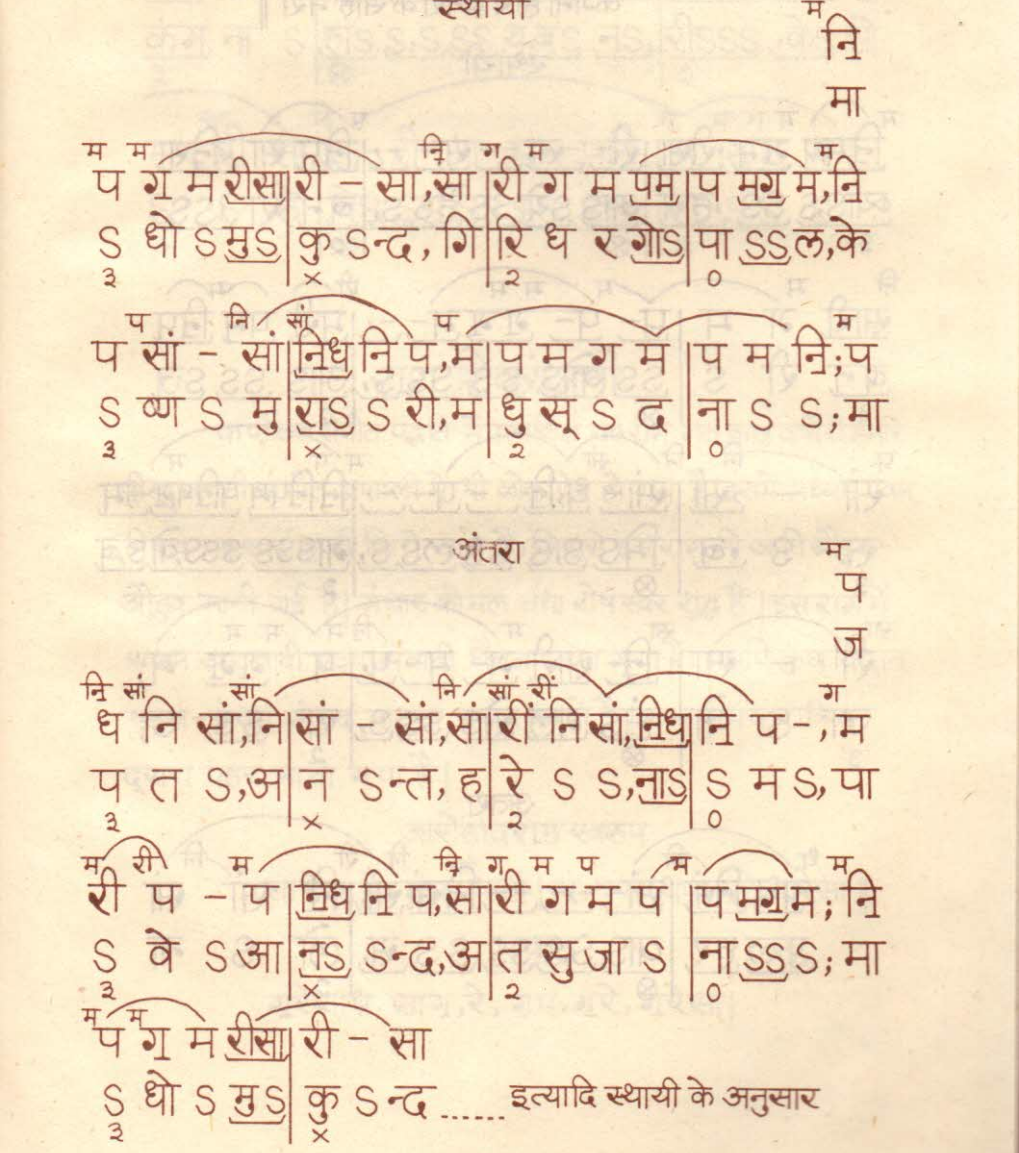

अंतरा

इत्यादि स्थायी के अनुसार

राग रामदासीमल्हार–सार्ध रूपक(बिलंबित)

स्थायी: ब्याहन आयो है बनरा बनरी को आज
सब मिल गावो बजावो मंगल सेरा |

अंतरा : फुल हरवा सलोना बने के गर सोहे
कंगना हाथ बनरी के सोहे नेरा ‖

स्थायी

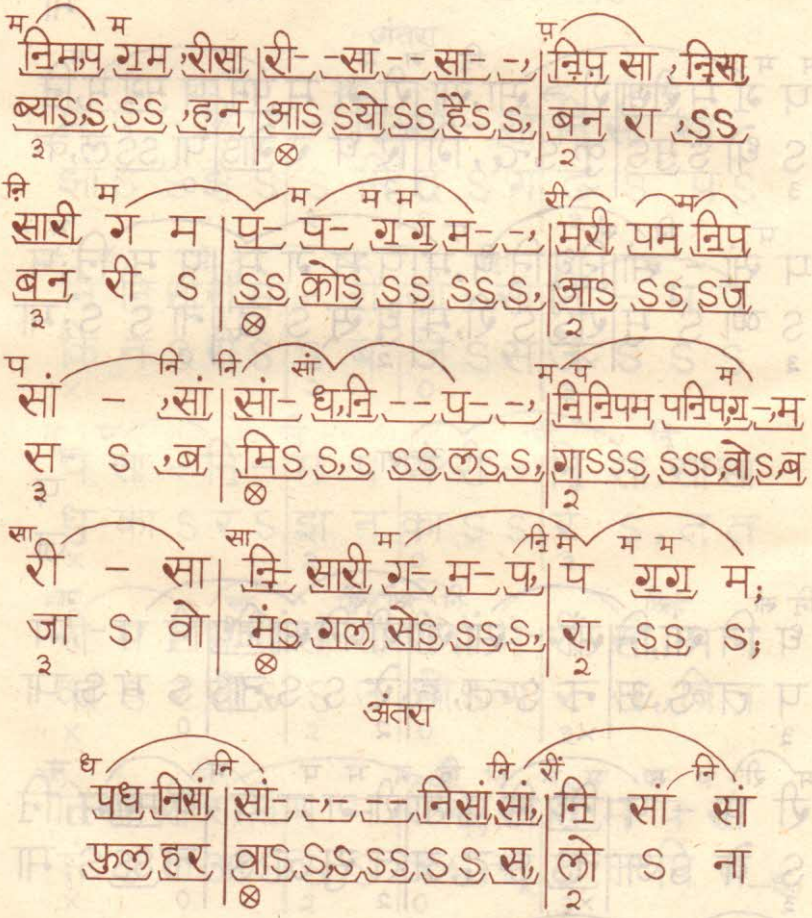

अंतरा

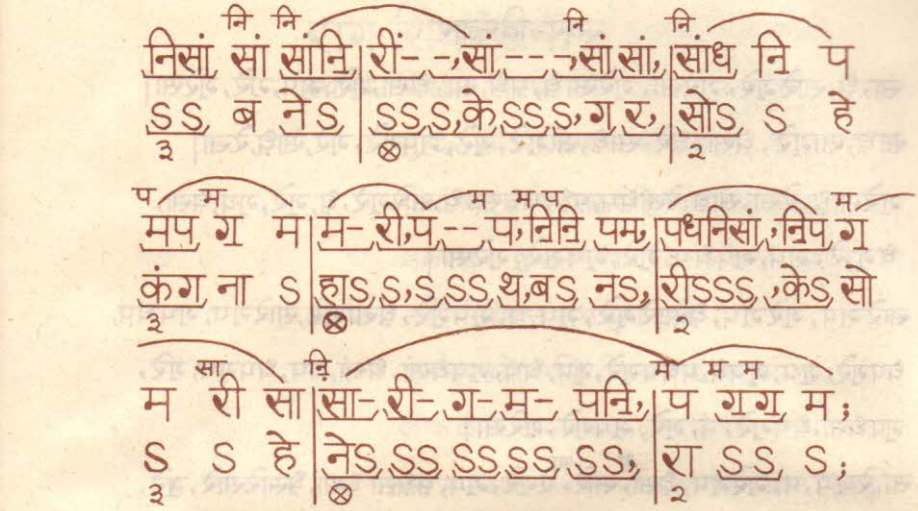

नि नि नि नि

निसां सां सांनि | रीं- -,सां- - -सां सां, | सांध नि प
SS ब नेS | SSS,केSSS,गर, | सोS S हे
३ ⊗ २

प म म मप म

मप ग म | म- री,प- - प,निनि पम, | पधनिसां,निप ग
कंग ना S | हाS S,S SS थ,बS नS, | रीSSS ,केS सो
३ ⊗ २

सा नि म म म

म री सा | सा- री- ग- म- पनि, | प गग म;
S S हे | नेS SS SS SS SS, | रा SS S;
३ ⊗ २

राग शिवरंजनी

कर्णाटक संगीत पद्धति में प्रचलित यह राग गत कुछ वर्षों से हमारे हिन्दुस्तानी संगीत प्रणाली में भी लोकप्रिय हो गया है| इसमें मध्यम एवम् निषाद यह स्वर वर्ज्य किये जाते हैं, जिससे इस राग की जाति औडुव-औडुव मानी गई है| गंधार कोमल तथा शेष स्वर शुद्ध हैं | इस राग में ऋषभ स्वर वादी एवम् संवादी धैवत माना गया है, यधपि कुछ विद्वान् षड्ज-पंचम संवाद मानना पसंद करते हैं | गान समय रात्रि का दूसरा प्रहर माना गया है|

आरोहावरोह स्वरुप

सां
सारे ग़रे, ग़प, धसां |सां, धसां, धप, ग़रे, ग़रेसा ‖

पकड़

ग़रेसाध़, साग़, रे, ग़प, ग़रे, ग़रेसा|

स्वर-विस्तार

सा, ध़, सारे गरे, गरेसा, गरेसाध़, प़ध़, सा, ध़सा, गरे, गप, गरे, गरेसा|

साध़, सागरे, ध़सा, ध़रे, साध़, सागरे, गरे, गपगरे, गरे, साध़, रेसा|

गरेसाध़, रेसा, साध़, रेसाध़प़, प़ध़, प़ध़सा, ध़, सारेगरे, ध़, गरे, गप, ध़सा,
ध़ग, रे, गप, गपधप, गरे, गपगरे, गरेसा|

सारेगप, गरेगप, ध़सारेगरे, गप, प, गपगरे, ध़सागरे, सारेगप, गपधप,
धपगरे, गप, गपध, पधपगरे, गप, धप, गपधसां, धसां, धप, धपगप, गरे,
गपधसां, धपगरे, प, गरे, गपगरे, गरेसा|

सा, रेगप, प, गरेगप, ध़सा, [ध़]सारे, [सा]रेगरे, गप, प़ध़सा ध़सा, ध़सारेसारे, ग्रे,
सारेगप, गप, गध, प, धपगपगरे, गप, गपधसां, धप, पधसां, धसां-धप,
धप, गपधसां, धरेंसां, रेंसां, धपगरे, गपधसां, रेंसां, धपगरे, गपगरे, गरेसा|

पध, पधसां, सां, धसां, रेंगंरें, गंरेंसांध, रेंसां, ध, सांरेंगंरें, धगंरें, गंरेंसां,
पधसांरेंगं, रेंगं, सांरें, सां गंरें, गंरेंसां, धसां, धगंरें, गंरेंसां, धसां, गंरेंसां
रेंसां, धसांधप, धपगरे, सारेगपधसां, धपगरे, गपगरे, गरेसाध़, रेसा|

सां, धसां, धपधसां, पधपगरे, गपधसां, ध, सांरेंगंरें, गंपंगंरें, गंरेंसां,
पधसांरें, गंपंगंरें, गंरेंसां, ध, गंरेंसां, रेंसां, धपगरे, गपधप, धसां, धपगरे,
गपधपगरे, पगरे, गरे, साध़, रेसा|

राग शिवरंजनी–त्रिताल(मध्यलय)

स्थायी : निरखि निरखि चित चोरी मूरत अत
सुन्दर साँवरी, बैन अधर धरि
पीताम्बर काछे, गर सोहे माल बैजयन्ती,
मकराकृत कुण्डल, भाल तिलक केसर सोहे |

अंतरा : ठाड़ी निचेतन सुध बुध हारी
मन हरख्यो सखि बिसर गई घर अंगना
लोक लाज साज काज, लीन विलीन भयो
तन मन सब, कल ना परत इक छिन बिन जोहे ||

स्थायी

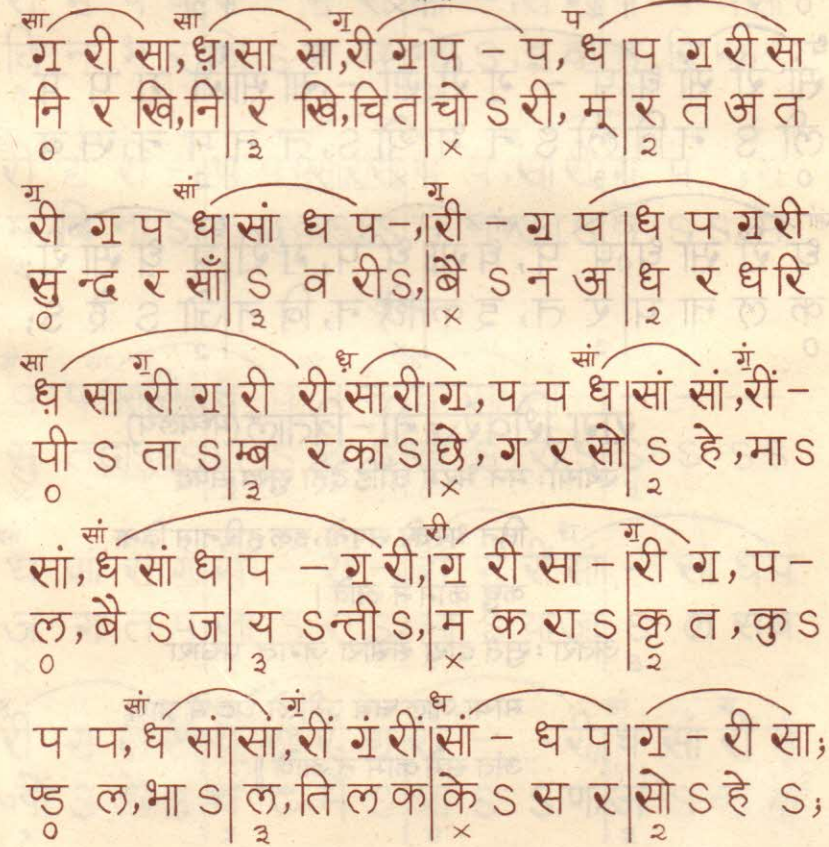

अंतरा

(सां)ध सां ध प	ग री सा सा,	(ग)री ग प ध	सां - सां -
ठा ऽ डी नि	चे ऽ त न,	सु ध बु ध	हा ऽ री ऽ
0	3	×	2
(सां)ध सां (गं)रीं गं	रीं - सां सां,	(ध)प (सां)ध सां (गं)रीं	गं -, (ध़)प़ (सा)ध़
म न ह र	ख्यो ऽ स खि,	बि स र ग	ई ऽ, घ र
0	3	×	2
सा री ग -,	(ध)प ध प, ध	(सां)सां ध, (ध)सां रीं	सां, (गं)रीं गं रीं,
अं ग ना ऽ,	लो ऽ क, ला	ऽ ज, सा ऽ	ज, का ऽ ज,
0	3	×	2
(ध)सां रीं सां ध	प - ग री	सा -, (ध़)सा सा	(ग)री ग प प
ली ऽ न वि	ली ऽ न भ	यो ऽ, त न	म न स ब
0	3	×	2
(सां)ध रीं सां ध	प प, (सां)ध सां	ध प, ग री	(ध)प़ ध़ सा री;
क ल ना प	र त, इ क	छि न, बि न	जो ऽ हे ऽ;
0	3	×	2

राग शिवरंजनी–त्रिताल (मध्यलय)

स्थायी: मन भरम छाँडि देहो सुख संपद
छिन भर को सपनो, इक हरिनाम बिना
कछु काम न आवे।

अंतरा : सुत दारा संसारा जगत पसारा
माया जाल सब ज्यों लो घट में प्राण
अंत समे काम न आवे ॥

स्थायी

ग
म

री सा री ग	प – प, ध	सां सां, ध प	ग री सा, ग
न भ र म	छाँ ऽ डि, दे	ऽ हो, सु ख	सं प द, म
३	×	२	०

री सा री ग	प – प, धसां	रींसां सां, ध प	ग री सा सा
न भ र म	छाँ ऽ डि, देऽ	ऽऽ हो, सु ख	स ऽ म्प द
३	×	२	०

री ग प ध	प – ग री	सा –, री ग	प प धसां
छि न भ र	को ऽ स प	नो ऽ, इ क	ह रि ना ऽ
३	×	२	०

रीं गं रीं –,	प प धसांरींसां	ध प, सा री	ग प –; ग
म बि ना ऽ,	क छु काऽऽऽ	म न, आ ऽ	वे ऽ ऽ; म
३	×	२	०

अंतरा

प प धसांरींसां	ध प प –	ध सां सां –	– – – –
सु त दाऽऽऽ	रा ऽ सं ऽ	सा ऽ रा ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ
×	२	०	३

ध सां रीं गं	रीं – रीं –,	रीं गं रीं सां	– सां ध प
ज ग त प	सा ऽ रा ऽ,	मा ऽ या जा	ऽ ल स ब
×	२	०	३

री ग री सा	ध़ सा री ग	री – – री,	ध सां रीं गं
ज्यों ऽ लो ऽ	घ ट में ऽ	प्रा ऽ ऽ ण,	अ ऽ न्त स
×	२	०	३

रीं –,धसांरींसां	ध प,सा री	ग प – ; ग	री सा री ग
मे ऽ,काऽ ऽऽ	म न,आ ऽ	वे ऽऽ ; म	न भ र म
×	२	०	३

राग शिवरंजनी–एकताल (विलंबित)

स्थायी : परी काहे कू कत बैरन बार बार बार तू

दुख देनी हम बिरहन ब्रिजबासिन को ।

अंतरा : श्याम गये मथुरा, भयो उदास गोकुल बिंदराबन री

अब कैसो राग रस रंग रास न सुहत

इक छिनहु हम ब्रिज गोपिन को ॥

स्थायी

सारीग,रीग,(सा) –,धप	ध,साधसा– ,रीग	री –	गरी,सारीगरी ,सासा	सा रीग	पप,धसां –सां ॥
पऽऽ,ऽऽ,री ऽ,काहे	कू,ऽऽऽऽ ,कत	बै ऽ	ऽऽ,ऽऽऽऽ ,रन	बा र,बा	ऽर,बाऽ ऽर ॥
३	४	×	०	२	०

री पध	रींगंरीं,रींगंरीं सां	रींसां ,धप	गरी ,सासा	रीगपध सां,धप	गरी सा; ॥
तू दुख	देऽऽ,ऽऽऽ नी	हम ,बिर	हन ,ब्रिज	बाऽऽऽ ऽ,सिन	कोऽ ऽ; ॥
३	४	×	०	२	०

अंतरा

धसां ,रींसां	धप ,धसां	सां –	– ,धप	गरी सासा	
श्याऽ ,मग	येऽ ,मथु	रा ऽ	ऽ ,भयो	उदा ऽस	
३	४	×	०	२	

ध़		प	सां		गं		गं	रीं		
प़ध़	,सारी	‖ गप	धसां	| —	रींगं	| रीं	,रींरीं	| गंरीं	गं,रीं	|
गोऽ	,कुल	‖ बिंद	राऽ	| ऽ	बन	| री	,अब	| केंऽ	सो,रा	|
०		३		४		×		०		

	ध	सां	प	ग़		ध़				
सांरीं	सांसां	| धप	गरी,री	‖ री,ग़	रीसा	| प़ध़	सारी	| ग	—	|
ऽग	रस	| रंग	राऽ,स	‖ न,सु	हत	| इक	छिन	| हु	ऽ	|
२		०		३		४		×		

ग	प	सां	सां	पग़		ग	सा		
सारी	गप	| धसां	—,धप	| गरी	सा;	‖ सारीगरीग(सा)	—,ध़प़	|	इत्यादि
हम	ब्रिज	| गोऽ	ऽ,पिन	| कोऽ	ऽ;	‖ एऽऽऽऽ,री	ऽ,काहे	|	
०		२		०		३			

Archived by Aaraeva Business Solutions Pvt Ltd